# वनौषधि-चन्द्रोदय

( पांचवां भाग )

( "तू" से लेकर "प" तक की समस्त औषधियां )

लेखक—
श्री चन्द्रराज भण्डारी 'विशारद'

प्रकाशक—
चन्द्रराज भण्डारी
ज्ञान-मन्दिर, भानपुरा
( इन्दौर-स्टेट )

प्रथम संस्करण

पूरा सेट १० भाग का
साधारण संस्करण १०)
साधारण सजिल्द १५)
राज संस्करण ५०)

मूल्य

एक भाग का
साधारण संस्करण १)
[illegible]
राज संस्करण ५)

प्रकाशक
चन्द्रराज भण्डारी,
संचालक—
ज्ञान-मन्दिर,
भानपुरा ( इन्दौर-स्टेट )

## विशेष धन्यवाद

कानपूरके सुप्रसिद्ध व्यवसायी और मिल ऑनर विद्या प्रेमी लाला पदम पतिजी सिहानिया ने इस ग्रन्थके लिए कागजकी महगीके इस सङ्कटपूर्ण समयमे विशेष सहायता पहुँचाकर हमारे मार्गको प्रशस्त किया है, इसलिए हम उनको कृतज्ञतापूर्ण हृदय से हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

लेखक—

# PATRONS

---

## Rulers

1—His Highness Maharaja dhiraj Sir George Jiwaji Rao Scindia Alijah Bahadur G. C. I. E., Gwalior

2—Late Lieutenant colonal His Highness Maharao Sir Ummed Singh Bahadur G. C. S. I. G. C. I. E. G. B. E. Kotah

3—Lieutenant His Highness Maharaja Krishna Kumar Singh Bahadur Bhawnagar

4—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Jam Sahab Sir Digvijay Singh Bahadur K. C. S. I., Nawanagar.

5—Lieutenant colonal His Highness Maharaja Lokendra Sir Govind Singh Bahadur G. C. S. I., K. C. S. I., Datia,

6—Lieutenant His Highness Maharaj Rana Rajendra Singh Badadur Jhalawar

7—Captain His Higaness Maharaja Mahendra Sir Yadvendra Singh Bahadur K. C. S. I., K. C. I. E., Panna.

8—Rai Bahadur Devi Singh Diwan Rajgarh State Rajgarh

## Bankers

9—Lala Padampatji Singhania Cawnpore

10—Seth Magni Ramji Ram Kumarji Bangar Dalwara

11—Rai Bahadur Rajya Bhushan Danvir Seth Hiralalji Kasliwal Indore

12—Seth Sohanlalji [illegible] Ratanlalji Dugar Fatehpur

13—Seth [illegible] Mehta Bombay.

# स्मृति

स्व० सेठ कमलापतजी सिहानिया कानपुर
की स्मृतिमे

# विषय सूची

( १ )

## हिन्दी



# विषय सूची

( २ )

## संस्कृत

---

# विषय सूची

( २ )

## मराठी

# विपय सूची

( ४ )

## गुजराती

# विषय सूची

( ७ )

## ( रोगानुक्रम से )

इस विषय सूचीमे इस ग्रन्थमे आई हुई औषधिया जिन २ रोगों पर काम करती हैं उनमे से कुछ खास २ रोगोंके नाम और औषधियोंके नाम पृष्ठाक सहित दिये जारहे हैं। सब रोगोंके नाम इसमे नहीं आसके इसलिये उनका विवरण ग्रन्थके अन्दर ही देखना चाहिये। जिन रोगोंके अन्दर जो औषधिया विशेष प्रभावशाली और चमत्कारिक हैं उनपर पाठको की जानकारीके लिये ऐसे फूल * लगा दिये गये हैं —

### अतिसार



### उन्माद हिस्टीरिया और माली खोलिया



### उदरशूल, उदररोग और आफरा



### उपदश

## कुष्ठ



## कण्ठमाला



## कृमिरोग



## कर्णरोग



## खांसी



## गठिया, सन्धिवात और आमवात

## चर्मरोग रक्तविकार विस्फोटक और दुष्टव्रण



## ज्वर



## जलोदर

## दंतरोग



## दाद



## दमा



## नेत्ररोग

## नारू



## नपुंसकता और वाजिकरण



## पाण्डुरोग



## प्लेग



## पथरी और मूत्राघात



## प्रदर



## पीलिया और कामला

## तिल्ली और यकृत सम्बन्धी रोग



## मासिक धर्म सम्बन्धी रोग



## पित्ती



## पागल कुत्ते का विष



## वध्यत्व



## बालरोग

## नारू



## नपुंसकता और वाजिकरण



## पाण्डुरोग



## प्लेग



## पथरी और मूत्राघात



## प्रदर



## पीलिया और कामला

## तिल्ली और यकृत सम्बन्धी रोग



## मासिक धर्म सम्बन्धी रोग



## पित्ती



## पागल कुत्ते का विष



## वंध्यत्व



## बालरोग

## बवासीर



## मस्तकशूल और आधाशीशी



## मृगी



## स्थावर विष



## मन्दाग्नि

## लकवा या पक्षाघात



## संग्रहणी



## शस्त्रके जखम और दूसरे घाव



## सर्प विष



## स्वर्गी



## सुजाक

## सूजन



## हृदयरोग



## हड्डी का टूटना और मोच आना



## हैजा



## हिचकी



## क्षय या राज यक्ष्मा

# वनौषधि-चन्द्रोदय

( पाँचवां भाग )

यूनानी मतसे यह चौथे दर्जेमे गरम और खुश्क है। अधिक मात्रामें वमनकारक और कम मात्रामे काबिज है। बहुत अधिक मात्रामे यह जहर होता है और इसम वमन, मतली और आमाशय तथा पेशाबमे जलन होकर रोगीकी मृत्यु हो जाती है। इसके विषको नाश करनेके लिये घी, दूध, इत्यादि चिकनी चीजें मुफीद होती हैं।

अगर किसीने अफीम, धतूरा आदि विष खा लिया हो तो ५ ग्रेनसे १० ग्रेन की मात्रामें नीला थूथा देनेस उल्टी होकर विषका प्रभाव निकल जाता है। कब्ज, पेटकी जलन और पेचिश की बीमारी जब पुरानी हो जाती है और रोगी बहुत कमजोर हो जाता है तब इसको पाव ग्रेन से लेकर १ ग्रेन तक की मात्रामे आधी या पाव ग्रेन अफीमके साथ मिलाकर दिनमे ३ बार दिया जाता है।

मिरगीकी बीमारीमे इसको चौथाई ग्रेनकी मात्रामे कुनेनके साथ देनेसे लाभ होता है। कम्पवात और हिस्टीरिया मे भी यह लाभदायक है। पुराने सुजाककी बीमारीमे इसकी पिचकारी बहुत मुफीद है। मुहके छालोमें इसको १ रत्तीकी मात्रामें शहदके साथ मिलाकर लगाना चाहिये।

आखकी पलकोंकी झिल्लीमे अगर कफकी वजहसे दाने पड गये हो तो उनपर इसको लगानेसे बड़ा लाभ होता है। पलकको उलटकर उसपर इसका लोशन लगाकर फौरन ठडे पानीसे धो देना चाहिये।

उपदशके कारण जब हलकमें जखम हो गये हों तो उनपर लगानेके लिये यह अद्वितीय दवा है। कमजोर जख्मोंपर नीले थूथेकी जगह इसका लोशन लगाना ज्यादा अच्छा होता है। इसका लोशन १ ग्रेन पानी में १ औंस नीला थूथा डालनेसे बनता है।

नीला थूथा सूजन और जद गाठको भी बिखेर देता है। कफको छाटता है। पेटके कीडोंको मारकर निकाल देता है। आखके जालेको साफ कर देता है। आँखकी सुर्खीको दूर करके वेदना को शात करता है।

नीला थूथा पूरा भुना हुआ और सुहागा आधा भुना हुआ इन दोनोंको समान भाग लेकर पीसकर मूगके बराबर गोलिया बनाले जिस बच्चेको डिब्बेकी बीमारी हो उसको १ से लेकर बारीक तीन तक गोली उसकी मा के दूधके साथ मिलाकर पिलावें इससे उल्टी और दस्त होकर रोग दूर हो जाता है।

दमेके रोगमें ४ रत्ती तक नीला थूथा गुड़में रखकर निगला देना चाहिये। इसके सेवनसे ३ दिनतक रोगीको गर्मी और बेचैनी बहुत रहती है। हर बार दवा खानेके बाद

मन्दी और दस्त होते हैं। बहुत कम चिकित्सा है। आ लेना चाहिये। जो सहन कर सकें उनका पेपेनीन से ज्यादा घबराहट हो या सूखी निकलीन पापो यह बचैनी कम हो जाता है। ... यहाँ ... इसमें आता रहता है।

यूनानी हकीमोंके मतमें ..., ..., ... औषधि है।

नीले थूँके शुद्ध करनेकी विधि —

... और ... का ... समान भाग और नीले थूँके समता भाग सुहागा होकर ... । ... नीला थूथा ... जाता है।

... —

शुद्ध नीले थूथ में ... करें ... हो जाती है।

... —

अतिसार—पुराने ... लाभ होता है।

पित्त—... देवें ...

... —... को ... ...

( २ ) ... से ... देवें ...

...

यूनानीमत—

यूनानी मतसे यह चौथे दर्जेमे गरम और खुश्क है। अधिक मात्रामें वमनकारक और कम मात्रामे काबिज है। बहुत अधिक मात्रामे यह जहर होता है और इसमे वमन, मतली और आमाशय तथा पेशाबमे जलन होकर रोगीकी मृत्यु हो जाती है। इसके विपको नाश करनेके लिये घी, दूध, इत्यादि चिकनी चीजें मुफीद होती हैं।

अगर किसीने अफीम, धतूरा आदि विप खा लिया हो तो ५ ग्रेनसे १० ग्रेन की मात्रामे नीला थूथा देनेस उल्टी होकर विपका प्रभाव निकल जाता है। कब्ज, पेटकी जलन और पेचिश की बीमारी जब पुरानी हो जाती है और रोगी बहुत कमजोर हो जाता है तब इसको पाव ग्रेन से लेकर १ ग्रेन तक की मात्रामे आधी या पाव ग्रेन अफीमके साथ मिलाकर दिनमें ३ बार दिया जाता है।

मिरगीकी बीमारीमें इसको चौथाई ग्रेनकी मात्रामें कुनेनके साथ देनेसे लाभ होता है। कम्पवात और हिस्टीरिया मे भी यह लाभदायक है। पुराने सुजाककी बीमारीमे इसकी पिचकारी बहुत मुफीद है। मुहके छालोंमे इसको १ रत्तीकी मात्रामे शहदके साथ मिलाकर लगाना चाहिये।

आखकी पलकोंकी झिलीमे अगर कफकी वजहसे दाने पड गये हों तो उनपर इसको लगानेसे बडा लाभ होता है। पलकको उलटकर उसपर इसका लोशन लगाकर फौरन ठडे पानीसे धो देना चाहिये।

उपदंशके कारण जब हलकमे जख्म हो गये हों तो उनपर लगानेके लिये यह अद्वितीय दवा है। कमजोर जख्मोंपर नीले थूथेकी जगह इसका लोशन लगाना ज्यादा अच्छा होता है। इसका लोशन १ ग्रेन पानी मे १ औंस नीला थूथा डालनेसे बनता है।

नीला थूथा सूजन और वद गाठको भी बिखेर देता है। कफको छाटता है। पेटके कीड़ोंको मारकर निकाल देता है। आखके आलको साफ कर देता है। आखकी सुर्खीको दूर करके वेदना को शांत करता है।

नीला थूथा पूरा भुना हुआ और सुहागा आधा भुना हुआ इन दोनोंको समान भाग लेकर पीसकर मूगके बराबर गोलिया बनाले जिस बच्चेको डिब्बेकी बीमारी हो उसको १ से लेकर बारीक गोली उसकी मां के दूधके साथ मिलाकर पिलावें इससे उल्टी और दस्त होकर

थूथा गुड़मे रखकर निगला देना चाहिये। इसके सेवनसे बेचैनी बहुत रहती है। हर बार दवा खानेके बाद

उल्टी और दस्त होते हैं। बहुत उग्र चिकित्सा है। जो लोग सहन न कर सकें उनको यह नहीं लेना चाहिये। जो सहन कर सकें उनको बेचेनीसे घबराना नहीं चाहिये। अगर दस्त और उल्टी से ज्यादा घबराहट हो तो मूगकी खिचडीमे काफी घी मिलाकर खाना चाहिये। ३ रोजके बाद यह बेचेनी कम हो जाती है। खजाइनुल अदवियाके लेखकका कथन है कि २० बरस तकका दमा इससे जाता रहता है।

यूनानी हकीमोके मतमे उपदंश, कोढ, तथा फोडे-फुन्सीके लिये नीला थूथा अनुभव सिद्ध औषधि है।

नीले थूथेको शुद्ध करनकी विधि —

बिल्ली और कबूतर की बींठ समान भाग लेकर इन दोनोंके वजनके बराबर नीला थूथा और नीले थूथेका दसवा भाग सुहागा लेकर सबको खरलकर सराव सम्पुटमे रख थोडी आचमें फूक दें। एस तीन आच देकर फिर दही दूधके साथ अलग २ आच देनसे नीलाथूथा शुद्ध हो जाता है।

नीले थूथे की भस्म बनाने की विधि—

शुद्ध नीले थूथे मे शुद्ध गन्धक और शुद्ध सुहागा मिला कर कटहल के रस मे खरल करके सराव सम्पुट मे रख कर कुक्कुट पुट मे २१३ बार आच देने से बहुत उत्तम भस्म तयार हो जाती है।

उपयोग—

अतिसार—पुराने आमातिसार और अतिसारमे चौथाई ग्रेन नीलाथूथा देनसे लाभ होता है।

पित्ति—तावे के जिन पैसो पर कीट आ गया हो उनको इमली की खटाईमे घण्टे दो घण्टे तक रखकर पित्ती वालेके शरीर पर मालिश करने से लाभ होता है।

विष विकार—नीले थूथे को मट्ठे पर छिडककर विष खाये हुए मनुष्य को पिलानेसे वमन होकर विष निकल जाता है।

(२) अफीम, धतूरा, कुचला, वत्सनाग, संखिया और दूसरी चीजों का विष उतारने के लिये नीले थूथे को ७॥ रत्ती की मात्रामे शुद्ध जलके साथ देना चाहिये। अगर इससे आध घण्टेमे असर न हो तो इतनी ही मात्रामे फिर देना चाहिये।

मूत्रकृच्छ्—८ मासे नीला थूथा और ७० मासे त्रिफला को कूट कर रात भर पानी में भिगोकर प्रात काल उस पानी की पिचकारी देनेसे मूत्रकृच्छ मिट [illegible]

# तेजबल

नाम—

संस्कृत—तेजस्विनी, तेजवती, तेजन्या, लघुवल्कला, पारिजाता, इत्यादि। हिन्दी—तेजबल। बंगाल—तेजबल। मराठी—तेजबल, तिरफली। गुजराती—तेजबल। अंग्रेजी—Toothache Tree टूथेक ट्री। लेटिन Zanthoxylum Hostile (जेन्थोक्जिलम होस्टाइल)।

वर्णन—

तेजबलके वृक्ष हरिद्वार और बद्रीनाथके वनोंमे पैदा होते हैं। इसकी लकडी बहुत सख्त होनेकी वजहसे औषधि घोटनेके खरलके मूसले इससे बनाये जाते हैं। इस वृक्षकी छाल लाल मिरचके समान चरपरी होती है। इसके फल गोल मिरचके समान होते हैं। जो मछली मारनेके काममें लिये जाते हैं। औषधि प्रयोगमे इसकी छाल और जड काममें आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिकमतसे तेजबल कफ, हृदयरोग, मुखरोग, दंतरोग, हिचकी, मंदाग्नि, बवासीर और कंठरोगको नष्ट करता है।

निघंटु रत्नाकरके मतानुसार तेजबल चटपटा, गरम, कडवा, अग्निदीपक, पाचक, रुचि कारक, कंठरोग नाशक तथा पित्त, खांसी, श्वास, हिचकी, मंदाग्नि, बवासीर और मुखरोग को नष्ट करता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे यह गरम तथा खांसी, बवासीर, कफ और वायुके रोग, जुकाम और दंत शूलमें फायदा पहुँचाता है। तेजबलको पानीमें पीसकर, उस पानीको १ प्याला भर पीनेसे अफीमका जहर उतर जाता है। इसके गोंदको पीसकर भुरभुरानेसे जख्म भर जाते हैं।

दंतशूलको नष्ट करनेके लिये इस औषधिकी विशेष प्रशंसा है।

बनावटें —

नपुंसकताहर पारद भस्म—४ तोला सरसों का तेल लेकर एक लोहेके चम्मचमे उसको डालकर कोयले की आंच पर गरम करना चाहिये। जब तेल अच्छी तरहसे गरम हो जाय तब उसमे १ तोला हींगलूसे निकाला हुआ शुद्ध पारा डालना चाहिये। उसके बाद उसको उतार कर एक पत्थर की खरलमें डाल देना चाहिये।

इसी अरसेमें एक दूसरी चम्मचमें १ तोला शुद्ध बंग रखकर कोयले की आंच पर तपाना चाहिये। जब वह पिघल जाय तब उसे भी उसी खरलमें डाल कर बहुत शीघ्रताके साथ अच्छी

तरह घोट लेना चाहिये। जब वग और पारा दोनों अच्छी तरहसे मिलकर एक डलीके रूपमें हो जाय तब उस डली को तेलमे से निकाल कर एक साफ कपड़ेसे अच्छी तरह पोंछ लेना चाहिये। फिर तेजवल की ताजी छाल २० तोला लेकर उसको पीसकर उसकी लुग्दी बना लेना चाहिये और उस लुग्दीमे वग और पारे की डली को रखकर उसके ऊपर सफेद कपड़े की २ सेर छिन्दिये लपेट कर गेंद की तरह बना लेना चाहिये। फिर रात्रिमें किसी ऐसे एकान्त स्थानमे जहा हवा न लगती हो वहा उस गोलेको रख कर उसमे आग लगा देना चाहिये। तीसरे दिन उस गोलेके ऊपर का कपड़े का भाग हलके हाथसे दूर करके उसके अन्दर की भस्म को निकाल लेना चाहिये। इस क्रियामे वंग कच्ची रहकर अलग बैठ जाती है और पारद पतासे की तरह खिलकर अलग जम जाती है।

इस भस्ममे से १ रत्ती भस्म एक छुहारे को लेकर उसको बीचमे से चीर कर उसकी गुठली निकाल कर उसमे भर देना चाहिये और फिर छुहारे को ज्यों का त्यों जोड़ कर उसके ऊपर कच्चा सूत लपेट कर उसको गायके २ सेर दूधमे डोला यन्त्र की विधिसे पका कर जब दूध रवड़ी की तरह हो जाय तब उसमे तीन तोला देशी शक्कर डाल कर उतार लेना चाहिये। पारद भस्म वाली खाद्य को खाकर ऊपरसे यह दूध पी लेना चाहिये।

इस प्रकार २१ दिन तक इस प्रयोग को करना चाहिये। जब तक यह प्रयोग चले तब तक रोगी को स्नान, तेल, मिरची, खटाई और निमक का परित्याग करना चाहिये। साथमे घी दूध का सेवन विशेष करना चाहिये। इसके साथ ही नीचे लिखे हुए तेल का प्रति दिन रात्रिको इन्द्रियके ऊपर हलके हाथसे १५ मिनिट तक मालिश करना चाहिये और ऊपरसे नागर बेल का पत्ता गरम करके बाध देना चाहिये।

उत्तम कस्तूरी १ माशा, उत्तम केशर १ माशा, काली मिरच ४ माशा, जुंदबेदस्तर ४ माशा, उत्तम हीरा हींग ५ माशा, बीर बहूटी ५ माशा और बिनौले की मगज ७ माशा। इन सब चीजों को अच्छी तरहसे खरल करके चमेलीके ५ तोले तेलमे मिला कर रख लेना चाहिये। इसमे से दस दस पन्द्रह पन्द्रह बूंद प्रतिदिन मालिश करना चाहिये। २१ दिन तक इन दोनों प्रयोगो को करनेके पश्चात् पूर्ण चन्द्रोदय सिद्ध मकरध्वजके समान कोई पौष्टिक रसायन का सेवन करनेसे कष्ट साध्य नपुसकता भी दूर हो जाती है और रोगी की काम शक्ति अत्यन्त वेगवती हो जाती है।

# तेजपात ( तमालपत्र )

नाम—

संस्कृत—तमालपत्रा, तेजपत्र, गंधजात, सुरनिर्गन्ध, गोमेदक, पत्राख्य, छदन, अंकुश, इत्यादि। हिन्दी—तेजपात। गुजराती—तमालपत्र। मराठी—तमालपत्र। बंगाल—तेजपात। पंजाब—तमाल पत्र। तेलगू—आकुपत्री। द्राविडी—लवंग पत्रम्। फारसी—साज्रसू। लेटिन—Cinnamomum Tamala ( सिनेमोमम तमाल )।

वर्णन—

यह वृक्ष हिमालयमें ३ हजारसे ८ हजार फीटकी ऊंचाई तक और सिलहट तथा खासिया पहाडियोंमें ३ हजारसे लेकर ४ हजार फीटकी ऊंचाई तक पैदा होता है। इस वृक्षकी ऊंचाई २० फुटसे ४० फुट तककी होती है। इसका छाल भूरे और पीले रंगकी होती है। इसकी कोमल डालियाँ चोकोर, कुछ भूरे रंगकी और चिकनी होती है। इसके फूल सफेद रंगके होते हैं इसका फल आधा इंच लंबा होता है जो पकने पर काला हो जाता है। बैशाखमें इसके नये पत्ते आते है। तब यह वृक्ष छोटे पत्तोंके गुलाबी और प्याजी रंगसे बहुत सुन्दर दिखने लगता है। इसके पत्तोंमेंसे एक प्रकारका रंग निकाला जाता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मतमें तेजपातके पत्ते कड़वे, मधुर, उष्ण, विषनाशक और वात तथा खुजलीमें लाभदायक है। ये बवासीर और गुदा द्वारकी दूसरी बीमारियोंमें तथा बडी आंतके अधोभागके विकारोंमें लाभ पहुँचाते हैं। त्रिदोष हृदय रोग, पीनस और अरुचिमें भी ये लाभदायक हैं। इसके पत्ते तजके पत्तोंके समान होते हैं जो मसालेमें डाले जाते हैं।

तमालपत्रका उपयोग कफ और आम प्रधान रोगोंमे विशेष किया जाता है। अजीर्ण, उदर शूल, अतिसार, पाचन-नलिकाके, और गर्भाशयकी शिथिलता और सब प्रकारके कफ रोगोंमे यह उपयोगी वस्तु है। इसके लगातार सेवनसे गर्भपातकी आदत मिट जाती है।

यूनानीमत—यूनानीमतसे यह दूसरे दर्जेमे गरम और खुश्क है। यह प्राणवायुकी रक्षाकरता है। वात, और पित्त कफके विकारोंको नष्ट करता है। आंतोंकी वायुको बिखेरता है। पेटको शुद्ध करता है। पेशाब, पसीना, दूध और मासिकधर्मको साफ करता है। गुर्दे और मसाने की पथरीको तोड़कर निकाल देता है। पेटकी खराबीसे मुंहमें जो दुर्गंध आती है, उसको यह मिटाता है। पीलिया, जलोदर,

नथा यकृत और आंतोके रोगमें यह मुफीद है। भय जनित पागलपनमें भी यह लाभदायक है। इसकी धूनी देनेसे गर्भवतीके बच्चा शीघ्र पैदा हो जाता है। इसको हमेशा जवानके नीचे रखनेसे तोतलापन और हकलाहट मिट जाती है। इसको पीसकर आंखमें लगानेसे आंखका जाला और धुंद मिट जाती है। आंखमें होनेवाला नाखुना रोग भी इसके प्रयोगसे कट जाता है। इसको दांतों पर मलनेसे दांत मजबूत हो जाते हैं। और दांतोंमें कीड़ा नहीं लगता। इसके सेवनसे हृदयको शक्ति मिलती है और पागलपनमें लाभ होता है।

पंजाबमें इसके पत्ते संधिवातको दूर करनेके काममें लिये जाते हैं। ये उत्तेजक माने जाते हैं। उदर शूल और अतिसारमें भी इनका उपयोग किया जाता है। इसकी छाल सुजाक में लाभदायक मानी जाती है। प्रसूति के पश्चात इसका चूर्ण या काढा देनेसे प्रसूता को होनेवाला रक्तस्राव कम होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसकी छाल पेटके आफरेको दूर करने वाली और इसके पत्ते बिच्छूके विषमें उपयोगी है। इसमें एक प्रकारका उड़नशील तेल पाया जाता है।

उपयोग—

संधिवात—इसके पत्तोंका लेप संधिवातको मिटाता है।

वायुगोला—इसकी छालको पीसकर फांकनेसे वायुगोला मिटता है।

पसीना लाना और पेटका फूलना—इसका काढा पिलानेसे पसीना आता है और आंतों की खराबीसे पेटका फूल जाना, दस्त लग जाना वगैरह आराम हो जाते हैं।

आकारिया और उबकाई—इसके चूर्णको फकानेसे उबकाई और ओकारिया मिट जाती हैं।

तिल्लीकी सूजन और अंडकोषकी सूजन—इसकी छालका चूर्ण फकानेसे तिल्लीकी सूजन और अंडकोषकी सूजन मिट जाती है। सीनेसे सम्बन्ध रखने वाली बीमारियाँ, गर्भाशयका दर्द, पेशाब और मासिक धर्मकी रुकावट वगैरह कई बीमारियोंमें, इससे लाभ पहुँचता है।

सांप और अफीमका जहर—इसकी छालके चूर्णको खिलानेसे सांपका और अफीमका जहर उतर जाता है।

खांसी और जुकाम—इसकी छाल और लींडी पीपल को पीस कर शहदके साथ चाटनेसे खांसी और जुकाम मिटता है।

दमा और श्वास—तेजपात और पीपरको अदरकके मुरब्बेकी चाशनी में चाटनेसे दमा और श्वास नालीका उपद्रव मिट जाता है।

गर्भाशयकी शुद्धि—इसके पत्तोंके काढेसे गर्भाशयका खून और मवाद मैला वगैरह निकलकर

गर्भाशय शुद्ध हो जाता है।

सर्दीका पागलपन—इसके पत्तोका हलवा बनाकर खानेसे सर्दीका पागलपन मिट जाता है।

मात्रा—इसकी मात्रा ४ माशेतक है।

---

## तेजपत्र ( २ )

नाम —

संस्कृत—तेजपत्र, त्वचा, त्वक्पत्रा। लेटिन—Cinnamomum macrocarpum ( सिनेमोमम मेक्रोकारपम )।

वर्णन—

यह वनस्पति उत्तरी कनाडामे पैदा होती है। यह तेजपानकी ही एक उपजाति है। इसका वृक्ष मध्यम कदका और इसका फल लंब गोल होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसकी जडकी छालसे प्राप्त किया हुआ तेल और इसके पत्ते संधिवातकी बीमारीमें बाहरी उपचारकी तरह काममे लिये जाते हैं।

---

## तेजपात ( ३ )

नाम —

बंगाल—तेजपात, राम तेजपात, किताने। कुमाऊ—फट घोली। आसाम—पतिचदा। नेपाल—बरम्गिोली, भलेसिंकोली। लैटिन—Cinnamomum OptusiFolium ( सिने-मोमम आप्टूसीफोलियम )।

वर्णन—

यह भी तेजपात की एक दूसरी उपजाति है।

गुणदोष और प्रभाव—

नेपालमे इसकी छाल अग्निमाद्य और यकृतके रोगोंमे काममे ली जाती है।

---

# तेलिया कन्द

नाम —

संस्कृत—तैल कन्द। हिन्दी—तेल कन्द, तेलिया कन्द। बंगाल—तेल कन्द। मराठी—तेल कन्द।

वर्णन—

पारे की गोली बांधने वाली तथा ताम्बे को सोने के रूपमें परिवर्तित कर देने वाली जो ६४ दिव्य औषधियां आयुर्वेदमें मानी गई हैं उनमें तेलकन्द भी एक है। यह वनस्पति बहुत प्रभावशाली है। मगर आयुर्वेदके किसी प्रमाणिक ग्रन्थमें इस वनस्पति की पहिचानके सम्बन्धमें कुछ भी वर्णन नहीं पाया जाता।

कैवल राज निघण्टुमें इस औषधिका परिचय देते हुए लिखा है कि तेलिया कन्दके पत्ते कनेरके पत्तों की तरह और चिकने होते हैं। उनके ऊपर काले तिलके समान छींट पड़े हुए रहते हैं वे पृथ्वी की तरफ झुके हुए रहते हैं। इस औषधि का कन्द बहुत बड़ा होता है।

गुणदोष और प्रभाव —

आयुर्वेदके मतानुसार तेल कन्द लोहे को पतला करने वाला, चरपरा, गरम और वात, अपस्मार, और विषको नष्ट करने वाला है। यह पारे को बांध देता है तथा शरीर और धातुओं को सिद्ध करता है।

जंगलकी जड़ी बूटीके लेखक वैद्य शास्त्री शामलदास गोर लिखते हैं कि हमारी जगन्नाथ की यात्रामें एक परम तेजस्वी वृद्ध महात्माके साथ हमारा परिचय हुआ। उनके साथ दिव्य औषधियों पर बातचीत करते समय जब तेलिया कन्द का प्रसङ्ग आया तब उन महात्माने कहा कि आबू, गिरनार, विंध्याचल, हिमालय, वगैरह पहाड़ोंमें तेलिया कन्द पैदा होते हैं। यह वनस्पति बहुत चमत्कारिक है और भाग्यशाली मनुष्योंके ही हाथमें यह आती है। मेरे हाथमें यह औषधि नहीं आई पर बाल्यावस्थामें जब मैं अपने गुरुके साथ फिरता था तब एक बार बद्रीनारायणके रास्तेमें एक पहाड़ पर मेरे गुरु की दृष्टि अकस्मात एक पौधेके ऊपर पड़ी। उसके पत्ते मूलीके पत्तोंसे मिलते हुवे परन्तु रंगमें पीले थे और उनके ऊपर जैसे तेल चुपड़ा हुआ हो ऐसा दिखलाई देता है। यह पौधा ऊंचाईमें करीब २ फुट और घेरावमें लगभग ४॥ फुट था। इस सारे पौधे पर करीब २ पत्ते थे। इस पौधे का पिण्ड मुठ्ठीमें आ जाय इतना मोटा था। इस पिण्ड की छाल आम की छालसे मिलती हुई थी और इस पर पीले रंगके फूल आये हुए थे। इस पौधेके नीचे की मिट्टी जैसे तेलमें भींगी हुई हो ऐसी दिखलाई देती थी। मेरे गुरु उस पौधे को देखते ही एकाएक रुक गये और आश्चर्य भरी

दृष्टि से उस पौधे को देखने लगे। कुछ देर बाद उन्होंने मुझे कहा कि बच्चा, काम हो गया। ऐसा कह करके उन्होंने अपनी झोलीमें से १० रुपये मुझे निकाल कर दिये और कहा कि पास हीके गावसे १ कुदाली और १ बकरी खरीद कर ले आ। जब मैं दोनों चीजें लाया तब उन्होंने कुदालीसे उस पौधे की आसपास की जमीन को खोदा। जब उसके नीचे की गाठ दिखलाई देने लगी तब खोदने का काम बन्द करके उस बकरी को १ रस्सीसे उस पौधेके बाध दी और दोनों व्यक्ति एक झाड पर चढ गये। इधर बकरी उस बन्धन को छुडानेके लिये जोरसे खींच तान करने लगी। जिससे वह पौधा कन्दके साथ उखड गया और उस कन्दके नीचेसे फुफकार मारता हुआ एक अत्यन्त भयकर साप भी निकल आया। यह साप इतना क्रोधित हो रहा था कि बकरी उस कन्द को लेकर २० हाथ भी नहीं पहुंची होगी कि इतने ही मे उसको पकड कर १०।२० जगह काट लिया। बकरी तो देखते २ प्राण हीन हो गई। मगर वह सर्प इतना क्रोधित था कि मरनेके बाद भी उसको काटता रहा और जब तक बिलकुल हीनवीर्य नहीं हो गया तब तक उसे काटता रहा और अन्तमे उस बकरी पर फन को पछाडते हुए खुद भी मर गया।

जब वह सर्प मर गया तब हम दोनों झाड परसे नीचे उतरे और उस कन्द को उठाया। इस कन्द का वजन करीब ४ सेर था और इसको दबानेसे तेलिया रगका लाल रस निकलता था।

इस औषधिका किस प्रकार उपयोग किया जाता है इसको प्रकाशित करनेकी गुरुजी की आज्ञा नहीं होनेसे मैं इसको प्रकाशित नहीं कर सकता। फिर भी इतना कह सकता हूँ कि इस रससे पारेकी गोली बाधी जाती थी और उस गोलीके सयोगसे ताबा और चादीके समान हलकी धातुए सानेके रूपमें बदल जाती थीं। इसके अतिरिक्त इस गोलीको आधा घंटे तक दूधमें रख कर उस दूधका पीनेस दुसाध्य नपुसकको भी पुरुषार्थ प्राप्त होजाता था। इसके सिवाय वायु, उन्माद, सूजन, जलोदर, इत्यादि रोगो पर भी यह औषधि बहुत अच्छा काम करती थी।

सुप्रसिद्ध वनस्पति शास्त्री रूपलालजी वैश्यने बूंटी दर्पण मासिक पत्रके सन १९२६ के अक्टोबरके अकमें लिखा था कि श्रीभैय्यालाल पाडेयकी तरफसे तेलिया कदके नामसे एक सारा पौधा मुझे मिला है। इस पौधेका चित्र भी इस अकमें दिया जारहा है। चित्रसे मालूम होता है कि इस पौधेके पत्ते चिकने तो हैं मगर ये कनेरके पत्तोंकी तरह नहीं है बल्कि सूरणके पत्तोंकी तरह है। इसके पत्तोंके ऊपर काले तिलके समान छींटे नहीं है। परन्तु डंडीके ऊपर ऐसे छींटे अवश्य हैं। इसका कद तेलिया रंगका और कुछ त्रिकोणाकार है। ऐसा कहा जाता है कि तेलिया कंदका कद बहुत बड़ा होता है। मगर यह कद तो साधारण आलूके बराबर ही है।

इससे ऐसा मालूम होता है कि यह पौधा बहुत छोटी ऊमरका है। भैय्यालाल पाडेयका कथन है कि इस पौधेके आसपासकी भूमि हमेशा तेलमे भीगी हुई रहता है और जहासे यह कन्द निकाला गया था उसके आसपास कोई दूसरा पौधा देखनेमें नहीं आया।

अनुभूत योग मालाके सन १९३४ के अक्टोबर मासके अंकमें इस कंदका परिचय देते हुए लिखा था कि दक्षिण और मध्य भारतमें एक ऐसा विचित्र कंद पैदा होता है जो अत्यन्त दुर्गम पहाड़ी स्थानो पर होता है। जहा मनुष्यकी पहुंच बहुत कठिनतासे होती है। इस कदको तेलिया कंद कहते हैं। इसमेंसे लाले रंगकी तेलकी धार बहती रहती है। जो पृथ्वी और पत्थरों के ऊपर बहती हुई नजर आती है और उसी तेलकी चिकनाईसे यह पता चलता है कि इस जगह पर तेलिया कन्द है। वृद्ध लोगोंका कथन है कि ताम्बे को अग्निमे गलाकर उसमे अगर तेलिया कदका रस डाल दिया जाय तो वह सोना हो जाता है। अगर कोई मनुष्य इस कदके रसका सेवन करे तो उसे कभी बुढापा नहीं आता।

इन सब बातोंमें सत्यका कितना अंश है यह कुछ भी नहीं कहा जा सकता। अभी तक यह वनस्पति, वनस्पति शास्त्र विद्वानो और जन साधारणकी जानकारीमें नहीं आई है। फिर भी साधुसन्तोंके मुहसे इसके विषयमे कई आश्चर्य जनक बाते सुनाइ आती है। उसी प्रकार रस प्रयोग भी इस वनस्पति सम्बन्धमे कई आश्चर्यजनक बाते पाई जाती है इससे मालूम होता है कि अवश्य ही यह चमत्कारिक वनस्पति है जो आधुनिक जन समाजकी ज्ञानसे छिपी हुई है। ऐसी दिव्य वनस्पतिके सम्बन्धमे खोज करनेका भार प्रत्येक वैद्यको महसूस करना चाहिये।

—

## तोड

नाम —

यूनानी—तोड़।

—वर्णन

यह वृक्ष समुद्रके किनारे पर पेदा होता है। इसका फल इमलीकी तरह होता है। जिसका स्वाद कुछ कसैला होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसका फल दुधारू जानवरोंको खिलानेमे उनका दूध बहुत बढ जाता है। इस औषधिके सेवनसे कुष्ठमे भी लाभ होता है। (ख० अ०)

—

# तोड़ी

नाम —

यूनानी—तोडी। तेलगू—दूटीकोरा।

वर्णन—

यह एक प्रकारकी बेल होती है। जो तरकारी बनानेके काममे आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह गरम और खुश्क है तथा कफ, वायु और पीलियाके रोगोमे लाभदायक है। (ख० अ०)

—

# तोड़ा मारम

नाम—

लटिन—मलयलम—तोडा मारम। मद्रास—थारानू। तामील—मदना गमेसुवरि। अंग्रेजी Ohina Fern polm चाइना, फर्न, पाम। Creas Rumphii साइकास रफी।

व० विवरण इसका वृक्ष १-८ मीटरके आकार का होता है। इसके पत्ते ६ से १८ मीटर तक लम्बे होते हैं। इसके पत्र वृन्त चौकोर और जाडे रहते हैं। इसके बीजे फिसलने होते हैं।

उत्पत्तिस्थान—चीन, दक्षीणी जापन, फारमोसा टाकिग। यह वनस्पति भारतवर्षके बगीचोंमे भी बोई जाती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति कफ निस्सारक और पौष्टिक मानी जाती है।

कर्नल चोपराके मतानुसार—इसका गोंद दुष्ट व्रणोंपर लगानेके काममें लिया जाता है। यह वेदना शून्यता लानेवाला है। इसका छिलका वेदना शून्यता लानेवाले गुणके कारण अधिक मशहूर है।

कुर्जके मतानुसार—इसका गोंद दुष्ट व्रणोंपर लगाने काममें लिया जाता है। यह बहुत कम समयमें ही मवाद पैदा कर देता है।

कम्बाडियामें इसकी बगर पत्तिदार गठान पानीमें पीसली जाती है। ये चावलके पानीके साथ अथवा पानीके साथ भी पीसकर छान ली जाता है। इसे पके हुए घावोंपर, सूजी हुई ग्रन्थियों पर और फोड़ों पर लगाते हैं।



# तोदरी सफेद

नाम—

पंजाब—तोदरी सफेद। हिन्दी—तोदरी सफेद। युनानी और उर्दू—तोदरी सफेद। लेटिन—Mathiola Incana (मेथिओला इनकेना)।

वर्णन—

इस वनस्पतिका मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिमी यूरोप और भूमध्य सागरका प्रान्त है। मगर अब यह भारतवर्षके बगीचोंमें भी बोई जाती है। इसका पौधा ३० से लेकर ६० सेंटि मीटर तक लम्बा होता है। इसके पत्त लंबे, और फूल बेगनी तथा लाल होते हैं। इसकी फलियां८से लेकर १० सेंटिमीटर तक लम्बी होती हैं जिनमें मसूरके दानोंके समान छोटे, चपटे और चौडे बीज भरे हुए रहते हैं। ये बीज तीन जातियोंके होते हैं। लाल, पीले और सफेद। सफेद बीज लाल और पीले बीजोंसे कुछ बड़े होते हैं। गुणमें पीले रंगके बीज अच्छे होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मतमें यह दूसरे दर्जेमें गरम और तर है। कोई २ इसे खुश्क भी बतलाते हैं। इसके बीज काम शक्ति वर्धक, धातुको पुष्ट करने वाले और शरीर को मोटा बनाने वाले होते हैं। इनके सेवनसे कामेन्द्रियमें बहुत उत्तेजना होती है। गालोंका रंग निखर जाता है। आवाज साफ

होजाती है। खासी मिटती है। इनको पानीमें पीसकर लेप करनेसे सूजन बिखर जाती है। तथा शहदमे मिलाकर चाटनेमे फेफडेमे जमा हुआ कफ निकल जाता है।

इनको पोटलीमे बाधकर गायके दूधकी कढाहीमें लटकाकर उस दूधको उबालकर पीनेसे कामोत्तेजना होती है। इसके बीजों को ६ माशेकी मात्रामें लेकर उसमे ६ माशे शक्कर मिलाकर देनेसे स्त्रियोंके स्तनोंमे बहुत दूध बढता है। गृध्रसी और पीलियामें भी यह मुफीद है।

साहिबे कामिलके मतसे यह बदनमे तरी पैदा करती है। आमाशय और आतोकी सरदी को मिटाती है। हाजमें को बढाती है। इसको पीमकर लेप करनेस कारबकल अथवा पीठपर होनेवाले फोडेकी सूजन और अडकोषकी सूजन भी मिट जाती है। इसको शहदमें पीसकर आखमे लगानेसे आंखका जखम अच्छा होता है और मैल साफ होजाता है। इसका काढा शराबके साथ पीनेसे विषके उपद्रव मिटते हैं।

मुजिर—इसको अधिक मात्रामें अधिक दिनो तक सेवन करनेसे पेटके भीतरी अगों को नुकसान पहुँचता है।

दर्पनाशक—इसका दर्पनाशक जरेशक है।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि बहमन सुर्ख और बहमन सफेद है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा ६ माशेसे ६ माशे तक है। मगर जहरके उपद्रवोंको दूर करनेके लिये इसकी मात्रा १० माशेस १५ माशे तक है।

इमर्सनके मतानुसार इसके पत्ते नासूरकी बीमारीमें अन्त प्रयोगमें काममे लिये जाते हैं। इनको शराबके साथ मिलाकर देनेसे जहरीले जानवरोंका जहर दूर होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके बीज कामोद्दीपक, उत्तेजक, कफ निस्सारक और विष नाशक होते हैं।

---

## तोदरी सुर्ख

नाम—

हिन्दी—तोदरी सुर्ख। बगाल—खुएटी। यूनानी—तोदरी सुर्ख। लेटिन—Cheiranthus Cheiri (चिरेंथस चेरी)।

वर्णन—

इन वनस्पतिका मूल उत्पत्ति स्थान मध्य और उत्तरी यूरोप है मगर अब यह भारतके

बगीचोंमें भी बोई जाती है। यह एक बहुशाखी झाड़ी होती है। इसके पत्ते बरछी आकारके रहते हैं। इसके फूल बड़े, हलके पीले और लाल रंगके रहते हैं। इसकी फली ४ से ६ सेंटिमीटर तक लंबी होती है। जिसमें बीज भरे रहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके बीज पौष्टिक, मूत्रल, कफनिस्सारक, अग्निवर्द्धक और कामोद्दीपक होते हैं। ये सूजी खांसी, ज्वर, और आखोंकी बीमारीमें लाभदायक हैं।

इसके फूल हृदयको पुष्ट करनेवाले, ऋतुश्रावनियामक और पक्षाघात तथा नपुंसकताको दूर करनेवाले होते हैं।

रासायनिक विश्लेषण—इसके पत्ते और बीजोंमें बेरीनाइन नामक उपक्षार पाया जाता है और इसके फूलोंमें क्वर्सिटिन ( quorcoun ) नामक पदार्थ पाया जाता हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति ऋतुश्राव नियामक है।

---

# थन

नाम —

बरमा—थन। लेटिन—Terminalia oliveri ( टर्मिनेलिया ओली व्हेरी )।

वर्णन —यह एक मध्यम कदका वृक्ष होता है जो उत्तरी बरमामें पैदा होता है। इसके पत्ते गोलाकार और फूल छोटे होते है।

गुण, दोष और प्रभाव—केस और महरकरके मतानुसार इसकी छाल हृदय को पुष्ट करने वाली और मूत्रल होती है।

---

# थिट्टो

नाम —

बरमा—थिट्टो। तामील—सेवाइ। तेलगू—सेवामनु। लेटिन—Sandoricum Indicum ( सेण्डोरिकम इण्डिकम )।

वर्णन—

इस वनस्पतिके वृक्ष की ऊंचाई १२ से लेकर २४ मीटर तक की होती है और इसके पिण्डकी गोलाई ४५ से ५० सेंटिमीटर तक होती है। इसके पत्तों की लम्बाई २३ से लेकर ४५ सेंटिमीटर तक होती है। इस वनस्पति की खेती वरमामें बड़े पैमाने पर होती है। इसके अतिरिक्त पेगू और टेनेसेरिमके जंगलोंमें तथा सीलोनमें भी यह वनस्पति पाई जाती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसका पौधा सुगन्धित, अग्निवर्धक और आक्षेप निवारक माना जाता है। जावा और फिलिपाइन्सके अन्दर यह एक जोरदार सङ्कोचक द्रव्य की तरह काममें लिया जाता है।

रफियसके मतानुसार इसका पौधा जो कि कड़वा होता है जलके साथ घिस कर एक शान्तिदायक पदार्थके रूपमें दिया जाता है। अतिसार ( Dysentry ) और पतले दस्तो को ( डायरिया ) रोकनेके लिये भी इसका उपयोग किया जाता है।

---

# थूहर तिधारा

नाम—

संस्कृत—त्रिधारस्नुहि, त्रियस्त्र, वागस्नुहि, वज्रकण्टक, त्रिधारक, वज्री। हिन्दी—थूहर तिधारी, आगलिया थूहर। गुजराती—तरधारो थोर। मराठी—तिधारी निवडुङ्ग। बंगाल—तेकाटा, सिज। तामील-चतुरकल्ली। अंग्रेजी—Triangular Sponge। लेटिन—Euphorbia Antiquorum ( इफोर्बिया एण्टीकोरम )। उर्दू—जकुम।

वर्णन—

तिधारा थूहर एक प्रसिद्ध वनस्पति है जो सारे भारतवर्ष के सूखे स्थानों में अक्सर पाई जाती है इसकी डालिया तिधारी और पचधारी होती है। इसके बहुत छोटे २ पत्ते लगते हैं। किसी २ झाडके नहीं भी लगते है। औषधिमें इसकी जडें, डालिया और दूध काममें आता है। थूहर वर्ग की औषधियाँ बहुत उग्र स्वभाव की होती है। इसलिये इनका उपयोग बिना किसी योग्य वैद्य की सलाहके नहीं करना चाहिये।

गुणदोष और प्रभाव

तिधारी थूहर कफ नाशक, ज्वरघ्न, रेचक और रक्त को शुद्ध करने वाली होती है। इसके सेवनसे कफ पतला होकर मुँह या गुदाके रास्तेसे निकल जाता है।

नीनधारी थूहरको बच्चोंके कफ रोग अर्थात् खाँसी वगैरहमें देनेका बहुत रिवाज है। ऐसे रोगोंमें यह अडूसेके साथ अथवा सुहागी और शहदके साथ दी जाती है। तेलगू लोग इसकी जड़ों के क्वाथ को जीर्ण आमवात और उपदंशमें देते हैं।

मात्रा —इसकी डालियोंको भूँजकर उनका रस निकाला जाता है। यह रस बच्चोंको तीन माशेतककी मात्रामें देते हैं।

इसकी जड़ोंको हींगके साथ पीसकर एक पट्टी तयार की जाती है। इस पट्टीको बच्चोंके पटपर रखनेसे पेटके कृमि नष्ट हो जाते हैं। इसकी जड़की छाल विरेचक होती है। इसकी लकड़ीका काढ़ा सन्धिवातमें उपयोगी माना जाता है।

इसकी शाखाओंमेंसे निकलनेवाला दूधिया रस एक तीव्र विरेचक पदार्थ है। यह स्नायु-मंडलकी बीमारियाँ, जलोदर और बहरेपनमें उपयोगी होता है। बाह्य प्रयोगके अन्दर इसका उपयोग करनेसे जलन पैदा होती है। इसको कमर पर लगानेसे कमरका दर्द मिटता है। सन्धिवात और दाँतोंके दर्दमें भी यह उपयोग में लिया जाता है।

इसका रस अधिक समय तक पार्यायिक ज्वर आनेके कारण पैदा हुए जलोदर रोगमें तथा विस्फोटक रोगोंमे काममें लिया जाता है।

वर्माेंमें इसकी जड़को देशी शराबके साथ मिलाते हैं जिससे कि यह ज्यादा नशीली हो जाती है। इसको घावोंके कृमियोंको नष्ट करनेके लिय और कानके दर्दको मिटानेके लिये काममें लेते है।

उपयोग—

डाढ़का दर्द—इसके दूधमें रूईका फोया भिगोकर उस फोयेको घी में जलाकर डाढ़में रखनेसे डाढ़का दर्द मिटता है।

जलोदर—इसके दूधको किसी औषधिमें मिलाकर खिलानेसे तीव्र विरेचन होकर जलोदरमें लाभ होता है।

बहिरापन—इसके दूधमें तेलको सिद्ध करके उस तेलको कानमें टपकाते रहनेसे कानका बहिरापन मिटता है।

कृमिरोग—इसकी जड़ और हींगको पीसकर पेटपर लेप करनेसे बच्चोंकी आंतोंके भीतरके कीड़े मर जाते हैं।

जोड़ोंका दर्द—इसकी डालियोंका औटाकर पिलानेसे छोटे जोड़ोंकी पीड़ा मिटती है।

( २ )—इसके ताजे रसकी मालिश करनसे भी जोड़ो की पीड़ा मिटती है।

खांसी—इसके रसमे अड़ूसेके पत्तोंका पीसकर छोटी २ गोलियाँ बनाकर चूसनेसे खांसी मिटती है।

बिजलीका गिरना—ऐसा कहा जाता है कि जिस घरकी छतपर तिधारी थूहरके गमले पड़े रहते हैं उसपर बिजली नहीं गिरती।

नाट—विरेचनके लिये इसके दूधको बहुत छोटी मात्रामें देना चाहिये क्योंकि यह बहुत उग्र स्वभावी होता है।

---

## थूहर घोटा

**नाम—**

संस्कृत—स्नूही, सुधा, समन्तदुग्धा, नागद्रु, बहु दुर्गंधका, महावृक्ष, वज्रा, सेहुँड, दड वृक्ष, इत्यादि। हिन्दी—थूहर, घोटा थूहर, सेहुँड, कांटा थूहर। बंगाल—मनसा गाछ, सिजवृक्ष। मराठी—निवडुंग, वड़निवडुंग, फणींचे निवडुंग। गुजराती—थोरदांडलिया, कटालो थोर, नाना परदेशी। तेलगू—अपुजे मुद्दु, अकोकुल्लि। तामील-इलैकल्लि। लेटिन—Euphorbia Nerifolia ( इफार्बिया नेरिफोलिया )।

**वर्णन—**

यह भी थूहरकी एक जाति होती है। इसका पौधा १० फुट तक ऊंचा बढ़ता है। इसकी डालिया लंबे २ डंडोंके रूपमें रहती है। जिन पर बड़े तीक्ष्ण कांटे होते हैं। ये डालियाँ पोली होती हैं। इसके पत्ते ६ इंच तक लंबे और दो ढाई इंच तक चौड़े होते हैं। इस पौधेका कोई भी हिस्सा तोड़नेसे उसमेंसे दूध निकलता है।

**गुणदोष और प्रभाव—**

( आयुर्वेदिक मत )—आयुर्वेदिक मतसे थूहर रेचक, तीक्ष्ण, अग्निदीपक, कड़वी, भारी तथा उदर शूल, आफरा, कफ, गुल्म, उन्माद मूर्च्छा, कुष्ट, बवासीर, मृजन मेदरोग, पथरी, पाण्डुरोग, व्रण, शोथ, ज्वर, प्लीहा और विषको दूर करती है।

थूहर का दूध उष्णवीर्य, स्निग्ध, चरपरा और तीव्रविरेचक होता है। उपदंश, कुष्ट और प्राचीन उदर रोगमे इसका जुलाब हितकारी होता है।

थूहरके पत्ते तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाले, रुचिकारक और खासी, आफरा, उदर शूल, सूजन और उदररोग को दूर करनेवाले होते हे।

इस थूहर का दूध बहुत तीव्र विरेचक पदार्थ है। इससे वमन और पानीके समान दस्त होते हे। इसकी डालियों का रस भी विरेचक होता है। इसके पत्तों का रस मूत्रल और जडों का रस विरेचक होता है। उदर रोगोंके अन्दर, काली मिरचों को इसके दूधमे डुबो कर सुखा लेते हे और तीव्र रेचन की आवश्यकता पडने पर उन मिरचोंमे से एक या दो दाने खिला देते हे। सूतिका ज्वर और साँपके विषमे इसकी जडों को काली मिरचके साथ पीसकर देते है। इसके दूध को चमडे पर लगानेसे जलन पैदा होकर छाला उठ जाता है। प्राचीन आमवात और सन्धिवातमे इसके रसको नीमके बीजोंके तेलके साथ मिला कर मालिश किया जाता है। सकोच विकास प्रधान दमेमे इसके पत्तोंका स्वरस दिया जाता है। इसके पत्तो को गरम करके उनका रस निकाल कर छोटे बच्चों को खासी दूर करने के लिये दिया जाता है।

इसके रसको गरम करके कानोंमे डालनेसे कान का दर्द दूर होता है।

कोमानके मतानुसार इस वनस्पति का रस शर्बतके साथ मिलाकर १० से २० बूद तक की मात्रामे दमे की बीमारीमे दिनमे तीन बार पिलाया गया। इससे उन दमेके बीमारो को काफी आराम मिला।

कर्नल चोपराके मतानुसार इसके पौधे पर चोट लगानेसे जो दूध निकलता है वह कानके दर्दमे बहुत लाभ पहुँचाता है। इस दूध को जलोदर और सूजन की बीमारीमें भी काममे लेते हैं। यह एक तीव्र विरेचक पदार्थ है। इसकी जड कृमिनाशक और साप तथा बिच्छूके विषपर उपयोगी मानी जाती है।

उपयोग—

जलोदर—हरड, पीपल और निसोथ आदि रेचक औषधियोको इसके दूधमें तर करके खिलानेसे तीव्र विरेचन होकर जलोदर सूजन व आफरा मिट जाता है।

सापका विष—इसकी जडको काली मिर्चके साथ पीसकर पिलानेसे और दश स्थानपर लेप करने से सापका विष उतर जाता है।

मस—त्वचाके ऊपर जो मस और दूसरे कठोर फोडे फुन्सी हो जाते हैं वे इसके दूधको लगानेसे मिट जाते हैं।

पागल कुत्तका विष—थूहरके डंडेका गूदा और अदरक मिलाकर खिलानेसे पागल कुत्तेके विषमें लाभ होता है।

कानका दर्द—थूहरके रसकी कुछ बूंदें कानमें डालनेसे कानका दर्द मिट जाता है।

नेत्ररोग—थूहरके रसमें मीठे तेलके काजलको खरल करके, सुखाकर, आंखमें आंजनेसे आंखका दुखना और गीडका आना बंद होजाता है।

खांसी—थूहरके पत्तोंको आगपर गरम करके मसलकर रस निकालकर देना चाहिये। दो पत्तोंके रसमें थोडासा नमक मिलाकर पीनेसे खांसी आराम हो जाती है।

फोडे फुन्सी—इसको मक्खन या घीके साथ मिलाकर बिगड़े हुए फोडों पर लगानेसे बड़ा लाभ होता है। इसके रसको घीमें मिलाकर मालिश करनेसे खुजली भी मिट जाती है।

मांस पेशियोंकी सूजन—मांस पेशियोंकी सूजन पर इसका दूध लगानेसे सूजन बिखर जाती है।

खांसी और दमा—थूहरका खार निकालकर उसको खिलानेसे खांसी और दमेमें लाभ होता है।

कामेंद्रियकी शिथिलता—थूहरके दूध और प्याजके अर्कमें महीन मलमलके कपडेको तीन बेर भिगो २ कर सुखाले फिर उसे अलसीके तेलमें ८ प्रहर तक पडा रक्खे। उसके बाद कामेंद्रिय पर सुपारी वाले हिस्सेको छोडकर और मक्खन लगाकर उस कपड़ेको लपेट दें। इस पट्टीको तीन घंटे तक बंधी रखकर खोल दें। इस प्रयोगसे कामेंद्रियकी शिथिलता नष्ट होकर वह पुष्ट होती है।

मात्रा—इसके जडके चूर्णकी मात्रा २ से ४ रत्ती तक, रसकी मात्रा २ से ५ बूंद तक और दूधकी मात्रा १ रत्ती तककी है।

---

## थूहर खुरासानी

नाम

संस्कृत—बहुक्षीरा, दण्डाश्रुता, दडेरी, वज्रद्रुमा, त्रिकुटका। हिन्दी—थूहर, बारकी थूहर, सिर थूहर। बंगाल—लंकासिज, लटदवना। गुजराती—टाडलियो थोर, परदेशी थोर, खरसाणी थोर। मराठी—शेर निवली निवडुंग। पोरबन्दर—खारसनी थोरा। बंबई—निवल, नेहुँड, शेर। फारसी—मकुनियाँ हिन्दी। अरबी—अजफर मुकम। तामील—कल्लि, किरि, तिरुवली।

तामिल—.... तेलगू—चेमुदु, कल्लि। लेटिन—Euphorbia Tirucalli (इफोर्बिया टिरुकल्लि)।

वर्णन—

यह भी थूहरकी एक जाति है। इसकी डालियाँ पतली, गोल, लंबी और हरे रंगकी होती हैं। इन डालियोंको तोड़नेसे बहुत दूध निकलता है। इसके पत्ते और फूल कोमल शाखाओं के ऊपर आते हैं। यह वनस्पति गुजरातके अन्दर बहुत पैदा होती है। वहाके खेतों और वाड़ियोंके आसपास इसी पौधेकी बाड़ लगाई जाती है। इस वनस्पतिका मूल उत्पत्तिस्थान पूर्वी आफ्रिका है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार यह वनस्पति गरम और पित्त, कुष्ट तथा धवल रोगमें उपयोगी है। इसका दूध विषनाशक, पेटके आफरेको दूर करने वाला और वात रोगोंमें लाभ पहुँचाने वाला होता है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसका रस विरेचक और पेटके आफरे को दूर करने वाला है। यह सुजाक, ग्रामी, दमा, जलोदर, कोढ तिल्लीका बढना, अग्निमान्द्य, पीलिया, उदर शूल और पथरीमें लाभदायक है। सन्धिवातके ऊपर इसके दूधको एक चर्मदाहक पदार्थके रूपमें मालिशकी जाती है। उपदंश रोगके अन्दर यह एक उत्तम धातु परिवर्तक औषधि मानी जाती है। स्नायु रोगमें भी इसकी मालिशसे लाभ होता है।

इसका दूध एक अत्यन्त दाह जनक पदार्थ है। इसको एक रत्तीकी मात्रामें चनेके आटेमें मिलाकर गोली करके देनेसे तीव्र विरेचन होता है।

मात्रा—इसकी मात्रा खानेके लिये एकसे लेकर दो बूंद तक है।

गुजरातके अन्दर इस वनस्पतिके दूधको सन्धिवात की पीड़ापर चुपड़नेका बहुत रिवाज है और इससे बहुत लाभ होता हुआ भी देखा जाता है।

---

## थूहर नागफनी

नाम—

संस्कृत—बहु दुग्धिका, कथारी, कटसे, वज्रहुशली, शोद श्रृङ्गका, नागफना, शाखाकटा वज्र कटका। हिन्दी—नागफनी थूहर, चापा थूहर, हत्ता थूहर। बंगाल फणी मनसा, निदर

नागफना, गुजराती—थोर हाथलो। मराठी—फणी निवडुग, चपल, नागफना। तामील—नाग-तालि, नागदली। तेलगू—नागदली नागजेमुडु। अंग्रेजी—Prickly pear प्रिकली पेअर। लेटिन—Opuntia Dillonii (ओपटिया डिलोनाई)

वर्णन —

नागफनी थूहरकी झाडी प्राय सब दूर प्रसिद्ध है। इसके पत्ते हाथके पंजेकी तरह या नागके चौडे फनकी तरह होते हैं। इन पत्तोंके ऊपर बहुत तीक्ष्ण काटे लगे रहते हैं। इस वनस्पतिका काटा बहुत तीक्ष्ण और घातक होता है। इसके फूल पीले और नारंगी रंगके और फल सुर्ख लाल रंगके होते हैं। इन फलोंके ऊपर भी काटे रहते हैं। इन फलोंका रस अत्यंत स्वादिष्ट और मीठा होता है। पहिले इस वनस्पति की झाडी जहापर पैदा होती थी वहासे अत्यंत प्रयत्न करनेपर भी नष्ट नहीं होती थी और बढती जाती थी। मगर कुछ दिनोंसे सफेद रंगके एक ऐसे छोटे कीडेका आविष्कार हुआ है जिसने ४-५ वर्षोंके अन्दर ही इस वनस्पतिका सारे देशमें मूलोच्छेद कर दिया है। अबतो कहीं कहीं पर ढूंढने खोजने से यह वनस्पति प्राप्त होती है।

गुणदोष, और प्रभाव —

आयुर्वेदके मतसे यह वनस्पति कडवी, उष्ण मृदु विरेचक, अग्निवर्धक, पेटके आफरेको दूर करनेवाली, ज्वर नाशक और विष शामक है। पित्त, जलन, धवलरोग वात, मूत्रसम्बन्धी शिकायतें, अर्बुद, जलोदर, बवासीर, प्रदाह, रक्तात्पता, पथरी, गुल्म और तिल्लीमें यह उपयोगी है। इसके फल बहुत स्वादिष्ट और अग्निवर्धक होते हैं। ये प्रदाह, जलोदर, अर्बुद और उदर शूलमें लाभदायक हैं। इसके फूल खासी और दमें को दूर करते हैं। इसके पत्तोंका रस गरम, विष-नाशक तथा जलोदर, धवलरोग और उपदंशमें लाभ दायक है।

यूनानी मत—यूनानी मतसे यह वनस्पति कडवी, पाचक, पेटके आफरे को दूर करनेवाली, मूत्रल और विरेचक होती है। इसको देनेमें बच्चोंका वायुनलियोंका प्रदाह मिटता है। धवलरोग, तिल्ली, नेत्ररोग, यकृतरोग, कटिवात और प्रदाहमें भी यह लाभदायक है। इसका रस कानोंके दर्दको दूर करनेके काममें लिया जाता है।

यूनानी हकीम इसकी २ जातिया मानते हैं एक मीठी और दूसरी खट्टी। खट्टी जातिके पत्तोंको काटे वगैरह साफ करके टुकडे करके पानीमें तर करके रातको ओसमें रख दें सवेरे उनको मल छानकर मिश्री मिलाकर पीनेसे खून बढता है। इन पत्तोंको साफ करके जरा हल्दी लगाकर बवासीर पर बाधनेसे बवासीरमें लाभ होता है। इसके दूधकी १० बूंद शक्करमें मिलाकर खानेसे खून दस्त आते हैं। इसके फलका गूदा ३॥ माशे शर्बतमें मिलाकर सदलके तेलके १० बूंद डालकर पिलानेसे सुजाकमें लाभ होता है। इसके पंजेका गूदा आखपर बाधनेसे आखको

दुग्नना नद हो जाता है। इसके पचाग को तिलके तेलमे तलकर उस तेलको छानकर दर्दके स्थानपर मालिश करनेसे सब प्रकारका दर्द आराम हो जाता है। इसके बीजोका तेल अत्यत काम शक्ति वर्धक है। इसको कामेंद्रिय पर मालिश करनेमे बहुत उत्तेजना और सख्ती पैदा होती है।

*रासायनिक विश्लेषण* —इसके पके हुए फलामें शक्कर ३० प्रतिशत, मान्सजन्य द्रव्य ६। प्रतिशत चरबी, ३॥ प्रतिशत और पानी ५६ प्रतिशत होताहै। इसको जलाकर इसकी राखमेस क्षार निकाला जाता है। यह क्षार पानीके अन्दर घुलनशील होता है।

सन्याल और घोपके मतानुसार इस वनस्पतिमें मेगनेशिया, मेलिक एसिड, शक्कर, साइट्रिक एसिड, मोम और कुछ राल पाई जाती हैं। इसमे उपक्षार नहीं पाये जाते।

डाक्टर देसाईके मतानुसार इसके फलोका रस दाहशामक, कफ नाशक और सकाच विकास प्रतिबन्धक होता है। इसके लेनेसे पित्तश्राव अधिक होता है और पेशाबका रंग कुछ लाल होजाता है। इसके पंचागसे निकाला हुआ क्षार आनुलामिक और मूत्रल होता है। इसकी जडें रक्त शोधक होती हैं। इसका दूध विरेचक होता है। इसके पचागका स्वरस हृदयके लिये बलदायक पदार्थ है। हृदयके ऊपर इसकी क्रिया साधारणतया डिजिटेलिस की तरह होती है।

इसके फलोंका शरबत या उनका रस दमा और हूपिग कफमे लाभदायक होता है। इससे कफ पतला होकर छूट जाता है और खासीका वेग कम होजाता है। जीर्ण कफ रोगों म इसको देनेसे कफकी उत्पत्ति कम होजाती है। जिससे खासीका कष्ट भी घट जाता है। इसके फलका रस या शरबत गर्भवती स्त्रियोंको भी दिया जा सकता है।

हृदयोदरके अन्दर इसके पचागकी राखको देनेसे दस्त और पेशाब होकर हृदयकी क्रिया सुधर जाती है। इसके पचागका रस देनेसे हृदयकी शीघ्रगामी धडकन बन्द होकर हृदयकी गति सुव्यवस्थित होजाती है।

सन्याल और घोपके मतानुसार इसके फलका शर्बत खासी और दमेकी उत्तम दवा है। यह दिनमें ४ चार बार चायके १ चम्मचकी मात्रामे दिया जाता है। इसका शरबत उत्तम बैंगनी रंगका होता है। यह कफ निस्सारक होता है और खासीमें लाभ पहुँचाता है। एक दमेके केसमे जब सभी इलाज नाकामियाब हो चुके थे, इसके प्रयोगमे काफी लाभ हुआ। दवाके बन्द करते ही दमा फिरसे चालू हो गया। मगर अन्तमें इसके लगातार सेवनसे वह बिलकुल मिट गया। जुकामकी वजहसे होने वाले वायु नलियोंके प्रदाह और कुक्कुर खासीमें भी इससे काफी लाभ होता है। २४ घटेमें ही खासीके अन्दर लाभ दिखलाई देने लगता है।

के एल देके मतानुसार इसका फल शातिदायक और ज्वर निवारक व कुक्कुर खासीमें लाभदायक होता है।

अयत सुन्दर और खुशबूदार होते हैं। ये रात्रिमे खिलते है और दिन ऊगनेपर मुर्झा जाते हैं। खिलने पर इनका दिखाव तारोंकी तरह हो जाता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति मूत्रल और हृदयके लिये बलदायक है। हृदयपर इसकी क्रिया साधारणतया डिजिटेलिसकी तरह होती है। इससे हृदयकी धडकन स्वाभाविक रूपमे हो जाती है।

---

## थूनिया लोथ

नाम—

हिन्दी—थूनियालोथ, भूरीलोथ। लेटिन—Combretum Pil sum (कम्ब्रेटम पिलोसम)।

वर्णन—

यह एक झाडीनुमा पौधा होता है। इसके पत्तोंका काढा एथनमेंटिक (Anthelmintic) वस्तुकी तरह काममें आता है।

---

## थेकल

नाम—

हिन्दी—थेकल। मराठी—थेकल। लेटिन—Garcinia Pedunculata (गार्सीनिया पेडनक्यूलेटा)

वर्णन—

यह एक ऊची जातिका वृक्ष होता है। जो बगालके पूर्व और उत्तरी भागोंके जगलोंमे और सिलहट जिलेमें पैदा होता है।

इसके फूल जनवरीसे लेकर मार्च महिने तक आते हैं। फल मार्च से लेकर जून महीनेतक पकते हैं। इसके फल पीले, गोल, मुलायम और सतरेके बराबर मोटे होते हैं। ये खानेके लायक स्वादिष्ट होते हैं। इसके फल का गूदा अमचूरकी तरह खटाई देनेके काममें लिया जाता है। इसके

फलोंको कतर कर उन्हे सुखाकर उन टुकडोंका बाजारमे वेचते हैं। ये टुकडे अमूलवेतस के नामसे बाजारमे बिकते हैं। मगर यह असली अमलवेतस नहीं है।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पतिका उपयोग कोकम या अम्सूलकी तरह किया जाता है।

---

## थँगन

नाम —

बरमा—थँगन। लेटिन—Hopea Odorata ( होपिया ओडोरेटा )।

वर्णन—

यह एक हमेशा हरी रहनेवाली झाडी है जो बरमामे पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

बरमाके लोग इसमे पाई जानेवाली रालका चूर्ण करके उस चूर्णका रक्तस्रावरोधक औषधिकी तरह काममे लेते हैं। कंबोडियाके लोग इसको दारुको मसूडेकी सूजन दूर करनेके काममें लेते हैं।



## थैलु

नाम —

पंजाब—थैलु, बेटर, चुच, फुल्ड। सीमाप्रान्त-अगेनी, भेडारा, कोरा, फुल्ड। नेपाल–धुपी। लेटिन—Juniperus Excelsa ( जुनिपेरस एक्सेल्सा )।

वर्णन—

यह हमेशा हरा रहनेवाला वृक्ष हिमालय के सूखे प्रदेशोंमें नेपालके पश्चिममें पैदा होता है। इसकी छाल पतली, रुखी खाकी, लकडी सुगंधित, फल गहरे भूरे रंग और काले होते हैं। औषधि प्रयोगमें इसके फल और कोमल डालियां काममें आती हैं। यह वनस्पति हाउबेर की ही एक जाति है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति मूत्रल और उत्तेजक होती है। इसके दूसरे गुण हाउबेर ही की तरह होते हैं काश्मीरमें इसकी हरी लकड़ीका धुम्रपान एक जोरदार वमनकारक पदार्थ माना जाता है।

## दपोली

नाम :—

बम्बई—दपोली। बङ्गाल—भुतियालता। लेटिन Oldenlandia Auricularia (ओल्डेनलेंडिया अरिक्युलेरिय) Hedyotis Auricularia (हिडिओटिस अरिक्युलेरिया)

वर्णन—

यह वनस्पति सारे भारतवर्षमें और सीलोनमें पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव —

इस वनस्पतिके अन्दर स्निग्ध तत्व पाये जाते हैं। यह अतिसार और हैजेमें उपयोगी है।

---

## दवी दारिया

नाम —

यूनानी—दवीदारिया।

वर्णन—

कुछ यूनानी हकीमोंके मतसे यह हिन्दुस्तानमें पैदा होने वाला एक तेज और चरपरा घास होता है और कुछ यूनानी हकीमोंके मतसे यह छोटासा हिन्दुस्तानी वृक्ष है जो १ गज के करीब ऊंचा होता है। इसकी पिंड सख्त होती है। इसकी शाखाओंमें कांटे होते हैं। पत्ते छोटे छोटे और हरे होते हैं। सर्दीमें इस पौधे पर कपास की तरह फल आते हैं। फूल नहीं आते। इसकी फलियोंमें गोल गोल बीज होते हैं। इन बीजों का रंग खाकी होता है। चबानेसे इनमें बहुत तेज खुशबू, तेज स्वाद और कुछ कड़वा पन अनुभवहोता है।

गुणदोष और प्रभाव —

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। इसके लेपसे सन्धियों का ढीला-पन मिटता है। लकवे और फालिजमें भी यह मुफीद है। मेदे को ताकत देता है। पाँवकी उङ्गलियोंके बीचमें सर्दी और नमींसे जो खराश पैदा हो जाती है उसको दूर करनेमें यह बेजोड है। इसके खानेसे मिरगी और सन्यास रोगमें फायदा होता है। इसकी लकडीका दतून करनेसे मुंहके विषैले दोष निकल जाते हैं और मसुडोंमें ताकत आती है। इसको गन्दके साथ खानेसे सीने और फेफडेके रोग मिटते हैं। सिरके साथ खानेसे मेदेको लाभ होता है और उसको ताकत मिलती है। दूधके साथ खानेसे गुर्दे और मसाने की पथरी निकल जाती है कामशक्ति बढाती है और दस्त बन्द हो जाते हैं। इसकी खुशबूसे आंखमें जलन पैदा होती है और अधिक सूंघनेसे पलकोंके बाल झड जाते हैं।

मुजिर—इसका सेवन गरम प्रकृति वालों को हानिप्रद है।

दर्पनाशक इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये बबूल का गोंद, मीठे बादाम का तेल और कासनी मुफीद है।

मात्रा—इसकी मात्रा तीन माशे तक की है।

---

## दम धोका

नाम—

लखीमपुर—दमधोका, करियाबीजल। लेटिन—Impatiens Tripetala ( इंपेटियन्स ट्रिपेटेला )।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालयमें सिक्किमके पास ७ हजार से ९ हजार फीटकी ऊंचाई तक और आसाममें खासिया पहाडियो पर ३ हजार फीटकी ऊंचाई तक पैदा होती है। इसका क्षुप ४५ से लेकर ६० सेंटिमीटर तक ऊंचा होता है। इसके पत्ते ५ से लगाकर २० सें० मीटर तक लंबे होते हैं। इसकी फली लम्बगोल होती है। इन फलीमें बहुत बीज रहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

कार्टरके मतानुसार इसकी जडका रस पेशाबके साथ मूत्र आनेकी बीमारीको दूर करनेमें

५

काममे लिया जाता है। इस काममें इसके १ तोला रसको १ तोला जलके साथ मिला करके देते हैं।

---

# दमन पापरा

नाम —

संस्कृत—पर्पट। हिन्दी—दमन पापड़ा। बगाल—खेत पापड़ा। गुजराती—पर्पट। मराठी—परिपाठ। गोआ—ककुरी, पोपटी। लेटिन—Oldenlandia Corymbosa (आल्डेनलेंडिया कोरिम्बोसा)।

वर्णन —

यह एक नाजुक जातिका पौधा होता है जिसकी ऊंचाई फुटभरके करीब होती है। वर्षा ऋतुके अदर इसके पौधे खेतों वगैरामें पैदा होते हैं। इसके पत्ते २ से लगाकर ४.५ सें० मीटर तक लबे होते हैं। इसके पौधे धनियेके पौधोंकी तरह दिखाई देते हैं। इसके पत्ते लबे और फल पीले रगके होते हैं जो सूखनेपर काले पड जाते हैं। इनकी रुचि कुछ खारी और कड़वी होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मतमे यह औषधि शीतल, ज्वर नाशक, दाह शामक, कफघ्न, कटु पौष्टिक और कुछ स्तम्भक है।

संस्कृतके लेखक इसको ज्वरमें एक प्रकारकी शीतल औषधि मानते हैं। जो ज्वर वात और पित्तकी विकृतिसे होता है उसमे यह अधिक उपयोगी मानी जाती है। ऐसे पार्यायिक ज्वरोंमे जिनमे कि पाकस्थलीके अन्दर जलन और स्नायु मडलके अन्दर अवसन्नता रहती है, यह विशेष लाभदायक है।

कोकणके अन्दर वात और पित्त प्रधान ज्वरोंमे इस औषधिको देनेका और हथेलियों और पैरके तलवोंमे मालिश करनेका बड़ा रिवाज है क्योंकि इसएक ही औषधिमे शरीरके अन्दर ज्वर की वजहसे जो २ उपद्रव पैदा होते हैं उन सबको दूर करनेकी शक्ति पाई जाती है। इससे पसीना होता है, शरीरकी गर्मी कम होती है, तृषा शमन होती है, पेशाब अधिक होता है और घबराहट कम होती है। पित्त ज्वर में इसको पित्त पाप[illegible] हैं।

अविराम ज्वर मे जब रोगीको दस्त और उल्टी होने लगती है, भ्रम पैदा हो जाता है, और शरीर मे शिथिलता पैदा हो जाती है तब इस औषधिको ब्राम्ही, तुलसी, चदन, सुगध वाला, नागरमोथा, गिलोय और हसराजके साथ मिलाकर, काढा बनाकर देते है। दमन पापड़ा, गुड़बेल, नागरमोथा चिरायता और चदन इन ५ वस्तुओका काढा पचभद्र क्वाथके नामसे प्रसिद्ध है जो सब प्रकारके ज्वरोमे दिया जाता है। गर्मीके फाड़ोको दुरुस्त करनेके लिये भी इसका काढ़ा पिलाया जाता है।

यह वनस्पति पीलिया और यकृत की बीमारियों म कृमिनाशक वस्तु की तौर पर दी जाती है।

गलेकी सूजन और श्वास नलीका सूजनमे इसका थोड़ा सा सूखा चूर्ण चिलममे रखकर पीनेसे कफ ढीला होकर आसानीसे निकल जाता है। श्वास नलिकाके सकोच विकासकी वजह से पैदा हुए दमेम इस औषधिको पीपर, मुलेठी और शहदके साथ मिलाकर देते हैं और चिलम में रखकर पीते भी हैं।

कर्नल चापराके मतसे यह वनस्पति पार्यायिक ज्वर, पाकस्थली का जलन और स्नायु मंडलकी अवसन्नताम उपयोगी है।

—

## दरदार

नाम—

यूनानी—दरदार।

वर्णन—

यह एक नकी जातिका वृक्ष होता है। जो पानीके नजदीक ठडी और तर जमीनों में पैदा होता है। इसके पत्ते कटी हुई किनारोंके, फूल सफेद और फल बारीक आवरण में ढकाहुआ चिड़ियाकी जबानकी तरह होता है। कई लोग इसको गूलरका झाड़ बतलाते हैं मगर यह गूलरके झाड़से भिन्न दूसरी वस्तु है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह वनस्पति पहले दर्जेमें सर्द और खुश्क है। इसका फल गरम और तर है। इस वनस्पतिका पचाग कब्जियत पैदा करने वाला होता है। इसके कच्चे फलका रस चेहरे पर लगानेसे चेहरेके दाग मिट जाते हैं। इसकी ताज़ा छालको सिरके के साथ पीसकर लगानेसे सब प्रकारके चर्म रोग और सफेद दाग मिट जाते हैं। चोट, मोच या जखमके ऊपर

इसकी छालको पीसकर लेप करनेसे लाभ होता है। इसके पत्तोंको सिरकेमें पकाकर लगानेसे तर खुजली मिट जाती है। इसके फलका रस पीनेसे पुरानी खासी और क्षयरोग जाता रहता है। इसकी छालको सिरकेमें पीसकर आंखमें लगानेसे आंखका जाला कट जाता है और रोशनी तेज होजाती है। इसकी जडके एक मुहको आगमें रखनेसे उसके दूसरे मुहमें से एक प्रकारका तरल पदार्थ टपकता है। इस तरल पदार्थको कुनकुना करके कानमें टपकानेसे कानकी सूजन और बहरापन दूर होता है।

इसके ताजा पत्तोंको चबानेसे दांत और मसूडोंमें ताकत आती है।

मुजिर—अधिक मात्रामें यह खूनको जलाता है और वायु पैदा करता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करनेके लिये शक्कर मुफीद है।

मात्रा—इसकी मात्रा ४ माशेकी है। (ख० अ०)

---

## दरियास

नाम —

यूनानी—दरियास।

वर्णन—

यह एक छोटी जातिका पौधा होता है। जिसकी लम्बाई १ बालिश्तके करीब होती है। इसकी डडीमें बहुतसी शाखाएं फूटती हैं। इसके पत्ते बेरके पत्तोंकी तरह होते हैं जो गहरे हरे रगके होते हैं। इसका फूल पीला, कुछ गोल, चौडा, छोटा और बदबूदार होता है। इसका बीज छोटी काली मिरचके बराबर होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है मगर गरमीके साथ २ इसमें कुछ सरदी की तासीर भी है। यह वनस्पति बहुत नशीली होती है। यह कफ और वातको बिखेरती है। इसके सेवनसे शरीरकी झुर्रियां मिटकर चमडा तन जाता है। पीलिया और वायु रोगमें भी यह लाभदायक है।

इसके ताजा पत्ते या बीज १० माशाकी मात्रामें खानेसे बहुत तेज नशा पैदा होजाता

पेटके आफरे को मिटाती है। ज्ञानेन्द्रिय को शक्ति देती है। हृदय को बहुत ताकत और प्रसन्नता देती है। हाजमा, तिल्ली और मेदे को शक्ति पहुचाती है। जहरके दर्प को नष्ट करती है। गर्भ की रक्षा करती है। माली खोलिया और पागलपनमें लाभ दायक है। अगर पागलपनमे गर्मी ज्यादा हो तो इसके साथ थोड़ा कपूर भी मिला देना चाहिये। प्रसूतिके समय इसको गर्भवती स्त्री की जाघ पर बाधने से बच्चा आसानीसे पैदा हो जाता है। गर्भाशय की पीडा को भी यह दूर करती है। बिच्छू और दूसरे विषैले जानवरोंके विषमे भी यह लाभ पहुँचाती है। प्लेग की गठान पर अंजीरके साथ इसको पीसकर लेप करनेसे बडा लाभ होता है। जिस घरके दरवाजे पर इसको लटका दी जाय वहा प्लेग का असर कम होता है।

खजाइनुल अदवियाके लेखक का कथन है कि एक बार हमारे शहरमे बहुत जोर का प्लेग फैला। लोगोंने मेरे कहनेके मुताबिक इसज अकरबी को दरवाजों पर लटकाया, गलोंमे लटकाया और कुछ खाते रहे। ये सब लोग प्लेगसे सुरक्षित रहे।

इसको सिर पर बाधने बुरे स्वप्न दीखना बन्द हो जाते है। इसके सेवनसे गुर्दे और मसाने की पथरी नष्ट हो जाती है। इसको गर्भाशयम रखनेसे गर्भाशय दर्द दूर हो जाता है।

मुजिर—यह गरम प्रकृतिवालोंके लिये हानिकारक है। उनमे सिर दर्द और वहम पैदा करती है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करनेके लिये सोफ, मिश्री और गेहू का निशास्ता * मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसके न मिलने पर इसके बदलेमे मीठी कूट, अकरकरा, सुरजान नरकचूर या लोंग इनमेसे कोई वस्तु दे सकते है।

मात्रा—इसकी मात्रा ३ माशेसे ७ माशे तक है।

---

* नोट—गेहूँ को पानीमें भिगाकर सुबह सिलपर पीसकर पानीके साथ कपडेमें छानकर चूल्हे पर घीमें सेंकना चाहिये। सेंकते समय इसमें ककड़ी, खरबूजा, तरबूज और बादाम की मगज को भी पीसकर डाल देना चाहिये। जब खुशबू आने लग तब मिश्री का रस डालकर हलका बना लेना चाहिये इसीको निशास्ता कहते हैं।

# दंती

नाम—

संस्कृत—दंती, शीघ्रा, निकुंभा, रक्तदंती, श्रत घटा, नागदंती, विशल्या, उदुम्बरपर्णी, गुणप्रिया, इत्यादि। हिन्दी—दंती तिरिफन। गुजराती—दंतीमूल। मराठी—दंती, दातरा। तामील—नट्टमनमबु, निरदिमुत्तु। तैलगू—कोंद मुदुम, नलजिदि। बंगाल—दंती, हकुम। कन्नड़—दंतीमूल। अरबी—हब्बुलतिनेयरी हब्बुल सन्तनेसहरो। फारसी—बेदनजीरे खताई। लेटिन—Croton polyandrum (क्राटन पोलिएन्ड्रम), Baliospermum Montanum (बेलियासपरमम माण्टनम)।

वर्णन—

दंती यह जमाल गोटेके वर्गकी एक औषधि है। इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक छोटी और एक बड़ी। छोटी दंतीका पौधा करीब ३।४ हाथ ऊंचा, झाड़ीनुमा होता है। इसके पत्ते बरछी आकारके गूलरके पत्तोंकी तरह होते हैं। इनकी लंबाई १५ से लगाकर ३० सेंटिमीटर तक होती है। ये पत्ते रुएदार और कटी हुई किनारोंके होते हैं। इसके फूल पीले होते हैं और फली ८ से लेकर १३ मिली मीटर तक लम्बी और गोल होती है। यह भी रुएदार होती है। इसके बीज एक रत्ती वजनके और बिलकुल अरंडीके छोटे बीजोंके समान होते हैं। इसकी जड़ की छाल खाकी रंगकी होती है। बाजारमें अक्सर दंतीमूलके नामसे छोटा अरंडीकी जड़ें भी लोग बेचते हैं। इसलिये इसको लेते समय सावधानी रखना चाहिये।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे दोनों प्रकारकी दंती तीव्र विरेचक, रस और पाकमें चरपरी, जठराग्नि को दीपन करनेवाली और तीक्ष्ण, गरम तथा पथरी, शूल, बवासीर, कुष्ट, दाह, कफ, सूजन, उदर रोग और कृमिरोग को नष्ट करने वाली है। छोटी दंतीका फल रस और पाकमें मधुर, शीतल, मल तथा मूत्रको निकालने वाला और विष, सूजन और कफ रोगको नष्ट करने वाला होता है।

दंतीके बीज जमाल गोटेके समान तीव्र रेचक होते हैं। अधिक मात्रामें लिये जाने पर ये प्राणघातक हो जाते हैं। इसके बीज उत्तेजक और चर्म दाहक पदार्थकी तरह भी काममें लिये जाते हैं। सन्धिवातकी पीड़ामें इसकी छाल उपयोगी होती है।

गेडोनका मत है कि सनलजके पूर्वमें इसके पत्ते घावोंको दुरुस्त करनेके काममें लिये जाते हैं। इसका रस दाढ़ के कीड़ेको गलानेके काममें आता है। जलोदर, सर्वाङ्गीण शोथ और पालियामें इसकी जड़ उपयोगी होती है। इसके पत्तेका काढ़ा दमेकी बीमारीमें लाभदायक है।

# दरिया का नारियल

**नाम—**

हिन्दी—दरियाका नारियल। बबई—जहरी नारियल। गुजराती—दरियानू नारियल। मराठी—दरिया चा नारेल। फारसी—नारगिले बहारी। तामील—कडल तेंगई। तेलगू—समुद्र पुलगकया। लेटिन—Lodoicea Sechellarum (लोडोइसिया सिचेलेरम)।

**वर्णन—**

यह एक जातिका जहरीला नारियल होता है। इसका वृक्ष नारियलके वृक्ष के समान ही होता है। इसका फल लम्बा और जुडवा होता है। हिन्दुस्तानी नारियलमें जिस तरह खोपरा निकलता है। वैसाही इसमें भी निकलता है। इसका खोपरा बहुत सख्त और दो उङ्गल मोटा होता है। इसका फल साधारण नारियलसे बहुत बड़ा होता है।

**गुणदोष और प्रभाव—**

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क होता है किसी २ के मतसे समशीतोष्ण होता है। जितना यह ज्यादा पुराना होता है उतनी ही इसकी गर्मी और खुश्की बढ़ जाती है।

यह शरीरकी शक्तिकी रक्षा करनेवाला और जहरको उतारनेवाला है। वमन, मतली और हैजेमें इसको गुलाबजलमें घिसकर देनेसे लाभ होता है। इससे प्राणवायुको शक्ति मिलती है। शरीरमें सचित खराब दोषोंको यह निकाल देता है। अगर किसीने जहर खा लिया हो तो नारियल दरियाईको देनेसे उसी वक्त वमन होने लगती है और जबतक शरीर में जहरका असर रहता है तब तक बराबर वमन होती रहती है। जबतक वमन होती रहे तबतक इसको देते रहना चाहिये। अगर किसीने अफीम या बछनाग खाई हो तो ताजा दूधके साथ नारियल दर्याईको देना चाहिये। कफज्वरके आनेके पहिले अगर इसको एक दो रत्तीकी मात्रामें पीसकर दे दिया जाय तो रोगीको बड़ी शान्ति मिलती है अर्क बेद मुश्कके साथ इसको देनेसे हृदयको ताकत मिलती है और अनारके रसके साथ यह यकृतको शक्ति देता है।

तोफतुल मोमनीमें हकीम महमदने लिखा है कि दरियाई नारियलको हफ्तेमें एक दो बार एक रत्तीसे ८ रत्ती तककी मात्रामें सग समाक नामक पत्थरकी खरलमें गुलाब जलके साथ रगड़ कर खालिया करें तो बुखार, इकातरा, पाली, फालिज, लकवा, गठिया, इत्यादि रोगोंके हमलेसे आदमी बचा रहता है। क्योंकि यह खराब दोषोंको और खराब जहरका शरीरके अन्दरसे

खींचकर वमनके द्वारा बाहर फेंक देता है। अगर शरीरमें खराब दोष न हो तो यह बिलकुल वमन नहीं लाता है।

बम्बई में यह पौष्टिक और ज्वर निवारक माना जाता है। अतिसार, वमन और हैजेकी बीमारामें यह लाभदायक समझा जाता है। यह अक्सर बच्चोंको दिया जाता है। इसके हरे फलका पानी या उसका नरम गूदा पित्त नाशक और पेटके अन्दरके खट्टेपनको दूर करने वाला माना जाता है। भाजनके बाद लिये जाने परही यह अपने गुणोंको दिखलाता है।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा १ रत्तीस ४ रत्ती तक है।

उपयोग—

मोती जरा—इसका गिरी को स्त्रीके दूधमे घिस कर दिनमें दो बार देनेसे मोतीजरा मिट जाता है।

बच्चों का उदर शूल—इसको कुचलेकी जड़के साथ पीस कर पिलानेसे बच्चो का उदर शूल मिटता है।

हैजा—इसको पानीमें घिसकर पिलानस हैजेके दस्त और उल्टी बन्द हाती है।

विष विकार—इसकी १ मासा गिरीको पीसकर पिलानेस हर तरहका विष विकार दूर हाता है।

उपदश—उपदशके जख्मो पर इसका लेप करनेसे लाभ हाता है।

पित्तकी बीमारिया—इसके कच्चे फलका पानी पीनेस या कच्ची गिराको खानेस पित्तके विकार नष्ट हाते हैं।

---

## दलबूस

नाम—

यूनानी—दलबूस।

वर्णन—

यह एक जातिकी जंगली मोसनकी जड़ है जो स्वादमें कड़वी और आकारमें प्याजके समान होती है। इसको सूर्खी गठानोंको पीसकर बगदाद की स्त्रियां अपने गालों पर लाली लानेके लिये गालों पर मलती है। अरब और ईराकमें यह वनस्पति विशेष तौरसे पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जे में गरम और खुश्क है। इसकी बड़ी गठान काम शक्ति-वर्धक, स्वादिष्ट, शरीरका मोटा करने वाली और सूजनको नष्ट करने वाली होती है। इसकी जड़का सुखाकर, पीसकर ३ मासेकी मात्रामे शहदके साथ खानेसे बवासीरके मस्से सूखकर गिर जाते हैं। इसको गर्भाशयमें रखनेसे ऋतुश्राव जारी होजाता है और चेहरे पर मलनेस चेहरे पर सुर्खी आजाती है।

मात्रा—इसकी मात्रा ७ मासे तक है।

---

# दही

नाम

संस्कृत—दधि, पयसि, मंगल्य, घनेतर, क्षीरज, क्षीरोद्भव, दिग्ध, तक्रजन्य। हिन्दी—दही। बंगाल—दही। मराठी—दही। गुजराती—दहि। करनाटकी—मसरू। तेलगू—पेरुगु। फारसी—दोग। अरबी—जुगरात। अंग्रेजी—Curd कुर्ड। लेटिन—Coagulated Milk (कोग्यूलेटेड मिल्क)।

वर्णन—

जमे हुए दूध को दही कहते हैं। आयुर्वेद के मतसे यह पाँच प्रकार का होता है। मन्द, मधुर, मधुराम्ल, अम्ल और अत्यम्ल। जो दूध जमकर कुछ गाढा पड गया हो और जिसमें खट्टा मीठा किसी प्रकार का स्वाद मालूम न हो उस दही को मन्द कहते हैं। जो जमकर गाढ़ा हो गया हो और जिसमे मीठा रस तो प्रगट हो मगर खट्टा रस प्रगट नहीं हुआ हो उस दही को मधुर या स्वादु दही कहते हैं। जो दही खट्टा और मीठा दोनों रसों से युक्त हो उसको मधुराम्ल या स्वादु अम्ल दही कहते हैं। जिस दही में मधुरता नष्ट होकर खट्टापन तेज हो गया हो उसको अम्ल दही कहते हैं। जो दही अत्यन्त खट्टा हो, जिसके खानेसे दांत खट्टे हो जाँय और शरीर में रोमाच होजाय उसको अत्यम्ल दही कहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदके मत से दही अम्ल, भारी, वातके विकार को दूर करनेवाला मलरोधक, मूत्रल, बलकारक, कफनाशक, रुचिवर्धक, जलन को दूर करनेवाला, तथा खांसी, श्वास, पीनस, विषमज्वर और शीत ज्वर में लाभदायक है।

मदनपाल निघण्टुके मतानुसार दही गरम, अग्निदीपक, स्निग्ध, कुछ कसैला भारी, पचनमें खट्टा, मलरोधक तथा रक्त पित्त, सूजन, मेद और, कफ को बढानेवाला होता है। मूत्र कृच्छ, जुकाम, शीत और विषम ज्वर, अतिसार, अरुचि और दुबलेपन में दही हितकारी है।

मन्ददही—मन्ददही मलमूत्र और दाह का पैदा करनेवाला होता है।

मधुर या स्वादु दही—वीर्य्यवर्धक, मेदजनक, कफकारी, वातनाशक, पचनेमें मीठा और रक्त पित्त को कुपित करनेवाला होता है।

स्वादाम्ल दही—इसके गुण सामान्य दही के समान होते हैं।

अम्ल दही—दीपन और रक्त पित्त तथा कफ को पैदा करनेवाला होता है।

अत्यम्ल दही—रुधिर विकार, वात और पित्त का पैदा करनेवाला होता है।

पथ्य के अन्दर हमेशा मीठा दही काम में लेना चाहिये। क्योंकि मीठा दही रोगनाशक और अत्यंत खट्टा दही रोगकारक होता है।

गाय का दही—गाय का दही अत्यन्त पवित्र, बलकारक, शीतल, पचन में स्वादिष्ट रुचिकारक, अग्निवर्धक, पौष्टिक और कफनाशक होता है। सब प्रकार के दही में गाय का दही अधिक गुणकारी होता है। यह अरुचि, पीनस, खासी, मूत्रकृच्छ्र शीतज्वर, विषमज्वर, बवासीर और संग्रहणी रोग में हितकारी है।

भैंसका दही—भैंसका दही रक्त पित्त का कुपित करनेवाला, वीर्यवर्धक, स्निग्ध, मधुर, शोधक, कफकारक, भारी, बलकारक, वीर्यवर्धक और पित्त वात तथा श्रम को दूर करता है।

बकरी की दही—बकरी का दही—कफ पित्त और वात नाशक, गरम, वीर्यवर्धक, पौष्टिक, कान्तिकारक, बलवर्धक, अग्नि दीपक, तथा बवासीर, श्वास, खासी और अतिसारके रोगों मे उत्तम पथ्य है।

वर्षाऋतु का दही—वर्षा ऋतु का दही पित्त कारक, वात निवारक, कफ को कुपित करनेवाला तथा गुल्म, बवासीर, कुष्ट और रक्त पित्त रोगमें अपथ्य है।

शरद ऋतु का दही—भारी, खट्टा, रक्त पित्त वर्धक तथा सूजन, तृषा और ज्वरसे पीडित मनुष्यके लिये कुपथ्य है।

हेमन्त ऋतु का दही—भारी, स्निग्ध, मधुर, कफकारक, बलवर्धक, वीर्यजनक बुद्धिवर्धक, पौष्टिक और तृप्ति दायक है।

शिशिर ऋतु का दही—वीर्यवर्धक, बलकारक, पित्त जनक, भयनाशक, गाढा, खट्टा और भारी होता है।

वसन्त ऋतु का दही—वात कारक, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खट्टा, कफकारक, पौष्टिक, और वीर्यवर्धक होता है। वसन्त ऋतुमें दही का खाना श्रेष्ठ नहीं है।

ग्रीष्म ऋतु का दही—हलका, खट्टा, अत्यन्त गरम, रक्त पित्त कारक तथा शोष, भ्रम और प्यास को पैदा करने वाला होता है।

मक्खन निकाला हुआ दही—मक्खन निकाले हुए दूध का दही मलरोधक, शीतल, वात कारक, हलका, अग्निदीपक और संग्रहणीरोग को दूर करनेवाला होता है।

शरद, ग्रीष्म और वसन्त ऋतुमें दही हानिकारक होता है और हेमन्त शिशिर तथा वर्षा ऋतुमें दही हितकारी होता है।

विना नियमके दही को खानेसे ज्वर, रक्तपित्त, विसर्प, कुष्ट, पाण्डु, भ्रम, कामला, इत्यादि अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

दहीमें त्रिकुटे का चूर्ण, सेंधा निमक और राई का चूर्ण मिला कर हेमन्त और शिशिर ऋतुमें खानेसे कफ और वात दूर होते हैं। अग्निको प्रदीप्त होती है। यह शरीर को दृढ करता है और अंगोंमें कान्ति पैदा करता है। यह एक उत्तम पथ्य है।

दही की मलाई—दही की मलाई स्वादिष्ट, भारी, वीर्यवर्धक, वात नाशक, जठराग्नि को मन्दकरने वाली, वस्ति रोग नाशक और पित्त तथा कफ को बढ़ाने वाली होती है।

दही का तोड—कृमि नाशक, बलकारक, रुचिवर्धक, शरीर के स्रोतों को शुद्ध करने वाला, आनन्द दायक, कफ नाशक, तृषानिवारक, वातनाशक, तृप्तिजनक और शीघ्र ही मल के संचय को भेदने वाला है।

यूनानी मत—यूनानी मत से यह दूसरे दर्जेमें सर्द और तर है। मक्खन निकालने पर सर्द और खुश्क हो जाता है। यह शरीरमें तरीको बढाता है। गरम प्रकृति वालों की काम शक्ति को बढाता है। वीर्य वर्धक है, देर से हजम होता है। इसको सिर पर मलने से दिमागमें तरी आकर नींद आ जाती है। इस कार्यमें यह तुख्म कद्दूके रोगनसे भी जल्दी फायदा करता है। दही को चेहरे पर मलनेसे चेहरे की खुश्की, स्याही और छाजन दूर हो जाती है। दही के साथ चावलों को खिलानेसे अतिसारमें लाभ होता है।

मुजिर—इसका अधिक सेवन शरीरमे मुखे और खराब दोष पैदा करता है। सर्द प्र वालोंके मेदे को भी यह नुकसान पहुँचाता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करने के लिये नमक, सोंठ, पोदीना, जीरा, गुलकन्द अदरक का मुरब्बा मुफीद है।

उपयोग —

बवासीर—दही का अथवा मट्ठे का लगातार सेवन करते रहनेसे बवासीर से खून बहना ब हो जाता है।

रतौंधी—दहीके तोडमे थूक मिलाकर अञ्जन करनेसे रतौंधी मिटती है।

जमाल गोटे की दस्तें - दहीमें गो मागे कतीरा गोंद मिलाकर पिलाने से जमाल गोटे की द बन्द होती है।

दाद और खुजली—आंवला, पवार के बीज और कथे को दहीके साथ पीस कर लेप कर स दाद और खुजली मिटती है।

जायफल का नशा—जायफल का मद उतारने के लिये दही मे शक्कर मिलाकर पिलान चाहिये।

दाह—दहीमे से टपके हुए पानी का लेप करनेसे दाह मिटती है।

प्रवाहिका—दहीके तोडमे शहद मिलाकर चटानेसे प्रवाहिका मिटती है।

अतिसार- पके हुए चावलों को दही मे मिलाकर खिलाने से अतिसारमें लाभ होता है।

---

## दही पलाश

नाम—

हिन्दी—दही पलाश, देवाम, घागा, धेरा, लेमन, धामन, ढेंगन। मराठी—भोटी, भ्यास, धेग, धामन। मेरवाडा—गोंदेरा। राजपुताना—गोंहू। मयाल—जुगिया। तामील—पेरंडेदू। तैलगू—नोटेकू। लेटिन—Cordia Macleodii (कोर्डिया मेक्लिओडाइ)।

वर्णन—

यह गूदा या लिसोड़ेकी जातिका एक वृक्ष होता है। इसका झाड़ ६ से १० मीटर तक

ऊंचा होता है। इसके पिंडकी गोलाई ६० सेंटिमीटर तक होती है। इसकी छाल नरम, चिकनी और सफेद होती है। इसके पत्ते ५-१५ सेंटिमीटर लम्बे होते हैं। इसके फूल गूदेके फूलकी तरह ही आते हैं। यह वनस्पति छोटा नागपुर सेंट्रल इंडिया, राजपूताना, करनाटक और दक्षिणमें पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

केंप बेलके मतानुसार संथाल लोग इसकी छालको पीलिया और कामला रोग दूर करनेके लिये काममें लेते हैं।

---

## दाक

नाम—

पंजाब—दाक। लेटिन—Ribes Rubrum ( रायबिस रूबरम )।

वर्णन—

यह एक छोटी जातिकी वनस्पति होती है। इसके पत्ते अनारके पत्तोंकी तरह मुलायम और हलके हरे रंगके होते हैं। इसका ताजा फल गोल, चिकना, तोडनेसे भीतर गहरा नीला, स्याही माइल और बाहरसे सब्जी माइल लाल रंगका होता है। इसके पौधे अकसर करके सेब, नासपाती और बल्लूतके झाडोंकी जडोंके पास पैदा होते हैं। इसके फलके अन्दर चेप व चिकनाई होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मत—यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जे में गरम और पहले दर्जे मे खुश्क होता है। कोई २ इसको गरम और तर मानते हैं। यह सूजनको उतारने वाला, सरदीको दूर करने वाला और शक्तिदायक होता है।

इसको गरम पानीमें भिगोकर छिलके और बीज दूर करके अखरोट या अरंडकी मगज के साथ खानेसे शरीरमें संचित दूषित वायु और कफ निकल जाते हैं। सरदीकी सूजन पर इसका लेप करनेसे सूजन बिखर जाती है। कफकी वजहसे उछली हुई पित्तीको यह दूर कर देता है। इसके लेपसे जोडोंका दर्द और चेहरेके काले धब्बे मिट जाते हैं। मेंहदीके साथ इसको लगानेसे सिरकी गंज मिट जाती है। रोगन गुलमें इसको मिलाकर बालों पर लगानेसे बाल लंबे होजाते हैं। चूनेके पानीके साथ इसको मिलाकर तिल्लीकी सूजन पर लेप करनेसे सूजन मिट जाती है। इसका लेप भीतरके खराब मवादको खींचकर निकाल देता है।

मुजिर—इसको अधिक मात्रामें लेनेस सिर दर्द, पेटमें मरोड़ और एठन पैदा हो जाती है तथा हृदयको बहुत नुकसान पहुँचाता है। इसलिय इसका तीन माशेसे अधिक मात्रामें कभी नही लेना चाहिये। अगर कभी अधिक मात्रामे लेलिया गया हो तो पानी और शहद पिलाकर वमन कराना चाहिये। एनेमा लगाना चाहिये और उसके बाद शिकजबीन पिलाना चाहिये। बिल्ली लाटन, गाव जवा और नरकचूर भी इसके दर्पको नष्ट करते हैं।



## दाज़ी

नाम —

यूनानी—दाज़ी।

वर्णन—

यह एक छोटी जाति का पौधा है जो फारस के पहाडों में पैदा होता है। इसकी ऊंचाई १ बालिश्त से कुछ ज्यादा होती है। इसका फूल गहरे नीले रंग का और खुशनुमा होता है। इसका बीज जौ के समान लंबा और बारीक होता है। इसका रंग मैला तथा स्वाद कड़वा और तेज होता है। इसकी एक जाति और होती है जो रूम में पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह पहले दर्जे में गरम और दूसरे दर्जे में खुश्क होता है। यह विष को नष्ट करनेवाला, काबिज और नशीला होता है। इसके लेप से सख्त सूजन मुलायम हो जाती है। इसको शहद में मिलाकर चाटने से मुँह से लार पडना बन्द हो जाता है। इसकी मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है। ज्यादा मात्रा में इसको नहीं लेना चाहिये क्योंकि इससे सिर में चक्कर आकर आदमी पागल हो जाता है। कभी २ मर भी जाता है। इसके विकार को शात करने के लिये जुलाब देना चाहिये और ताजा दूध पिलाना चाहिये।

## दाँतिरा

नाम —

मराठी—दातिरा, दाती, ऊंबर। गुजरात—ऊंबर। देहरादून—छछरी। तामील—अल वलगी, इरदगम, इरली। तेलगू—कोदमजुवी, तेल्लबरिकम्। लेटिन—Ficus Gibbosa फायकस गिबोसा)।

/ ७

वर्णन—

यह गूलर की जाति का एक वृक्ष होता है। इसका पौधा झाड़ीनुमा होता है। इसकी शाखाएं पिण्ड के पास ही जाल की तरह फैली हुई रहती हैं। पुरानी दीवालों और कुओं के ऊपर भी यह वृक्ष पैदा होता हुआ देखा जाता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसकी जड़ का काढ़ा अग्निदीपक और मृदुविरेचक पदार्थ है। इसमें उपक्षार पाये जाते हैं।

---

## दाद मर्दन

नाम—

संस्कृत—दद्रुघ्न, द्वीपगस्ति। हिन्दी—दादमर्दन। बंगाल—दादमर्दन। बम्बई—विलायती आगटी। कनाड़ी—शामे आगसे। मराठी—दादमर्दन। उड़िया—जदुमारी। तामील—वेंडुकोलि। तेलगू—शीम अगिसी। लेटिन—Cassia Alata (केसिया एलेटा)।

वर्णन—

यह एक बड़ी जातिकी झाड़ी होती है। भारतवर्षमें इसकी खेती की जाती है। इसके पत्ते ३० से लेकर ६० सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल छोटे पुष्प प्रन्त पर लगते हैं इसकी फलियां चमकीली और पीली रहती हैं। हरएक फलीमें ५० या इससे अधिक बीज होते हैं। ये फलियां १० से लेकर २० सेंटिमीटर तक लम्बी और १-६ सेंटिमीटर चौड़ी होती हैं। इस वनस्पतिकी रुचि सनायके समान होती है। औषधि प्रयोगमें इसके पत्ते विशेषरूपसे काममें आते हैं।

गुणदोष और प्रभाव

आयुर्वेदके मतानुसार इसके बीज तूरे, वातनाशक और खुजली, खांसी, दमा, दाद और चर्मरोगोंमें लाभदायक होते हैं। ये कृमिनाशक भी होते हैं।

दादमर्दन सनायके समान रेचक, कसोंदीके समान कफनाशक और कुछ मूत्रल होता है। यह कुष्ठनाशक भी है। इसके पत्तोंको कूटकर नीमके रसके साथ लेप करनेसे दाद खुजली इत्यादि रोगोंमें अच्छा लाभ होता है। नवीन बीमारीमें ये शीघ्र गुण बतलाते हैं। इसके पत्ते

और फूलोंका काढ़ा श्वासनलिकाकी सूजन और दमेमें देनेसे घबराहटकी कमी होती है, कफ छूटने लगता है, दस्त होते हैं और पेशाब ज्यादा होता है।

इस वनस्पतिके पत्ते दादके लिये एक बहुत उत्तम औषधि माने गये हैं। दूसरे चर्मरोग और सर्प विष पर भी यह औषधि लाभदायक मानी गई है।

आजतक जो भी अन्वेषण इस विषयमें किये गये हैं, उनसे यह पता लगता है कि दाद के ऊपर यह एक उत्तम औषधि है। इसे उपयोगमें लेनेका उत्तम तरीका यह है कि इसके पत्तों को पीसकर नीबूके रसमें मिलाकर लगाये जाते हैं। इसके पत्तोंमें विरेचक गुण भी होते हैं।

डाक्टर अमेरका लिखना है कि *एक्जिमाकी बीमारीमें, जिसमें कि लाल २ फुन्सियां* होती हैं इसके पत्ते और फूलोंको पानीमें उबालकर उस पानीसे खुजलीके स्थानको बार २ धोने से काफी लाभ होता है। इसकी छालमें भी यही गुण है। वायुनलियोंके प्रदाह और दमे पर भी उपरोक्त डाक्टर साहबने इसके पत्ते और फूलोंका काढ़ा कई बार दिया। इसके देनेसे पीडामें कमी हो जाती है, दूसरे लक्षण भी मिट जाते हैं और कफ निकलनेकी मात्रा बढ़ जाती है। आतों पर भी यह वनस्पति अपना अनुकूल प्रभाव दिखलाती है।

इंडोचायना और फिलिपाइन द्वीपसमूहमें इसके पत्ते दादकी बीमारीमें बहुत लाभदायक माने जाते हैं। इसकी लकड़ीका काढ़ा मृदुविरेचक औषधिकी तौर पर काममें लिया जाता है।

गोल्डकोस्टमें इसके पत्तोंको पीसकर काली मिर्चके साथमें धोबी-खुजली नामकी बीमारी पर लगाया जाता है। ये सिर और चमड़ेके दाग पर भी लाभदायक हैं। जिस स्थानपर पीडा हो उसे पहले इतना रगड़ना चाहिये कि वहां पर कुछ खून आजाय फिर इसके पत्तोंको हथेलीमें लेकर मसलकर उस स्थान पर लगा देते हैं इससे जल्दी फायदा होता है। देशी दवाइयोंमें यह एक उत्तम दवा है। प्रसूतिकालमें इसके पत्तोंको उबालकर स्त्रियोंको पिलाते हैं जिससे कि प्रसूतिमें किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं होती और बच्चा जल्दी पैदा हो जाता है।

कोमानने इसके पत्तोंकी लुग्दी दादसे पीडित कई व्यक्तियों पर अजमाई और इससे लाभ पहुँचा। *किंतु पुरानी दादकी बीमारी पर इससे सफलता प्राप्त न हो सकी।*

सांपके काटने पर इसके ताजा पत्तोंको पीसकर पिलानेके काममें लेते हैं। बिच्छूके विष पर इस वनस्पतिके पंचांगकी लुग्दी बनाकर काटे हुए स्थान पर लगाते हैं।

केस और महस्करके मतानुसार यह वनस्पति सांप और बिच्छूके काटने पर बिलकुल निरुपयोगी है।

कर्नलचोपराके मतानुसार इस वनस्पतिमें "कोरिसोफेनिक अम्ल" पाये जाते हैं। यह सांपके विषके ऊपर भी उपयोगी मानी जाती है।

उपयोग —

दाद—सुहागा और हरड़ के साथ इसकी जडको पीस कर लेप करनेसे दाद मिट जाता है। इसके ताजे पत्तों का लेप करने से भी दाद नष्ट होता है। इसके पत्तों को नमकके साथ लेप करनेसे दाद तुरन्त मिट जाता है।

मुह के छाले—इसके पत्तों का काढा बनाकर उससे कुल्ले करने से मुह के छाले मिट जाते हैं।

खासी—इसके और अडूसे के पत्तोंको चूसने से सूखी खासी मिट जाती है।

एक्झिमा—कागजी नीबूमें इसके पत्तों को पीसकर लगानेसे एक्झिमामें लाभ होता है।

कब्ज—इसके पत्तोंके चूर्ण को फाकने से कब्ज मिट जाती है।

---

# दादमारी

नाम :—

संस्कृत—दादमारि। हिन्दी—दाद मारी, दविदुवा। बगाल—चिने घास, दाधीदूब, देवि दुब्र। मलयालम—कोचिलचि। लेटिन—Xyris Indica (झाइरिस इण्डिका)।

वर्णन —

यह वनस्पति बगाल, बरमा, आसाम, दक्षिणी कोकण और पश्चिमी प्रायद्वीपमें पैदा होती है। यह एक वर्ष जीवी वनस्पति है। इसके पत्ते लम्बे और सीधे रहते हैं। इसके फूल गहरे या लाल बादामी रगके और चमकीले होते हैं। इसका फल गोल तथा इसके बीज छोटे तथा अण्डाकार रहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

गक्स बर्गके मतानुसार बगाल और मलाबारमें इस वनस्पति की बडी प्रशसा है। वहा पर यह वनस्पति दाद और खाज की एक बहुत ही सरल और शर्तिया दवा मानी जाती है।

रासायनिक विश्लेषण—इस वनस्पतिमें क्रायसोफेनिक एसिड की तरह एक लाल द्रव्य पाया जाता है जो शराबमें घुल जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति दादमें बहुत लाभदायक है।

# दामर

नाम —

नेपाल—दामर । सिलहट—केटि । लेटिन—Dalbergia Tamarindi Folia ( डलबेर्गिया टेमेरिण्डीफोलिया ) ।

वर्णन—

यह वनस्पति हिमालय, इण्डोचायना और मलाया में पैदा होती है। यह एक पराश्रयी झाड़ीनुमा लता होती है। इसके पत्ते १० से लगाकर १५ सेंटिमीटर तक लम्बे होते हैं। इनके दोनों तरफ रुए रहते हैं। इसके फूल गुच्छोंमें लगते हैं। इसकी फली हरे रंग की और चमकीली होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इण्डोचायनामें इसकी जड़ एक कृमिनाशक पदार्थ की तरह उपयोगमें ली जाती है। स्तनों की पीडामें भी इसे काममें लेते हैं।

---

# दारू हलदी

नाम—

संस्कृत—दारु हरिद्र, दार्वीपत्ता, दारुनिशा, दर्वा, द्वितीया आभा, हेमवर्ती, हरिद्र, हेम कांति, कार्मीनि, कष्टा, पीतदारु, पा० ०न्द्रना, इत्यादि। हिन्दी—दारु हल्दी, कष्मल। नपाल— चित्रा, कष्मल। गुजराती—दारुहल्दर। मराठा—दारुहल्द। कुमाऊ—किल मोरा। कनाडी— मरदर्शिना। बंगाल—दारुहरिद्रा। लेटिन—Berberis Aristata ( बरबेरिस एरिस्टेटा )।

वर्णन—

दारुहलदी का वृक्ष कांटेदार और झाडीनुमा होता है। इसकी ऊंचाई १५ फीट तक होती है। हिमालयमें नेपाल, धून और कुनुवारमें यह वृक्ष बहुत पैदा होता है। हिमालयमें पैदा होने वाली दारुहल्दी की छह जातियां होती हैं। जिनका लेटिनमें क्रमसे, बरबेरिस एरिस्टेटा, बरबेरिस एसियाटिका, बरबेरिस कोर्सिया, बरबेरिस लिसियम, बरबेरिस नपलेंसिस और बरबेरिस वल्गेरियस कहते हैं। इन्हीं को क्रमसे हिन्दीमें दारुहलदी, किलमोरा, कष्मल, चित्रा, चिरोर और झरेक कहते हैं।

उपयोग —

दाद—सुहागा और हरड के साथ इसकी जडको पीस कर लेप करनेसे दाद मिट जाता है। इसके ताजे पत्तों का लेप करने से भी दाद नष्ट होता है। इसके पत्तो को नमकके साथ लेप करनेसे दाद तुरन्त मिट जाता है।

मुह के छाले—इसके पत्तों का काढा वनाकर उससे कुल्ले करने से मुह के छाले मिट जाते हैं।

खासी—इसके और अडूसे के पत्तोंको चुसने से सूखी खासी मिट जाती है।

एक्झिमा—कागजी नीबूमें इसके पत्तों को पीसकर लगानेसे एक्झिमामें लाभ होता है।

कब्ज—इसके पत्तोंके चूर्ण को फाकने से कब्ज मिट जाती है।

---

# दादमारी

नाम —

संस्कृत—दादमारि। हिन्दी—दाद मारी, दविदुवा। बगाल—चिने घास, दाबीदूब, देवि दुब्ब। मलयालम—कोचिलचि। लेटिन—Xyris Indica (झाइरिस इण्डिका)।

वर्णन —

यह वनस्पति बगाल, बरमा, आसाम, दक्षिणी कोकण और पश्चिमी प्रायद्वीपमें पैदा होती है। यह एक वर्ष जीवी वनस्पति है। इसके पत्ते लम्बे और सीधे रहते हैं। इसके फूल गहरे या लाल बादामी रगके और चमकीले होते हैं। इसका फल गोल तथा इसके बीज छोटे तथा अण्डाकार रहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

रॉक्स वर्गके मतानुसार बगाल और मलाबारमें इस वनस्पति की बडी प्रशसा है। वहा पर यह वनस्पति दाद और खाज की एक बहुत ही सरल और शर्तिया दवा मानी जाती है।

रासायनिक विश्लेषण—इस वनस्पतिमें क्रायसोफेनिक एसिड की तरह एक लाल द्रव्य पाया जाता है जो शराबमें घुल जाता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति दादमें बहुत लाभदायक है।

# रसोत या रसांजन

रसोत बनाने की विधि —वर्षाके आखिरमें इसके झाड़को काट कर उसके भागको कूटकर उसका घन क्वाथ बना लिया जाता है उस को रसोत कहते हैं। कहीं २ इसकी जड़ों का ४ तोला लेकर उनके पतले २ टुकड़े करके उनको आधा सेर पानीमें उबालते हैं और जब ८ तोला पानी रह जाता है, तब इसमें ८ तोला बकरीका दूध मिलाकर फिर उबालते हैं और गाढा होने पर ठंडा कर लेते हैं। यही रसोत कहलाता है। बाजारू रसोतमें लकडी पानी, लाल मिट्टी, वगैरह कचरा मिला हुआ रहता है। इसलिये इसको शुद्ध किये बिना काममें नहीं लेना चाहिये। इस रसोत को दसगुने गरम पानीमें मिलाकर कपडेमें छानना चाहिये और फिर उसको सुखाकर काममें लेना चाहिये।

रसोत यह एक मूल्यवान औषधि है। ज्वरके अन्दर इस औषधिको देनेका बहुत रिवाज है। विषम ज्वरको उतारनेके लिये रसोतको १५ रत्तीकी मात्रामें ठंढे पानीमें मिलाकर दिनमें तीन बार देना चाहिये। इससे पेटमें कुछ गरमी उत्पन्न होती हुई मालुम होती है। भूख लगती है, अन्न पचता है और दस्त साफ होता है। विषम ज्वरमें सब प्रकारसे यह लाभ पहुँचाती है और प्लीहाको दुरुस्त करती है। कुनेनसे जिस प्रकार सिर दर्द, बहिरापन और कान होजाती है वैसी इससे नहीं होती। मगर इसमें एक दोष भी है वह यह कि अगर रोगीको रोगके पूर्व कभी रक्त आँवकी शिकायत हुई हो तो वह फिरसे पैदा हो जाती हैं। विषम ज्वरकी चिकित्सामें रसोतका देनेके पूर्व रोगीको जुलाब देना चाहिये और खाली पेट इसकी पूरी मात्रा देना चाहिये। उसके पश्चात रोगीको अच्छी तरहसे ओढाकर सुला देना चाहिये। कभी २ रोगीको बहुत प्यास लगती है और उसका जी घबराने लगता है मगर उसको पानी नहीं देना चाहिये। १ घंटेके बाद रोगीको पसीना छूटने लगता है और उसको कमजोरी आने लगती है। उस समय रोगीको थोडा दूध पीनेको देना चाहिये। इसके बाद रोगी अक्सर सोजाता है और सोकर उठनेके बाद उसकी तबियत अच्छी होजाती है।

चालू ज्वरके अन्दर अगर पित्तकी प्रधानता हो और रोगीको जंभाइयाँ, दस्त, उल्टी, सिर दर्द और थकावट मालूम होती हो तो ऐसे समयमें दारुहल्दीका क्वाथ बनाकर देना चाहिये। ज्वरके साथ यदि कब्जियत हो तो दारुहल्दी को चिरायतेके साथ देना चाहिये।

ज्वर के अनन्तर होने वाली कमजोरीमे दारू हल्दी से बडा लाभ होता है। मलेरिया के विषसे अथवा आमाशय की शिथिलता से होनेवाले अग्निमांद्यमें अथवा आतोंके रोगमें दारू हल्दी का क्वाथ देनेसे आमाशय की शुद्धि होकर आन्तों की शक्ति बढती है। इन रोगों में दारू हल्दी की छोटी मात्रामें सुगन्धित द्रव्योंके साथ देना चाहिये।

लिये तीनसे अधिक इजेक्शनो की अक्सर आवश्यकता नहीं होती। फोडों का साधारण ड्रेसिंग करते रहना चाहिये।*

मलेरिया ज्वर और वरवेराइन—

वरवेराइन और इसके साथके अन्य पदार्थ ज्वर निवारक गुणवाले माने गये हैं। भारतीय वैद्य मलेरियाके इलाजमें बहुत समयसे इसे इलाजमे काममे लेते हैं। कर्नल चोपराने बरवेराइनको मलेरियासे पीड़ित बीमारों पर अजमाया। उन्होंने इसे ३ से लेकर ४ ग्रेन तककी मात्रामें दिनमें तीन बार लगातार ३ दिन तक दिया। मगर मलेरियाके कीटाणुओं पर कुछ भी असर नहीं होने पाया। जाच करने पर यह पाया गया कि मलेरियाके परोप जीवी कीटाणु इससे नष्ट नहीं होते।

करीब ६ मलेरिया के बीमारों पर दूसरी वार फिर इसे अजमाया गया। मगर फिर भी इस उपचारका कोई भी असर दिखलाई नहीं दिया। क्विनाइन देनेपर मलेरियाके कीटाणुओं पर उसका असर फौरन दिखलाई दिया। इसलिये कर्नल चोपरा इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि ऐसा विश्वास करना कि बरवेराइन मलेरियामें उपयोगी है, बिलकुल निराधार है।

यद्यपि यह मलेरिया पेरेसाइट (कीटाणुओं) को नष्ट नहीं करता है फिर भी पेरेसाइट को रक्तकी गतिमें ले आता है। जिससे रोगका निदान करनेमें बड़ी मदद मिलती है। बरवेराइन लेनेके पहिले जो खून की फिल्म बिना पेरेसाइटके दिखलाई देती थी, बरवेराइन देनेके बाद उसी खूनकी फिल्म मलेरिया पेरेसाइटसे युक्त पाई गई।

यद्यपि कर्नलचोपराके मतसे यह वनस्पति मलेरिया ज्वरमें निरुपयोगी पाई गई है तथापि हिन्दू और मुसलमान दोनों ही चिकित्सकोंके द्वारा एक सुदीर्घकालसे यह वनस्पति ज्वरनिवारक अग्निवर्धक कटुपौष्टिक और धातुपरिवर्तक औषधिके रूपमें काममें ली जा रही है। पार्यायिक ज्वरोंमें भी वे लोग इसका उपयोग करते आये हैं। वे इसे कोढ, पीलिया, सापका काटना और गर्भावस्थाकी मतलीको दूर करनेके काममें भी लेते हैं। इसका फल (जरेशक) बच्चोंको मृदु विरेचकके रूप में दिया जाता है। इसका तना ज्वरनिवारक और मृदुविरेचक माना जाता है और यह सधिवातमें भी काममें लिया जाता है। इसकी जड़का छिलका कटु रसोंसे युक्त रहता है। यह पौष्टिक और ज्वरनिवारक पदार्थके रूपमे काममें लिया जाता है। इसका प्रभाव कुनैनकी ही तरह जोरदार होता है। इसकी जड़से जो काढा तैयार किया जाता है वह ज्वरको उतार देता है। इसकी जड़के सूखे सतको रसोत कहते हैं।

---

* नोट—मेसर्स एवड वेक ने आर्गिमाल के नाम से बरवेराइन के पेटेण्ट इंजेक्शन्स तैयार किये हैं।

# रसोत या रसांजन

रसोत बनाने की विधि —वर्षाके आखिरमें इसके झाड़को काट कर उसके पंचांगको कूटकर उसका घन क्वाथ बना लिया जाता है उस को रसोत कहते हैं। कही २ इसकी जड़ों को ४ तोला लेकर उनके पतले २ टुकडे करके उनका आधा सेर पानीमें उबालते हैं और जब ८ तोला पानी रह जाता है, तब इसमें ८ तोला बकरीका दूध मिलाकर फिर उबालते हैं और गाढा होने पर ठंडा कर लेते हैं। यही रसोत कहलाता है। बाजारू रसोतमें लकडी पानी, लाल मिट्टी, वगैरह कचरा मिला हुआ रहता है। इसलिये इसको शुद्ध किये बिना काममें नही लेना चाहिये। इस रसोत को दसगुने गरम पानीमें मिलाकर कपडेमें छानना चाहिये और फिर उसको सुखाकर काममें लेना चाहिये।

रसोत यह एक मूल्यवान औषधि है। ज्वरके अन्दर इस औषधिको देनेका बहुत रिवाज है। विषम ज्वरको उतारनेके लिये रसोतको १५ रत्तीकी मात्रामें ठंडे पानीमें मिलाकर दिनमें तीन बार देना चाहिये। इससे पेटमें कुछ गरमी उत्पन्न होती हुई मालुम होती है। भूख लगती है, अन्न पचता है और दस्त साफ होता है। विषम ज्वरमें सब प्रकारसे यह लाभ पहुँचाती है और प्लीहाको दुरुस्त करती है। कुनेनसे जिस प्रकार सिर दर्द, बहिरापन और कब्ज होजाती है वैसी इससे नही होती। मगर इसमें एक दोष भी है वह यह कि अगर रोगीको रोगके पूर्व कभी रक्त आँवकी शिकायत हुई हो तो वह फिरसे पैदा हो जाती हैं। विषम ज्वरकी चिकित्सामें रसोतको देनेके पूर्व रोगीको जुलाब देना चाहिये और खाली पेट इसकी पूरी मात्रा देना चाहिये। उसके पश्चात रोगीको अच्छी तरहसे ओढाकर सुला देना चाहिये। कभी २ रोगीको बहुत प्यास लगती है और उसका जी घबराने लगता है मगर उसको पानी नही देना चाहिये। १ घंटेके बाद रोगीको पसीना छूटने लगता है और उसको कमजोरी आने लगती है। उस समय रोगीको थोडा दूध पीनेको देना चाहिये। इसके बाद रोगी अक्सर सोजाता है और सोकर उठनेके बाद उसकी तबियत अच्छी होजाती है।

चालू ज्वरके अन्दर अगर पित्तकी प्रधानता हो और रोगीको जंभाइयाँ, दस्त, उल्टी, सिर दर्द और थकावट मालूम होती हो तो ऐसे समयमें दारुहल्दीका क्वाथ बनाकर देना चाहिये। ज्वरके साथ यदि कब्जियत हो तो दारुहल्दी को चिरायतेके साथ देना चाहिये।

ज्वर के अनन्तर होने वाली कमजोरीमें दारू हल्दी से बडा लाभ होता है। मलेरिया के विषसे अथवा आमाशय की शिथिलता से होनेवाले अग्निमांद्यमें अथवा आंतोंके रोगमें दारू हल्दी का क्वाथ देनेसे आमाशय की शुद्धि होकर आन्तों की शक्ति बढती है। इन रोगों में दारू हल्दी को छोटी मात्रामें सुगन्धित द्रव्योंके साथ देना चाहिये।

डॉक्टर ओशगनेसीने बुखारके करीब ३६ रोगियों पर रसोत को अजमाया। इनमे से कईके तिल्ली की तकलीफ भी थी। रसोत शुरू करनेके बाद तीन दिनमे बुखार मिट गया। चोथैया ज्वर से पीडित ८ बीमारो पर इसे अजमाया गया। जिसमे से ६ बीमार अच्छे हो गये। उन्हें सिर दर्द और कब्जियत भी नहीं हुई। इसको कपूर और मक्खन के साथमे मिला कर एक मलहम तैय्यार किया जाता है। इस मलहम को फोडे फुन्सियों पर लगानेसे बडा लाभ होता है।

बोस और कीर्तिकरके मतानुसार रसोत आधे ड्राम की मात्रामे पानीके साथमे ज्वर दूर करनेके काममे दी जाती है। इसको दिनमे तीन बार देते हैं। इससे कुछ गरमी मालूम पडती है, भूख बढती है, पाचन शक्ति दुरुस्त होती है और दस्त साफ हो जाता है।

सन्याल और घोषके मतानुसार रसोत को अफीम फिटकरी और जलके साथ पीस कर आखों पर लेप करनेसे आखों का दुखना बन्द हो जाता है। इसको दूध के साथ मिला कर आखोंमे टपकानेसे भी आखें अच्छी हो जाती हैं। प्रावाहिक सूजन पर भी रसोत को अफीम, फिटकरी, सेंधानमक और पानी के साथ पीसकर लेप करने से शान्ति मिलती है।

अन्त प्रयोगमे इसकी लकडी और इसकी जडका छिलका, एक उत्तम कटु पौष्टिक और ज्वर निवारक वस्तु है। इसे दूसरे कडवे और सुगन्धित पदार्थो के साथ मे ज्वर उतारने के लिये देते हैं। इसके परिणाम हमेशा ही लाभदायक सिद्ध हुए हैं। पित्त की विशेषता होने पर यह विशेष लाभदायक होता है।

इसकी जडका छिलका पौष्टिक पसीना लाने वाला और ज्वर निवारक है। ज्वर दूर करनेके लिये कुनेन और सिनकोना से इसमे कुछ अच्छाइया भी हैं। कुनेनके अधिक सेवन से रोगी की श्रवण शक्ति कमजोर हो जाती है, वह इससे नहीं होती। कुनेन चढे हुए ज्वर मे नहीं दी जाती मगर यह चढे हुए ज्वरमे भी दिया जा सकता है। यह अत्यधिक रज श्रावमे भी काममे लिया जाता है और इसके परिणाम सन्तोष जनक होते हैं।

हूक्म बूलरके मतानुसार इसके पत्ते बलूचिस्तान मे पीलिया की बीमारीमे काममे लिये जाते हैं।

खूनी बवासीरके ऊपर भी रसोत बाह्य और अन्त प्रयोग, दोनों कामों मे ली जाती है और उसमे अच्छा फायदा होता है। बवासीर को दूर करने के लिये रसोत, निम्बोली की मगज और मुनक्का के साथ गोली बना कर दी जाती है और उससे अच्छा लाभ होता है। इसके साथ ही रसोत को मक्खन के साथ मिलाकर बवासीर पर लगाई भी जाती है।

तीव्र नेत्राभिष्यन्द रोगमें इसको फिटकरी और मक्खन के साथ मिला कर आखों के ऊपर लेप करते हैं।

शारिरिक स्राव और मल की अधिकता होने पर दारुहल्दी को देने का बहुत रिवाज है। इससे श्लेष्मा और पीव की कमी होती है। त्वचा और त्वचा के अन्दर की रस ग्रन्थि की विनिमय क्रिया दारु हल्दी को देने से सुधरती है। इस कारण उपदंश, गण्डमाला, नासूर, भगन्दर, व्रण, और विसर्प रोगों में इसको खिलाने से और इसका लेप करने से अच्छा लाभ होता है। प्रदर और गर्भाशय की शिथिलतासे होने वाले अत्यार्तव में इसको उपयुक्त अनुपान के साथ देनेसे लाभ होता है।

दारु हल्दी से पेशाब की शुद्धि भी होती है। इसलिये बस्तिशोथ में दारु हल्दी को आवले के साथ देना चाहिये।

सूजन पर रसोत का लेप करने से सूजन मिट जाती है। कण्ठ माला पर रसोत और कपूर को मक्खनके साथ मिला कर लगाने से फायदा होता है। जख्म के ऊपर रसोत का लेप करनेसे जख्म जल्दी भर जाता है। नेत्राभिष्यन्द में इसका लेप आखों पर करने से आखों की सूजन उतर जाती है। मुख रोगोंमें दारु हल्दीके क्वाथके कुल्ले करने से लाभ होता है। खूनी बवासीर में पाच रत्ती रसोतको ५ रत्ती नीम के बीजों के साथ मिलाकर, मक्खन में मिलाकर देनेसे और १ ड्राम रसोत को ३ औंस पानीमें मिलाकर उससे बवासीर को धोने से अच्छा लाभ होता है।

सॉप और बिच्छू के विष को दूर करने के लिये भी इस औषधि की अच्छी तारीफ है। मगर रेस और महस्करके मतानुसार इस वनस्पति की जड़, गोंद शाखाए, इत्यादि सभी अंग साप और बिच्छू के विष पर बिलकुल निरुपयोगी हैं।

डॉक्टर देसाई के मतानुसार दारुहल्दी कडवी, उष्ण, कटुपौष्टिक, पार्यायिक ज्वर को दूर करनेवाली, पसीना लानेवाली, कफनाशक और चर्म रोगों को दूर करनेवाली है। इससे बनाया जानेवाला रसोत सूजन को दूर करनेवाला, कफनाशक, पार्यायिक ज्वर को दूर करने वाला और ज्वर नाशक होता है। इसका फल ज्वरशामक शीतल, खट्टा और रोचक होता है। छोटी मात्रामें दारु हल्दी कटुपौष्टिक, दीपक और सौम्यग्राही होती है। इसका कटुपौष्टिक धर्म, कलंब की जड और कडू (Gentiana Kurroa) के समान होता है। बड़ी मात्रा में यह एक जोरदार पसीना लानेवाली और उत्तम ज्वरनाशक औषधि हो जाती है। मात्रा और अधिक होनेसे इससे पेटमें मरोडी चलकर दस्त होने लगते हैं। इसका ज्वरनाशक धर्म सिनकोना के धर्म के समान है। मगर सिनकोनामें होनेवाली प्रतिक्रियाए इसमें नहीं होती।

मलेरिया ज्वर को दूर करनेके लिये यह औषधि कुनेन की अपेक्षा हलके दर्जे की है। जीर्ण ज्वर मे बढ़ी हुई तिल्ली को यह कुनेनके समान ही सकुचित करती है। इसमे पाया जानेवाला बरबेराइन नामक पीला तत्व पेशाब और त्वचा के रास्तेसे बाहर निकलता है। पेशावके मार्ग से बाहर निकलते समय यह पेशाब का रग पीला कर देता है और मूत्र पिड की सूजन या दूसरी बीमारियों को मिटा देता है। त्वचाके रास्ते बाहर निकलते समय यह त्वचा की विनिमय क्रिया को सुधार देता है।

चक्रदत्तके मतानुसार इसकी छाल का ताजा रस शहदके साथ प्रात काल लेनेसे पीलिया की बीमारी मे लाभ होता है।

उपयोग —

ज्वर—दारु हल्दी की जड १४ तोला, १ सेर पानी मे डालकर उबाले। जब आधा सेर पानी रह जाय तब इसको छानकर १ औंस से २ औंस की मात्रा मे देने से ज्वर में लाभ होता है।

बवासीर—रसात ५ ग्रेन, नीम के फलो की गिरी २ ग्रेन, मुनक्का १० ग्रेन। इन तीनो की तीन गोलिया बना ले। इन गोलियों को सोते वक्त लेने से बवासीर मे लाभ होता है।

गठिया—इसकी डालियोको औटाकर उनका काढा पिलानेसे पसीना और दस्त होकर गठियामे लाभ होता है।

वायुका दर्द—इसकी जडकी छालका गुडके साथ काढा बनाकर पिलानसे पेटमे होने वाला वायु का दर्द मिट जाता है।

दस्त—दारुहल्दी की जडकी छाल और सोठ समान भाग लेकर पीसकर दिनमे २।३ बार लेनेसे दस्त बन्द होजाते हैं।

दांतोंका दर्द—इसके फलका काढा बनाकर उससे कुल्ले करनेमे दातो और मसूडोंका दर्द जाता रहता है। और मसूडे मजबूत होते हैं।

ज्वर—ज्वरको रोकने और उतारनेम यह कुननके बराबर है। इसकी जडकी लकड़ीके उपयोगसे सूजन वाला बुखार उतर जाता है। हमेशा बने रहने वाले बुखारमे इसका काढा पिलानेसे वह बुखार उतर २ कर आने लगता है। इसका ढाई तोला काढा दो २ तीन २ घटेके फासलेसे बुखारकी बारीके दिन देनेमे बहुत पसीना होकर बुखार छूट जाता है। खराब हवा या जंगली हवासे होने वाले बुखारमे अगर कुनेन और आर्सेनिकके प्रयोगमे भी लाभ नहीं हुआ

हो तो इसका प्रयोग करके देखना चाहिये। तिल्ली और यकृतके बढजानेमें भी इसका काढा फायदा पहुँचाता है। इसका काढा बनानेकी विधि प्रयोग नम्बर १ में लिख दी गई है।

पीलिया—इसके काढेमें शहद मिलाकर पिलानेसे पीलियामें लाभ होता है।

अंड वृद्धि—इसके काढेमें गौमूत्र मिलाकर पिलानेसे अंड वृद्धि मिट जाती है।

---

## दारुहल्दी का फल ( जरेशक )

वर्णन—

दारुहल्दीके फलको जरेशक कहते हैं। यह फल कुछ लम्बाई लिये हुए गोल होता है। इसका रंग कच्ची हालतमें हरा, पकनेपर लाल और सूखनेपर काली दाखकी तरह काला हो जाता है। यद्यपि यह फल हिमालय पहाड़में भी पैदा होता है, मगर इसकी विशेष आमद ईरान, खुरासान, शीराज, स्याम और इसफहानसे होती है। ईरानी जरेशक सबसे अच्छा होता है। सुर्खी माइल काले रंगका जरेशक सबसे उत्तम माना जाता है और पीलापन लिये हुए लाल रंगका जरेशक घटिया माना जाता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मत—यूनानी चिकित्साके अन्दर यह एक प्रसिद्ध और घरेलू औषधि मानी जाती है। यह दूसरे दर्जेमें सर्द और खुश्क है। इसकी जड़की छाल पहले दर्जेमें गरम और खुश्क है। यह पित्तको बिखेर देता है और उसकी तकलीफ और तेजीको कम करता है। दिल ( हृदय ), जिगर और मेदाको ताक़त देता है। बवासीर और श्वेत प्रदरमें इसको दालचीनी और शहदके साथ देनेसे लाभ पहुँचाता है। मासिक धर्मकी अधिकताको भी यह कम करता है। जलोदरमें लाभदायक है। कफसे पैदा होनेवाले बुखार और अतिसारमें भी यह लाभदायक है। जिगर और मेदेकी खराबीसे जो दस्त होते हों उनको भी यह दूर करता है। इसका लेप सूजन की सख्तीको बिखेर देता है।

जरेशक और शहद और चौथाई कागजी नीबूका रस लेकर उसकी शक्करके साथ चाशनी करे। गाढा होजाने पर उतारले। यह दवा हर प्रकारके जहरके उपद्रवों में लाभ पहुँचाती है।

जिसके हृदयमें गर्मी की वजहसे बेचैनी हो उसमें जरेशकको देनेसे बड़ा लाभ होता है। पित्तकी वजहसे होनेवाली दस्तोंको भी वह दूर करता है।

इसकी जडकी छालको पीसकर जख्मो पर छिडकनेसे जख्म सूख जाते हैं। इसकी जडकी छालका काढा बनाकर उससे कुल्ले करनेसे मुहके छाले और मसूडोंकी कमजोरी मिट जाती है। इसकी जड़की छाल आखके लिये ममीरेकी तरह काम देती हैं। इसको पीसकर योनिमें रखनेसे गर्भ गिर जाता है।

मुजिर—यह सर्द और कफ प्रकृति वालोंके लिये तथा वात प्रकृति वालोंके लिये हानिकारक है। इसकी जडकी छाल खासीमे नुकसान पहुँचाती है।

दर्पनाशक—सर्द प्रकृति वालोंके लिये इसका दर्पनाशक लौंग है और वात तथा खुश्क प्रकृतिवालो के लिये इसका दर्पनाशक शक्कर और गुलकन्द है। इसकी जडकी छालका दर्पनाशक शहद है।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि खट्टा अनार और गुलाबके फूल हैं।
मात्रा—जरेशकके फलों की मात्रा ७ माशे तक है। इसके निचोडे हुए पानी की मात्रा ६ तोले तक है।

---

## दारूहलदी मलाबारी ( मरमंजुल )

नाम —

संस्कृत—वहिर्हरिद्रा, दारुहरिद्र दर्वी, पीतदारू। हिन्दी—झाडकी हरदी। बम्बई—दारूहलद। मद्रास—दारूहलद। बगाल—हलदीगाछ। कनाडी—दोड्डुमरदर्सिन। तामील—मरमजुल मराठी—झाडीहलद। लेटिन—*Coscinium Fenestratum* ( कोसिनियम फिनिस्ट्रेटम )।

वर्णन—

यह एक बेल होती है जो मलाबार व सिंहलद्वीपके पहाडी प्रदेशोंमे पेदा होती है इस बेलके डखलों से पीला रङ्ग निकाला जाता है और यह औषधि प्रयोगमे भी काममें आती है। इसका तना एकसे चार इञ्च तक मोटा, छाल फीके रङ्ग की, लकडी सब्जीमाइल पीले रङ्गकी, और पोली होती है। इसका स्वाद कडवा और निर्गन्ध होता है। यह वनस्पति मलाबारी दारूहल्दी के नामसे बिकती है। कहीं २ पर गन्धी लोग असली दारूहल्दीके नाम पर भी दे देते हैं। मगर दारूहलदीकी अपेक्षा इसकी लकडी कम कठिन और कम पीले रंगकी होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पतिके अन्दर भी दारूहलदीके अन्दर पाया जानेवाला बरबेराइन नामक तत्व

वस्तु है। यह अग्निको दीप्त करती है, काबिज है, खून को साफ करती है, हर एक दोषको समानता पर ला देती है, दिमाग के अन्दर की रतूबत को सुखा देती है, पट्ठों को फायदा पहुँचाती है, और पेशाब तथा मासिक धर्म को जारी करती है।

बवासीर के रोग में भी यह लाभ पहुँचाती है। खासी, दमा, जलोदर, ज्वर, पागलपन और माली खोलिया में भी यह मुफीद है। कफ की वजह से अगर आवाज बैठ गई हो तो उसे यह खोल देती है। मुंह की बदबू को मिटाती है। सीनेमे जमे हुए चिकने कफ को छांट देती है। वमन को रोकती है। इसके तेल को सिर ललाट और कनपटी पर लगाने से सर्दी का सिर दर्द आराम हो जाता है। इसको आंख पर लगाने से आंख का फड़कना बन्द हो कर आंख की ज्योति बढ़ती है। अण्डकोष में पानी उतर आने की बीमारी में भी यह फायदा पहुचाती है। यह स्मरण शक्ति को बढ़ाती है। पक्षाघात और मृगी में लाभ दायक है। मस्तगी के साथ इसका काढा देनेसे कफकी हिचकी मिट जाती है। कम्पवात में भी यह लाभ पहुँचाती है। कानके दर्द में मुफीद है। इसको मुंह में चबा कर इसका रस कामेन्द्रिय के अगले हिस्से पर लगाकर स्त्री प्रसग करने से दोनों को प्रसन्नता होती है। बिच्छू के विषपर इसको अञ्जीर के साथ लगाने से फायदा होता है।

दालचीनी गर्भवती स्त्री को अधिक मात्रामें नहीं देना चाहिये। क्योंकि यह गर्भको गिरा देती है। गर्भाशय में भी इसको रखने से गर्भ गिर जाता है। इसका तेल सरदी की सूजन और सरदी की बीमारियों को दूर करता है।

मुजिर—इसकी अधिक मात्रा गरम प्रकृति वालों में सिर दर्द पैदा करती है और गुर्दे तथा मसाने को नुकसान पहुँचाती है।

दर्पनाशक—इसके दर्प को नाश करने के लिये कतीरा, असारून, सफेदचन्दन और शमीरा बनफ्शा मुफीद है।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि कबाब चीनी और कुलञ्जन है।

मात्रा—इसकी मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है और इसके तेल की मात्रा ५ बूंद तक है।

उपयोग —

अतिसार—दालचीनी की छाल ४ माशे लेकर उसमें १ तोला कत्था मिलाकर पीस लेना चाहिये। इसमें २½ तोला खौलता हुआ पानी डाल कर ढक देना चाहिये। दो घण्टे के बाद उसको छान कर दो हिस्से करके पीना चाहिये। इससे दस्त बन्द हो जाते हैं।

कर्नल चोपरा के मतानुसार दालचीनी का उपयोग औषधियों मे बहुत परिमित-रूप मे किया जाता है। यह पेट का आफरा उतारनेवाली, अग्निवर्धक और सकोचकगुण वाली होती है। आतों की तकलीफो मे दी जानेवाली औषधियो मे इसको भी मिलाया जाता है। दातोके दर्द और स्नायु शूल में इसके तेल का बाह्य प्रयोग भी किया जाता है। इसके तेलमें प्रधानतया सीनेमिक एल्डर हाइड नामक पदार्थ पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें फेलड्रेन, पाइनेन, लाइनेन, केरियोफिलीन और युगेनल भी थोडी मात्रामे पाये जाते हैं। इसके पत्तोंसे भी एक प्रकार का काला तेल तैयार किया जाता है। यह इसके छिलकेके तेलसे बिलकुल भिन्न रहता है। इसमें लौंगके समान गध आती है और युग्नेल की मात्रा इसमे ७० से ८० प्रति सैकडा तक पाई जाती है। सिनेमिक एल्डर हाइड, पाइनेन और लीनेलोल भी इसमें कुछ मात्रामें पाये जाते हैं।

इसकी एक दूसरी जाति जिसको सस्कृतमे तेजपत्र और लेटिनमे साइनेमोमम् तमाल, कहते हैं और हिन्दी तथा बगालीमें इसके पत्तों को तेजपात और छिलके को दालचीनी कहते हैं। यह भी चीन और हिमालय पहाड पर ३ हजारसे ७ हजार फीट की ऊचाई तक होती है। यह असली दालचीनीसे हलकी होती है। इसमे भी साइनेमिक एल्डेहाइड काफी मात्रामे अर्थात् ७० से ८४ प्रतिशत तक पाया जाता है। मगर असली दालचीनीमें पाये जानेवाले साइनेमिक एल्डेहाइडमे इसमें बहुत अन्तर है। असली दालचीनीके तेलमें पाइनेन इत्यादि पदार्थ होनेसे इसकी खुशबू बहुत भली मालूम होती है। मगर इसके तेलमे टरपेन की मात्रा अधिक होनेसे इसकी गंध कुछ अप्रिय हो जाती है।

वुडवर्डके मतसे दालचीनी एक उत्तम अग्निदीपक, पेटके आफरे को उतारनेवाली और शान्तिदायक वस्तु है। यह हृदय को उत्तेजना देनेवाली, आक्षेप निवारक और मदाग्नि, कब्जियत, पेचिश और ज्वरमें उपयोगी होती है।

यूनानी मत—

यूनानी मत से दालचीनी दूसरे दर्जे के आखिर मे गरम और खुश्क होती है। इसका तेल तीसरे दर्जे मे गरम और खुश्क होता है।

हकीम बुकरात का कहना है कि यह मनुष्य की शक्ति को हमेशा बनाये रखती है। बहुत मुलायम होने की वजहसे यह मनुष्य शरीरमे पहुँचते ही बारीक परमाणुओंके रूप मे बिखर कर रक्त मे मिल जाती है और अपनी गरमी की वजह से सारे शरीर मे समानता पैदा कर देती है। शरीर के सब दोषों को यह खुश्क करके बिखेर देती है और उनमे बदबू पैदा नहीं होने देती है। वायु को बिखेरने मे इसकी शक्ति कुलञ्जन और काली मिरचसे कम है। कामशक्ति को बढानेमे और कामेन्द्रिय मे उत्तेजना पैदा करने मे भी यह एक अच्छी

वस्तु है। यह अग्निको दीप्त करती है, काविज है, खून को साफ करती है, हर एक दोषको समानता पर ला देती है, दिमाग के अन्दर की रतूवत को सुखा देती है, पट्ठों को फायदा पहुँचाती है, और पेशाव तथा मासिक धर्म को जारी करती है।

ववासीर के रोग मे भी यह लाभ पहुँचाती है। खासी, दमा, जलोदर, ज्वर, पागलपन और माली खोलिया मे भी यह मुफीद है। कफ की वजह से अगर आवाज वेठ गई हो तो उसे यह खोल देती है। मुह की वदवू को मिटाती है। सीनेमे जमे हुए चिकने कफ को छाट देती है। वमन को रोकती है। इसके तेल को सिर ललाट और कनपटी पर लगाने से सर्दी का सिर दर्द आराम हो जाता है। इसको आख पर लगाने से आख का फडकना वन्द हो कर आख की ज्योति वढती है। अण्डकोप मे पानी उतर आने की बीमारी मे भी यह फायदा पहुँचाती है। यह स्मरण शक्ति को वढाती है। पक्षाघात और मृगी मे लाभ दायक है। मस्तगी के साथ इसका काढा देनेसे कफकी हिचकी मिट जाती है। कम्पवात मे भी यह लाभ पहुँचाती है। कानके दर्द मे मुफीद है। इसको मुह मे चवा कर इसका रस कामेन्द्रिय के अगले हिस्से पर लगाकर स्त्री प्रसग करने से दोनो को प्रसन्नता होती है। विच्छू के विषपर इसको अन्जीर के साथ लगाने से फायदा होता है।

दालचीनी गर्भवती स्त्री को अधिक मात्रामे नही देना चाहिये। क्योंकि यह गर्भको गिरा देती है। गर्भाशय मे भी इसको रखने से गर्भ गिर जाता है। इसका तेल सरदी की सूजन और सरदी की वीमारियों को दूर करता है।

मुजिर—इसकी अधिक मात्रा गरम प्रकृति वालों मे सिर दर्द पैदा करती है और गुर्दे तथा मसाने को नुकसान पहुँचाती है।

दर्पनाशक—इसके दर्प को नाश करने के लिये कतीरा, असारून, सफेदचन्दन और खमीरा बनफशा मुफीद है।

प्रतिनिधि- इसके प्रतिनिधि कवाव चीनी और कुलन्जन है।

मात्रा—इसकी मात्रा २ माशे से ६ माशे तक है और इसके तेल की मात्रा ४ बूंद तक है।

उपयोग —

अतिसार—दालचीनी की छाल ४ माशे लेकर उसमें १ तोला कथा मिलाकर पीस लेना चाहिये। इसमें २५ तोला खौलता हुआ पानी डाल कर ढक देना चाहिये। दो घण्टे के वाद उसको छान कर दो हिस्से करके पीना चाहिये। इससे दस्त वन्द हो जाते हैं।

नम्बर २—दाल चीनी का चूर्ण ६ रत्ती और कत्था ६ रत्ती इन दोनों को पीस कर लेनेसे दस्त वन्द हो जाते हैं।

मन्दाग्नि और कब्जियत—सोठ ५ रत्ती, दालचीनी ५ रत्ती, और इलायची ५ रत्ती। इन तीनों को पीस कर भोजनके पहिले लेने से भूख वढती है और कब्जियत मिटती है।

इनफ्लूएन्जा—दालचीनी ३॥। माशे, लोंग ५ रत्ती, सोंठ १५ रत्ती। इन तीनों का एक सेर पानीमें काढा बना लेना चाहिये। जब पाव भर पानी रह जाय तब उतार कर छान लेना चाहिये। इस काढे को दिन में तीन बार ५ तोले की मात्रामें देनेसे इनफ्ल्यूएन्जा में बड़ा लाभ होता है।

खांसी—दालचीनी ३॥। माशे, सोंफ २ माशे, मुलेठी २ माशे, बीज निकाले हुए मुनक्का दाख ४ माशे, मीठी वादाम की मगज १ तोला, कड़वी बादाम की मगज ४ माशे, शक्कर ८ माशे। इन सब चीजों को पीस कर तीन तीन रत्ती की गोलियां बना लेना चाहिये। इन गोलियों को दिन भर मुह में चूसते रहने से खांसी में काफी फायदा होता है।

सिर दर्द—दालचीनी के तेल को ललाट पर मलने से सरदी की वजह से पैदा हुआ सिर दर्द मिट जाता है।

दन्त रोग—इसके तेल मे फोया तर करके दांत की पोल मे दबा देने से दन्त शूल मिट जाता है।

आन्तों का खिचाव—दालचीनी का तेल पेट पर मलने से आन्तों का खिचाव मिट जाता है।

कान का बहिरापन—दाल चीनी का तेल कानमें टपकाने से कानके बहरेपन मे लाभ होता है।

---

## दालचीनी जंगली

नामः—

हिन्दी—जगली दालचीनी। बम्बई—तीखी। मराठी—रक्ता दालचीनी, रदलचीनी। तेलगू—पचाकू। तामील—कटुकसकपलई। लेटिन—Cinnamomum Iners ( सिनेमोमम इनर्स )।

वर्णन—

यह वनस्पति मलाया प्राय द्वीप, सुमात्रा, वरमा और बगालके पूर्वी हिस्सेमे पैदा होती है। इसके पौधे का आकार, प्रकार, स्वाद और सुगन्ध दालचीनी की तरह

गुणदोष और प्रभाव—

इसके बीजों को पीसकर शहदमें मिलाकर चटानेमें बच्चोंके दस्त बन्द हो जाते हैं। बच्चो की खासी को दूर करनेके लिये इसके बीजों के काढेमें शहद मिलाकर देते हैं। बुखार को दूर करनेवाली दूसरी दवाइयोंके साथ इसके बीजों को काढा करके पिलाने से बुखार छूट जाता है।

---

# दालमी

नाम—

संस्कृत—अपियद्रुम, भूरिफल धूसर, नालीशिला, पाडुफली, पाताली, बृहद्बीजक। हिन्दी—दालमी, पटाला, दल्य। गुजराती—शीणवी। बम्बई—कांटेपुरण, पाढरफली। गोआ—परपो। तामील—चेलाइपुल्ला, इरुपुलाई, नरपुल्लु। तलगू—वेलपुरुगुडु, तेलपुलि। लेटिन—Flueggia Microcarpa (फ्ल्यूगिया मायक्रोकार्पा)।

वर्णन—

यह एक झाड़ीनुमा पौधा होता है। इसकी छाल भूरी, पत्ते पतले और २५ [redacted] ७५ सेंटिमीटर तक लम्बे और १६ से ४५ सेन्टिमीटर तक चौड़े होते हैं। इसमें नर और नारी दोनों तरहके फूल लगते है। यह वनस्पति सारे भारतवर्षमें और मलाया प्राय द्वीप में पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे यह वनस्पति मीठी, ठंडी और पौष्टिक होती है। मूत्रकृच्छ्र, पित्तप्रकोप और रक्त विकारमें यह लाभदायक है।

इसके पत्तों का रस अथवा इसके पत्तों को तम्बाकूके साथ मिलाकर एक लेप तैयार किया जाता है जो घावों के कृमियों को नष्ट करनेके काममें लिया जाता है। इसका पौधा सुजाक को नष्ट करनेवाला माना जाता है। इसके पत्तों का रस कुचलेके विष को नष्ट करता है।

# दिवोरिया

नाम —

उड़िया—दिवारिया। नेपाल—पाग्नी। तेलगू—नेलगोदू। लेटिन—Vitis Repens ( विटिस रपेन्स )।

वर्णन—

यह एक पराश्रयी लता है जो पूर्वी हिमालय आसाम, चिटगाव और दक्षिणके कुछ हिस्सों में पैदा होती है। इसके पत्ते झिल्लीदार और फीके हरे रंगके होते हैं। इसकी शाखाएं कानेदार, फूल गोल और चार पखड़िया वाले और फल लम्बगोल होता है। हर एक फलमें एक बीज होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति सांघातिक फोडो अर्थात विद्रधिके ऊपर लेप करनेसे बहुत फायदा पहुँचाती है। गर्भ सम्बन्धी फोडो ( Foet d ulcorations ) को भी यह जल्दी मिटा देती है।

# दिवाकंद

नाम —

बम्बई—दिवा, दिवाकद। दक्षिण—वडाकद। तेलगू—चादा, कादा। सथाल—घाड़। अंग्रेजी—Indiau Arrowroot ( अरारुट )। लेटिन—Tacca pinnatifida ( टेक्का पिनेटिफिडा )।

वर्णन —

यह वनस्पति बंगाल, सेंट्रल इंडिया और सीलोनमें पैदा होती है। इससे अरारोटकी तरह एक पदार्थ तैयार किया जाता है। जिसको इंडियन अरारोट कहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

इसका कद कच्ची हालतमें बहु कडवा रहता है। इससे तैयार किया हुआ अरारोट अतिसारके अन्दर एक उत्तम पथ्य है।

# दीपड़ वेल

नाम—

गुजराती—दीपडवेल। कच्छी—फोतियार। लेटिन—Ipomoea Dasysperma ( इयोमोइया डेसिसपरमा )।

वर्णन—

यह एक वेल होती है जो वर्षा ऋतुमे पैदा होती है। इसकी वेल बहुत लंबी होती है। इसके फूल पीले रंगके और फल गोल और नोकदार होते हैं। हर एक फलमे चार २ बीज रहते हैं। यह वनस्पति रुहेलखंड, कन्नड़ और दक्षिणमे पैदा होती है। इस वेलके पत्ते और फूल बहुत सुन्दर होते हैं इसलिये यह बाग बगीचों में बोने लायक होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह सूजनको नष्ट करने वाली और रेचक होती है। इसकी जड़ों और पत्तोंको पीसकर नारुके ऊपर बांधते हैं। इसके बीज रेचक और पागल कुत्ते के विषको नष्ट करने वाले होते हैं।

---

# दीर्घपत्रक

नाम

संस्कृत—अम्रपुष्पा दीर्घपत्रका, शीर्षवल्लि, गंधपुष्पा, इत्यादि। हिन्दी—दीर्घपत्रा। तामील—आरिनि, पीरम्रवु। तेलगू—वेथमा। लेटिन—Calamus Rotang ( कैलेमस रोटंग )।

वर्णन—

यह वनस्पति मध्यप्रदेश, दक्षिण और करनाटकमे पैदा होती है। इसका तना बहुत नाजुक रहता है। उसके ऊपर हलके कांटे रहते है। इसके पत्ते ४५ से लेकर ६० सेंटिमीटर तक लम्बे होते है। इसके नर और मादा दोनों तरहके फूल लगते है। इसका फल फीके पीलेरंगका और बहुत पतले छिलकेवाला रहता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मतसे यह वनस्पति तीक्ष्ण, कडवी, सुगन्धित, कसैली,

शीतल और विषनाशक होती है। कफ और वातमें यह लाभदायक है। पित्तकी जलन, बवासीर, पथरी, श्लीपद, पेचिश, प्यास, व्रण, कोढ, रक्तरोग और मूत्रसम्बन्धी विकारोंमे यह लाभदायक है। गर्भाशय और योनिद्वारके विकारोमे भी यह उपयोगी समझी जाती है। इसकी जड जीर्णज्वरमें दी जाती है। इसके पत्ते खून और पित्तकी बीमारियोमे उपयोगी और मृदुविरेचक होते हैं। इसके बीज कफ रोग और रक्तरोगमें लाभदायक होते हैं।

अनाममे इसकी लकडी कृमिनाशक वस्तुकी तरह उपयोगमे ली जाती है।

कम्बोडियामे इसकी जडें पेचिश और पित्तको नाश करनेवाली, पौष्टिक, ज्वरनिवारक और विरेचक मानी जाती है।

कर्नलचोपराके मतानुसार इसकी जड सापके काटने पर उपयोगी मानी जाती है।

---

# दुकू ( दुको )

नाम—

हिन्दी—दुकू। फारसी—दूका। बम्बई—थाफ्ली। लेटिन—Peucedanum Grande ( पीसेडेनम ग्रेंडी )।

वर्णन—

यह सोयाकी जातिका एक पौधा है। इसके पत्ते और फूल सोयेके पत्तो और फूलोंकी तरह ही होते हैं। इसकी जड गाजरकी तरह मोटी होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति पेटका आफरा दूर करनेवाली, उत्तेजक, मूत्रल और पौष्टिक होती है।

यूनानीमत—यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जेमे गरम और खुश्क है। यह सूजनको उतारती है। विषके प्रभावको नष्ट करती है। गुर्दे, मेदे और कामेन्द्रियको शक्ति देती है। कफ और वायुको नष्ट करती है। गुर्दे और मसानेकी पथरीको तोड देती है। मासिकधर्म, पेशाब और पसीनेको बढातीहै। गर्भाशयको साफ करती है। इसके प्रयोगसे बच्चा जल्दी पैदा होजाता है। अर्धाङ्ग वायु,गठिया और जोडोंके दर्दमे यह मुफीद है। इसको ३ माशाकी मात्रामे तरमीजके साथ मिलाकर लेनेसे पेटमे होनेवाले कद्दूदाने नामक कृमि मर जाते हैं। सीनेके अन्दर चिपके हुए खराब कफको यह निकाल देती है। जिससे खासीमे लाभ होता है। इसके सेवन से पाचनशक्ति बढती है, वीर्य गाढा होता है और मसानेमे गर्मी पैदा होती है। बच्चोंकी पेचिश

और मरोडीमें भी यह लाभदायक है। वायुसे पैदाहुए जलोदरमें भी इसके सेवनसे लाभ पहुँचता है। बिच्छूके विष पर इसका काढा शहदके साथ पिलानेसे और इसको घस कर उसपर लगानेसे शान्ति मिलती है।

मुजिर—इसका अधिक सेवन जिगर और मसानेको नुकसान पहुँचाता है। तथा गरम प्रकृतिवालोंकी कामशक्तिको कमजोर करता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये वंसलोचन, मस्तगी और कतीरा मुफीद है।

प्रतिनिधि—गाजरके बीज, अजमोद, अजवायन, सोफ और सोया है।

मात्रा—इसकी मात्रा ३ माशेकी है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति पेटका आफरा दूर करनेवाली, उत्तेजक और मूत्रल होती है। इसमें उड़नशील तेल पाया जाता है।

---

## दुजियान

नाम —

यूनानी—दुजियान।

वर्णन—

यह एक बड़े वृक्ष का फल होता है जो बंगाल और चीनमें पैदा होता है। इसके वृक्ष का पत्ता कटहलके पत्तो की तरह बडा होता है। इसका फल बडा, मोटा, लम्बा, खरबूजे की तरह और आकार में ताडके फलके बराबर होता है।

इसके अन्दर कटहल के दानोंके समान दाने होते हैं और हर दाने पर एक तेज कांटा लगा हुआ होता है। इसकी गंध बहुत खराब होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसका फल गरम, तर और रद्दी, बदन तथा कामशक्ति को ताकत देनेवाला होता है। यह पचनेमे बहुत कठिन होता है।

---

बकरियों की देह छोटी होती है। यह कड़वी तथा चरपरी वनस्पतियों को चरती फिरती हैं। जल ये बहुत कम पीती हैं और दिनभर जंगल मे विचरण करती है। इसीसे बकरियों का दूध सर्व दोष नाशक, दीपन, हल्का, मलरोधक तथा श्वास, खासी और रक्त-पित्त को दूर करता है।

भेंड का दूध—भेड का दूध मधुर, रूखा, गरम और सिर्फ वात रोग वालों को हितकारी है। रक्तपित्त और हृदय रोग मे यह हानिकारक है।

स्त्रीका दूध—स्त्री का दूध मधुर, शीतल, हलका नेत्रों को हितकारी, कसेला, पथ्य, दीपन, पाचक, धातु वर्धक, रुचिकारक तथा जीवन और स्नेह युक्त होता है। रक्त पित्तमे इसको नाकमे टपकाने से और आख की फूली पर इसको आखमें आजने से लाभ होता है।

गायका धारोष्ण दूध बलकारी, हल्का, शीतल, अमृतके समान दीपन और त्रिदोप नाशक होता है। जिस गायके दूध की धार शीतल हो गई हो वह त्यागनेके योग्य है। गायका धारोष्ण दूध उत्तम होता है। भैंस का धारा शीत दूध उत्तम होता है। भेड का गरमा-गरम दूध हित जनक होता है और बकरी का औटाकर शीतल किया हुआ दूध हितकारी होता है।

दिनके पूर्वार्ध मे पिया हुआ दूध वीर्य बढाने वाला, पौष्टिक और अग्निदीपक होता है। दिनके उत्तरार्ध मे पिया हुआ दूध बल कारक, कफ नाशक, पित्त हारक, अग्नि प्रदीपक, क्षय रोगको दूर करने वाला और वृद्ध मनुष्यों में यौवन का सचार करने वाला होता है। रात्रि के समय पिया हुआ दूध अनेक दोषों की शान्ति करने वाला और उत्तम पथ्य है।

जीर्ण ज्वर, कफ और निर्बलतामें दूध अमृत के समान है। नवीन ज्वरमे यह विष के समान है। दूध मे चौथाई भाग पानी मिलाकर उसको औटाना चाहिये। जब उसका पानीका हिस्सा जल जाय तब उसको सेवन करना चाहिये। यह दूध श्रेष्ठ, सर्व रोग नाशक, बल वर्धक, पौष्टिक, वीर्य कारक और बहुत उत्तम होता है। जिन लोगों को दूध नहीं पचता हो और दूधके पीनेसे अफारा हो जाता हो, उनको दूधमे आधा पानी मिला कर उसमें थोड़ी सौंठ और थोडी पीपर डालकर औटाना चाहिये। जब पानी का भाग जल जाय तब उसको उतार कर खूब उलट पुलट करके पीना चाहिये।

ऐसा दूध बहुत आसानी से पच जाता है।

त्याज्य दूध—जो दूध बुरे रग का, बुरे स्वाद वाला, खट्टा, दुर्गन्धित और गाठदार हो उसको नहीं पीना चाहिये। खटाई और नमक के पदार्थों के साथ कभी दूध का सेवन नहीं करना चाहिये। तीन मुहुर्त तक रक्खा हुआ दूध विकार को प्राप्त हो जाता है। छ मुहुर्त तक

रक्खा हुआ दूध अनेक दोषों उत्पन्न करता है और दस मुहुर्त तक रक्खा हुआ दूध विषके समान हो जाता है।

ताम्बे के बर्तनमें दुहा हुआ दूध वायी को दूर करता है। सोने और चांदी के बर्तन में दुहा हुआ दूध कफ को नाश करता है। कांसी के बर्तनमें दुहा हुआ दूध रक्तपित्त को मिटाता है। लोहे के बर्तनमें दुहा हुआ दूध त्रिदोष नाशक होता है। और मिट्टी के बरतनमें दुहा हुआ दूध कामशक्ति वर्धक, धातु को बढाने वाला और वायु तथा कफ को दूर करने वाला होता है।

यूनानी मत—

यूनानी मत मे स्त्रियों के दूध के बाद गाय का दूध ही सबसे उत्तम माना गया है। जिस दूध मे जाड़ापन होता है वह दूध देर से हजम होता है। बच्चा जब तक ४० दिन का न हो जाय तब तक उस जानवर का दूध हानिकारक माना जाता है।

दूध उग्र औषधियों और विषोंके दर्प को नष्ट करने के लिये एक उत्तम पदार्थ है। कुचला अजवायन खुरासानी, कुटकी, इत्यादि उग्र औषधियों के दर्प को यह नष्ट कर देता है। बुड्ढों के लिये विशेष लाभ दायक है। जिन लोगो के आन्तो और मेदे मे दोष सञ्चित रहते है उनको दूध पीने से दस्त आने लगते है और जब दोष निकल जाते है तब यह कब्ज करने लग जाता है। इसलिये यह दस्तावर और काबिज दोनों है। आन्तो के जख्ममें यह उत्तम पथ्य है। इससे जखम साफ होते है। खुश्की की वजह से अगर स्मरणशक्ति कम हो गई हो तो उसमें दूध एक उपयोगी वस्तु है। वहम, उदासी, और देहशत म भी यह लाभ दायक है। स्त्री प्रसग से होने वाली कमजोरी को मिटाने के लिये दूध के समान लाभ दायक वस्तु दुनिया म दूसरी नहीं है। क्षयरोग के अन्दर भी यह लाभ दायक वस्तु है।

दूध से होने वाली हानिया—यूनानी मत से हर एक प्रकार का दूध पेटमें जाकर यकृत के अन्दर सुद्दे पैदा करता है। जिन के शरीर से रक्त बहुत निकल गया हो उनके लिये भी यह हानिकारक है। क्योंकि ऐसे लोगों की प्राण वायु कमजोर हो जाती है और हाजमा बिगडनेसे उन्हें दस्त आने लगते है। जो लोग परिश्रम ज्यादा करते हैं या जिनकी प्रकृति गर्म होती है उनके मेदेमें यह खराबी पैदा करता है। इसके अधिक सेवन स श्वेत कुष्ट और शरीर पर काले चकते होने का डर रहता है। जिनके पटके अन्दर या बाहर कफ की सूजन हो उन्हें भी यह नुकसान पहुँचाता है। सन्धियों को भी यह हानि पहुँचाता है। दांतों को कमजोर कर देता है। गाढा दूध उदरशूल और पथरी को पैदा करता है।

खटाई, नमकीन चीज, इमली, नीबू, तिलका तेल, कुल्थी, मछली राई, प्याज, दही, छाछ

उसको खिला देना चाहिए और शुरूके ८ दिनोंमे उसका दूध दुहकर फेंक देना चाहिये। नौवें दिनसे उस बकरीका दूध पीनेके काममें लेना चाहिए या उस दूधमे १ तोला कौंचके बीजोंका चूर्ण डालकर उसकी खीर बनाकर खाना चाहिये। खीर हजम होनेके पश्चात् रोटी, भात घी और दूधका भोजन करना चाहिए। बाकीकी सब चीजें नमक, मिर्चा, खटाई, मसाले, वगैरह सब छोड देना चाहिए। बकरीको सिंगरफ खिलानेका प्रयोग पूरा होनेके बाद ८ दिन तक और उस दूधका सेवन करना चाहिये। इसप्रकार एक महीने तक इस दूधका सेवन कर लेनेके पश्चात् और १ महीने तक पथ्यका पूरा पालन करना चाहिए।

जङ्गलनी जडीबूटीके लेखक लिखते हैं कि इसप्रकार १ महीने तक उपरोक्त दूधका सेवन करने पर चाहे जैसी नपुंसकतामें पडा हुआ मनुष्य भी अनेक स्त्रियोंके साथ रमण करने योग्य कामशक्तिको प्राप्तकर सकता है और उसमें बल, बुद्धि तेज और कांतिकी बेहद वृद्धि होती है। क्योंकि बकरीको खिलाये हुए सिंगरफमें जो पारा होता है उसका सत उस दूध में आ जाता है। जिससे पारद सेवनमें जो अपूर्व गुण हैं वे उस दूधके सेवनसे प्राप्त हो जाते हैं और पारा विधिवत बना है या नहीं, इत्यादि झंझटोंमे पडनेकी जरूरत भी नहीं रहती क्योंकि बकरीकी जठराग्निके योगसे उसमे ऐसी क्रियाएँ हो जाती है कि फिर उसमे नुकसान का धोखाही नहीं रहता।

इसीप्रकार भिन्न २ रोगोको दूर करनेके लिये उन रोगोंको दूर करनेवाली औषधिया दुधारू जानवरोंको खिलाई जाय तो उन जानवरोंके दूधको पीनेसे वे सब रोग दूर हो सकते हैं जैसे अगर बकरीको आकडा खिलाया जाय तो उसके दूधमे दमेको नष्ट करनेकी ताकत पैदा हो जाती है। इसीप्रकार अगर उसको डोडी या तिक्तजीवन्ती खिलाई जाय तो उसके दूधमें क्षय रोग नाशक गुण पैदा हो जाते हैं।

उपयोग—

पारेके उपद्रव—दूधमें आरण्डीका तेल मिलाकर पीनेसे पारे और हींगलूके उपद्रव मिटते हैं।

नकसीर—दूधमें शक्कर मिलाकर या घी मिलाकर नाकमे टपकानेसे नकसीर बन्द होता है।

हिचकी—स्त्रीके दूधमे बकरीकी विष्टा मिलाकर नस्य देनेसे हिचकी बन्द होती है।

नम्बर २—स्त्रीके दूधमे चन्दन मिलाकर नस्य देनेसे हिचकी मिटती है।

नेत्ररोग—स्त्रीके दूधको नेत्रोंमे टपकानेसे नेत्ररोग मिटते हैं।

प्रदर—बकरीके दूधमें मोचरस मिलाकर पीने से प्रदर मिटता है।

नम्बर २—दूधमे शक्कर मिलाकर भोजनके साथ खानेसे रक्तप्रदर मिटता है।

बनावटें —

धातुवर्धक सुधा—असगध आधपाव, शतावरी पावभर, सफेद मूसली १॥ पाव, तालमखाना आधासेर, मखाने ॥ पाव, सेमरकी मूसली ३ पाव और मिश्री १ सेर। इन सब दवाओंको कूट, पीस, छानकर रख देना चाहिये। सवेरे शाम गेहूंके आधसेर आटेकी रोटी बनाकर उसका चूरमा कर लेना चाहिये। उस चूरमेमें आदपाव शक्कर और तीन तोले उपरोक्त औषधियोंका चूर्ण अच्छी तरहसे मिलाकर गायको खिला देना चाहिए। उन गायको इसीतरह खाते २ दस दिन हो जाय तब उस गायका धारोष्ण दूध सवेरे शाम मिश्री मिलाकर पीना चाहिए। ४० दिन तक इस दूधका सेवन करनेसे शरीरमें बल, पौरुष और कामशक्ति बहुत बढती है।

चिकित्सा चन्द्रोदयके लेखक हरिदास वैद्य लिखते हैं कि हमने यह सुधा कलकत्तेमें एक धनी मारवाडीको सेवन कराई। इसके सेवनसे वह हड्डियोंका कंकाल हृष्ट पुष्ट होगया। उसका कुरूप चेहरा गुलाबके फूलके समान होगया। इसके सेवनसे क्षय, क्षीणता, प्रमेह, दिल और दिमागकी कमजोरी और सिरके रोग आराम होते है। जिनको वीर्यकी कमीसे नामर्दी या क्षयरोग होता है उनके लिये तो यह अमृत रूप है।

दूधका तेजाब—( लेक्टेटिक एसिड )—दूधके द्वारा एक तरहका तेजाब तयार किया जाता है जिसको अगरेजीमें लेकेटिक एसिड कहते हैं। यह बिना रंगका, बिना खुशबूका, स्वादमें खट्टा, शराब और ईथरमें घुलन शील और क्लोरो फार्ममें अघुलन शील होता है।

यह शक्तिदायक होता है। अजीर्ण, अरुचि, मधुमेह, और मसानेके जुकाममें यह बहुत लाभदायक है। बच्चोंको होने वाले हरे रगके दस्तोंमें १०० हिस्से पानीमें ७ हिस्सा दूधका तेजाब मिलाकर एक ड्रामकी मात्रामें देनेसे बहुत लाभ होता हुआ देखा गया है।

## दुधिया हेमकद

नाम —

संस्कृत—हिमकद। गुजराती—दूधियो हेमकद, धातो कदकियो। कच्छी—घोरो पिंजेरो, मिरी आल। लेटिन—Maorua Aronaria ( मेरुआ एरोनेरिया )।

वर्णन—

इस वनस्पति की बेल बहुत कठोर होती है। यह ऊंचे २ झाडों और बाडों पर बहुत

ऊंची चढ जाती है। इसके पत्ते चिकने और लंब गोल होते हैं। इसके फूल हरी झाँई लिये हुए सफेद रगके होते हैं। जो अक्सर मन्दीके दिनो मे आते हैं। इसकी फलियाँ २ से ५ इच तक लबी होती हैं और वह मिर्चके ४ दानोको पास २ जोड कर बनाई हुई चेनके समान दीखती है। यह वनस्पति पजाब, सिंध, गुजरात, कच्छ और मध्य भारतमें खेतों की वाडों पर और जंगलकी झाड़ियोंमे पैदा होती है। इसकी बेलके नीचे ३ ४ रतल वजनका एक कद निकलता है उसको दूधिया हेमकंद कहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति शीतल, शातिदायक, दाह नाशक, तृपाशामक, रक्तशोधक और विष, चर्मरोग तथा सूजनको नष्ट करने वाली होती है। इसमें कुछ वेदना नाशक धर्म भी होता है।

इसका मुख्य उपयोग रतवा नामक चर्म रोगपर होता है। इस रोगमें इसको १॥ माशेमे २ माशे तक पानीमें घिसकर दिनमे तीनबार पिलाते हैं और इसको जलमे चदनके समान घिसकर झामरा और रतवा नामक रोगों पर लेप करते हैं। यह वनस्पति स्वादमें कुछ कडवी और विशेष तौरसे मीठी होती है। इसके गुण मुलेठी या जेठी मदमे मिलते हुए होते हैं।

श्वास, खांसी और कफ रोगो पर यह अच्छा काम करती है। इससे कफ ढीला होकर निकल जाता है और खासी कम होजाती है। दमेका दौरा भी इससे शात हो जाता है। जीर्ण ज्वरको यह दूर करती है। क्षयसे होनेवालेसायकालीन ज्वर और रात्रि स्वेदमें भी यह लाभदायक है। इसके सेवनसे शरीरका रक्त सुधरता है और शक्ति आती है। इन कार्यों में यह सार्सापरिला से अधिक प्रभाव शाली है। इसका क्वाथ और टिंचर भी बनाया जाता है। १ पिंट रेक्टिफाइड स्पिरिटमे इसका ४ औंस चूर्ण डालकर मजबूत बूचवाली शीशीमे बन्द करके ७ दिन तक पडी रखते हैं और दिन भरमे २।३ बार अच्छी तरहसे मिला देते हैं। सातवें दिन इसको मसल कर, ब्लाटिंग पेपर में छानकर, बूचदार बोतलमे भर देते हैं। इस टिंचर को १ ड्रामकी मात्रामे दूध शकरके साथ देनेसे रक्त रोगों में बहुत लाभ होता है।

दूधिया हेमकदको घिसकर गुड़के पानीके साथ पिलानेसे और इसको पानीमे घिसकर लेप करनेसे रतवा ( एक प्रकारका फैलने वाला चर्मरोग, गुजरातीमे इसे रतवा कहते हैं ) नामक रक्त रोगमें बहुत फायदा होता है।



# दूधी लाल ( नागार्जुनी )

नाम —

संस्कृत—नागार्जुनी, पयोवर्षा, योगिनी, दुग्धिका, दुग्धफेनी, इत्यादि। हिन्दी—दूधी, लाल दूधी। बंगाल—वरकेरू। गुजराती—नागली दुधेली, राती दुधेली। मराठी—नायरी। तेलगू—विदारी, नानाबला। तामील—अमुपच्छे अरिस्सी। लेटिन—Euphorbia Pillulifera ( इफोर्बिया पिल्यूलिफेरा ), E Hirta ( इफोर्बिया हिरटा )।

वर्णन—

यह एक वर्ष जीवी क्षुद्र और रूएदार वनस्पति है। इसका पौधा फुट भर ऊंचा होता है। इसकी डण्डिया लाल रंग की रहती है। इसके पत्ते आमने सामने लगते हैं। ये इंच भर लम्बे और नोकदार होते हैं। पत्तों की जोड़ी के बीचमें फलों के झूमके लगते हैं। इसके फल बाजरी के समान होते हैं। इसकी डाली को तोडने से उसमे से सफेद रंग का दूध निकलता है। यह वनस्पति तर जमीनों में ही बारह महिने मिलती है, सब जगह नहीं। इसलिये इसको वर्षा ऋतु मे इकट्ठी करके सुखा लेना चाहिये।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेद के मतसे दूधी मधुर, वीर्यवर्धक, रूखी, ग्राही, कड़वी, वात कारक, गर्भस्थापक, चरपरी, खारी, धातुवर्धक, हृदय को हितकारी, गरम, पारे को बांधने वाली, और प्रमेह, कोढ तथा कृमि को दूर करती है।

दूधी की क्रिया हृदय के अन्दर जाने वाले एक विशेष मज्जातन्तु के ऊपर होती है। इस मज्जा तन्तु का कुछ भाग फुफ्फुस में जाता है। वहां भी इसकी क्रिया होती है। इस मज्जा तन्तु को फुफ्फुस—आमाशय—मज्जा तन्तु कहते हैं। श्वासोच्छ्वास के केन्द्र स्थान और हृदय के केन्द्रस्थान पर दूधी की प्रत्यक्ष क्रिया होती है। दूधी का इन केन्द्रों पर शामक प्रभाव होता है अर्थात् इससे इनकी ज्ञान ग्राहक शक्ति कम हो जाती है। जिससे दमे के रोग मे कमी हो जाती है। दूधी का रस पेट मे जानेपर आमाशय मे कुछ जलन पैदा होती है और जम्भाइया आने लगती हैं। आमाशय में जलन न होने देनेके लिये इसको हमेंशा भोजनके पश्चात् देना चाहिये और देने के पश्चात् भर पेट पानी पीना चाहिये। इस का विषैला असर न होने देने के लिये इसको हमेशा थोडी थोडी मात्रा मे लेना चाहिये। क्योंकि अधिक मात्रा मे लेनेसे यह श्वासोच्छ्वास और हृदय की क्रिया को बन्द कर देती है।

हृदय श्वास के अन्दर यह एक उत्तम औषधि साबित हुई है। श्वास नलिकाके संकोच

विकास की वजहसे होने वाले दमेमे भी यह बहुत गुणकारी है। श्वास, सरदी और जुकाममें भी दूधी अच्छा काम करती है। यह कहा जा सकता है कि किसी भी कारणसे पैदा हुए श्वास या दमे मे दूधी को देनेसे श्वास और दमे से होने वाली त्रास और घवराहट कम हो जाती है।

रक्त मिश्रित आम और उदर शूलमे दूधी का रस देनेसे लाभ होता है। दाद और चर्म रोग इसका रस लगाने से नष्ट होते है। इसके पौधे का रस अतिसार और कॉलिक उदर शूल को नष्ट करने के लिये दिया जाता है और इसका दूध दाद और मुह पर होने वाली खीलों को दूर करने के लिये लगाया जाता है। इसका काढा, दमा और श्वास नलिका की पुरानी सूजन को दूर करनेके लिये काममे लिया जाता है।

इस वनस्पति की प्रधान उपयोगिता बच्चो को होने वाले कृमि रोग, आतों के रोग और खासी मे मानी जाती है। कभी कभी यह वनस्पति सुजाकके अन्दर भी दी जाती है।

सथाल लोग इसके पौधे को वमन रोकने के लिये देते है और जब किसी माताके दूध आना कम हो जाता है तब इस पौधे के दूधिया रसका उपयोग करते हैं।

लारि यूनियनमें इस वनस्पति का सकोचक द्रव्य की तरह बहुत उपयोग किया जाता है। प्राचीन अतिसार और प्रवाहिका रोग मे यह दी जाती है। इसका दूध वहा पर होने वाले स्थानिक फोडे फुन्सी, और सूजन पर लगाने के काम मे लिया जाता है। इसका रस मुख दात मे भी दिया जाता है। यह वनस्पति वहा पर पौष्टिक, नींद लाने वाली और दमें को नष्ट करने वाली मानी जाती है।

कोमान का कथन है कि इसमे सन्देह नहीं कि इस वनस्पति का एक्स्ट्रेक्ट फुफ्फुस की श्लेष्मिक झिल्लियों और मूत्र यन्त्रोंपर काफी प्रभाव डालता है। मैंने इसको दमेके कई रोगियों पर अजमाया और बहुत लाभ दायक पाया। मैंने इसके टिंचर को अपनी प्रायवेट प्रेक्टिस मे दमा, प्राचीन ब्रॉंकाइटीज, और मूत्र रोगियों ( Genito urinary Tract ) पर अजमाया जिसका परिणाम बहुत ही सन्तोष जनक रहा।

गोल्ड कास्टमे इसका सफेद रस स्त्रियों का दूध बढाने के काममे दिया जाता है। इसके पत्तों का रस नेत्र रोगों को दूर करने मे भी उपयोगी माना जाता है।

वाट डिक्शनेरी मे लिखा है कि दूधी का पौधा वमन को रोकनेके लिये काममे आता है। बच्चों की माता को यह देनेसे उनके दूध का प्रवाह बढता है। दमेके ऊपर भी इस औषधि की बडी तारीफ है। मगर इसका रासायनिक पृथक्करण करने पर इसमें कोई ऐसा दमे को दूर करनेवाला पदार्थ नहीं पाया गया। इसके गुण दोषो की आजमाइश करने पर यह कुछ उत्तेजक

और मादक वस्तु मालूम हुई। मगर दमेके ऊपर इसका कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नजर नहीं आया। बल्के कभी २ दमेके रोगी को यह औषधि देनेसे उसके श्वासमें बहुत रुकावट होती हुई मालूम पड़ी। इसलिये दमेके रोगमें बिना अनुभवी वैद्य की सलाहके इस औषधि को नहीं लेना चाहिये।

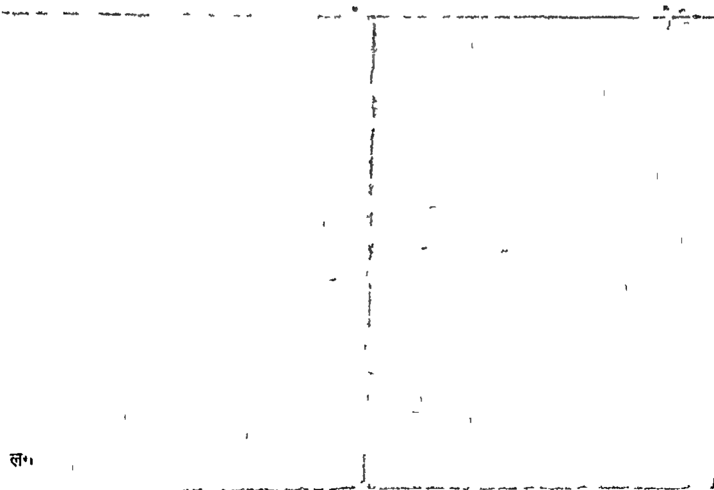
रायबहादुर कनाईलाल दे "इंडिजिनस ड्रग्स आफ इंडिया" में लिखते हैं कि दूधी का ताजा पौधा हिन्दुस्तान में बड़े पैमानेमें उपयोगमें लिया जाता है। खास करके बच्चों का होने वाले आंतों और छातीके रोगोंमें इसका उपयोग किया जाता है। कुछ वर्षों पहिले इस पौधे का एक्स्ट्रेक्ट दमेको दूर करनेके काममें बहुत लिया जाता था। यह वनस्पति उग्र और प्राचीन अतिसारमें भी बहुत उपयोगी पाई गई है।

नागपुरमें होनेवाली अठारहवीं इंडियन साइंस कांग्रेसमें दीक्षित और कामेश्वर रावने इस वनस्पति पर किये हुए अपने अनुभव बतलाये। उन्होंने कुत्ते, बिल्ली और खरगोश पर इस वनस्पतिके प्रयोग करके यह अनुभव किया कि यह औषधि श्वासोच्छ्वासके अवयवों पर बहुत प्रभाव डालती है। यह श्वासोच्छ्वास की गति को धीमी करते हुए छोटी २ श्वास नलियों का विकास कर देती है। मगर यह लाभ इसकी छोटी मात्रासे ही होता है। अगर यह बड़ी मात्रा में दे दी जाय तो उससे रोगी का जी मिचलाता है और उल्टियाँ होती हैं। अगर प्राणियों की रक्तवाहिनी में इसको इंजेक्शन द्वारा पहुँचाया जाय तो यह आंतों की गति को मंद कर देती है। कभी कभी यह आंतों की स्वाभाविक गति का भी रोक देती है और उसके स्नायु मंडल को ढीला कर देता है। रक्तवाहिनी में इसका इंजेक्शन देनेसे रक्तका दबाव भी कम पड़ जाता है। असल बात यह है कि अधिक मात्रा में यह हृदय की गति को बन्द कर देती है। दूसरे अवयवों पर इसका ज्यादा प्रभाव नहीं है।

कनल चोपरा का मत—दूधी एक वर्ष जीवी वनस्पति है जो हिन्दुस्तानके तमाम गरम प्रान्तोंमें होती है। यह बहुत नामांकित और महत्व की जड़ी मानी जाती है। इसका उपयोग श्वासोच्छ्वासके रोगोंमें, खास कर खांसी, सरदी, कफ और दमेमें होता है। सन् १८८४ में पाश्चिमात्य डॉक्टरोंने इस वनस्पति का यूरोपमें प्रचार किया। इसके पंचांग का रेक्टिफाइड स्पिरिटमें तैयार किया हुआ एक्स्ट्रेक्ट अभी भी वहाँ थोड़े बहुत प्रमाणमें काममें लिया जाता है। पेचिश, उदरशूल और बच्चोंके कृमि रोगमें भी यह बहुत उपयोगी मानी जाती है।

इसका रासायनिक विश्लेषण करने पर इसमें गेलिक एसिड, कर्सेटिन, एक नवीन फिनेलिक तत्व, कुछ इसेंशिअल आइल और कुछ अलकेलाइड का पता चला है।

मारसेटके मतानुसार इस औषधि का सत्व हृदय और श्वासोच्छ्वास की शक्ति को धीमी करके श्वास नलियों को विकसित करता है। श्वासोच्छ्वास सम्बन्धी बीमारियों में बिना


ल॰।

इसकी डालियों को तोड़नेसे उनमें दूध निकलता है। इसके सूखे पौधेमे कुछ खुशबू आती है। और सूखे हुए पत्तोंमे काली चायके समान गन्ध आती है। इसका स्वाद कुछ तूरा होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पतिका मुख्य धर्म रेचक और उत्तेजक है। बड़ी दूधीकी तरह इसमें सकोच विकास प्रतिबन्धक धर्म नहीं होता।

तामील देशके वैद्य इस वनस्पतिके पत्तों और बीजोंको बच्चोंको होने वाले आतों के रोग और कृमिरोगों को दूर करनेके लिये देते है। उत्तरी भारतमें इनका उपयोग रेचक और उत्तेजक वस्तुकी तरहमे किया जाता है।

कोकणमें इस वनस्पति का रस दाहको दूर करनेके लिये लगाया जाता है। संथाल लोग इस वनस्पतिके पौधेको मासिक धर्मकी रुकावट दूर करनेके काममे लेते हैं। मुंडा जातिके लोग इस वनस्पतिको प्रवाहिका दस्तो को रोकनेके लिये काममे लेते हैं।

लारियूनियनमें प्रवाहिका और अतिसारको रोकनेके लिये इस वनस्पतिको एक सकोचक वस्तुकी तरह काममें लेते हैं।

---

## दूध मोगरा

नाम—

संस्कृत—दुग्धिका। हिन्दी—दूधी, हजारदाना, दूधमोगरा। पजाब—हजार दाना। लेटिन—Euphorbia Hypericifolia ( इफोर्बिया हायपेरिसिफोलिया )।

वर्णन—

इसके पौधे बरसातके दिनोंमें बहुत पैदा होते हैं ये एक बालिश्त ऊंचे होते हैं। कहीं २ जमीन पर फैले हुए भी रहते हैं। इसके पत्ते आमने सामने लगते हैं। ये लबगोल और अडाकार होते हैं। इसके फूल बहुत छोटे, सफेद और गुलाबी रंगके होते हैं। इसके फल छोटे, तीन खाने वाले, बैंगनी छाया लिये हुए हरे रगके होते हैं। इस पौधेका कोई भी भाग तोडनेसे उसमेंसे दूध निकलता है।

गुणदोष, और प्रभाव—

यह वनस्पति माही, मादक, पौष्टिक, और सूजनको नष्ट करनेवाली मानी जाती है।

हैं। इसके फूल बडे और बहुत खूबसूरत रहते हैं। इसकी डाढ़ी ३.८ से ६ ३ सेन्टिमीटर तक लम्बी रहती है। यह लम्बा गाल और तीखी नाक वाली होती है। इसमें कई बीज रहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे यह वनस्पति गरम, कडवी, तीखी, खुश्क और दुष्पाच्च होती है। यह कब्जियत पैदा करती है। यह मूत्रल, मृदुविरेचक, कामोद्दीपक और कृमिनाशक है। धवल रोग और वायु नलियोंके प्रदाहमें यह लाभदायक है।

यूनानी मतस इसका फूल, कड़वा, पौष्टिक, कफनिस्सारक और कृमिनाशक होता है। इस कारण पुराने प्रमेह और सुजाकमें लाभदायक है। खासी, धवल रोग और मासपेशियों की पीड़ामे यह उपयोगी है। बच्चोके अतिसार को दूर करनेके लिये काममें लिया जाता है।

इस वनस्पतिका काढा बनाकर उससे कुल्ले करनेसे मुहके छाले मिट जा॰ हैं। तारपीनके साथ मिलाकर इसको लगानेसे खुजली मे लाभ होता है। इसमे ज्वर-निवारक गुण भी पाया जाता है।

सिंधमें इसका दूधिया रस फोड़ो को धोनेके काममे लिया जाता है। उडीसामे इसकी ताजा जडे पीलिया को दूर करनेके काममें ली जाती है।

कर्नल चोपराके मतसे मुहके छालोंमें इसके कुल्ले किये जाते हैं। पीलिया रोगमें भी यह उपयोगमें लीजाती है।

---

## दुधाली

नाम —

बम्बई—दुधाली। मुडारि—दहुसिर। लेटिन—Sopubia Dolphini folia (सोपूबियाडेलफिनिफोलिया)।

वर्णन—

यह वनस्पति बिहार छोटा ... कोकण ... घार, दक्षिण और करनाटकमें पैदा होती है। इसका पौधा ... है। ... रगके धब्बे रहते हैं इसके पत्ते आमने सामने लगते हैं। ये ... । इसके फल और बीज लंबगोल रहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

खुली हवामे पैर रहनेकी वजहसे जो छाले हो जाते हैं, उन छालो को पूरनेके लिये दक्षिणके लोग इस वनस्पतिका रस लगाते हैं। यह वनस्पति सकोचक होती है। इसको लगानेसे शुरु शुरु मे चमड़ेका रग पीला हो जाता है। फिर वह धीरे २ काला हो जाता है।

कर्नल चोपराके मतसे यह वनस्पति सकोचक होती है। इसे रगड और घावपर लगानेके काममें लेते हैं।



# दूधीकाली ( कृष्णसारिवा )

नाम

सस्कृत—कृष्ण सारिवा, कृष्ण मूली, काल पेशी, काल चटिका, गोपवधू, दीर्घ मूली, चदन सारिवा, चन्दन गोपा, महाश्यामा, श्यामलता, सुभद्रा, उत्पल सारिवा। हिन्दी—दूधी, काली दूधी, कालीसर, श्यामाराता। मराठी—श्यामलता, कृष्णसारिवा, काटे भोरी। बगाल—दूधी, श्यामलता। तामील—उदरगाडि। तेलगू—नलतिगे, करम पाला। लेटिन—Iohnocarpus Frutescens ( इकनोकार्पस फ्रटीसस )।

वर्णन—

यह एक बड़ी जातिकी बेल होती है जो हिमालय बगाल और दक्षिणकोकणमें पैदा होती है। इसके पत्ते लबगोल २ से ३ इच तक लबे और १ से १॥ इच तक चौडे होते हैं। पत्तोका डठल १ इच लबा होता है। इसके फूल छोटे और सफेद रगके होते हैं और उनपर लाल रगके रुए होते हैं। इन वनस्पतिका जड़े अनन्त मूलकी तरह होती है, मगर इनकी छाल काली होती है। जो लकड़ीसे चिपकी हुई रहती है। इसकी जड़ो मे अनन्त मूलकी जड़के समान खुशबू और स्वाद नहीं होता।

गुण दोष और प्रभाव—

( आयुर्वेदिक मत )—आयुर्वेदिक मतसे कृष्ण सारिवा शीतल, वीर्य वर्धक, मधुर और वात, पित्त, रुधिर विकार, तृषा वमन और ज्वरको नष्ट करने वाली होती है। इसके सब गुण अनन्त मूलके समान ही होते हैं। अनन्त मूलका वर्णन इस ग्रथके पहले भागमें देखना चाहिये।

---

# दूधीवेल

नाम—

संस्कृत—भद्रमुज, भद्रवल्लि, विसल्याकृत। हिन्दी—चमारोकी वेल, दूधी वेल, रामसर। कुमाऊ—दूधो। बगाल—हापर मालो, रामसोर। तेलगू—नागा माली, लेटिन—Uall।।।१ Solanacea ( व्हेलिरिस सोलेनेसीया )।

वर्णन—

यह एक बड़ी पराश्रयी झाडी होती है। इसकी छाल मोटी, पीलापन लिये हुए सफेद और मुलायम होती है। इसके पत्ते ५ से लगाकर १० सेंटिमीटर तक लबे और २ ५ से लेकर ३ सेंटिमीटर तक चौडे होते हैं। इसके फूल सफेद और सुगन्धित होते हैं। यह वनस्पति थोडी बहुत सारे भारतवर्ष मे पैदा होती है। इसकी डालियों को तोडनेसे उनमे से दूधिया रस निकलता है। इसका दूधिया रस एक हलका चर्मदाहक पदार्थ है। इसको पुराने फोड़ों और सूजन पर लगानेके काममे लेते हैं।



# दूधी ( थरोली )

नाम—

संस्कृत—हिन्दी—डेरा, थरोली, दूधी। बगाल—दूधी, दूध कौरटया। बम्बई—डेरा, दूधी, कडु इन्द्रजौ तावडा कुडा। गुजराती—रुच हेला दूधलो। मराठी—काला इंद्रजौ, तावड़ा कुड़ा। पंजाब—दूधी, किआर, किलावा। सथाल—अतकुरा, चरुमचकुन्द। तामील—पलाई। तेलगू—कोलामुरी, पाला। लेटिन—Wrightia 'omeutosa ( राइटिया टोमेनटोसा )।

वर्णन:—

यह मीठे इंद्रजौ की ही एक उपजाति है। इसका वृक्ष मोटे कदका ७ ५ से ६ सेंटिमीटर तक ऊँचा होता है। इसकी डालियों में पीले रंगका दूधिया रस रहता है। इसकी छाल मुलायम और पीलापन लिये हुए भूरे रगकी होता है। इसके पत्ते ७ ५ से १५ सेंटिमीटर तक लंबे और ३ ८ से ६ सेंटिमीटर तक चौडे होते हैं। यह वनस्पति सारे भारतवर्ष और सीलोनमे पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

छोटा नागपुर मे इसकी छाल मासिक धर्म और गुर्दे सम्बन्धी शिकायतों को दूर करनके

काममें ली जाती है। यहाँ यह भी विश्वास किया जाता है कि इसकी छाल सर्प और बिच्छूके विषपर भी लाभ पहुँचाती है।

रेम और मश्करके मतानुसार सर्प और बिच्छूके विषम इसकी छाल निरूप योगी है।

---

# दूब

नाम —

संस्कृत—अमरी, अमृता, अनन्ता, अनुवल्लिका, असितालता, बहुवीर्य, भार्गवी, भूतहन्त्री, धूर्ता, दुर्वा, गौरी, शुना, हरसालिका, हरिता, हरितालि, जया, महौषधि, महावरी, मंगला, सहस्रपर्वा, इत्यादि। हिन्दी—दूब, दुब, दुर्वा, दूबघास, कालीघास, रामघास। गुजराती—दुर्वा, हरियाली, धो। मराठी—दुर्वा, हरियाली। पंजाब—दूब दुर्वा, ब्बर, खब्बल, ताला, निला। बंगाल—दूब, दूघला, दुर्वा। तामील—अरुगमपिल्लू, हरियाली। तेलगू—घेरिचा। अंग्रेजी—Bahama Grass (बहामा ग्रास), Couch Grass (कोचग्रास), Devil's Grass (डेविल्स ग्रास), Doob Grass (दूब ग्रास)। लेटिन—Cynodon Dactylon (सिनोडन डेक्टीलोन)।

वर्णन—

दूब एक मशहूर घास है जो प्रायः सारे भारतवर्षमें पैदा होता है। और सब लोग इसको जानते हैं। हिन्दूधर्म शास्त्रोंमें यह घास बड़ा पवित्र माना गया है। ढोरोंके लिये भारतवर्षमें जितने तरहके घास पैदा होते हैं उन सबमें यह घास ढोरोंके लिये श्रेष्ठ मानी जाती है। यह घास जहाँ पर एक बार जम जाती है वहाँसे इसको नष्ट करना बहुत मुश्किल होता है। क्योंकि इसकी जड़ें जमीनके अन्दर बहुत गहरी बैठती हैं और इसके पौधेमें हवा और जमीनसे नमीको खींचनेकी बहुत शक्ति है।

इसका पौधा जमीनसे ऊँचा नहीं उठता बल्कि जमीन पर ही फैला हुआ रहता है। इसीलिये इसकी नम्रताको देखकर गुरु नानकने एक स्थान पर कहा है-

नानकनी चाहो चले, जैसी नीची दूब।
और घास मर जायगा, दूब खूबकी खूब॥

दूबकी दो तीन जातियाँ होती है। एक नीलदुर्वा, एक श्वेतदुर्वा और एक गड दुर्वा।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे दूब कसेली, मधुर, शीतल तथा पित्त, तृषा, अरुचि,

उपयोग —

नकसीर—इसका ताजा रस नाकमे टपकाने से नकसीर फौरन वन्द हो जाता है।

जख़म—इसके पचाग को पीस कर लेप करने से जख़म से खून वहना तत्काल वन्द हो जाता है।

आमातिसार—दूब को सोंठ और सौंफ के साथ औटाकर पिलाने से आमातिसार मिट जाता है।

रक्त प्रदर—दूबके रसमे सफेद चन्दन का बुरादा और मिश्री मिला कर पिलाने रक्त प्रदर मिटता है।

पित्त की वमन—सफेद दूब का रस पिलाने से पित्त की वमन मिटती है।

जलोदर—दूब को काली मिरच के साथ पीस कर पिलाने से मूत्र वृद्धि होकर जलोदर और सर्वाङ्ग शोथ मिटता है।

नेत्र रोग—हरी दूबके रस कालेप करने से आखों का दुखना और गीडों का वहुत आना मिटता है।

मूत्र में रुधिर जाना—दूबको मिश्रीके साथ पीस छान करके पिलानेसे पेशाव के साथ खून का जाना वन्द हो जाता है।

मलेरिया ज्वर—दूब के रसमें अतीस के चूर्ण को मिलाकर दिनमे दो तीन बार चाटनेसे वारीसे आने वाला ज्वर वन्द हो जाता है।

मुह के छाले—दूबके क्वाथ से कुल्ले करनेसे मुहके छाले मिट जाते हैं।

उपदश के व्रण—उपदश की दूसरी अवस्थामे जव सारे शरीरमें चट्टे पड जाते हैं। तव दूब की जड का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है।

खूनी ववासीर—दूब का शीत निर्यास वनाकर पिलानेसे ववासीर से वहनेवाला खून वन्द हो जाता है।

पेशाव की जलन—दूबको पीसकर दूधमे छानकर पिलानेसे पेशाव की जलन मिलती है।

मूत्रकृच्छ—दूब की ७॥ मासे जडको महीन पीसकर दहीके साथ मिलाकर चाटनेसे पुराना मूत्रकृच्छ मिटता है।

ज्वर—श्मशानमें पैदा हुई दूब की जड को सूतसे लपेटकर हाथमे बाधनेसे सब प्रकार का बुखार आराम होता है।

पित्त की वमन—दूबके रस को चावलोंके धोवनके साथ पिलानेसे पित्त की वमन मिटती है।

दाद और खुजली—दूबके चौगुने रसमे सिद्ध किये हुए तेल को लगानेसे दाद, खुजली और व्रण मिटते हैं। दूब को हलदीके साथ पीसकर लेप करनेसे भी खुजली और दाद मिटते हैं।

---

## देवधान

नाम—

संस्कृत—अरण्य धान, मुनिधान्य, निवार, प्रसादिका, तृणधान्य, इत्यादि। हिन्दी—देवधान, जगली धान, तिन्नी, तिनी। मराठी—देवभात। गुजराती—ब्राति, नमारचोखा। पजाब—पसतल। लेटिन—*Hygroryza Aristata* (हायग्रोरिझा एरिस्टेटा)।

वर्णन—

यह वनस्पति चावल की एक जगली जाति है। इसका पौधा घास की तरह होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतमे इसके बीज मीठ और कसेले होते हैं। ये स्निग्ध, सुपच्य, शीतल, पित्तनाशक और मूत्राशयमें शीतलता पहुँचानेवाले होते हैं। ये कब्जियत पैदा करते हैं।

---

## देवदारु

नाम —

संस्कृत—सुरदारु, भद्रदारु, देवकाष्ट, अमरदारु, इंद्रवृक्ष, इंद्रदारु, मस्तदारु, इत्यादि। हिन्दी—देवदारु। बगाल—देवदारु। मराठी—देवदार। गुजराती—देवदार। करनाटकी—चोपरादेवदार। पजाब—केलु। लेटिन—Pinus Deodara (पिनस देवदार), Cedrus Deodara (सेड्रस देवदार)।

वर्णन—

देवदारु का वृक्ष बहुत बडा और ऊंचा होता है। यह हिमालय, नेपाल, कुमाऊ और काश्मीरमें विशेष पैदा होता है। वहा पर यह केलोन के नामसे प्रसिद्ध है। इसकी लकड़ी का सार और इसकी जड़ें सुगन्धित हल्के पीले रग की और तेल युक्त रहती हैं। इसकी लकड़ी को जलानेसे इसमेंसे एक प्रकार का तेल टपकता है जिसे केलोन का तेल बोलते हैं। यह बहुत

पतला होता है। औषधि प्रयोगमें देवदारु की सुगन्धित लकड़ी, कोमल डालियां, पत्ते और केलोन का तेल काममें आता है। इसकी लकड़ीसे पेकिङ्ग करनेके बॉक्स भी बनाये जाते हैं जो सारे भारतवर्षमें पेकिंगके काममें आते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे देवदारु दो प्रकार का होता है। एक स्निग्धदारु और दूसरा काष्ठ दारु।

स्निग्ध देवदारु—पचनेमें चरपरा, चिकना, गरम, कड़वा, हलका तथा कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, कब्जियत, आमदोष, ज्वर, आफरा, श्वास, खांसी, सूजन, खुजली, हिचकी, तंद्रा, रुधिर, विकार और पीनस को दूर करता है।

काष्ट देवदारु—गरम, कड़वा, रूखा तथा कफ, वातरोग और भूत बाधा को दूर करता है। इसके लेपसे चेहरे की झाई दूर हो जाती है।

यूनानी मतसे इसके पत्ते सूजन पर और क्षयजनित गलग्रन्थियों पर लेप करनेके काममें लिये जाते हैं। इसकी लकड़ी कडवी, मूत्रल, शान्तिदायक, पेटके आफरे को मिटानेवाली और कफ निस्सारक होती है। यह गठिया, ग्रन्थिवात, बवासीर, गुर्दे और मसाने की पथरी, पक्षाघात और गुदाभ्रंश रोगोंमें उपयोगी है। इसका तेल वेदना को दूर करनेवाला और ज्वरनाशक है। यह चोट, रगड, जोडोंके दर्द, क्षयजनित ग्रन्थियाँ और चर्म रोगोंमें उपयोगी है।

डॉक्टर देसाईके मतानुसार देवदारु पसीना लानेवाला, मूत्रल, वायुनाशक और चर्म रोग नाशक है। केलोन के तेल का धर्म टरपेन्टाइन के समान ही होता है। मगर उससे यह कुछ कम प्रभावशाली होता है। यह एक उत्तम व्रणशोधक और व्रणरोपक पदार्थ है।

प्राचीन चर्मरोगों में केलोन का तेल खिलानेसे और उसको लगानेसे पुराने और दुर्गन्ध युक्त घाव भर जाते हैं। रक्तपित्तके रोगमें भी इससे लाभ होता है। सिर दर्दमें इसकी लकड़ी को पानीमें उबालकर कपाल पर लेप करते हैं। ज्वरमें फिर चाहे वह सूजन की वजहसे हुआ हो अथवा पुराने कफरोग की वजहसे हुआ हो देवदारु को देनेसे लाभ होता है। इससे पसीना छूटता है। पेशाब की मात्रा बढती है। सूजन की कमी होती है और कफ की दुर्गन्ध मिटकर कफ कम हो जाता है। पुराने सन्धिवातमें इसके उपयोगसे बड़ा लाभ होता है। जलोदरमें देवदारु की लकड़ी, अपामार्ग और शेगटा की जड़ की छाल, तीनों को छ-छ माशा की मात्रामें गोमूत्रके साथ पीसकर देनेसे पेशाबके जरिये पेट का सचित पानी निकला जाता है और रोगी को शान्ति मिलती है।

फोमानके मतानुसार यह औषधि मूत्रल, शांतिदायक और ज्वरनाशक तत्वोंसे परिपूर्ण मानी जाती है। पेशाब सम्बन्धी अव्यवस्था को भी यह दूर करती है।

उपयोगः—

पारे का उपद्रव—देवदारु का तेल पिलानेसे पारे का उपद्रव, बिगड़ा हुआ खून और दूसरे चर्म रोग मिटते हैं।

सिर दर्द—देवदारू की लकड़ी को पानीके साथ घिसकर कनपटियो पर लेप करनेसे सिर दर्द बन्द होता है।

गल गण्ड—देवदारु और इन्द्रायन को पीसकर लेप करनेसे कफ की वजहसे पैदा हुआ गल गण्ड आराम हो जाता है।

सीने का दर्द—इसके २ माशे चूर्ण को ५ माशा गुड़में मिलाकर गोली बनाकर देनेसे सीनेका दर्द आराम हो जाता है।

अण्डवृद्धि—इसके क्वाथमें गोमूत्र मिलाकर पिलानेसे अण्डवृद्धि मिटती है।

श्लीपद—इसको चित्रकके साथ पीसकर लेप करनेसे और गायके मूत्रके साथ पीनेसे फीलपाव आराम होता है।

नेत्र रोग—इसके चूर्ण का बकरीके पेशाबमें भिगोकर सुखाकर, गायके घी के साथ खानेसे आंख की बिमारिया आराम होती हैं।

मात्रा—इसके चूर्ण की मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तक और तेल की मात्रा १ माशे से २ माशे तक है।

---

# देशी बादाम

नाम—

हिन्दी—देशी बादाम, हिन्दी बादाम। गुजराती—बदाम नीली, देसी बदाम। दक्षिण—हिन्दी बदाम। मराठी—बगाली बादाम, हिरानी बदाम, नट बदाम। बगाल—बगाली बादाम। अंगरेजी—Indian Almond। लेटिन—Terminalia Catappa (टर्मिनेलिया केटेपा)।

वर्णन—

यह एक मध्यम कद का करीब २५ मीटर ऊंचा वृक्ष होता है जो लगाया जाता है।

इसके पत्ते बड़े, फल छोटे और पकने पर किरमची रंगके होते हैं। इनकी मगज बडी रहती है। इस मगजमें से तेल निकाला जाता है। जो २८ से लेकर ५० प्रतिशत तक निकलता है। यह फीके पीले रंगका गंध रहित असली बदामके तेलके समान होता है। इसका स्वाद असली बादामके तेलसे अच्छा होता है और यह बहुत दिनों तक खराब नहीं होता है।

*गुणदोष और प्रभाव—*

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे इसका फल खट्टा, मीठा, कसेला, शीतल, मलरोधक, कामोत्तेजक, पित्त नाशक, और ब्रोंकाइटीजको दूर करने वाला होता है।

देशी बादामका तेल मालिश करनेसे कांतिको बढाने वाला, बालों को मजबूत करने वाला और पौष्टिक होता है। इस वृक्षकी छाल संकोचक होती है। इस बादाममें विदेशी बादामकी अपेक्षा पौष्टिक तत्व कम होते हैं।

इसकी छालका काढा सुजाक और प्रदरमें लाभदायक होता है। इस काढेसे व्रणोंको धोनेसे व्रण जल्दी भर जाते हैं। इससे कुल्ले करनेसे मुंहके छाले मिट जाते हैं।

दक्षिणी भारतमें इसके ताजे पत्तो के रससे एक प्रकारका मलहम बनाया जाता है जो गीली खुजली, कुष्ट और दूसरे चर्मरोगो पर लगाया जाता है।

फ्रेंच गायनामें इसकी जड़की छाल अतिसार और प्रवाहिकामें संकोचक द्रव्यकी तरह दी जाती है। इसकी छाल का काढा पित्त ज्वरको दूर करनेके लिये दिया जाता है। इसके पत्ते चमडेको मुलायम करने वाले लेपोंमें मिलाये जाते है।

इसकी छालमे हलके मूत्रल और हृदयको बल देनेवाले पदार्थ रहते हैं।

---

## दोदन

नाम :—

पंजाब—दोदन। उरिया—इटा। लेटिन–Sapindus Mukorassi(सेपिंडस मुकोरसी)।

वर्णन—

यह अरीठेकी ही उपजातिका एक वृक्ष है। इसके पत्ते, फूल और फल सब अरीठे ही के समान होते हैं। यह वृक्ष विशेष कर पंजाबमें पैदा होता है।

गुणदोष और प्रभाव

इस वृक्षके फलका उपयोग बिलकुल अरीठेके ही समान होता है। अरीठेका पूरा उपयोग इस ग्रथके पहले भागमे देखिये।

## दोड़क

नाम—

पजाब - दोडक। पटना तितलिय। गुजराती—दुधालो सोनकी। तेलगू—रत्रित। बम्बई—महातारा। लेटिन—Sonous Oloraceus ( सोनकस ओलिरासियस )।

वर्णन—

यह वर्ष जीवी क्षुद्र वनस्पति खेता और उपजाऊ भूमिमें पैदा होती है। इसके पीले रगके बहुत फूल लगते हैं। इसकी डालियों को तोडनेसे एक प्रकारका दूध निकलता है। इस वनस्पति पर छोटे ० काटे भी रहते हैं। इसके कामल पत्त खानेके काममें आते हैं। इस वनस्पति का पंचाग और इसका सुखाया हुआ दूध औषधि प्रयागमे काममे आता है। यह वनस्पति सारे भारत वर्ष और सीलोनमें पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पति की क्रिया यकृत, ग्रहणी और बडी आन्तके ऊपर प्रधान रूपसे होती है। यह तक तीव्र विरेचक वस्तु है। वाष्पीकरण क्रियाके द्वारा इससे बनाया हुआ गोंद अथवा इसका सुखाया हुआ दूध २ से ४ ग्रेनकी मात्रा में दिया जाय तो तीव्र विरेचक का काम करता है। यकृत व पेटसे लगे हुए आन्त के हिस्से पर और आन्तके आखरी हिस्से पर इसका असर बहुत प्रभावशाली होता है। साधारण तथा इसके गुणों की तुलना इलेटेरियम ( Elaterium ) से की जाती है। जलोदर और शरीरमे सचित पानी को दूर करने के लिये इसका प्रयोग करते समय बहुत सावधानी की जरूरत है। क्योंकि यह सनाय की तरह पेट मे काट करता है और एलुए की तरह पेटमें जलन पैदा करता है।

बगाल मे इसकी जड का शीत निर्यास पौष्टिक, शातिदायक और ज्वर नाशक पदार्थ की तरह दिया जाता है।

इंडो चायनामें इसके वल्कल का उपयोग पौष्टिक और निद्रा कारक वस्तु की तरह किया जाता है। घावों को साफ करने के उपयोगमे भी यह लिया जाता है।

इस वनस्पति का काढ़ा उदर रोग, यकृत रोग और पाचन नलिकाके जीर्ण रोगोंमें दिया जाता है। इसको दूसरे सुगन्धित पदार्थों के साथ मिलाकर देते हैं। इससे शुरू शुरू मे दस्तें लगती है मगर अन्तमे लाभ होता है।

---

## दोधरी

नाम—

सथाल—दो धरी। लेटिन—Cheilanthes Tenuifolia (चिलेंथस टिनुइफोलिया)।

वर्णन—

यह एक वर्षजीवी वनस्पति है। इसके पत्ते अण्डाकार और तीखी नोक वाले होते हैं। इसकी मञ्जरी बैंगनी और काले रग की होती है। इसकी बेल बहुत फैलने वाली होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

सथाल लोग इसकी जड को दूसरी औषधियों के साथ अथवा अकेले ही भूत बाधा को दूर करने के काम मे लेते है।

---

## दोपातीलता (मर्यादलता)

नाम —

सस्कृत—मर्यादा, मन्मथा, मारवल्ली, रक्त पुष्पा, सागर मेखला, युग्मपत्रा। हिन्दी—दोपातीलता, मर्यादवेल। बगाल—छागल कुरी। गुजराती—आरवेल, मर्याद वेल, दरियावेल। मराठी—मर्याद वेल। तेलगू—बला वरिडटिगे। तामील—अदम्बु, अदप्पन गोडी। अंग्रेजी—Goats foot creeper, Sand Binding Creeper,। लेटिन—Ipomoea Bilolba (इपोमोइया बिलोबा)।

वर्णन —

इस वनस्पति की बेल होती है। इसकी बेलें सौ सौ फुट लम्बी होती हैं। इसके पत्ते आसुन्दरे (Bauhinia Racemosa) के पत्तों के समान होते है। ये चिकने, चमकदार

और मोटे होते हैं। फूल गुलाबी और बैंगनी रगके बडे बड़े घण्टाकार होते हैं। फल गोलाई लिये हुए अणीदार होते हैं। हर एक फल मे ४ खण्ड होते हैं। एक एक खण्ड मे एक एक बीज होता है। ये बीज काले, मखमली बालों के रुओंसे आच्छादित और सख्त होते हैं। यह वनस्पति समुद्रके रेतीले किनारों पर ऐसे स्थानों पर पैदा होती है जहा दूसरी वनस्पतिया पैदा नहीं होतीं।

*गुणदोष और प्रभाव—*

आयुर्वेदिक मत से गोपाती लता शीतल, मलरोधक, सारक, भारी, पचनेमें चरपरी, वात कारक और हैजा शूल, वमन और आमको दूर करती है।

इसके सेवनसे वन्ध्यत्व दूर होता है। जलोदरपर इसके रसको पिलानेसे और लगानेसे लाभ होता है। इसके पत्तों को पीसकर फोडे-फुन्सी और गठानों पर बाधने से या तो वे फूट जाते हैं या बैठ जाते हैं। बार बकल या पाठे की बीमारी मे भी इसके पत्ते फूल और जड़ को पीसकर कुछ नमक डालकर बाधने मे लाभ होता है।

सन्धि वात पर इसके पत्तों को पीस कर लेप करने से फायदा होता है। जलोदर मे इसका रस मूत्रल औषधि की तरह दिया जाता है और साथ ही इसके पत्तो को कुचल कर जलोदर की जगह पर बाधा भी जाता है।

मेडागास्कर में इसके पत्ते टागों की सूजन, गुदा भ्रंश, उदर शूल, अंगुली पर होने वाली विद्रधि और गठिया पर बहुत उपयोगमें लिये जाते हैं।

कम्बोडियामे इसका पौधा सुजाक, मूत्रकृच्छ्र और बवासीर में दूसरी औषधियों के साथ काम में लिया जाता है।

रासायनिक विश्लेषण—इस वनस्पतिके सब भागोंमें काफी गोंद पाया जाता है। इसकी जड़ और डालियोंको तोडनेसे एकप्रकारका पीला और चिकना दूध निकलता है। इस दूधका सुखाया हुआ चूर्ण मृदुरेचक पदार्थका काम करता है। इसके अतिरिक्त इस लतामे अनेक प्रकारके सामुद्रिक क्षार और स्नेहन ( चिकने ) पदार्थों का उत्तम मिश्रण पाया जाता है। इसकी जडोंकी रासायनिक क्रिया, अनन्त मूल या चोबचीनीके समान होती है।

मात्रा—इसके सुखाये हुए दूधकी मात्रा ४ से ६ रत्ती तक, बेलके स्वरसकी मात्रा ६ माशे से १ तोले तक और इसकी जडके चूर्णकी मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तक होती है।

# दौना

नाम—

संस्कृत—अग्निदमनक, बहुकटका, दमन, ब्रह्मजटा, पुण्डरीक, देवशेखर, फूलपत्रक, इत्यादि। हिन्दी—दौना। बंगाल—दौना। बंबई—दौना। गुजराती—डमरो। मराठी—दौना, रानदौना। लेटिन—Artemisia Sieversiana. (आर्टिमीसिया सेवरसियाना)।

वर्णन—

यह अफसतीनकी जातिकी एक वनस्पति है। इसके क्षुप छोटे छोटे बालिश्त, डेढ़ बालिश्तके करीब ऊँचे होते हैं। इसके पत्ते अत्यन्त सुगन्धित और रुएँदार होते हैं। इसके फूल छत्तोंकी तरह लगते हैं। काश्मीरमें इस वनस्पतिकी खेतीकी जाती है। इसकी एक जंगली जाति होती है। जो पश्चिमी हिमालयमें आठ हजारसे दसहजार फीटकी ऊँचाई तक पाई जाती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे दौना कसेला कड़वा, हृदयको लाभदायक, वीर्यवर्धक और सुगंधित होता है। इसका सेवन करनेसे विष कोढ़, रुधिरविकार, चर्मरोग और त्रिदोषका नाश होता है।

राजनिघंटके मतानुसार दौना, शीतल, कड़वा, कसेला, चरपरा तथा त्रिदोष, विष और विस्फोटकको नष्ट करनेवाला है।

जंगली दौना वीर्यस्तम्भक, बलदायक और आमदोषनाशक है।

अग्निदौना गरम, चरपरा, रूखा, अग्निदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा वात, कफ, गुल्म और प्लीहाको दूर करनेवाला होता है।

यूनानीमत—यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है। किसी २ के मतसे यह गरम और तर है। कोई २ इसे समशीतोष्ण मानते हैं। यह कृमिनाशक, कामोद्दीपक और ऋतुस्राव नियामक है। हृदय और मस्तिष्कको यह उत्तेजना देता है। पीलिया, जलोदर, गठिया जोड़ोंका दर्द और पेट, यकृत तथा रक्तके रोगोंमें यह लाभदायक है। गुल्मवायुमें भी यह गुणकारी है। यह वनस्पति पौष्टिक, ज्वरनिवारक और कृमिनाशक होती है। बाह्यप्रयोगमें लिये जानेपर भी यह अपना कृमिनाशक गुण बतलाती है।

सिर दर्द और सीने तथा मेदेका दर्द जो कफसे पैदा हुआ हो उसको यह मिटाती है।

पेटकी वायुको नष्ट करके आफरेको दूर करती है। दिलको खुश करती है। तिल्लीको ताकत देती है। सूजनको बिखेरती है। पेटके कीड़ोंको नष्ट करती है। मरे हुए बच्चेको पेटसे निकाल देती है। इसका काढा पिलानेसे मासिक धर्म शुद्ध हो जाता है। इसका लेप बिच्छू और ततैयाके जहरको दूर करता है। इसके काढेकी धार देनेस जूए मर जाती है। इसके लेप से पसीना आना रुक जाता है। फोड़े, फुन्सी, कोढ, खुजली और उपदशमे भी यह लाभदायक है।

रासायनिक विश्लेषण—दौनेके अन्दर एक प्रकारका कडवा द्रव्य, उडनशील तेल और क्षार पाये जाते है। इसके पचागकी राखसे प्राप्त किये हुए क्षार को दमनक्षार कहते है।

डाक्टर देसाईके मतानुसार दौना कडवा, दीपन, पाचन, पित्तनिस्सारक, वायुनाशक तथा ज्वर, खासी और सूजनको नष्ट करनेवाला होता है। यह मूत्रल और गर्भाशयका सकोचन करने वाला है।

अग्निमाद्यके रोगमे दौनेका अर्क देनेसे अच्छा लाभ होता है। उदरशूलमे इसका चुटकी भर चूर्ण देनेसे वायु खारिज होकर उदरशूल मिट जाता है। पित्तद्रावी होनेकी वजहसे इसको खानेवालेके मलका रग पीला होता है।

प्राकृत ज्वरमे दौनेकी फाट बनाकर देनेमे शरीरका दुखना कम होता है। पसीना छूटता है पेशाब होकर ज्वरका जोर हलका पड जाता है और रोगीको आराम मिलता है।

मासिकधर्मकी रुकावट और कष्टप्रद मासिकधर्ममे इसका अर्क देनेसे अच्छा लाभ होता है। पाडु रोगमे लोहभस्मके साथ दौनेको देनेस अच्छा लाभ होता है। कफरोगमे दौने को देनेसे खासी व श्वासकी कमी होती है और पाचन क्रिया सुधर जाती है। अडूसेके साथ इसका उपयोग करनेसे खासीमे विशेष लाभ होता है।

दौनेका क्षार जलोदर, मूत्र पिंडोदर और हृदयोदरमे भी दिया जाता है। इससे पेशाब की मात्रा बढकर मूत्रपिंडके द्वारा पेटका सग्रहीत पानी निकल जाता है और सूजन कम हो जाती है।

मात्रा—इसके चूर्णकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशेतक क्षारकी मात्रा ४ रत्तीसे १० रत्तीतक, फाटकी मात्रा २॥ तोलेसे ५ तोले तक और अर्ककी मात्रा ४ माशेसे ८ माशेतक है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति पौष्टिक, ज्वरनाशक, ऋतुस्रावनियामक और कृमिनाशक होती है।

---

# दौना परदेशी

नाम.—

गुजराती—परदेशी दौना। मराठी—दौना। फारसी—अफसतीन नुलवर, सारीकुन, शीह। लेटिन—Artemisia Persica. (आर्टिमिसिया परसिका)।

वर्णन—

यह वनस्पति पश्चिमी तिब्बतमे ९ हजार फीटसे १० हजार फीटकी ऊँचाई तक और अफगानिस्तान, तथा उत्तरी परसियामें पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति पौष्टिक, ज्वरनिवारक और कृमिनाशक होती है।

---

# धतूरा काला

नाम—

संस्कृत—दुस्तूर, मदन, उन्मत्त, शिवप्रिय, महामाही, कृष्ण धतूरा, खरदूषण, शिवशेखर, उन्मत्तक, सविष, कनक, घंटापुष्प, महाशठ, इत्यादि। हिन्दी—धतूरा, काला धतूरा। बंगाल—धुतूरा, साधाधुतूरा। मराठी—धोत्रा। गुजराती—धतूरो, कालो धतूरो। अरबी—जजेलमादिल। पंजाब—धतूरा, तत्तूर। तामील—उुमत्तुरंम, उमात्तई। तेलगू—दतूरम्। उर्दू—धतूरा। अंग्रेजी—Devils apple, Devils Trumpet। लेटिन—Datura Stramonium (धतूरा स्ट्रेमोनियम)। D Fostuosa (डी॰ फेस्टुओसा)।

वर्णन—

यह एक क्षुप जाति की वनस्पति है। इसके पत्ते बड़े, दन्तुलयुक्त, नोकदार और अण्डाकृति होते हैं। इसका फूल घंटेके आकार का होता है। फूल का रंग बीचमें सफेद होता है। ये फूल पांच पंखड़ियोंवाले होते हैं। इसका फल गोल, कांटेदार और भीतर बहुत बीजों वाला होता है। इसकी ३ जातियां होती हैं। धतूरासफेद, धतूरा और काला धतूरा। इस वनस्पतिके सूखे पत्ते और बीज औषधि प्रयोगमें काममें आते हैं। इसके बीज कालापन लिये हुए भूरे रंगके, चपटे, खुरदरे और कड़वे होते हैं। इनमें गंध नहीं होती, मगर कूटने पर एक प्रकार की उग्र गन्ध आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—भाव प्रकाशके मतसे धतूरा नशीला, ज्वर को दूर करनेवाला, कुष्ट को नष्ट करनेवाला, कसैला, मीठा, कड़वा, जुए और लीखों को मारनेवाला, गरम भारी, तथा, व्रण, कफ, चर्मरोग, कृमि और विष को नष्ट करनेवाला है। यह शरीर की कांति, जठराग्नि और वात को बढ़ाता है।

राजनिघण्ट के मतसे धतूरा कड़वा, उष्ण, कांतिकारी तथा व्रण, चर्मरोग और ज्वरको दूर करता है। यह बहुत मादक है।

निघण्टुरत्नाकर के मतसे धतूरा कांति कारक, गरम, चरपरा, अग्निदीपक, कसैला, मधुर, कड़वा, मदकारक, भारी और कुष्ट, व्रण, कफ, ज्वर, कण्डू, कृमि, जू, विष, पामा और त्वचा के रोगों का नष्ट करता है। सब प्रकारके धतूरामें काला धतूरा गुणोंमें श्रेष्ठ होता है।

धतूरा, वेदनानाशक, संकोच विकास प्रतिबन्धक, खांसी और दमे को दूर करनेवाला, पार्यायिक ज्वरों का नष्ट करनेवाला और बड़ी मात्रामें एक घातक विष है। जिन लोगों की प्रकृति नशे की आदी होती है उन लोगोंके लिये यह एक वाजिकरण वस्तु है।

श्वास नलिकाके संकोच विकास प्रधान रोगोंमें, धतूरे की उपयोगिता बहुत बढ़ीचढ़ी है। श्वास नलिका की सूजन दमा और दोनों फेफड़ोंके रोगोंमें इसका बहुत उपयोग होता है। ऐसे रोगोंमें यह खिलाया भी जाता है और इसके पत्तों को चिलममें रखकर इसका धूम्रपान भी कराया जाता है। इसका धूम्रपान करनेसे जंभाइयां आती हैं, जी घबराता है और उल्टी आने सरीखी स्थिति हो जाती है। जिसका परिणाम यह होता है कि कफ छूटकर गिरने लगता है। श्वासनलिका की संकुचित होने की शक्ति कम हो जाती है और दमे की घबराहट बन्द हो जाती है। श्वास नलिका की सूजनमें भी घबराहट को कम करनेके लिये इसका उपयोग किया जाता है।

बारीसे आनेवाले मलेरिया ज्वरमें धतूरके बीजों का चूर्ण देकर साथ ज्वर आनेके पहिले दिया जाता है। इससे मलेरिया ज्वर में ठंड चढ़ने की वजहसे होनेवाला कष्ट, ज्वर चढ़नेके बाद शरीरमें पैदा होनेवाली जलन, अंगों का दुखना, और सिर दर्द कम हो जाता है। इस वनस्पतिसे मलेरिया ज्वर जड़से नहीं जाता मगर उससे होनेवाली पीड़ा कम हो जाती है।

उदरशूल, पित्ताश्मरी शूल और मूत्र पिण्डके शूलमें भी धतूरा दिया जाता है। मगर इन कामोंमें अफीम और खुरासानी अजवायन धतूरे की अपेक्षा विशेष उत्तम होते हैं।

सूजनके ऊपर धतूरेके पत्तों का लेप करनेसे अथवा इसकी जड़ को गोमूत्रमें औटाकर

लगानेसे सूजनका कष्ट कम हो जाता है। कभी २ सूजन उतर भी जाती है। धतूरके लेपमे शिलाजीत को मिलाकर, उस मिश्रण का लेप करनेसे अण्डकोप की सूजन, पेटके अन्दर की सूजन, फुफ्फुसके पड़दे की सूजन, सधियों की सूजन और हड्डियों की सूजनमें बड़ा लाभ होता है। स्तनो की सूजन और नवासीर की सूजन मे इसके पत्तो को गरम करके बाधनसे शान्ति मिलती है।

पागल कुत्ते का विप और धतूरा—

डाक्टर नाडकरनी अपनी इण्डियन मटेरिया मेडिका नामक पुस्तक मे लिखते हैं कि पागल कुत्ते के विपमे धतूरा एक लोकप्रिय औपधि है। परन्तु हडकाव पैदा होने के पश्चात् उसको दूर करनेमे यह उतनी सफल नहीं है जितनी कि हडकाव पैदा होनेके पहिले उसको रोकने के लिये यह सफल है। अक्सर देखा जाता है कि पागल कुत्ते के काटनेके करीब ४० दिन बाद हडकाव पैदा होता है। इसलिये उसके पहिले अर्थात् कुत्ता काटने के १५ से २५ दिन के अन्दर इसका उपयोग करना चाहिये। १५ दिन के बाद प्रातःकाल भूखे पेट रोगी को करीब आधा तोला लकडीके कोयले का चूर्ण दिया जाता है। उसके आधे घण्टे बाद १ औंस काले धतूरे के पत्तों का रस पिलाया जाता है। वमन के द्वारा वह रस निकल न जाय इसलिये रस पिलानेके साथ ही तुरन्त ताडका रस या ऐसी कोई वमन नाशक मीठी चीज पिलाई जाती है और फिर रोगी को बाधकर चार पाच घण्टे धूप मे रखा जाता है। जिससे रोगी धीरे धीरे पागल होता हुआ चला जाता है और पागल कुत्तेके मुआफिक चरित्र करने लगता है। इस समय उसके सिर पर कई घडे भर कर ठण्डे पानी की धार लगाई जाती है। इससे रोगी अधिक तूफान करने लगता है। कुछ देरके बाद होशमे आकर वह पानी डालने के लिये विरोध करता है और गुस्सा प्रकट करता है। ऐसा करने पर पानी डालना बन्द करके रोगी को चने, रींगणे या ऐसा ही कोई हलका पथ्य खिलाना चाहिये। इस प्रकार चिकित्सा करने से रोगी हडकाव के डर से मुक्त समझा जाता है। लेकिन इसके बाद भी उसको कुछ दिनो तक हलका पथ्य देना चाहिये।

हडकाव पैदा होनेके पश्चात भी एक रोगी की चिकित्सा की गई थी। जिसमे रोगीके सिरके तालू के बालों को निकाल कर ब्रम्हाण्ड की जगह चीरा लगाकर कुछ खून निकाल दिया गया था और उस स्थान पर काले धतूरेके पत्तों को बारीक पीस कर लगाया गया था। और ऊपर के तरीके से रस पिलाया गया था जिससे रोगी को आराम हो गया था।

मिस्टर नाडकरनी लिखते है कि ऊपर बतलाई हुई उपचार पद्धति आर्य वैद्यों के द्वारा अनुभूत अनेक पद्धतियोंमे से एक है और दक्षिणी हिन्दुस्तान के एक सुप्रसिद्ध वैद्यने इसका स्वय उपयोग किया है और दूसरों को भी इसका उपयोग करने की सलाह दी है।

सुश्रुत संहिता में भी पागल कुत्ते के विष की उपचार पद्धतिमें एक प्रयोग दिया गया है, जिसका प्रधान अंग धतूरा है। वह प्रयोग इस प्रकार है —

सरपखेकी जड़ १ तोला, धतूरे की जड़ ६ माशा और एक आदमी ग्रासके उतने साबित चावल लेकर इन तीनोंको चावलोंके धोवनके पानीमें आटेके समान बारीक पीसकर उसकी एक रोटी अथवा बाटी बना लेना चाहिये और उसके ऊपर धतूरेके पत्ते लपेट कर ऊपले कंडेकी धीमी आँचपर सेक लेना चाहिये। जिस मनुष्यको पागल कुत्तेने काटा हो उसको हड़काव पैदा होनेके पहिले अर्थात् कुत्ता काटनके १० और १५ दिनोंके बीचमें चाहे जिस दिन यह रोटी या बाटी खिला देना चाहिये। जब यह बाटी पचने लगती है तब मनुष्य पागल कुत्तेके समान चेष्टाएं करने लगता है। उस समय उसको एक ऐसे घरमें जो ठंडा हो, मगर जिसमें पानी बिलकुल न हो बन्द करदेना चाहिये। जब इसकी सब चेष्टाएं शांत होजाय, तब उसे स्नान करवाके दूसरे दिन दूधके साथ साठी चावलका भात खिलाना चाहिये। अगर इस औषधिके प्रयोगसे पहिले ही दिन हड़कावके लक्षण पैदा न होजायँ तो ३ से लेकर ५ दिन तक उपरोक्त औषधि उपरोक्त मात्रामें ही अथवा उससे आधी मात्रामें खिलाना चाहिये। इतने समयमें हड़काव का विष कुपित होकर नष्ट होजाता है। पागल कुत्तेके काटे हुए मनुष्यको स्वाभाविक रीतिसे अगर हड़काव पैदा होजाय तो उस मनुष्यका बचना अत्यन्त कठिन हो जाता है। इसलिये जबतक हड़काव पैदा न हो उसके पहिले उपरोक्त औषधिके बलसे अगर हड़काव पैदा कर दिया जाय तो उस रोगीके विष मुक्त होनेकी सम्भावना हो जाती है। सिर्फ हड़काव को दूर करनेके लिये ही धतूरे को इतनी बड़ी मात्रा में दिया जाता है। दूसरे रोगों में इसके बीजों की मात्रा पाव रत्तीसे आधी रत्ती तक और पत्तों की मात्रा १ रत्ती तक होती है।

धतूरा और दमेका रोग—

खांसी और दमेके रोगमें धतूरा दूसरी सब औषधियों की अपेक्षा उत्तम औषधि है। श्वास नलिका की श्लेष्म त्वचाको शिथिल करके यह दमेकी पीड़ा को दूर करता है। इसलिये खांसी की बहुतसी दवाएं इसके रसमें घोट कर गोलीके रूपमें बनाई जाती है। फिर भी इसका विशेष लाभ इसकी बीड़ी बनाकर इसका धूम्रपान करनेसे ही होता है। दमेका चाहे जैसा उपद्रव चढ़ा हुआ हो तब भी इसके पत्तोंकी बीड़ी बनाकर पीनेसे तत्काल शांत हो जाता है श्वासको दूर करनेके लिये और उसके उपद्रव पूर्ण वेगको कम करनेके लिये धतूरेके समान औषधि शायद ही कोई दूसरी हो ❀

❀ नोट—आज कलकी सर्वशोधित वनस्पतियोंमें एफिड्रा वल्गेरियम (अमसानिया) में पाया जानेवाला एफिड्रिन नामक तत्व दमेके रोगको रोकनेके लिये धतूरेसे भी अधिक प्रभाव शाली होता है। इसका वर्णन इस ग्रन्थके पहिले भागमें देखना चाहिये।

किसी विशेष प्रकृति वाले व्यक्तिको चाहे इससे फायदा न हो मगर आमतौरसे शत प्रतिशत व्यक्तियो को इससे लाभ होता हुआ देखा जाता है।

इसके आवे सूखे हुए पत्तोके टुकडो को ४ रत्तीकी मात्रामें लेकर कागजमें रखकर बीड़ी बनाकर रोगीको पिलानेसे १० मिनिटमे दमेका दौरा शात होजाता है। अगर १० मिनिटमें शात न हो तो अधिकसे अधिक १५ मिनिट तक राह देखकर दुसरी बीडी पिलाना चाहिये। अगर दो बीडियों से भी शांति न हो तो फिर उसको तीसरी बीडी नहीं पिलाना चाहिये। समझ लेना चाहिये कि उस रोगीके लिये धतूरा उपयुक्त नहीं है। जिन रोगियो की प्रकृतिको धतूरा अनुकूल नहीं होता है उनको इस बीडीके पाते ही सिरमें चक्कर, गलेमे जलन और मुहमे खुश्की पेदा होजाती है। ऐसे चिन्ह मालूम पडने पर रोगीको धतूरा नहीं पिलाना चाहिये। जिन लोगोंको यह अनुकूल भी होजाय उनको भी बहुत जरूरत पडने पर ही इसका उपयोग करना चाहिये। हमेशा इसका उपयोग करनेसे इसका व्यसन पड जाता है और उसके बाद इससे किसी प्रकारका लाभ नहीं होता। दमेका वेग चढनेके ३।४ घटे बाद इस बीडीके पीनेसे जसा चाहिये वैसा लाभ नहीं होता है। इसलिये दौरा शुरू होनेके साथ ही इस बीड़ीका पीना चाहिये और उस बीडी को धीरे २ न पीकर २।३ फू को मे ही पूरी करदेना चाहिये। पहली फूक लनके साथ हा छातीमेंसे चिकना कफ छूटना आरम्भ हो जाता है और छाती हलकी पड़ जाती है। पत्तोकी अपेक्षा इसके बीजोंका असर चौगुना होता है। इसलिये जिन लोगोंको पत्तोंसे लाभ नहीं होता उनको इसके बीजोंका चूर्ण चिलममे रखकर पिलाया जाता है।

जिन लोगोंको हृदयसे सम्बन्ध रखने वाली कोई बीमारी हो अथवा जिनके मुहपर अथवा आखोंके आसपास सूजन आरही हो उनको भूलकर भी इस प्रयोगको न करना चाहिये।

धतूरा और उपदश

काला धतूरा, तुलसी, कसाद्री, पुनर्नवा, बेल, भागरा, पीपर, अडूसा, बावची, पवॉर, तलवणी और मकोय। इन सब वनस्पतियोंके रसमे और आकडेके दूधमें अलग २ एक हाथ लबे और एक हाथ चौडे मलमलके कपडे को तीन २ बार भिगोकर धूपमें सुखा लेना चाहिये। फिर ४ तोला शुद्ध आमलासार गधक का चूर्ण लेकर उसको ४ तोले घीमे खरल करके उस कपडे पर लेप करदेना चाहिये। फिर उस कपडेको गोल मोड कर उसकी मोटी बत्ती बना लेना चाहिये। इस बत्तीका १ मुँह चिमटेमे पकडकर नीचेके मुहमें आग लगा देना चाहिये और नीचे चीनीकी एक बड़ी रकाबी रख देना चाहिये उस बत्तीमें से लाल रग का चूआ टपक २ कर उस रकाबीमे इकठ्ठा होगा। उस चोये को एक शीशीमें भर लेना चाहिये। प्रतिदिन सबेरे और शाम इसमेंसे ४ रत्ती चोया लेकर उसको नागरवेल के पान पर रखकर उसमें तीन रत्ती विधिवत शुद्ध किये हुए पारे को डालकर उंगलीसे खूब मलना चाहिये। जब यह पारा और चोया एक जीव हो

जाय तब उस पान की बीडी बनाकर खा जाना चाहिये। पथ्यमें सिर्फ दूध और चावल खाना चाहिये। दूसरी सब चीजें छोड देना चाहिये। पानी भी जहाँ तक बने वहा तक बहुत कम पीना चाहिये। अगर बारम्बार प्यास लगे तो उसको दूध पीकर बुझाना चाहिये।

जंगलनी जडी बूटीके लेखक लिखते हैं कि इस कठिन पथ्यके साथ अगर इस औषधि को नियमपूर्वक १५ दिन तक ले ली जाय तो उपदश या गर्मी और इससे पैदा होनेवाले श्वास, खासी, भगन्दर, कण्ठमाल सधिवात, इत्यादि अनेक प्रकारके रोग नष्ट होते हैं।

धतूरा और चर्मरोग—

चर्म रोगोंके अन्दर भी धतूरा बहुत लाभदायक है। चमडेके अन्दर रहनेवाले जन्तु धतूरेके स्पर्श से नष्ट हो जाते हैं। पारा, गधक, नीला थूथा और हरताल इन चारो वस्तुओं को समान भाग लेकर खरलमें अच्छी तरहसे घोटना चाहिये। फिर धतूरके हरे फलोंमें इस कजली को भरकर कपडमिट्टी करके ऊपले कण्डो की आगमें डाल देना चाहिये। जब यह कपडमिट्टी पककर लाल हो जाय तब उसको निकालकर धतूरे के फलों के साथ ही भीतर की सब दवा को तेलमें घोट लेना चाहिये। इस मिश्रण को खमरा और खुजली पर लगानेसे बहुत जल्दी लाभ होता है।

धतूरा और बाजीकरण—

धतूरेमें एक प्रकार का मादक और वीर्यस्तम्भक गुण रहने से कामी पुरुषोंके लिये भी यह एक उपयोगी वस्तु है। इसके लिये धतूरेके १५ फलों को बीज समेत लेकर उनका बारीक चूर्ण करके २० सेर दूध में उस चूर्ण को डालकर उस दूध का दही जमा लेना चाहिये। दूसरे दिन उस दही को बिलोकर उसमेंसे घी निकाल लेना चाहिये। इस घी को १ रत्ती की मात्रामें पानमें रखकर खानेसे यह अपना कामोत्तेजक असर बतलाता है और इसको कामेन्द्रिय पर मलनेसे उसकी शिथिलता को दूर करता है।

रासायनिक विश्लेषण—

धतूरे ( Dattura Stramonium) में पाये जानेवाले उपचार इसके उत्पत्ति स्थानके अनुसार कम ज्यादा होते हैं। ये ४० से लेकर ६५ प्रतिशत तक पाये जाते हैं। इनमे Hyoscyamine और Hyoscine नामक उपचार २ १ के अनुपातसे पाये जाते हैं। इनमे एट्रोपीनकी भी कुछ मात्रा रहती है। इसके फलोंमे १ प्रतिशत उपचार पाये जाते हैं जिसमे खास करके इसमें "हीओसिन" की मात्रा ही विशेष रहती है। इसके पत्ते और बीज फरमाकोपिया आफ इण्डियामे सम्मत माने गये हैं। ये टिंचर और प्लास्टर तैयार करनेके काममें

लिये जाते हैं। इसकी दोनों जातियोंमें नींद लाने और शूलको नष्ट करनेके गुण उपस्थित हैं। और ये स्नायुशूलमे मुफीद और आक्षेपनिवारक होते हैं। इसके पत्तोंकी सिगरेट बनाकर दमेकी बीमारीमें धूम्रपान करनेके काममें लेते हैं।

धतूरा स्ट्रेमोनियममे तैयारकी हुई चीजोंकी माग बाहर अधिक रहती है। यह सिगरेट बनाने, बफारा और सेक करने और दूसरे चूर्ण तैयार करनेमे बहुत उपयोगी है। दमेकी बीमारी पर यह विशेषरूपसे उपयोगी है। यह वनस्पति इसकी उपचारिक उपयोगिताकी दृष्टि से ही अमेरिकामे विशेष प्रकारसे पैदाकी जाती है। भारतमे स्वाभाविक रूपसे इसकी इतनी पैदाइश होते हुए भी स्ट्रेमोनियमसे तैयारकी हुई चीजें और इसमे पाये जानेवाले उपक्षार विदेशोंसे यहा मँगाये जायँ यह कितने दुर्भाग्यकी बात है।

टी० एन० घोषके मतानुसार कानके दर्दमें इसके पत्तोंका १ या २ दो बूँद ताजा रस कानमें टपकानेसे बहुत लाभ होता है। इसके ताजे पत्तोंका रस या इनका पुल्टिस कष्ट युक्त सूजनमें, नेत्ररोगोंमें और कर्णरोगोंमें बहुत मुफीद है।

मैसूरमें इसके पत्तोंका रस सुजाककी बीमारीमें जमे हुए दूधके साथ दिनमें १ बार दिया जाता है।

सीलोनमें इसकी जड़ें पागल कुत्तेके काटने पर काममें ली जाती हैं। ये पागलपनको दूर करती हैं। इस सारे वृक्षको सुखाकर पीसकर उसका धूम्रपान तम्बाकूकी तरह दमेको दूर करनेके लिये किया जाता है।

सुबोधवैद्यकके मतानुसार इसके पत्तोंको पीसकर उसकी लुग्दी बनाकर बिच्छूके काटे हुए स्थान पर लगानेसे शान्ति मिलती है।

मलायामें इसके पत्ते प्राय सभी लोगोंके द्वारा श्वासकी बीमारीमे काममे लिये जाते हैं। किन्तु यह बात खयालमे रखने योग्य है कि वहा के लोग इसका अन्त प्रयोग बहुत ही कम करते हैं। वे इन पत्तों को शराबके साथ या पीसे हुए चावलों के साथ मिलाकर कई प्रकारकी सूजन और दर्द पर लेप करते हैं। इन पत्तो को गरम करके एक प्रकारका पुल्टिस तैयार किया जाता है। इस पुलटिसको पार्यायिक ज्वरोंमे तिल्ली पर बाधते हैं। दातोंका दर्द कम करनेके लिये इसकी जड़को पीसकर मसूड़ों पर मलते हैं। इसके पत्तो और फलोको सुखाकर उनकी सिगरेट बनाकर दमेके रोगियोंको पिलाते हैं।

इसके हरे फलको पीसकर सांघातिक फोडो पर लगानेके काममे लेते हैं। इसके गरम पत्ते मध्यसी—वात ( Sciatica ) पर बाधनेके काममें लेते हैं।

गोल्ड कास्ट में इसके पत्तो को पीसकर तेलके साथ मिलाकर जहरीले कीड़ोंके दंशके

ऊपर उनका विष दूर करनेके लिये लगानेके काममे लेते हैं।

दक्षिण आफ्रिकाकी फिगस ( Fingos ) और सासस ( Xosas ) नामक जातिया सके पत्तों को प्रादाहिक स्थानो पर छाले उठानेके काममें लेती हैं।

यूरोपके अन्दर इसके पत्तोको गरम करके कष्टयुक्त या प्रादाहिक सूजन वाले भागों पर बाधनेके काममें लेते हैं। इसके ताजा पत्तोको गरम करके या इनका सत्व निकाल कर या इनकी भाफको आमवात व जोडोंके दर्दको दूर करनेके काममें लिया जाता है। यूरोपियन लोग इसके पत्तोका एक मलहम तैयार करते हैं जो बहते हुए फोडो पर लगानेके काममे लिया जाता है। कुछ समय पहले इसके पत्तोका पुल्टिस दुष्ट व्रणो पर लगानेके काममें भी लिया जाता था। श्वास और खासीमे इसके पत्तो का धूम्रपान भी वहाके लोग करते हैं। खूनी बवासीरसे बहने वाले खूनको बन्द करनेके लिये भी वहाके निवासी इसको विशेष उपयोगमे लेते हैं। पानीमे इसके पत्तोंको उबालकर फिर उसका बफारा पीडित अगोंपर दिया जाता है। इन पत्तोका रस सिरकी गज पर लगाया जाता है जो गिरते हुए बालोको रोकता है।

भूल्ड लोग इसके पत्तोका पीसकर मनुष्यो और जानवरो की चोट और रगड पर लगाते हैं। कष्ट दायक घावोंपर और पीपदार जख्मोपर भी यह लगानेके कामम लिये जाते हैं। ऐसा खयाल किया जाता है कि य मवादको निकालकर प्रदाहको कम कर देते हैं।

यूनानी मत—यूनानी मतसे धतूरा मस्तिष्कमे सुस्ती पैदा करने वाला, निद्राजनक और पित्त की तेजीसे होनेवाले सिर दर्द को दूर करनेवाला है। यह सूजनको पकाकर बिखेर देता है। खराब दोषोंको सुखा देता है। स्तम्भन पैदा करता है, पाचक है, वमन लाता है, कफकी बुखार, कोढ, फोड़े फुन्सी और पेटके कीड़ा को नष्ट करता है। इसके रस को पिलानेसे पागल कुत्ते का विष शात होता है। दूसरे जहरीले जानवरोंके विष पर भी यह लाभ पहुँचाता है।

दमे की बीमारीमे इसके पत्तो का चुरट बनाकर दौरेके वक्त रोगी को पिलाया जावे तो दमे का दौरा फौरन रुक जाता है। लेकिन बीमार कमजोर हो तो नुकसान, पहुँचता है। धूम्रपानके लिये ५ रत्ती से १० रत्ती तक इसके पत्ते रखना चाहिये। अगर इससे मुह सूखने लगे, सिर घूमने लगे और आख की पुतलिया फैल जायं तो इसको लेना बन्द करदें। इस बीमारीमें इसका सत और टिंचर खिलाना भी लाभदायक होता है। पुरानी खासीमे कमजोर आदमियों को जब साँस लेने मे मुश्किल हो तब इसका टिंचर १० मिनिम की मात्रामें दूसरी दवाओंके साथ देना चाहिये। जोडाके दर्दमें इसका सत आधो ग्रेन की मात्रामें दिनमें ३ बार देनेसे लाभ होता है। कष्टप्रद मासिक धर्ममे भी यह लाभदायक है। नारू की बीमारीमे इसके पत्तो का पुल्टिस बाधनसे बहुत शाति मिलती है। धतूरेके ताजा पत्तो को कुचलकर आधे पौंड

की मात्रामें लेकर ? पौंड चर्बीमे मिलाकर हलकी आंच पर गरम करना चाहिये। जब पत्ते जल जायँ तब उसको छान लेना चाहिये। यह मलहम कारबंकल और दूसरे जख्मों में बड़ा लाभ पहुँचाता है।

धतूरेके बीजो को १ मिट्टी के कूजेमें बंद करके कपड़मिट्टी करके आगमे रखदें। जब राख हो जाय तब निकाल करके १ रत्ती की मात्रामे पानीके साथ मलेरिया ज्वरके रोगी को देनेसे लाभ होता है। कोई २ इसको ४ रत्ती की मात्रामे भी देते हैं। धतूरेके बीज ६ हिस्सा, रेवदचीनी ४ हिस्सा, सोठ २ हिस्सा और बबूल का गोंद २ हिस्सा। इन सब को मिलाकर मूग के बराबर गोलिया बना लें। मोसमी बुखार आने से दो घण्टे पहिले २ गोली देने से ज्वर का जोर कम हो जाता है।

धतूरेके बीजोंसे पाताल यन्त्रके द्वारा एक तेल निकाला जाता है। इस तेलको पैरके तलवों पर मालिश करके स्त्री सम्भोग करनेसे बहुत स्तम्भन होता है। धतूरेके पत्ते शरीरकी ऐंठन और दर्दको दूर करते है। इनको खिलाने और इनका लेप करनेसे गठियामे लाभ होता है।

धतूरेके विषका प्रभाव व उसकी शान्ति—

धतूरा एक विषैली वस्तु है। इसको अधिक मात्रामे लेनेसे बहुत तेज नशा होता है। शरीर सुन्न हो जाता है। आखकी पुतलिया फैल जाती है। सब चीजें नीली नजर आती हैं। रोगीकी अक्कल गुम हो जाती है। उसके मगजमे खराब खयाल पैदा होते है। उसे चुहे और चींटिया नजर आती है और वह उनको पकडनेका इरादा करता है। उसकी आखें लाल हो जाती है और उसे सब दूर अन्धेरा मालूम होता है। उसकी हालत पागलों सी हो जाती है और वह इधर उधर भागने लगता है। इसके विषकी शान्तिके लिये वमन कराना, हाथ पावको गरम पानीमे रखना, शरीर पर गरम तेलकी मालिश करना, गरम और तर खाना खाना और शराब पीना मुफीद है।

उपयोग —

उपदश—इसकी सूखी जडको २ चावलकी मात्रामे पानमे रखकर खिलानेसे उपदश और उससे सम्बन्ध रखनेवाली सब बीमारिया आराम होती हैं।

सुजाक—इसके पत्तोके रसको घी निकाले हुए दूधमे पिलानेसे सुजाकमे लाभ होता है।

कानके पीछेकी सूजन—इसके पत्तोंके रसको आगपर गाढ़ा करके कानके पीछेकी सूजन पर लगानेसे आराम होता है।

कामशक्ति की कमजोरी—धतूरेके बीज, अकलकरा और लोग इन तीनों चीजोंकी गोलिया बनाकर खिलानेसे कामशक्ति बढती है।

स्तनों की सूजन—धतूरेके पत्ते और हल्दी का लेप करनेसे स्त्रियाके स्तन पर होनेवाली पित्त की सूजन बिखर जाती है।

ज्वर—इसके बीजोंके चूर्णको आधी रत्तीकी मात्रा मे बुखार आने से पहले देने से बुखार छूट जाता है।

गर्भाधान—इसके फूलोंके चूर्ण को घी और शहद के साथ चटाने से गर्भाधान मे मदद मिलती है।

धातुका बहना—धतूरेके बीज और काली मिरचीको पानीमे पीसकर, काली मिर्चके बराबर गोलिया बना ले। इसमेसे एक एक गोली सुबह शाम सौंफके अर्कके साथ लेनेसे २१ रोजमे पुरानीसे पुरानी अनैच्छिक वीर्यस्रावकी बीमारी दूर हो जाती है। मगर खटाई और बादीकी चीजोंसे परहेज करना चाहिये।

क्षय—धतूरेके पत्तोंके स्वरसको १ रत्तीकी मात्रामे देनेसे क्षयमे लाभ होता है।

गठिया और हड्डीका दर्द—इसके पत्तोंका पुल्टिस या लेप करनेसे गठिया और हड्डीके दर्दमें लाभ होता है।

मिरगी और पागलपन—धतूरेका रस रोगीकी शक्तिके अनुसार देनेसे मिरगी और पागलपन मे लाभ होता है।

दातका दर्द—धतूरेके बीजोंको पीसकर गोली बनाकर दातके सुराखमे रखनेसे दातका दर्द मिट जाता है।

गठिया—धतूरेके तेलका लेप करनेसे गठिया और सूखी खुजलीमें लाभ होता है।

नारू—इसके पत्ते और चावलोंके आटेको मिलाकर उसका पुल्टिस बाधनेसे नारू जल्दी निकल जाता है।

गर्भपात—धतूरेकी जडको गर्भवती स्त्रीकी कमरमे बाध देनेसे गर्भपातकी शका नहीं रहती।

दमा—धतूरा, तबाकू, अपामार्ग और जवासा। इन चारो चीजोंको समान भाग लेकर चूर्ण बना लेना चाहिये। इसमेसे २ चुटकी चूर्ण चिलममे रखकर पीनेसे दमेका दौरा बन्द हो जाता है।

नंबर २—कलमी शोरा १ भाग, सौंफ १ भाग, धतूरा २ भाग। इन सब चीजोंको कूटकर इनका धूम्रपान करनेसे दमेका दौरा रुक जाता है।

नंबर ३—धतूरा, काली चाय, शोरा और तम्बाकू समान भाग लेकर चूर्ण करके इस चूर्णकी बीडी बनाकर पीनेसे दमेका दौरा रुक जाता है।

बादीका दर्द—धतूरेके पचांगका रस निकालकर उसको तिल्लीके तेलमें पचा देना चाहिये। इस तेल को मालिश कर के ऊपर से धतूरे के पत्ते बांध देने से बादी का दर्द मिट जाता है।

मुजिर—अधिक मात्रामें धतूरा विष है। यह अपनी बेहद खुश्कीकी वजहसे बदनको सुन्न कर देता है। सिरमें दर्द पैदा करता है तथा पागलपन और बेहोशी पैदा करके मनुष्यको मार देता है।

दर्पनाशक—धतूरेके विषको शांत करनेके लिये कपास के फूल और कपासके पत्ते बहुत मुफीद हैं। इनका शीत निर्यास देनेसे धतूरेका विष शांत हो जाता है। इसके अतिरिक्त दूध, मक्खन, सौंफ, काली मिरच, और शहद भी इसके दर्पको नष्ट करती है।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि अजवायन खुरासानी, और सूची या अंगूर शेफा (-एट्रोपा बेले डोना) हैं।

मात्रा—डॉक्टरोंके मतसे इसके पत्तोंके चूर्णकी मात्रा १ ग्रेनसे ३ ग्रेन तक, बीजोंके चूर्णकी मात्रा आधे ग्रेनसे १ ग्रेन तक और इसके सत्वकी मात्रा पाव ग्रेन तक है। यूनानी मतसे इसके बीजोंकी मात्रा ६ रत्ती तक है।

बनावटें —

षड्गुण बालित सुवर्ण जारित पारद गुटिका—

शुद्ध सोनेके वर्क व शुद्ध पारदकी समान भाग लेकर खरलमें डालकर नीबूके रसमें दोपहर तक घोटना चाहिये। जिससे पारा और सोना एक दूसरेके साथ मिलकर गोली बांधनेके काबिल होजायगे। इनकी गोली बना लेना चाहिये। फिर नीबूके रसमें मरगवाके पत्तोंका पीसकर उनकी कुलडी मूस बनाना चाहिये। इस कुलडीमें उस पारेकी गोलीको रखकर उस कुलडी का मुंह बन्द करके उसके ऊपर कपड़ा लपेट देना चाहिये। फिर एक मिट्टीकी हांडीमें कांजी भर कर, उस हांडीके ऊपर १ लकडी रखकर उस लकडीसे उस कुलडीका दौलायन्त्रकी तरह झूलती हुई बांध देना चाहिये। नीचे हलकी आंच जलाना चाहिये। इसको स्वेदन संस्कार कहते हैं और यह आठ दिन तक किया जाता है। मगर यह ख्याल रखना चाहिये

कि प्रतिदिन भाफका कार्य पूर्ण होने पर हाडीमें से उस कुलडीको निकालकर ठंढी होने पर उसमे से उस पारेकी गोली को निकाल कर सरगवे के पत्तों की नई कुलडी में रखना चाहिये। मतलब यह कि प्रतिदिन भाफ देनेके काममे सरगवेकी कुलडी नवीन होना चाहिये। जब आठ दिन तक स्वेदन सस्कार पूरा होजाय तब १ मिट्टीकी बडी कुलडी लकर, उसमे नीचे चने और बेरके पत्तों की पीसी हुई लुग्दी रख देना, चाहिये और उसके ऊपर काले फूलकी अपराजिता का जड और सफेद चन्दनका बुरादा भरकर उस बुरादे पर पारेकी गोली रखकर उस गोलीपर फिर अपराजिता और चन्दनका बुरादा दबाकर उसके ऊपर चने और बेरके पत्ताकी लुग्दी रखकर हाडी को भर देना चाहिये। उस हाडीके मुहपर जिसके बीचमें छेद पडा हुआ हो ऐसा ढकना रखकर चाक मिट्टी, लोहे का कीट, राख और मिट्टा इन चारो चाजोंको समान भाग लेकर उनका पानीके साथ खूब बारीक पीसकर इसकी लुग्दीसे उस हाडीकी दर्जो का बन्दकर देना चाहिये। उसके बाद उस हाडी पर कपड मिटी करके रेतीस भरे हुए एक मिट्टीके डॉवरेमे रखकर उस डाबरेका चूल्हेपर चढा देना चाहिये और उस ढक्कनके छेदमे से काल धतुरेके पचांगसे निकाला हुआ स्वरस डालते रहना चाहिये। इस प्रकार २१ बार उम रससे उस हाडीका भर कर वह रस जला देना चाहिये। उसके बाद अग्नि शात होने पर उम कुलडीमेसे पारेकी तैयार गोलीका निकाल लेना चाहिये। जिस पारेकी गोली बनानेके लिये अनका वैद्य, अनेका तरहके प्रयत्न करते रहते हैं, वह गोली इस क्रियासे बनजाती है और पारा सफेद खडियाकी डलीका तरह हो जाता है।

इस प्रकार तैयार की हुई गोली को वज्र मूस नामक मूसमें रखकर कपड मिट्टी करके भूधर यन्त्र मे रखकर ४ ऊपले कण्डों की आच देना चाहिये। (जमीन मे एक गज लम्बा, १ गज गहरा, १ गज चौडा गड्ढा खोद कर उसके अन्दर १ बालिश्त लम्बा, १ बालिश्त चौडा, १ बालिश्त गहरा दूसरा खड्डा खोदना चाहिये। इस छोटे खड्डेमें गोली वाली मूसको रखकर उस खड्डेमें रेतीस भरकर चार ऊपले कण्डोंको उस रेतापर रखकर जला देना चाहिये। इसी का नाम भूधर यन्त्र है) इस प्रकार पाच आच चार २ कण्डोकी देना चाहिये। फिर पाच आच पाच ५ कण्डो की देना चाहिये। इस प्रकार हर पाच आचके ऊपर एक २ कंडा बढाना चाहिये। इस प्रकार कुल १०० आच देना चाहिये और हर आचके साथ उस मूसमें गोलीके नीचे १६ वा भाग गन्धक बैठकरी तरह रखते जाना चाहिये। इस प्रकार क्रिया करनेसे १०० पुटसे छगुने गन्धक और समान भाग सोनेका जारण होजायगा और उस जारणसे पारेका रंग सिंदूरके समान होजायगा। इसको एक बासकी नलीमें भरकर रखना चाहिये।

आयुर्वेदिक ग्रंथों मे घघे हुए पारेका बहुत महत्व वर्णन किया गया है। यह अनेक सिद्धियोंको देता है। रोग मात्रको नष्ट करता है। रोग नाश करनेके कार्य में यह आज कलके

चन्द्रोदयसे उत्तम कार्य करता है। इसको प्रतिदिन सवेरे शाम १ रत्ती की मात्रामें नागर बेलके पानके साथ लेनेसे हर प्रकारके ज्वर, त्रिदोष, प्रमेह, अतिसार, सग्रहणी, हैजा असाध्य अजीर्ण, यकृतके रोग, पाडुरोग, वातरोग, हिस्टीरिया और जहरी जानवरोंसे होनेवाले तमाम उपद्रवोंको आश्चर्य जनक रीतिसे नष्ट करता है। इतनाही नहीं बल्कि क्षयके समान महारोगो को भी नष्ट करके चिकित्सकों को विपुल धन, यश और विजय प्रदान करता है। (जगलनी जड़ी बूटी)

---

# धतूरा सफेद

नाम—

सस्कृत—कनकोन्मत्त, कनककौतुफल, श्वेत धतूरा। हिन्दी—सफेद धतूरा। गुजराती—धोला धतूरो। मराठी—पाढरा धात्रा। अरबी—जोजमसलअबियाज। बगाल—दुतूरा। दक्षिण—उजला धतूरा। तामील—वेलुमत्तइ। तेलगू—तेल्लमत्त। लेटिन—Dattura Alba (धतूरा एल्बा)।

वर्णन—

यह वनस्पति समस्त भारतवर्ष और चीनमें पैदा होती है। इसका सारा पौधा काले धतूरे पौधेके ही समान होता है। सिर्फ इसके फूल सफेद रंगके होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे इसके बीज पागल कुत्तेके काटने पर उपयोगी होते हैं। कानसे पीब बहने की बीमारीमें भी ये लाभदायक है। इसके बीज, जड़ें और पत्ते उन्माद रोगमें उपयोगी हैं।

आर्य चिकित्सक इस वनस्पति की जड़ को दूधके साथ उबालते हैं और उस दूध को धोये हुए घी के साथमें पागलपन को दूर करनेके लिये पिलाते हैं।

जिस ज्वरके साथ मे जुकाम रहता हो या जिस ज्वरमे मस्तिष्कके अन्दर कुछ खराबी हो उसमें यह वनस्पति उपयोगी है। अतिसार, रक्तातिसार और चर्म रोगोंमें भी यह मुफीद है। इसके पत्तो को कुचलकर अथवा इसके बीजों को पीसकर तेलके साथ मिलाकर आमवात की सूजन, फोडे, गठान और अर्बुद पर लगानेके काममे लेते हैं।

धतूरे के पत्तो को पीसकर व उनका लेप बनाकर प्रदाहके स्थानों पर लगाते हैं। डायमाक के मतानुसार इसके फल अथवा इसके रसमें अफीम और तेल का मिलाकर एक लेप तैयार

किया जाता है जाकि कृमियों को नष्ट करनेके,काममें लिया जाता है। यह परजीवी कीटाणुओं को भी नष्ट करता है।

डायमॉकके मतानुसार इसके गरम किये हुए पत्ते आखों पर बांधे जायं तो आखों की बीमारियों को फायदा पहुँचाते हैं ये सिर दर्द, अण्डवृद्धि और फोडोंमे भी उपयोगी हैं।

दत्तके मतानुसार प्रदाहयुक्त स्थान पर इसके पत्तों को अफीमके साथ मिलाकर लगाया जाता है। इसके पत्ते, जड और बीज तीनो औषधि के काममें आते हैं। ये पागलपन मे उपयोगी माने जाते हैं। प्रतिश्याय और मस्तिष्क की बीमारी वाले ज्वरमें, रक्तातिसारमें और चर्म रोगोंमें ये उपयोगी हैं।

चक्रदत्तके मतानुसार छातीके प्रदाह मे हलदी और धतूरेके फलसे तैयार किया हुआ लेप बहुत जल्दी लाभ पहुँचाता है। सफेद धतूरे की जडको दूधमे उबालकर उस दूध का बनाये हुए घी और अन्य औषधियों के साथ पागलपन को दूर करने के लिये उपयोग में लिया जाता है।

नागसेनके मतानुसार धतूरे के बीज श्लीपद की बीमारी मे उपयोगी है दांत की पीडा में भी ये बहुत लाभदायक हैं। इन बीजों को प्रात काल में ठण्डे पानीके साथ २ चावलसे लेकर ८ रत्ती तक की मात्रामें देना चाहिये। इनकी खुराक को धीरे २ बढाना चाहिये।

सुश्रुत के मतानुसार धतूरे की ताजा हरी जड १५ रत्ती की मात्रामें और ताजा पुनर्नवा का रस एक ड्राम की मात्रामें पागल कुत्ते और पागल श्रृगाल के विष को दूर करने के लिये दिया जाता है।

इस वनस्पति के और सारे गुण काले धतूरे के समान हैं। मगर यह उससे गुणमें कुछ कम प्रभावशाली है।

## धतूरा मेटल

नाम —

संस्कृत—दुस्तुरा। तामील—मदुलम। लेटिन—Datura Metel ( धतूरा मेटल )।

वर्णन—

इस वनस्पति का मूल उत्पत्ति स्थान दक्षिणी अमेरिका है। वहीं से यह सारे संसार मे फैली है। भारतवर्ष में यह हिमालयमें और मद्रास के आसपास पाई जाती है। इस सारी

वनस्पतिमें भूरा रुआँ रहता है। इसके पत्ते लम्बे चौड़े और नुक्कीदार होते हैं। ये दोनों तरफसे रुएंदार होते हैं। इसका फल गोल और कांटेदार होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

भारतवर्षमें यह वनस्पति धतूरे और सफेद धतूरे के समान ही गुणवाली मानी जाती है। चीनमें शरावके साथ इसके फूलों को मिलाकर एक प्रकार की औषधि बनाई जाती है जो स्वेद शक्ति को हीन करने के काममें ली जाती है। इससे एक प्रकार का लोशन भी तैयार किया जाता है जो चेहरे के ऊपर की फुन्सियों और पैरों की सूजन को कम करता है।

कम्बोडिया में इसके फूल दमे की बीमारी में और फल कान की बीमारी में काम में लिये जाते हैं।

इस वनस्पति के अन्दर Hyo o ımıne, ( होसी माइन ) Scofoolamine ( स्कूफूलामाइन ) और At ıopıne (एट्रोपीन) ये तीनों पदार्थ पाये जाते हैं।

कर्नल चोपरा के मतानुसार इस वनस्पति में H ıoscıne ( हीओसाइन ) और Atropıne ( एट्रोपीन ) नामक उपचार पाये जाते हैं।

---

# धतूरा पीला ( सत्यानाशी )

नाम —

संस्कृत—हेमक्षीरी, सुवर्णक्षीरी, ब्रह्मदण्डी, हेमदुग्धा, हेमशिरा, हेमवती, कञ्चन केहिरी, कटुपर्णी, पीतपुष्पा, रुक्मिणी, शृगाल कान्ता, सुवर्णा, तिलदुग्धा, इत्यादि। हिन्दी—सत्यानाशी, पीला धतूरा फिरंगी धतूरा, ब्रह्मदंडी, स्याल काटा। बंगाल—सोना खिरनी, स्यालकाटा। मराठी—काटे धोत्रा, भिलधोत्रा। गुजराती—दारूडी। पंजाब—भटकटैया, भेरबंड, करियारी, कटसी, सत्यानाशी, स्यालकांटा। तामील—ब्रह्मदंडी, कुरुक्कम। तेलगू—ब्रह्मदंडी। अंग्रेजी—Prıoklypoppy ( प्रिकलीपोपी )। लेटिन—Argemone Mexıcanα ( आर्जेमोन मेक्सिकेना )।

वर्णन—

सत्यानाशी के पौधे २ से ४ फीट तक ऊंचे, भस्मी रंगके होते हैं। इसके सारे पौधे पर बहुत तीक्ष्ण और पतले कांटे रहते हैं। इसके पत्ते ऊंटकटारे के पत्तों के समान लम्बे और कटे हुई किनारे के होते हैं। इसके फूल पीले रंगके होते हैं। फल लम्बगोल और

कॉटेदार होते हैं। इस पौधे का कोई भी हिस्सा तोड़ने पर उसमे से सोनेके समान पीले रग का दूध निकलता है। इसीलिये इसको सस्कृतमे स्वर्णक्षीरी कहा गया है। यह वनस्पति सारे भारतवर्षमे कसरत से पेदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे स्वर्णक्षीरी शीतल, कड़वी, दस्तावर तथा खुजली, वात, रक्तरोग, कृमि रोग, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र ज्वर, पथरी, सूजन, दाह, और कुष्ठ का नाश करती है। इसकी जड को चोक कहते है। वह भी इसीके समान गुणकारी है।

क्षयनाशी और नेत्ररोग—

गण निघण्टुमे लिखा है —

तस्य क्षीरम् बिन्दुमात्रम् नेत्रेक्षिप्तम् घृतप्लुतम्।
शुक्लपक्षादिमास च नेत्राध्यम् च विनाशयेत्॥

अर्थात् इसके दूधकी एक बूद घी के साथ मिलाकर आजनेसे नेत्रशुक्ल रोग, अधिमास रोग और नेत्रों का अन्धापन दूर होता है।

आधुनिक अनुभवमे भी नेत्र रोगोंके लिये यह वनस्पति बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। इसमे से निकलने वाले दूध का लम्बे समय आखो मे आजन से आखों का दुखना मोतिया बिन्द, आखों की फूली, रतौंधी, झाक, आखोसे आसुओ का टपकना, दृष्टिकी मन्दता, इत्यादि रोग दूर होकर नेत्रों की ज्योति बढती है। आखोंके रोगों को दूर करनेके लिये और भी अनेकों औषधिया उपयोगमे ली जाती है। परन्तु यदि उनके उपयोगमे जरा भी असावधानी हो जाय तो उनसे हानि होनेकी सम्भावना भी रहती है। परन्तु इस औषधिमे हानिका कोई भय नहीं और इसीसे नेत्र रोगों को दूर करनेवाली औषधियोंमे इसका आसन ऊचा है। इसको उपयोगमे लाने का तरीका इस प्रकार है —

कार्तिक या अगहन महिनेमें इसकी डालिया को तोड तोड कर उनमे से जो पीले रग का दूध निकले उसको इकठ्ठा कर लेना चाहिये। इस दूध को तिगुने घीमे मिलाकर खूब घोट कर १ शीशीमे भर लेना चाहिये। इस औषधि को जस्त की सलाई से दिनमें २।३ बार सुरमे की तरह आजना चाहिये। अगर बारहों ही महिने इस दूधको सगृहीत करके रखना हो तो मौसम के ऊपर १ थालीमे घी लगाकर उसमे इसके दूध को फैला कर धूपमे सुखा देना चाहिये। जब वह गोली बाधने सरीखा हो जाय तब उसकी गोलिया बाधकर धूपमे सुखा कर शीशीमें भर लेना चाहिये। जब जरूरत हो तब इसमेंसे १ गोली दूध या घीमें घिसकर आखमे आज लेना चाहिये।

सत्यानाशी और चर्म रोग —

चर्म रोगोंके अन्दर भी यह वनस्पति बहुत उपयोगी है। इसका कृमिनाशक धर्म बहुत स्पष्ट है। उपदंशमें इसकी जड अथवा इसका पीला दूध कीडामारीके साथ देते हैं। इन रोगोंमें यह नीमके समान गुणकारी है। उपदंशके फोडे-फुन्सी और चट्ठों पर इसका दूध लगाया जाता है। कुष्ठ रोग और रक्तपित्तमें इसके बीजों का तेल शरीर पर मालिश किया जाता है और पत्तों का स्वरस दूधमें मिलाकर पिलाया जाता है। अग्नि विसर्प और दाद इत्यादि दाहजनक चर्म रोगोंमें इसका तेल चुपडने से शान्ति मिलती है। खुजली पर इसके दूध का लेप बडा लाभ पहुंचाता है। न भरनेवाले घावों पर इसका दूध लगाने से उत्तम परिणाम नजर आता है।

लॉरियूनियनमें इसका काढा सुजाकको दूर करनेके लिये पिलाया जाता है। इस वनस्पति का उपयोग पुराने चर्म रोगोंके बीमारों पर भी सफलता पूर्वक किया जाता है।

गोल्ड कास्टमें इस वनस्पतिका उपयोग नारूकी सूजनको दूर करनेके लिये किया जाता है। वे लोग इसको कुचल कर दूसरी औषधियोंके साथ नारूके स्थानपर बाँध देते हैं। ऐसा कहा जाता है कि इससे नारूका कीड़ा एक दम बाहर आजाता है।

सत्यानाशी और दमेका रोग

सत्यानाशीके बीज विरेचक, वामक और कफ निस्सारक होते हैं। ये फफरोग, जुकाम, गलेकी सूजन और श्वास नलिका की सूजनमें उपयोगी होते हैं। कुक्कुर खांसी और दमेमें भी ये लाभदायक हैं। हालांकि इनके अन्दर किसी प्रकारके आक्षेप निवारक (Anti Spas Modic) तत्व नहीं पाये जाते मगर ये अपने वामक, कफ निस्सारक और रेचक गुणोंकी वजहसे दमेके ऊपर विजय प्राप्त कर लेते हैं। इनका विरेचक धर्म दूसरी बीमारियों की अपेक्षा फुफ्फुस सम्बन्धी बीमारियों में ज्यादा उपयोगी होता है।

दमेके अन्दर इस औषधिका उपयोग करनेका तरीका इस प्रकार है—

सत्यानाशीके पंचांगका रस निकाल कर उसको आगपर औटाना चाहिये। जब वह रबडीके समान गाढा होजाय तब उसमें पुराना गुड १ छटाक और राल २ तोला मिलाकर खरल करके दो २ रत्तीकी गोलियाँ बना लेना चाहिये। इनमें से १ गोली दिनमें तीन चार गरम पानीके साथ देनेसे दमेके रोगमें आशातीत लाभ होता है।

सत्यानाशी और उपदंश—

उपदंशके रोगमें भी यह वनस्पति बहुत लाभदायक है। इसके ताजे पौधोंको कूटकर भभकेके अन्दर रखकर उनका अर्क खींच लेना चाहिये। इस अर्कको प्रतिदिन सवेरे शाम एक २ औंसकी मात्रामें पानी अथवा दूधके साथ पीनेसे सब प्रकारके चर्मरोग, तथा उपदंशकी वजहसे

होनेवाले रक्तरोग दूर होते हैं। दुराचार जनित फिरंगोपदंशमे तो यह औषधि इतना फायदा करती है कि अगर इस रोगकी वजहसे तालूमे छेदभी पड गया होतो वह भी अच्छा होजाता है।

इस वनस्पतिका पीला रस जलोदर पीलिया और सूजन तथा चर्मरोगों पर औषधि की तरह काममे लिया जाता है। यह मूत्रल और न भरनेवाले घावोंको अच्छा करनेवाली औषधि है। दुष्ट और नहीं भरनेवाले व्रणोंके ऊपर इसका बाहिरी लेप बहुत फायदा पहुँचाता है। यह नेत्रशुक्ल रोगको दूर करनेके लिए पलकोंके ऊपर लगानेके काममे भी लिया जाता है। कोंकणमे इसका रस कुष्ट रोगको दूर करनेके लिये दूधके साथ पिलाया जाता है। इसके बीजों में एक स्थिर तेल (फिक्स्ड आइल) पाया जाता है जो कि एक मृदुविरेचक वस्तु होती है। अरंडीके तेल, जेलप और रेवन्दचीनीकी अपेक्षा इसका तेल जुलाबके लिये विशेष उत्तम होता है क्योंकि इससे दुर्गन्ध और छींक नहीं होती, इसकी मात्रा छोटी होती है इससे पेटमे मरोड नहीं होती और इसकी क्रिया मृदु और सुनिश्चित होती है। ताजे निकाले हुए तेलकी क्रिया अधिक विश्वसनीय होती है। इसके बीज रेचक और वेदनानाशक होते हैं। ये नवीन हालतमे वमन पैदा करते हैं। इसलिये इनको १ वर्ष तक पड़े रखकर काममे लेना चाहिए। इस वनस्पतिके पचांगका घनक्वाथ रेचक, जड़ें कृमिघ्न और कुष्टनाशक और पीला दूध मूत्रल, कुष्टनाशक, व्रणशोधक, व्रणरोपक, शोथघ्न और पार्यायिक ज्वरोंको दूर करनेवाला होता है।

यूनानीमतसे यह वनस्पति कडवी और तीक्ष्ण स्वाद वाली होती है, खूनको बढाती है। यह एक उत्तम कफ निस्सारक और कामोत्तेजक वस्तु है। चर्मरोग और धवलरोगमें यह बहुत उपयोगी है।

रासायनिक विश्लेषण—रासायनिक विश्लेषणसे इस वनस्पति मे दारूहलदीमें पाये जानेवाले बरबेराइनके समान एक तत्व और प्रोटोपीन नामक उपक्षार पाया जाता है। इसके बीजोंमे ३६ प्रति सैकडा तेल रहता है। इसके बीजोंकी राख बहुत तेज, खारी, गन्धसारिक लक्षणोंसे युक्त होती है। इसके बीज अफीमकी अपेक्षा अधिक मादक, नींद लानेवाले, और शामक होते हैं।

उपयोग—

उदरशूल—इसके बीजोंके तेलकी ३० से लेकर ६० बूँदें शक्करमें डालकर देनेमे उदरशूल पर मन्त्र शक्तिकी तरह लाभ होता है।

दमा—इसके तेलकी बूँद शक्करमे डालकर लेनेसे दमेमे स्थायी लाभ होता है।

जलोदर—साम्भर के नमकमे इसके तेल की बूदे डालकर जलोदर के रोगी को पिलाने से लाभ होता है।

ज्वरमे भी धनियेके पानीका बहुत उपयोग होता है। पेटके आफरेमें धनियेंका तेल एक एक मूल्यवान औषधि है।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे धनियेंके पत्ते पहले दर्जे में सर्द और दूसरे दर्जे मे खुश्क है। जालीनूस के मतसे ये गरम है। इन पत्तोंका लेप जहरवाजकी सूजनको मिटादेता है। इसको शरीर पर लगानेसे इसकी हलकी गरमी शरीरके अन्दर घुस जाती है और सर्दी भीतर घुसने नहीं पाती जब धनियें को खाते हैं, तो मुलायमियत की वजहसे मेदेमें पहुँचते २ शरीरकी गरमी इसकी गरमी को नष्ट करदेती है। जिसमें इसकी सिर्फ सर्द प्रकृति शेष रह जाती है और इसीसे शरीरके भीतर इसका असर सर्द होता है। मगर इसके बाहरी लेपसे गर्मी की तासीर मालूम होती है, क्योंकि बाहरी शरीरकी गर्मी इसकी गर्मी को नष्ट नहीं कर सकती। शेखके मतमे धनियें में थोड़ा हिस्सा गरमीका और अधिक हिस्सा सरदीका होता है। गिलानीके मतसे धनियेंके पत्तो में पानीका हिस्सा होनेसे इसका निहायत सर्द होना जरूरी है। जब तक यह हरा भरा रहता है तब तक इसकी सर्दी अधिक रहती है। सूखनेके बाद वह कम होजाती है।

शरीरके अन्दर कहीं चीजें जलती हो तो इसके तर और ताजा पत्तोके रसको दूध या रोगन गुलमें मिलाकर लगानेसे लाभ होता है। गर्मी की सूजन पर इसके रसको सिरकेमें मिलाकर लगाने से सूजन मिटजाती है। शरीर में पित्ति उछलने पर इसका रस बहुत मुफीद है। ऐसे समय धनियेंके पत्तो के रसको रोगन गुल और शहदके साथ मिलाकर लगाना चाहिये। *और १७॥ माशे शक्कर और अनारका पानी मिलाकर पीना चाहिये।* इस प्रयोगसे पित्तिमें बहुत लाभ होता है। जहरवाज और सख्त सूजनमें धनियेंके ताजे पत्तोंको पीसकर उनमें चनेका आटा और रोगनगुल मिलाकर लगानेसे फायदा होता है। धनियेके रसको शीशेकी खरलमें डालकर उसमें रोगनगुल डालकर शीशेके दडेसे खूब घोटकर कारबंकल पर लगानेसे बहुत लाभ होता है। इसके पत्तोंको पीसकर नाकमें टपकानेसे और सिरपर लेप करनेसे नक्सीरका खून बन्द हो जाता है। अगर इसमें थोडा सा कपूर भी मिला लिया जाय तो विशेष फायदा होता है। धनियेके रसको लडकीवाली स्त्रीके दूधमें मिलाकर आखमें टपकानेसे आखका कठिन दर्द भी आराम हो जाता है। धनियेके पत्तोंके रसमें वारतुङ्गके पत्तोंका रस मिलाकर पिलानेसे कफके साथ निकलनेवाला खून बन्द हो जाता है। इसके पानी को आखमे टपकानेसे चेचकका दाना आखमें नहीं निकलता।

धनियेंके बीज शक्तिदायक और तबियतको प्रसन्न करनेवाले होते है। गर्मीसे होनेवाले पागलपन, मृगी, और भयको ये दूर करते है। ये तृषाशामक, वमननाशक क्षुधावर्धक और और पेटके कृमियोंको नष्ट करनेवाले होते है। अनैच्छिक वीर्यस्राव, मूत्रनालीके जख्म और

अतिसारमें ये लाभदायक है। इसके बीजोंको आग पर सेक कर, पीसकर, जख्म पर छिड़कने से जख्मसे होनेवाला रक्तश्राव बन्द हो जाता है। गर्मीकी वजहसे होनेवाले उदरशूलमें धनियेंके चूर्णको मिश्रीके साथ देनसे लाभ होता है। सन्दल और अनीसूनके साथ इसके बीजोंको पीसकर मेदे पर लेप करनेसे मेदेकी ताकत बढ़ती है। खट्टी डकारें आना बन्द होती है और मेदेमें खट्टापन नही होता। अतिसारमे भुना हुआ धनिया खानेसे दस्त फौरन बन्द हो जाते है। अगर दस्तोंके साथ खून आता हो तो धनियेंको पानीमे भिगोकर पीस छानकर पीना चाहिए। धनियेके १ माशे चूर्णको शराबके साथ लेनेसे मेदेके कीडे निकल जाते है और फिर नहीं पैदा होते। धनियेंको पानीमें भिगोकर पीनेसे मनुष्यकी कामशक्ति घट जाती है।

मुजिर—धनियेंके पत्ते और बीजोंको अधिक मात्रामें सेवन करनेसे मनुष्यकी कामशक्ति कम होजाती है। स्त्रीका मासिकधर्म रुक जाता है और दमेकी बीमारीमें नुक्सान पहुँचता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नाश करनेके लिये शहद, दालचीनी और अंडे की जर्दी मुफीद है।

उपयोग—

नेत्र रोग—धनियेंके काढेसे आखको धोनेसे आखकी सफेदी, आखकी पुरानी सूजन और चेचककी वजहसे होनेवाला आखका जख्म मिट जाता है। धनियेंके बीजोंको और जौको पीसकर उनका पुलटिस बनाकर बाधनेसे सूजनमे लाभ होता है।

बवासीर—धनियेके बीजको मिश्रीके साथ औटाकर पिलानेसे बवासीरसे बहनेवाला खून रुक जाता है।

गले का दर्द—धनियेंके बीजोंको चबानेसे गलेका दर्द मिट जाता है।

सिर की गज—धनियेंके चूर्णको सिरकेके साथ मिलाकर सिर पर लेप करनेसे सिरकी गजमें लाभ होता है।

सिर दर्द—धनियें और आवलोंको रातमे भिगोकर सुबह घोट छानकर मिश्री मिलाकर पिलाने से गर्मीसे होनेवाला सिर दर्द मिट जाता है।

मदाग्नि—धनियेंके बीज और सूँठका काढा बनाकर पिलानेसे पाचनशक्ति बढ़ती है और मदाग्नि मिट जाती है।

गर्भावस्थाकी मतली—धनियेंके काढेमें मिश्री और चावलका पानी मिलाकर पिलानेसे गर्भवती स्त्रीकी उल्टिया बन्द हो जाती हैं।

बच्चोंकी खासी – चांवलोंके पानीमे धनियेंको घोंटकर शक्कर मिलाकर पिलानेसे बच्चोंकी खासी और दमेमे लाभ होता है।

कठमाला—धनिया और जौंका आटा मिलाकर लगानेसे कठमाला जाती रहती है।

जोड़ों का दर्द—छह मासे धनियेके चूर्णमे १० मासे शक्कर मिलाकर खानेसे गर्मीसे होनेवाला जोडोंका दर्द मिट जाता है।

प्रतिनिधि—तुख्मकाहू और तुख्मखस है रस।

मात्रा—इसके पत्तोंकी मात्रा ४॥ तोले तक और बीजो की मात्रा १ तोले तक है।

---

## धमासा

नाम —

संस्कृत—दुर्लभा, समुद्राता, आत्ममूली, पद्मगुप्ती, अजारुह, फणिहारी, विशारदा, इत्यादि। हिन्दी—दुसहन, धमासा, हिंगुणा, उस्तरखार। मराठी—धमासा,। गुजराती—धमासो। तेलगू—चिटिगिरा। बगाल—दुर्लभा। लेटिन—Fagonia Arabica (फेगोनिया अरेबिका)।

वर्णन—

यह एक काटेदार भाडीनुमा छोटा क्षुप होता है जो खेतों मे उगता है। सिंध, पजाब और राजपूताने मे बहुत होता है। इस क्षुपकी बहुत डालिया होती है। इसके पत्ते १ इच से ।॥ इच तक लम्बे सनाय के पत्तोंके समान होते है। फूल फीके गुलाबी रग के, फल छोटे और पाच फाक वाले होते हैं। बाजारमे इसके बारीक २ टुकडे मिलते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे धमासा चरपरा, कडवा, मीठा, रक्तशोधक, शीतल गरम तथा विसर्प विषम ज्वर, तृषा, वमन, प्रमेह, गुल्म, मोह, रुधिर विकार, वात, पित्त, कफ, कोढ और ज्वर को दूर करता है।

यूनानी मत से यह पहले दर्जेमे गरम और खुश्क है। यह दाद, मुँह के छाले, खासी, ज्वर और दमेमे मुफीद है। खून, पित्त और कफकी खराबी को दूर करता है। प्यास को दूर करता है। प्यास को बुझाता है, वमन को रोकता है, फोडे, फुन्सी और कोढ को

मिटाता है जलोदरमे मुफीद है, मेदे और जिगर को ताकत देता है। मुनक्काके साथ इसका काढ़ा बनाकर देनेसे ज्वरातिसार मे लाभ होता है। शरीरके किसी भी अङ्गसे होने वाले रक्तस्राव को रोकता है। इसको दूधमे पकाकर लेप करने से कारबकल की सूजन उतरती है। सुजाक और पेशाब की जलनमे भी यह लाभदायक है।

ज्वर के अन्दर धमासे की फाट बनाकर देनेसे शरीर की जलन कम हो जाती है। सिंध और अफगानिस्तानमे यह वनस्पति हमेशा ज्वर मे दी जाती है। सर्दी के ज्वर, गले की सूजन, श्वासनलिकाकी सूजन इत्यादि रोगोंमे इस वनस्पति का अच्छा उपयोग होता है। इससे गलेकी खरखरी मिटकर कफ छूटने लगता है। गले की सूजन मे इसकी फाट को थोड़ा थोड़ा पिलानेसे लाभ होता है। इसको चिलममे रखकर इसका धूम्रपान करने से दमेका दौरा बैठ जाता है। धमासे के काढे से जख्म को धोनसे जख्म मे पीव नहीं होती और वह जल्दी भर जाता है। इसके काढेमे कुल्ले करने से मुहके छाले मिट जाते है। इसके रसको गन्नेके रसके साथ उबाल कर उसका अवलेह बनाकर लेने से गले और फुफ्फुसके रोगों मे लाभ होता है।

कांटोंसे या दूसरे कारणोंसे पैदा हुई विद्रधिमे पीव पैदा करनेमे इस वनस्पति की बड़ी तारीफ है।

हब्स यूलरके मतानुसार इसके पत्ते और शाखाए शीतल गुणवाली कही जाती है। ओरमरा पहाडीके लोग इसको पीसकर गर्भ की सूजन और कण्ठमालापर बाधनेके काम मे लेते है। लासबेला स्टेट मे यह वनस्पति खुजली की औषधि मानी जाती है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति कृमिनाशक है और माताकी बीमारी तथा मुख्य शोथ रोगमे काममे ली जाती है।

अनुभूत चिकित्सा सागरके मतानुसार शरीरके बाहर और भीतर जितनी पित्त जन्य बीमारियां होती है उन सबमे धमासा लाभदायक है। गर्मी की मौसम में जितने उपद्रव होते है उन सबमे यह मुफीद है। यह ज्वरको मिटाता है।

---

## धव ( धावड़ा )

नाम—

संस्कृत—धव, धवल, धुरधर, दृढतरु, गौर, शट, धय, मधुर त्वचा नंदितरु, पाडुतरु,

पिशाच वृक्ष, पीतफल, शकटाख्य, शुष्काग, स्थिर, इत्यादि। हिन्दी—धावड़ा, धोधव। बंगाल—धावयागाछ। मराठी—धावड़ा। गुजराती—धावड़ा। अरबी—काहाटी। राजपुताना—धोकड़ा, धोकड़ी। तामील—नमाइ, व्हेकली, तेलगू—सीरिमनु। उर्दू—बाकला। अंग्रजी—Button Tree लेटिन—Anogeissus Latifolia ( एनोजिसस लेटिफोलिया )।

वर्णन—

यह वृक्ष सारे भारतवर्षके पहाड़ी प्रदेशों में पैदा होता है। इसका वृक्ष बड़ा और सुन्दर होता है। इसके पत्ते अमरूदके पत्तोंके समान होते हैं। इसकी छाल सफेद रंगकी होती है। फल पकजाने पर चिकना और चमकदार होजाता है। इस वृक्षके एक प्रकारका सफेद रंग गोंद लगता है जो धावडीके गोंदके नामसे प्रसिद्ध है। यह सफेद रंगका और पारदर्शक होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतमें धावड़ा कसेला, शीतल, मधुर, चरपरा, अग्निदीपक, रुचिकारक और पाण्डुरोग, प्रमेह, कफ, पित्त, बवासीर और वातको दूर करता है। इसका फल शीतल, स्वादिष्ट, रूखा, कसेला, मलरोधक, वात वर्धक, और कफ-पित्त नाशक होता है। इसकी जड़ चरपरी, कसेली, पित्तकारक और अत्यन्त अग्नि दीपक होती है। इसका गोंद पौष्टिक और कामोद्दीपक होता है।

यूनानी मतसे—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जे मे सर्द और तीसरे दर्जे में खुश्क होता है। किसी २ के मतसे यह सम शीतोष्ण है। इसके फूल काबिज हैं। ये पेटके कृमियोंको मारकर निकाल देते हैं। भूख बढ़ाते हैं, धातुस्राव और शीघ्र पतनको दूर करते हैं। इनके काढ़ेमें बैठनेसे बवासीर, अत्यधिक रज स्राव और काँचका निकलना बन्द होजाता है। मेदेकी खराबीसे होनेवाली, दस्तों को दूर करनेके लिये इसके फूलोंको जायफल और मिश्रीके साथ देते हैं। खूनी बवासीर का खून बन्द करनेके लिये इसके पौने दो तोला फूलों को पानीमें भिगोकर, मल छानकर पौने दो तोला मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये। इसके फूलों को जलाकर सरसोंके तेलमें मिलाकर आगसे जले हुए स्थान पर लगानेसे शांति मिलती है।

उपयोग—

हैजा—हैजेके अन्दर इसके फूलोंका शीतनिर्यास बनाकर देनेसे लाभ होता है।

श्वेत प्रदर—इसके गोंदको दरदरा करके घीमें भूनकर शक्करकी चाशनीमें मिलाकर स्त्रीको

खिलानेसे श्वेत प्रदरमें लाभ होता है।

मात्रा—इसके फूलोंकी मात्रा ४ माशे तक है।

---

# धाराकदम्ब

नाम —

संस्कृत—नीप, महाकदम्ब, धाराकदम्ब, धूलिकदम्ब, भ्रमरप्रिय, भृङ्गवल्लभ, केशराढ्य, इत्यादि। हिन्दी—धाराकदम्ब, हलदू, करम,। बंगाली—केलिकदम्ब। गुजराती—हलदरवो। मराठी—हेद। तामील—मजकदम्बे। लेटिन—Adina Cordifolia (एडिना कोर्डिफोलिया)।

वर्णन—

यह कदम्बकी एक उप जाति है। इसका वृक्षभी कदम्बके समान ही ऊंचा होता है। इसके पत्ते बड़े, गोल, हृदयाकृति, कुछ लम्बे, महुएके पत्तेके समान होते हैं। इसके फल गोल, सुगंधि युक्त और छोटे होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे धाराकदम्ब कडवा, कान्तिको सुधारने वाला, शीतल, कसेला, चरपरा, वीर्य वर्द्धक तथा सूजन, विष, पित्त, कफ, व्रण और वातको नष्ट करने वाला होता है।

इसकी छाल कटु पौष्टिक, ज्वरनाशक, स्तम्भक और व्रण रोपक होती है। इसकी छाल को औटाकर व्रणोंके ऊपर लेप किया जाता है। शिर दर्दमें काली मिर्चके साथ इसको पीसकर सूंघनेसे लाभ होता है। ज्वरके साथ अतिसार होनेकी हालतमें इसकी छालका क्वाथ बनाकर देनेसे लाभ होता है।

इसकी छालके रासायनिक विश्लेषणसे इसमें सिनकोनाके अन्दर पाये जाने वाले अम्ल द्रव्यके समान एक द्रव्य पाया जाता है। इसके काढ़ेमें कुनेनके समान एक प्रकारका कडवा पदार्थ पाया जाता है जो ज्वरके अन्दर लाभदायक है। कदम्ब की छालकी अपेक्षा इस वृक्षकी छाल अधिक उपयोगी होती है।

---

# धानफरंग

नामः—

यूनानी—धानफरग।

वर्णन—

यह एक पत्थर होता है जिसके नग बनते हैं। यह सोने, चादी, तावे और लोहे की खदानोंमे पाया जाता है। सोने की खदानमे पाया जानेवाला धानफरग सबसे अच्छा होता है। यह आख की बीमारीमे उपयोग मे लिया जाता है। तावे की खदानमें पाया जानेवाला धानफरग आखके इलाजमे काममे नहीं आता। नीबूके रसके साथ इस पत्थर का घिसनेसे अगर इसका रग पीला उतरे तो उसे सोने की खदान का समझना चाहिये। सफेद रग उतरने पर उसे चाँदी की खदानका, लाल रग उतरने पर ताँबे की खदानका और काला रंग उतरने पर उसे लोहे की खदान का समझना चाहिये।

गुणदोष और प्रभाव —

यूनानीमतमे यह चौथे दर्जेमे गरम और खुश्क है। यह स्वयं एक विषैली वस्तु है और विषके प्रभाव को दूर करनेवाली भी है। ताँबे की खदानके धानफरग को नीबूके रसमे घिसकर खिलानेसे अफीम का जहर उतर जाता है। मगर यदि जहर न खाया हो तो इसके खानेसे आदमी मर जाता है। सुहागेके काढेमे इसको घिसकर नाकमे टपकाने से मृगीमे लाभ होता है। इसको पीसकर आखमे लगानेसे आखकी ज्योति बढती है और जाला कट जाता है। इसको बारीक पीसकर रेशमी कपडेमें छान कर लगानेसे जाला कटकर आख की रोशनी तेज हो जाती है। अगर किसी चौपाये जानवर का पेशाब बन्द हो जाय तो इसको पीसकर उसकी आखमे लगानेसे पेशाब खुल जाता है। इसके लेपसे श्वेतकुष्ठके दाग भी मिट जाते हैं। इसको सिरके में पीसकर दाद या सिर की गज पर लगानेसे फायदा होता है। बिच्छू के विष पर इसका लगाना लाभदायक है। इसके खानेसे बहुत बेचैनी पैदा हो जाती है। इसके दर्पको उतारनेके लिये दूसरे जहरोंके दर्पनाशक पदार्थ काममें लेना चाहिये। (ख० अ०)

# धामन

नाम —

संस्कृत—धामनी, धनुवृक्ष, धरवाना, धर्मन, महाबल पिच्छिलका, रक्त कुसुम, रूक्ष, स्वादुफला। हिन्दी—धामन, धामनी। गुजराती—धामन। पोरबंदर—धामन। मराठी—धामण। बंगाल—धामन, फारसा। तामील—सहेची, टाड़ा तर्रा। तेलगू—चरेची, जना, नूलिजना, टाड़ा उड़िया—धामन। लेटिन -Grewia Tiliaefolia ( ग्रेविया टिलाई फोलिया )।

वर्णन—

धामिन के वृक्ष बहुत बड़े और लम्बे होते हैं। इसकी ऊँचाई ३० से ३५ फुट तक की होती है। इसके पिंड की गोलाई २ से ५ फुट तक होती है। इसके पत्ते बेरके पत्ता की तरह मगर उनसे कुछ बड़े होते हैं। इसकी छाल आधा इंच मोटी और खरदरी होती है। इसकी कोमल डालिया और पत्तों पर रुए होते हैं। इसके फल मटर के समान होते हैं। फागुन में इसके पत्ते गिर जाते है और चैतमें नये पत्ते आ जाते हैं। वैशाखमें इसके फूल लगते हैं। और जेठसे आसोज तक इसके फल पकते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे धामन कसेला, वीर्यवर्धक, मधुर, चरपरा, बल कारक, रूक्ष। हलका, धातुवर्धक, किंचितगरम, व्रणरोपक, तथा कफ, वात, दाह, सूजन, कंठरोग, रुधिरविकार, पित्त, खांसी और पीनसरोग को दूर करता है। इसका फल स्वादिष्ट, शीतल, कसेला और कफ वात नाशक होता है।

धामन की अन्तर छाल का रस १ से २ तोले तक की मात्रामें रक्तातिसारके अन्दर देनेसे लाभ होता है। खुजलीके ऊपर इसकी छाल को मसलनेसे तुरंत फायदा होता है। इसकी लकड़ीके चूर्ण की अथवा इसकी लकड़ीके कोयलेके चूर्ण की फक्की देनेसे उल्टिया होकर अफीम का विष उतर जाता है। कौंच की फली को स्पर्श करनेसे शरीरमें जो जलन और खुजली पैदा होती है। उसको मिटानेके लिये इसकी छाल का लेप करते हैं।

---

# धाय

नाम—

संस्कृत—अग्नि ज्वाला, बहुपुष्पिका, धातकी, धात्री, धावनी, गुच्छपुष्पी, कुमुद कुञ्जर, मधवासिनी, पारवती, रौद्रपुष्पिणी, सन्धपुष्पी, तीव्र ज्वाला, इत्यादि। बंगाल—धा फूल, धातकी, धौरा। हिन्दी—धा, धाई, धवल, साठा, धावी, । गुजराती—धावनी, धावडिना कच्छ—धावडी। पंजाब—दहाई, धा, धात्री, धावी खुर्द, थाई। तामील—वेलेकाइ। तेलगू—धातकी। लेटिन—Woodfordia Floribunda ( वुडफोर्डिया फ्लोरिबुन्दा )।

वर्णन—

धायके वृक्ष प्राय सारे भारतवर्ष में पैदा होते हैं। इसका वृक्ष १० फीटसे भी ऊंचा होता है। इसके पत्ते अनारके पत्तोंके समान होते हैं। अनारके पत्ते कुछ अधिक हरे होते हैं। धायके पत्ते कुछ पीलाई लिये खरदरे होते हैं। इसके फूल लाल होते हैं। माघसे चैत्र तक इसके फूल लगते हैं। इसकी कलियां और पत्ते रंगनेके काममें आते हैं। इसके एक प्रकार का गोंद भी लगता है जो खाने के काममें आता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे धाय, चरपरी, शीतल, कसेली, मदकारक, कडवी, हलकी, गर्भ स्थापक तथा रक्त प्रवाहिका, पित्त, तृषा, विसर्प, व्रण, कृमि, अतिसार और रुधिर दोष को दूर करती है।

धायके फूल स्वादिष्ट, रुखे तथा रक्तपित्त, अतिसार और विषविकार को दूर करते हैं। धायके वृक्ष की अपेक्षा धायके फूल अधिक गुणकारी होते हैं। इनका काढा ३ दिन तक देनेसे प्रदर रोग दूर होता है। दन्त रोगोंमें भी यह बहुत लाभ दायक है।

यूनानी मत—

यूनानी मत से यह समशीतोष्ण होती है। इसके फूल व इसका पचांग काबिज है। अतिसार और प्रवाहिकामें इसके रुखे फूल ७॥ माशा मठ्ठे के साथ पिलानेसे लाभ होता है। इसके फूलों को जखम पर लगानेसे जखम भर आता है। इनके फूलों का शरबत बना कर पिलाने से खूनी बवासीरमें लाभ होता है। स्त्रियोंके श्वेत प्रदरमें भी यह बहुत लाभदायक है। इसको पीसकर अलसी के तेलमें मिलाकर जले हुए स्थान पर लगाने से फायदा होता है। इसको नासूर में रखने से नासूर भर आता है। तालीफ शरीफ के मतसे इससे पेटके

कृमि मर जाते हैं। इसके सूखे फूल एक सकोचक और पौष्टिक द्रव्य है। श्लेष्मिक झि-ल्लियों की खराबी, खूनी बवासीर और यकृत की खराबी मे ये लाभ दायक हैं। प्रसूतिके समय मे इसके फूल एक बहुत ही निर्भय और उत्तेजक वस्तु है।

कोमान के मत से इसके फूलों का चूर्ण १० से २० ग्रेन की मात्रा में शहद के साथ देनेसे अतिसारमे बहुत लाभ होता है।

थापटके मतानुसार इसके ताजा पत्ते सर्प विषके अन्दर एक आश्चर्य जनक औषधि है। ऐसे केसोंमे इसके पत्तों का रस पिलाया जाता है। उसकी कुछ बूंदे नाकमें टपकाई जाती है और कुछ काटे हुए हिस्सेल पर गाया जाता है।

उपयोग—

रक्तप्रदर—इसके फूलोंको शहदके साथ चटानेसे रक्त प्रदर मिटता है।

जखम—इसके फूलोंका चूर्ण छिडकनेस जखम जल्दी भर जाता है।

खूनी बवासीर—इसके फूलोंका शरबत पिलानेमे खूनी बवासीर मिटता है।

नासूर—इसके चूर्णको अलसीके तेलमे मिलाकर लगानसे व्रण, नासूर, जहरीले कीड़ो के डंक और अग्निदग्ध मिटते हैं।

---

## धादोन

नाम—

यूनानी—धादान।

गुणदोष और प्रभाव—

गुल—तालीफ शरीफमे लिखा है कि यह एक वृक्ष है। जो अपनी खासियतसे कफ, वायु और पित्तके दोषोंको मिटाता है। जहर, कोढ ववासीर और सन्निपात में भी यह लाभदायक है।

## धुन्धुल

नाम—

बंगाल—धुन्धुल। उड़ीसा—सुसम्बर। बरमा—पेंगलेयोग। चिटगाव—करमृथोला। लेटिन—Carapa obovata (कारपा ओबोवेटा)।

वर्णन—

यह एक छोटी जातिका वृक्ष होता है। इसके पत्ते ७.५ से १५ सेंटिमीटर तक लंबे होते हैं। इसके फल नारंगीके आकारके होते हैं। यह वनस्पति बंगाल, बरमा, चिटगाव, सुन्दर बन और मलायामें पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके फल छातीकी सूजन और श्लीपद्म लाभदायक माने जाते हैं।

---

## धूटी

नाम—

गुजराती—धुटी। मराठी—कदेल, कतरनी, कौतेल, पचुंडा पचूण्डा, रगोट। राजपुताना—अन्तेरा। तामील—नकुलिंजन। कच्छी—डुमरो, डुमरोजोझाड। तेलगू—ओरिडोडा, दुदुप्पी गुलि, नेलुप्पि। लेटिन—Capparis Grandis. (केपेरिस ग्रेंडिस)।

वर्णन—

यह एक छोटी जातिका वृक्ष होता है। इसके वृक्ष १० फीटके करीब ऊँचे बढते हैं। इसमें पतली डालिया आती हैं। कई बार ये डालिया बढकर लताओं की तरह फैल जाती हैं। इसकी डालीमें पत्तोंके डण्ठलके पास दो - तेज अणीवाले काण्टे होते हैं। इसके पत्ते गोलाई लिये हुए नोकदार, सुहावने और मुलायम होते हैं जो गर्मियोंमें आते हैं और फल गोलाई लिए हुए होते हैं जो बरसात में पकते हैं। यह वनस्पति आबू, पश्चिमी राजपुताना, कर्नाटक, पश्चिमी घाट और गोदावरीके किनारे पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसकी जड और छालको जलाकर उसकी राखको दूधमें पीसकर १॥ मासे की मात्रामें

शहदके साथ देनेसे हैजा और अजीर्णमें लाभ होता है। इसके पत्तोंको पीसकर चमड़े पर लगानेसे छाला उठता है ऐसा कहा जाता है। इसके पत्तोंका काढ़ा चर्म रोग और रक्तविकार पर दिया जाता है।

---

## धूना

नाम —

आसाम—धूना, विसजग। नेपालका—गोगुलधूप। लेटिन—Canarium Bengalense, (केनेरियम बेंगालेंस); C Sikkimense (के० सिक्किमेंस)।

वर्णन—

यह एक ऊँची जातिका हमेशा हरा रहने वाला वृक्ष होता है जो आसाममें सिलहट परगनेके अन्दर विशेष तौरसे पैदा होता है। इसके पत्ते ३० से ६० सेंटिमीटर तक लंबे होते हैं।

गुणदोष, और प्रभाव —

इस वृक्षमें एक प्रकारका गोंद निकलता है जो अम्बरके रंगका कठिन और चीठा होता है। हिमालयके पहाड़ी लोग इसको गोगुल धूप या नरओकपके नामसे पहिचानते हैं। यह गोंद पुराने और न भरनेवाले व्रणों पर लगाने से जल्दी लाभ करता है। इसके पत्तों और इसकी छाल का लेप गठिया और संधियोंकी सूजनपर किया जाता है।

---

## घोघस मरवो

नाम —

गुजराती—घोघस मरवो, मोटो समेरवो, उभोसमेरवो। मराठी—जंगली गेलिया। लेटिन—Alysicarpus Longifolius (एलिसीकारपस लांगि फोलियस)।

वर्णन—

यह वनस्पति सारे भारतवर्ष के मैदानों में पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह श्वेत प्रदर को दूर करने में काम में ली जाती है।

# घोल ( गजधर )

नाम—

मराठी—घोल, घोक, गजधर। गुजराती—पत्थर चट्टी, भींत चट्टी। बम्बई—गजधर। कच्छी—भामर वेल, पीरीसोदेड़ी। लेटिन—Lindanbergia Urticaefolia लिंडन बर्गिया अर्टिसीफोलिया।

वर्णन—

यह एक क्षुप जाति की वनस्पति है। इसके पौधे बरसातके अन्तमें बहुत पैदा होते हैं। यह पौधा १ बालिश्तसे १ हाथ तक ऊंचा होता है। जहाँ यह पैदा होता है वहां बहुत तादाद में पैदा होता है। कई दफे यह पत्थर पर भी फैला हुआ रहता है। इसके पत्ते द्रोणपुष्पीके पत्तोंके समान, फूल पीले और फल छोटी फलियों के रूप में होते हैं। इस सारी वनस्पतिके ऊपर-बहुत रुआँ होता है। यह वनस्पति सारे भारतवर्षमें पैदा होती है। पुरानी दीवारों पर, और नदी तथा तालाबों की तलहटी में विशेष पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसका रस पुरानी खांसी और ब्रोंकाइटीजमें दिया जाता है। इसका रस धनिये के रसके साथ मिलाकर चर्म रोगों पर लगाया जाता है। इसका पौधा सुगंधित और कुछ कड़वे स्वाद वाला होता है।

इसके पत्तों को पीसकर अनन्तवात ( भामरा ) पर बांधते हैं। इसके बीजों को पीसकर फोड़े फुन्सियों पर बांधनेसे लाभ होता है। इसके पत्तों को पानीमें उबाल कर उस पानीकी भाफ ज्वर रोगीको दी जाती है। इसके पत्तोंका रस जहरी जानवरोंके डंकपर लगाया जाता है।

---

# घेनियानी

नाम—

हिन्दी—घेनियानी। बंगाल—कोकोरू। मराठी—हरदुली, अरछिरी। तामील—माली वेपम। तेलगू—बापनामुसती, कोगीटटिगी। उड़िया—बादलिया, बादर, बादुरकी। लेटिन—Olax Scandens ( ओलेक्स स्केंडन्स )।

वर्णन—

यह वनस्पति पश्चिमी घाट, बाम्बे प्रेसीडेंसी, दक्षिण, करनाटक, सीलोन और कुमाऊं अवध तथा विहारमें पैदा होती है। यह एक बहुशाखी झाडी होती है। इसके पत्ते ५ से लेकर ६ सेंटिमीटर तक लम्बे और फूल सफेद होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

केम्पबेलके मतानुसार छोटा नागपूरमें इसकी छालका काढ़ा ज्वर की वजहसे होनेवाली रक्ताल्पतामें दिया जाता है।

---

# धौर

नाम—

हिन्दी—धौर, भिर्र, गिरिया। मराठी—हल्द्, हलदरवा, भेरिया। बम्बई—गिल्लु, भेरिया, हरदी, हुल्दा। मध्यप्रान्त—बहेरू, भिर्र, गिहरा, गिरिया। तामील—कदम्बोजू, मुडिराइ, पोराजु। तेलगू—बिल्लू। उड़िया—बेहरू, बिलुगा। लेटिन—Chloroxylon Swietenia (क्लोरोफिक्सलोन स्वेटेनिया)।

वर्णन—

यह एक बड़ी जातिका वृक्ष होता है जो छोटा नागपुर, सतपुडा और दक्षिणी पश्चिमी हिन्दुस्तानमें बहुत पैदा होता है, इसकी छाल खुरदरी और कीरमची रङ्ग की होती है। इसके पत्ते आमने सामने जोडेसे लगते हैं। इसके फूल कुछ हरापन लिये हुए, छोटे, फल कुछ लम्बे और खाकी तथा काले रङ्गके और बीज भूरे रंग के होते हैं। औषधि प्रयोगमें इसकी छाल काममें आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पतिकी छाल संकोचक और ग्राही होती है। इसमें थोडासा वेदनानाशक धर्म भी होता है। इसकी छालको ठंडे पानीके साथ औटाकर चोट, मोच, सूजन और दर्द तथा जलनकी जगह लेप करनेसे शान्ति मिलती है।

इसके पत्तोंका लेप करनेसे व्रण जल्दी भर जाते हैं। सन्धिवात और गठियामें भी यह लाभदायक है।

इस वनस्पतिके अन्दर एक प्रकारका उपक्षार पाया जाता है। जिसके तत्वोंका सगठन अभी तक मालूम नहीं हुआ है। इस उपक्षारका नाम क्लोरोक्सिफलीनाइन (Chlorox ylouine) है यह एक शक्तिशाली उद्दीपक या जलन करने वाला पदार्थ है। इसको चमड़ेपर लगाने से यह चमड़ेमे जलन और प्रदाह पैदा कर देता है।

---

## धौरा

नाम —

हिन्दी—चूरन, सूरन। बम्बई—सूरन। अवध—धौरा, धौरी। सथाली—सेकृटा। तामील—कन्दीलडाई, तोदरी। देहरादून—बेर, भॉड। लेटिन—Zyzyphus Rugosa (झीझीपस रूगोसा)।

वर्णन—

यह एक बेरकी जातिका वृक्ष होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके फूलोको समान भाग नागर बेलके पान और आधे भाग चूनेके साथ मिलाकर दो २ रत्तीकी गोलियाँ बनाई जाती है। इन गोलियों को दिनमें ? बार देनेसे अत्यधिक रज श्रावकी बीमारी मे लाभ होता है।

---

## नकछिकनी

नाम—

सस्कृत—छिक्कनी, चवकृत, तीक्ष्णा, उग्रा, उग्रगंधा, घ्राणदुखदा, क्रूरनासा। हिन्दी—नकछिकनी। बंगाल—मेचिट्ट, छिकनी। मराठी—नाकशिकनी। गुजराती—छिकनी, नकछिकनी। उर्दू—नकछिकनी। तेलगू—ह्रनगान। सथाल—चेदियाचिम। अरबी—अफकार। लेटिन—Centipeda orbicularis (सेंटिपेडा ऑर्बिक्यूलेरिस)। इंग्लिश—Sneezeweed (स्नीझवीड)

वर्णन—

यह एक छोटी जातिकी वनस्पति होती है। इसका पौधा १ बालिश्त भर ऊंचा होता है और जमीन पर फैला हुआ रहता है। इसके फूल गुच्छों में आते हैं। इसकी शाखाओं पर

बारीक २ रुए रहते है। फूल नीमके फूलकी तरह सफेद होते हैं। सरदीके पिछले दिनो मे यह वनस्पति तर जगहों पर पैदा होती है। इसके पत्तोंको मसलकर सूंघनेसे छींकें आती हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतमे नकछिकनी चरपरी, रुचिकारक, अग्निदीपक, हलकी, गरम, कसेली, तीव्रगंध युक्त तथा चर्मरोग, कफ, वात, श्वेतकुष्ट, कृमिरोग, रक्तविकार, भूतबाधा और नेत्ररोगों को दूर करनेवाली होती है।

शाढलके मतानुसार नकछिकनी श्वास, ग्वासा, रुधिर विकार और विषविकारको दूर करनेवाली होती है।

यूनानीमत—इसके पत्ते वमन कारक, कफनिस्सारक, शांतिदायक और विरचक होते है। ये खून बढाते हैं नाककी बीमारीको दूर करते हैं, रतौंधीका नष्ट करते हैं और गलेमे होनेवाले छाले, तथा कर्णपीडा, को मिटाते हैं, रुके हुए मासिक धर्मको जारी करते हैं। धवलरोग, गीली खुजली, दाद, जोड़ोंकी पीडा, कटिवात और कुक्कुर खांसीमे लाभदायक हैं। पीनसरोग और सूजनमे भी ये काममें लिये जाते हैं। इसका तेल कटिवातमे उपयोगी है।

यह वनस्पति मस्तिष्कको साफ करती है। कफ और वायुके हमलेको दूर करती है। फालिज और लकवेमे मुफीद है। कफवात और गठियाको मिटाती है। कफ प्रकृति वालेकी काम शक्तिको बढाती है। इसका मसलकर सूंघनेसे छींकें आती है और हिचकी बन्द होजाती है। १ माशे नकछिकनीको गुडमे मिलाकर खानेसे नासिका टल जाना अच्छा होजाता है। इसके पत्तों को सुखाकर पासकर १ माशेस शुरु करके धीरे २ बढाते हुए ३ माशे तक करदेने पर १ हफ्तेमें बहुत बढी हुई तिल्ली भी साफ होजाती है। इसे लेते समय पथ्यमे दही चावल देना चाहिये।

सरदी के दिनोमे चार रत्ती नकछिकनी को गुड में मिलाकर खावें। एक एक रत्ती बढाते बढाते १ माशे तक बढावें। अगर गरमी मालूम हो तो तुरत खुरफा और मिश्रीके काढे के साथ खावें और पथ्यमे घी अधिक लें। इसके सेवनसे खाना खूब हजम होता है और भूख खूब लगती है। ४ भाग नकछिकनी १० भाग अद्रक के रसमे पीसकर १० भाग घी मे तलें। जब घी जलनेके करीब पहुँच जाय तो छान कर रख लें। इसमेंसे चनेके बराबर घी खानेमे भूख बहुत बढती है। नकछिकनी को पीस कर शहदमे मिला कर गर्भवती स्त्री की नाभि पर लेप करने मे गर्भ गिर जाता है। इसके लेप से दाद भी मिटता है। नकछिंकनी २५ माशे, कस्तूरी ८ रत्ती, समुद्र फल १२ और लौंग २५ इन सबको अदरकके रसमे पीसकर छायामें सुखा लें। इसको सुबह शाम थोडा सुघानेसे जुकाम और नजला दूर हो जाता है। (ख० अ०)

बंगालमें नाकके भीतर १ फुन्सी होती है जिसका नाम "अठोवा" कहते हैं। जब यह निकलती है तब बहुत जोर से बुखार आता है और अगर जल्दी इलाज नहीं किया जाय तो बीमार मर जाता है। इस बीमारीमे नकछिंकनी, पीपला मूल, दो दो माशे और कस्तूरी आधा माशा पीस कर थोडा थोडा सु घानेसे छींकें आकर बीमारीमे लाभ होता है।

नकछिंकनी के बीज और इस सारी वनस्पति के चूर्ण को हिन्दू चिकित्सक छींक लाने वाले पदार्थ की तरह उपयोगमे लेते आ रहे हैं। यह वनस्पति इस देशमें पीनस, मस्तक शूल और मस्तक की सरदी को दूर करनेके उपयोग मे ली जाती है। यह एक गर्म और खुश्क वस्तु है और लकवा तथा सन्धियों के दर्दमें उपयोगी है। इसको पीसकर गरम करके गालों पर इसका लेप करनेसे दातों की पीडा दूर हो जाती है।

रासायनिक विश्लेषण—

व्यास और सिन्हाने इसका रासायनिक विश्लेषण करके इसमें अलकेलाइड, ग्लुकोसाइड और सेपानिन नामक पदार्थ पाये हैं।

मुजिर—इसके अधिक सेवन से यकृतमें दर्द पैदा होता है, अधिक सू घनेसे छींकें बहुत आती हैं और आदमी घबरा जाता है।

दर्पनाशक—गाय का घी।

मात्रा—४ रत्तीसे १ माशे तक।



## नकरा

नाम—

यूनानी—नकरा।

वर्णन—

यह एक वृक्ष होता है। इसकी ऊँचाई ७-८ फीट के करीब होती है। इसकी जडोंमें से बहुत सी डालियां निकलती हैं। जिनपर छोटे छोटे कांटे होते हैं। इसके पत्ते तिंदू के पत्तों से मिलते जुलते होते हैं। इनके किनारे लाल और मुलायम होते हैं। इसका फल गोल, कुछ लम्बा और खुबसूरत होता है। पकनेके बाद उसका रंग नारंगी हो जाता है। इस फलमें गूदा

बहुत कम निकलता है। इसमें , बीज चिड़ियाके अण्डेके बराबर होता है। इस वनस्पति का स्वाद कड़वा मीठा और खट्टा होता है।

बीज का स्वाद कुछ मीठा और स्वादिष्ट होता है। इसे भून कर खाते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके बीज का मगज गरम, काम शक्ति वर्धक, धातु पैदा करने वाला और बदन को मोटा करनेवाला होता है।

—

## नगनी

नाम—

बम्बई—पुन, सिरपुन, पुने। मराठी—नगनी। तामील—पुगू। तेलगू—पुने। मलयालम—कटूपुन्ना। अंग्रेजी—मलबार पुन। लेटिन—Calophyllum elatum (केलोफिलम एलेटम)।

वर्णन—

यह एक ऊंची जाति का वृक्ष होता है। इसके पत्ते ७-५ से १२-५ सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं। यह वृक्ष लंका कनाडा और हिन्दुस्तान के दक्षिण पश्चिम किनारे पर पैदा होता है। इसमें गोंद बहुत निकलता है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसका गोंद एक उत्तम संकोचक वस्तु है।

—

## नगनद बाबरी

नाम—

यूनानी—नगनद।

वर्णन—

यह एक पौधा होता है जो माल तुलसी या रीहा के पौदे की तरह होता है। कई लोग रीहा और नगनद बाबरी को एक ही मानते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मत—कुछ युनानी हकीम इसको सर्द और कुछ इसे गरम और तर मानते हैं। यह प्यास को दूर करनेवाली और पित्त तथा वायु को नष्ट करने वाली होती है। इसको दही मे मिलाकर कुछ दिनों तक पीने से सुजाक मे लाभ होता है। बकरीके दूध के साथ इसको पीनेसे पारी का बुखार दूर होता है। खुजली और रक्तदोष मे भी यह मुफीद है। १ तोला नगनद वावरी १० काली मिरचोंके साथ पीसकर ३ दिन तक खानेसे बवासीर की सूजन मिट जाती है। १ मासे नगनद बावरी, कागदी नीबू के पत्ते और काली मिरचके साथ उपयोगमे लेनेसे पुराना बुखार दूर होता है। रक्तविकारमें इसको पित्त पापडा के साथ लेनेसे लाभ होता है। इसको ७ माशा की मात्रामे १५ काली मिरचोंके साथ पीनेसे २० दिनमें श्वेतकुष्ट मे लाभ होता है।

ऐसा कहा जाता है कि नगनद वावरी को साल भर तक रोजाना एक हथेली भर खाने से मनुष्य पर जहर का असर नहीं होता। अगर इसको अजवायन के साथ ६ महिने खाते रहें तो बाल सफेद नहीं होते। इन बातों मे कितना सत्यांश है यह नहीं कहा जा सकता।

---

## नमक

नाम —

सस्कृत—लवण, सैंधव। हिन्दी—नमक। मराठी—मीठ। गुजराती—मीठू। फारसी—नमक। अगरेजी Chloride of Sodium। लेटिन—Sodii cloridum (सोडी क्लोरिडम)।

वर्णन —

नमक मानवी भोजनमें पडनेवाली एक अनिवार्य वस्तु है। इसको सभी कोई जानते हैं। इसलिये इसके विशेष विवेचन की आवश्यकता नहीं। इसकी कई जातिया होती हैं। जैसे—सेंधा निमक, साम्भर निमक, काला निमक, सचर निमक, बीड निमक इत्यादि पर इन सबमें सेंधा निमक विशेष उत्तम होता है। इसलिये जहा कोई खास जाति का निमक लेने की हिदायत नहीं दी गई हो वहा सेंधा निमक ही लेना चाहिये।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे सेंधा निमक रुचिदायक, वीर्यवर्धक, नेत्रों को हितकारी, अग्निदीपक, शुद्ध, स्वादिष्ट, हलका, स्निग्ध, पाचक, शीतल, सूक्ष्म, हृदय का हितकारी, त्रिदोष नाशक तथा व्रणदाह, कब्जियत और हृदय रोग को नष्ट करनेवाला है।

सेंधा निमक आरके लिये बहुत लाभदायक है। जिस मनुष्य का मल सूख गया हो और दस्त न आता हो उसको घी के साथ सेंधा निमक देनेसे तुरन्त दस्त आवेगा। सेंधा निमक तेल के साथ लगानेसे अनेक प्रकारके त्वचा रोगों को दूर करता है।

मलेरिया ज्वर और सेंधा निमक—

यूरोपके डाक्टर ब्रुक का कथन है कि जब मैं हंगरी और दक्षिण अमरिकाके प्रान्तों में घूमता था तब मलेरिया ज्वर को दूर करनेके लिये नमक का एक बहुत सादा प्रयोग सफलताके साथ करता था। वह प्रयोग इस प्रकार है।

"बारीक पीसा हुआ नमक १ मुट्ठी लेकर हल्की आँचके ऊपर एक कढ़ाहीमें भूनता था। जब उसका रंग बदलकर जली हुई कॉफीके समान हो जाता था तब उसको नीचे उतारकर ठंडा करके १ बोतल में भर लेता था। इसमेंसे १ बड़ा चम्मच नमक गरम पानीके साथ रोगीको पिलाता था और उसके बाद १।२ घण्टे तक कुछ भी खाने को नहीं दिया जाता था। यह दवा लेनेमें रोगी को बेहद प्यास लगती है। फिर भी उसको बहुत थोड़ा पानी पीने को दिया जाता और भूख लगने पर हलका और पौष्टिक खाना दिया जाता था। सर्दी से बचनेकी रोगी को खास हिदायत दी जाती थी। दूसरे दिन सवेरे भी खाली पेट यही दवा पिलाई जाती थी। जिससे रोगी का ज्वर एकदम नष्ट हो जाता था। इकान्तरा, तिजारी और चौथिया बुखार वालों को भी बुखार उतरनेके पश्चात यह दवा दी जाती थी। इस दवा का वास्तविक लाभ भूखे पेट लेनेमें ही मिलता है। इसलिए इसको हमेशा भूखे पेट ही लेना चाहिये। पिछले १८ वर्षोंमें सैकड़ों रोगियों पर मैंने इस नमक का प्रयोग किया है। जिन लोगोंने नियमपूर्वक इस दवा को ली तथा पथ्य का बराबर खयाल रक्खा, उनमेंसे शायद ही कोई रोगी निराश हुआ हो। इस सादे उपायसे हजारों रोगी आराम हुए हैं। डनीस नामक स्टीमर पर काम करनेवाले एक कर्मचारी का कई वर्षों का पुराना बुखार इस औषधि से २४ घण्टोंमें नष्ट होगया। अमेरिका के गरम भागोंमें बसनेवाले यूरोपियनोंमें मलेरिया ज्वर का बहुत प्राबल्य रहता है और किवना-इन और शराब का व्यवहार करने पर भी उन लोगोंमें से बहुतसे लोग मर जाते हैं। मगर उनके नजदीक ही रहनेवाले जो लोग इस उपाय का अवलंबन करते हैं उनमें से अधिकांश आराम हो जाते हैं।"

डॉक्टर लीवाग लिखते हैं हमारे शरीरमें रक्त और पित्तमें आवश्यक सोडा, क्षार तथा पित्तमें रहने वाला लवण तत्व नमकके सेवनसे ही उत्पन्न होता है। नमकके बिना शरीर आरोग्य नहीं रह सकता। इसके अभावसे रक्तमें निकृष्टता पैदा होती है और ज्वर, रक्तस्राव, तथा विशूचिका इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं। इसलिये शरीरको स्वस्थ रखनेके लिये छोटी मात्रामे हमेशा इसका सेवन करना चाहिये। बड़ी मात्रामे लेनेसे यह अपना वामक, विरेचक और कृमिनाशक प्रभाव दिखलाता है। इससे भी अधिक प्रमाणमें यह उग्र और आतोंके लिये दाह जनक होजाता है। डॉक्टर कटनके मतानुसार क्षयरोगमें नमक बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

नमक और कृमिरोग—

प्रतिदिन सवेरे शाम भोजन के पहिले १०।१५ रत्तीकी मात्रामे नमक सेवन करने मे शरीरमें कृमि पैदा नहीं होते। आतोंके भीतर रहने वाले बारीक कृमि नमक और पानीका एनेमा देनेसे नष्ट होजाते हैं।

अत्यधिक रक्तस्राव, क्लोरोफार्मके प्रयोग, हैजा तथा अनेक प्रकारके विषम ज्वरों में जब नाड़ी बहुत क्षीण होजाती है और शरीर ठंडा पड़ जाता है तब नमक का इजेक्शन देनेसे आश्चर्य जनक लाभ होता है।

बिच्छूके जहरपर जब सब औषधियाँ निष्फल होजायें तब गरम पानीमें नमक डालकर डक वाले भागको उस पानीमें डुबानेसे शांति मिलती है पर वह पानी ठंडा न होजाय इसलिये बार २ उसमें दूसरा गरम पानी डालना चाहिये।

निमोनिया के अन्दर अगर फेंफड़ोंमें बहुत वेदना होती हो तो नमककी पोटलियोंसे सेक करनेसे कफ पतला हो कर निकल जाता है। और वेदना रुक जाती है।

६० ग्रेन नमकको १ पाइंट खौलते हुए पानीमें मिलाकर फिर इसको १०० दर्जे फारेनहीट पर सर्द करलिया जाय तो एक प्रकारका नमकीन अर्क बन जाता है। बेहोशीकी हालतमें गुदा या छातीके नीचे ढीले गोश्तमें इसकी पिचकारी देनेसे अक्सर फायदा होता है। प्रसवके बादकी कमजोरी, खूनका बहना, इत्यादि रोगोंमें इस प्रयोगसे कई जानें बच गई हैं। बच्चोंके भारी कब्जमें इसकी पिचकारीसे लाभ होता है। १० छटाक पानीमे १ ड्राम नमक घोल कर लेनेसे शरीरके भीतरी रक्तस्रावमें लाभ होता है। मुहसे होनेवाले रक्तस्रावमें आधे २ चम्मचकी मात्रामें थोड़ी २ देर बाद इसको देनेसे बडा लाभ होता है।

कई डॉक्टरोंका यह अनुभव है कि मृगी और आधा शीशीके रोगमें इसको १ ड्रामकी मात्रामें देनेसे कई दफे बड़ा लाभ होता है।

वमन लानेके लिये यह एक बहुत अच्छी जल्द असर करनेवाली घरेलू दवा है। कई दफे इससे दस्तभी लगना शुरु होजाता है। थोड़ी मात्रामें यह पाचक और अग्नि वर्धक है। कीड़ोंको मारनेके लिये यह एक उत्तम वस्तु है। केंचुओंको निकालने और मारनेमें इसका आधे ड्रामकी मात्रामें देनेसे बड़ा लाभ होता है। धतूरे और अफीमके विषमें नमकको गरम पानीमें डालकर पिलानेसे लाभ होता है।

अगर दैवयोगसे किसीके पेटमें जोंक उतर जाय और वह आंतो या आमाशयमें चली जाय तो नमक का पानी पिलानेसे फौरन निकल आवेगी। नाइट्रेट आफ सिल्व्हरके जहर को उतारनेके लिये भी यह एक उत्तम वस्तु है।

नमक और हैजा—

आजकल की नवीन शोधों में हैजेके ऊपर हायपर—टॉनिक सोल्यूशन के इन्ट्रा व्हेनस इंजेक्शन देने का उपाय बहुत रामबाण माना जाता है। कॉलराके उपद्रवमें दस्त और उल्टी होकर जब रोगी की नाडी निर्बल हो जाती है, शरीर ठंडा हो जाता है और मृत्यु का नजारा सामने दिखलाई देने लगता है। ऐसे समयमें १। सर जलम (१०० तोला जलमें) २॥ तोला अच्छा निमक और उसमें थोडासा पाटास क्लोराइड और थोडासा केलशियम क्लोराइड मिलाकर हाय पोडरमिक सिरेंजक द्वारा इंजेक्शन दिया जाय तो मन्त्रशक्ति की तरह काम होता है और रोगी को बचने की उम्मीद जीवित हो जाती है।

जिन स्थानों पर इस प्रकार पिचकारी देने की सुविधा न हो वहाँ पर हैजे का आक्रमण होते ही सचर मिलाया हुआ गरम जल रोगी को पिलानेसे तथा नमक मिले हुए गरम पानीसे स्नान करानेसे और प्रति दो-दो घण्टे पर नीबूके रसमें ३ माशा नमक और १० तोला जल मिलाकर पिलाने से भी बहुत अच्छा लाभ होता है। (जगलनी जड़ी बूटी

हैजा, प्लेग, शीतला, इनफ्ल्यूएन्जा, निमोनिया, मलेरिया, इत्यादि अनेक प्रकार के रोगोंसे शरीर की रक्षा करने के लिये रक्त में जो रोग बीज नाशक शक्ति होती है वह रक्तके लाल परमाणुओंमें पाये जानेवाले लवण क्षार पर ही अवलम्बित है। जिस मनुष्य के रक्त कणोंमें से इस लवणक्षार का प्रमाण जितना कम हो जाता है उतनी ही उसके रक्त की रोग बीज नाशक शक्ति कम हो जाती है और हर प्रकार का रोग उसके ऊपर बहुत शीघ्र आक्रमण कर देता है। ऐसे रोगियोंके रक्तमें अगर वह घटा हुआ सोडियम क्लोराइड फिर से पूरा कर दिया जाय तो उसकी रोग निवारक शक्ति पुनर्जीवित हो जाती है और मनुष्य की रस क्रिया पद्धति भी सुधर जाती है।

कई लोगों को यह शका होती है कि नमक का पानी पीनेसे वमन होती है। ऐसी स्थिति

मे नमक का पानी पाचन शक्ति को कैसे तीव्र कर सकता है और वह कैसे हजम हो सकता है। इसके जवाबमे कहा जा सकता है कि पानी के अन्दर नमक का अश अधिक होनेपर ही उसका वामक असर होता है। लेकिन यदि जलके अन्दर थोडी मात्रामे नमक मिलाकर गर्म किया हुआ पानी पिलाया जाय तो उसके बराबर वमन को रोकनेवाली कोई दूसरी दवा नहीं हो सकती। ४० तोले जलमे अगर एक तोला नमक मिलाकर उसको उबालकर उसको छटॉक डेढ छटॉक की मात्रा में पिलाया जाय तो वमन न होकर आसानी से हजम हो जाता है। अगर कोठे का शुद्ध करने के लिये वमन की जरूरत हो तो ४० तोला जलमे ४।४ तोला नमक मिलाकर उबालकर उसमेसे २।३ छटाक पानी पिला देने से फौरन उल्टी होकर कोठे की शुद्धि हो जाती है। उसके पश्चात् सूक्ष्म मात्रा का नमक जल पिलानेसे बहुत अच्छा परिणाम नजर आता है।

निमोनिया के रोगमे रक्तमे का क्लोराइड बहुत कुछ नष्ट हो जाता है। यह बात डाक्टर लुइ कूने ने स्पष्ट रूपसे प्रतिपादित की है और इसीलिये आज-कल के कई डाक्टर निमोनिया में एमोनिया क्लोराइड, केलशियम क्लोराइड, मरक्यूरी क्लोराइड, इत्यादि औषधियों की योजना करते हैं और उससे अच्छा लाभ भी होता है। मगर यह पद्धति नुकसान दायक मानी जाती है। इसलिये इसके बदलेमे १०० तोला जल मे २॥ तोला नमक या सचर मिलाकर उस पानी को धीरे धीरे पिलाया जाय अथवा नमकको अग्नि पर सेंककर काला पड़ने पर प्रतिदिन सबेरे, दुपहर और शाम को दो दो माशे की मात्रामे दिया जाय तो निमोनिया और मलेरिया दोनोंमे अच्छा लाभ होता हैं।

कफ प्रधान ज्वरमे अनेक अमेरिकन डाक्टर केलशियम सलफाइड का उपयोग करते हैं और देशी वैद्य खास कर लोकनाथ रसको व्यवहार करते हैं। इसमे भी केलशियम सलफाइड की मात्रा विशेष होती है।० इसलिये जहापर ये वस्तुए न मिल सके वहा पर ऊची लाल जाति का सचर उपयोगमें लेनेसे अच्छा लाभ होता है।

नमक और इनफ्ल्यूएंझा—

नमक को जलाने से उसमे से क्लोरिन गेस निकल कर हवामे मिलती है। यह हवा श्वासोच्छ्वासके द्वारा शरीरमे जाती है। अगर इसमे गेस का परिमाण अधिक मात्रामें होता है तो यह मनुष्य को बेहोश कर देती है। लेकिन यदि गेस का परिमाण साधारण मात्रामें होता है तो यह अनेक रोगो को नष्ट करनेमें उपयोगी सिद्ध होती है।

मनुष्य के गलेमे सबसे अधिक रोग कीटाणु रहते हैं और यह दवा उसी रास्तेसे भीतर जाती है। अगर इसमे क्लोरिन का अंश साधारण मात्रामे होता है तो यह गलेमे रहनेवाले रोग कीटाणुओं को नष्ट कर मनुष्य को स्वस्थ रहनेमे सहायक होती है। नमक का धुआ इनफ्ल्यूएंझा की एक सर्वोत्तम दवा मानी जाती है। बम्बईके प्रसिद्ध रसायन शास्त्री

स्वर्गीय टी ई. गडनर ने इनफ्ल्यूएन्झा की रामवाण दवा टग्क्लोराइड का नुस्खा एक कम्पनी को ५ हजार रुपये में बेचा था। इस औषधिमें भी नमक की ही प्रधानता थी। ईसवी सन् १६१३ से लेकर, १७ तक चलने वाले महायुद्धमें जिन सोल्जरों को क्लोरिन गेस या नमक का धुआ लग गया था उनको इन्फ्ल्यूएन्झा बिलकुल नहीं हुआ। सन १६१७ और १८ मे भारतवर्षमें इन्फ्ल्यूएन्झा का दौरा बहुत भयकर रीतिसे आया। और उस समय हजारों लाखों मनुष्यों की जान इस भयकर रोग की बलिवेदी पर बलिदान हो गई थी। पीछे मालूम हुआ कि अगर हवाके अन्दर क्लोरिन गेसका अश हो तो इस रोगसे बहुत आसानी से मुक्ति हो सकती है। इसलिये यह रोग जब चलता हो तब अस्पतालों नाटकशालाओं, स्कूलों व सिनेमा घरोंमे क्लोरिन गेस छोडते रहनेसे इस रोगपर विजय प्राप्त की जा सकती है। क्लोरिन गेस की टकी या सिलेंडर भरा हुआ तैयार मिलता है। इसी प्रकार रग बेचने वालों के यहा इसका ब्लीचिंग पाउडर भी बेचा जाता है। नमक को अग्निके ऊपर डालने से यह क्लोरिन गेस बहुत आसानीसे प्राप्त किया जाता है। इस गेस से ब्रोंकाइटीज, निमोनिया, इत्यादि श्वास मार्गसे सम्बन्ध रखने वाला कोई रोग नहीं होता है।

मगर यह ख्याल रखना चाहिये कि इस गेस की मात्रा हवाके अन्दर १ लाख भागमे १ भाग होना चाहिये। इससे अधिक मात्रा मनुष्य के लिये प्राणघातक होती है।

एक बार ग्वालियरमें सर्दी का रोग चला था और उसमे लोगों का खासीकी शिकायत होजाती थी। डॉक्टरो को यह मालूम होते ही यहा एक कमरा तैयार किया गया और उसमे पचास २ रोगियोको बैठा २ कर नमक का धुआ या क्लोरिन गेस छोडना प्रारभकी। उसमे श्वासोच्छ्वास लेनेसे २४ घटेके अन्दर उन लोगोकी सर्दी और खासी मिट गई। इसी प्रकारके अनेकों उदाहरणो मे इस सिद्धात पर छाप लग गई कि क्लोरिनगेस अर्थात् नमक का धुआँ सरदी, जुकाम नाककी सूजन, खासी, हृपित कफ, इन्फ्ल्यूएन्झा, निमोनिया और क्षयके जतुओं को नष्ट करता है और उनको बढनेमे रोकता है। बहुतसे रोगियो को एक ही बार गेस देनेसे आराम होजाता है। कइ रोगियोको एकसे अधिकबार देना पडती है और कई रोगी ऐसे होते हैं जिनको अनेक बार देने पर भी कुछ लाभ नहीं होता।

इस प्रकार छूतके तथा दूसरे रोगोसे बचनेके लिये सचर और सेंधा नमक यह एक बहुत अच्छा इलाज है। ऐसी खोजें पश्चिमी देशों में इस नवीन युगमें हुई है। ( जगलनी जडी बूटी )

क्लोरिनगेस नियमित मात्रासे अधिक मात्राम पहुँचने पर प्राण घातक हो जाती है। इस लिये इसको नियमित मात्रामें देनेके लिये यूरोपमे क्लोरिनटयूब बनाई जाती है। ऐसी टयूबमे से ७ बारमें इतना गेस छोडा जासकता है जिससे १० फीट लबे, १० फीट चौड़े और १० फीट गहरे कमरेमे १ लाख भाग हवामे १ भाग क्लोरिनके हिसाबसे गेस फैल जाती है।

श्वास नलीके सारे विस्तार पर जो हलका गीलापन होता है उसीमें रोगके जतु रहते हैं और बढते हैं। इस गेस वाली हवामें यह गुण है कि यह उस सारे विस्तार पर लगकर सब प्रकारके रोग जतुओं को नष्ट करदेती है।

मुजिर- नमक दिमाग और फेंफड़ेके लिये हानिकारक वस्तु है। कमजोर आदमीको भी यह नुकसान पहुँचाता है।

दर्पनाशक—इसके दर्पको नष्ट करनेके लिये तर और चिकनी चीजोंका उपयोग करना चाहिये।

मात्रा—इसकी मात्रा १ माशेसे ७ माशे तक है।

---

# नमक काला ( संचर )

नाम —

संस्कृत—अक्ष, सौवर्चल, रुच्य, दुर्गन्ध, कृष्ण—लवण, शूलनाशन, तिलक विद्गन्ध, इत्यादि। हिन्दी—काला नोन, चोहारखाड़ा, सचर नोन। बगाल—सचर लवण। मराठी—पादे लोण। गुजराती—सचल। फारसी—नमकशिया, सचर नमक। करनाटकी—सावचल। तेलगू—नालू बुपू। लेटिन—Vnaqun Sodu, Chloriduur. अनाकासोडी क्लोरिडम।

वर्णन—

फारसी ग्रन्थोंके मतानुसार यह एकप्रकारका काले रगका नमक होता है जो सज्जी, सुहागा, आवला, पियाबासाके पत्ते और नमक साम्हरके मिश्रणसे बनाया जाता है। जवाहरुल अल्वियामें इसके बननेकी तरकीब इसप्रकार लिखी है।

नमक साम्हर ४ पौंड, सूखा आवला ५ औंस दोनोंको मिलाकर ४ हिस्से करें। १ हिस्से को हाडीमें रक्खें और आच दें। जब दोनों खूब घुल जाय तो बाकी हिस्सोंको भी थोडा २ ऊपर डालते जायें।३।४ घन्टेकी आच देकर उसको ठंडा करलें।

जङ्गलनी जडी बूटीके लेखक लिखते हैं कि सनाय, कालीहरड और सचर खार इन तीनोंका मिश्रण, देहातोंमें सचरके नामसे मशहूर है। *

---

नोट—उपरोक्त दोनों वर्णनोंसे हमारा मतभेद है। हमारे यहाँ काला नमक और सचर नमक अलग २ माना जाता है। काला नमक सेंधे निमककी तरह बडे २ ढेलोंमें आता। उसका रग कुछ कालापन लिये हुए होता है और सचर नमक पापरखार कहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदके मतसे काला नमक उष्णवीर्य, रोचक, दीपन, पाचन, वातनाशक, हृदयको हितकारी, सुगन्धित, दस्तावर तथा गुल्म, शूल, विबन्ध, अफारा, अरुचि कृमि, और उदावर्तको नष्ट करता है।

यूनानी मत—

यूनानीमतसे यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क होता है। हाजमेकी शक्तिको बढाता है, वायुको नष्ट करता है। दस्त लाता है, पेटके फुलावको दूर करता है। हृदयके लिये लाभदायक है।

बनावटें—

नमक सुलेमानी—७० तोला उत्तम नमक लेकर अच्छी तरह सेंकना चाहिये। फिर एक रकाबी में उसको भरकर, उस रकाबी को कोयलेके अंगारोंसे भरी हुई सिगडी पर रखकर जब तक आग ठंडी न हो जाय तबतक पड़ी रहने देना चाहिये। फिर सेंधा नमक १० तोला, नौसादर १० तोला, राई १० तोला, अजमोद ६ तोला, काली मिरच ४॥ तोला, सफेद मिरच ३॥ तोला, अजखर ४॥ तोला और अमरबेल, जटामासी, भुनी हींग, स्याहजीरा ये चारों चीजें पौने दो दो तोला। तज, जीरा, कुसुमके बीज, सोंठ मुलेठी और सोया ये सब सवा २ तोला। इन सब चीजों का चूर्ण करके उस नमकमें मिला देना चाहिये। फिर उसको १ चीनी की बरनी में भरकर उस बरनी का मुंह मजबूती से बन्द करके जौ से भरे हुए कोठेमें ४० दिन तक गाड़ देना चाहिये।

यह औषधि जितनी पुरानी होती है उतनीही अच्छी होती है। इसको ८।६ रत्ती की मात्रामें आधे पकाये हुए अण्डेके साथ देनेसे मनुष्य की कामशक्ति बहुत प्रबल होती है। भोजनके साथ इसको लेनेसे मंदाग्नि बदहजमी, पेट का अफरा, उदर शूल, विस्मृति विष, विकार इत्यादि रोग दूर होते हैं।

पंचक्षार—समुन्दर नमक, सेंधा नमक, काचनमक, सचर नमक, जौखार, सुहागा, सज्जी। इन सबको समान भाग लेकर ३ दिन तक आकड़े के दूधमें और ३ दिन तक थूहरके दूधमें खरल करना चाहिये। फिर इस औषधि का आकड़े के सूखे पत्तों के ऊपर गाढ़ा २ लेप करके सुखा लेना चाहिये। फिर उन पत्तों को सराव सम्पुट में रखकर कपड़मिट्टी करके गजपुट में फूंक देना चाहिये। सब शीतल हो जाने पर औषधि को निकाल उसको बारीक पीस लेना चाहिये। उसके पश्चात उसमें सोंठ, मिरच, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आंवला, जीरा, हल्दी और

चित्रक की मूल इन सब चीजों को समान भाग लेकर चूर्ण करके जितना ऊपरवाले चूर्ण का वजन हो उससे आधा इस चूर्ण को उसमें मिला देना चाहिये। फिर इस सब चूर्ण को बारीक खरल करके बोतलों में भर देना चाहिये।

इस चूर्णको ३ माशेकी मात्रामें गौमूत्र या कुमारी आसवके साथ लेनेसे सब प्रकारके उदर रोग, वायु गोला, शूल, अग्निमान्द्य और अजीर्ण का नाश होता है। वायु प्रधान रोगों में इसका गरम जलके साथ, पित्त प्रधान रोगोंमे घीके साथ, कफ प्रधान रोगों में गौमूत्रके साथ और त्रिदोषज रोगों मे काजीके साथ दिया जाता है।

इस प्रकार सचर नमक, सेंधा निमक वगैरे नमकों में कई प्रकारके अमूल्य गुण रहते हैं। फिर भी रक्त विकार, सूजन, जलोदर इत्यादि रोगों में यह वस्तु बहुत नुकसान दायक होती है। इसलिये ऐसे रोगोंमे इसका उपयोग भूल करके भी नहीं करना चाहिये।

---

## नमक साम्हर

नाम —

संस्कृत—शाकम्भरीय, साम्भर, वसुक, रोम लवण, इत्यादि। हिन्दी—साम्हर नमक। बंगाल—सामलुण। मराठी—साम्हरमीठ। गुजराती—वड़ागरुमीठ। करनाटकी—गाढलवण। फारसी—मिलहे अवकील।

वर्णन—

साम्हर झीलके अन्दर जो नमक पैदा होता है वह साम्हर नमक कहलाता है। दैनिक खाने पीनेके काममें प्राय यही नमक काममें आता है।

गुण दोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे साम्हर नमक दीपन, गरम, काठेको साफ करने वाला, हलका, किंचित् खट्टा, अभिष्यन्दी, पाकमे कड़वा, तीक्ष्ण, पित्तकारक, भेदक, कफ नाशक, सूक्ष्म तथा बवासीर, कफ, मल और वातको दूर करने वाला होता है।

# नमक दरियाई ( समुद्रनोन )

नाम —

संस्कृत——समुद्र लवण, त्रिकूट, वशिर इत्यादि। हिन्दी—समुद्रनोन, पागा। बंगाल—करकचनून। मराठी—मीठा। गुजराती—मीठू। तेलगू—उदू। फारसी—नमक। अरबी—मिलहशारा। लेटिन—Sodia Imuras ( सोडिया इम्यूरस )।

वर्णन—

समुद्रके पानीम से बनाये वाले नमकको समुद्र नमक कहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे समुद्र नमक रुचिदायक, पचनेमें मधुर, तेज, कडवा, स्वादिष्ट, भारी, किंचित गरम, दीपन, भेदक, ग्वारा, कफ पदा करने वाला, वात नाशक, कड़वा, रूखा और कुछ शीतल होता है।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे यह तासर दर्जे में गरम और खुश्क है। भूखको बढ़ाता है पाचक है,पेटकी वायुको तोड कर निकाल देता है। दस्तावर है, शरीरके राम छिद्रोंमें जल्दी घुस जाने वाला है।

मुजिर—इसका अधिक सेवन खुजली पैदा करता है।

दर्पनाशक—घी, दूध, इत्यादि चिकने पदार्थ।

—

# नमक बीड

नाम—

संस्कृत—बीडलवण। हिन्दी—विरया सचर नोन, कटीला नोन। बंगाल—विटनुन। मराठी—बीड़लाण। गुजराती—बिडलवण।

वर्णन—

शालिग्राम निघटुके मतानुसार बीड़लवण प्रमारणीके क्षारसे बनाया जाता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतानुसार वीड़लवण हलका, गरम, रुचिकारक तीक्ष्ण अग्निदीपक वात नाशक, रूक्ष तथा शूल, वात, प्रमेह, गुल्म अजीर्ण, कब्जियत, हृदयरोग, जडता, कफ और दाद को दूर करने वाला है।

## नमक कान्चिया

नाम :—

संस्कृत—काच लवण। हिन्दी—कचिया नोन। बंगाला—काला नोन। मराठी—बाँगड़ खार। गुजराती—बगडी खार।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकके मतसे कान्चिया नमक रुचिकारक, कुछ खारा, पित्त जनक तथा दाह, कफ, वात, गुल्म और शूल का नाश करता है और दीपक है।

---

## नमक खारी

नाम —

संस्कृत—औशर लवण। हिन्दी—खारी नोन। बंस, बंगाल-खारी नोन। मराठी—खारादि मीठ। फारसी—बोरेअरमनी। अंग्रेजी—Carbonate of Soda लेटिन—Sodium Carbonas (सोडियम कारबोनाज)।

वर्णन—

खारा नमक ऊसर भूमिमें अपने आप पैदा होता है। इसको ऊस भी कहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

खारी नमक कडवा, वात, कफनाशक, दाह जनक, पित्त कारक, ग्राही और मूत्रको को सुखाने वाला होता है।

---

# निमक का तेजाब

वर्णन—

खाने का निमक, तेजाब और गन्धक को मिलानेसे जो भाफ बनती है उसको पानीमें सोख लेनेसे यह तेजाब बनता है। असली नमक का तेजाब बिलकुल साफ और पीले रग का होता है। इसकी बोतल का मुह खोलने से सफेद और तेज धुआ निकलता है। इसका स्वाद बिलकुल खट्टा और तेज होता है। यह पानीमे करीब ३२ प्रतिशत घुलन शील होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

गले के अन्दर होने वाली प्राण घातक बीमारी डिप्थीरिया जिसको संस्कृत मे रोहिणी रोग कहते है उसको जलाने के लिये इसको गलेके अन्दर लगाया जाता है। जबान पर होने वाले खराब जख्मों पर भी यह लाभ दायक है। निरालिस तेजाब बहुत तेज होता है और वह खिलाया नहीं जा सकता। इसको खिलानेके लिये २ भाग पानीमे १ भाग तेजाब मिलाकर डायल्यूटेड हाइड्रोक्लोरिक एसिड तैयार करते है। इसको ज्वरमे, बदहजमीमे, पेटके कृमियों को नष्ट करनेके लिये और यकृतके रोगों को दूर करनेके लिये दिया जाता है। डायल्यूटेड हाइड्रोक्लोरिक की मात्रा ५ बूद से ३० बूद तक होती है।

---

## नरसल

नाम—

संस्कृत—विभीषण, छिद्रात, दीर्घवंश, देवनाल, धामन, कीचक, कुक्षिरन्ध, लालवंश, महानल, नट, मृत्युपुष्प, वशपत्र, इत्यादि। हिन्दी—नरसल, नल, बडा नरसल। गुजराती—नली। मराठी—देवनल, नल, ढवल,। बगाल—नल, बडानल। मलयालम—काट्ट पुगइल। तामील—काट्टपुइले। तेलगू—अड्डविपोगाकु। अंग्रेजी—Wild Tobacco लेटिन—Lobelia Nicotianaefolia ( लोबेलिया निकोटिएनेइफोलिया।

वर्णन—

यह वनस्पति हिन्दुस्तान की दक्षिणी टॉक और लकामे पैदा होती है। इसके पौधे जलाशयके निकट जगलोंमे पैदा होते है। इसके पत्ते इसके पत्तोंक समान होते है। इसकी आकृति भी ईसके ही सदृश होती है। मगर यह ईससे ऊचाई में दुगुना, तिगुना होता है। इसके ऊपर १ फुट भर लम्बा सफेद रग का तुर्रा होता है। इसकी लकड़ी भीतरसे पोली होती

है। इसकी डाली को तोडनेसे भीतरसे सफेद रंग का दूध की तरह चीप निकलता है। इसकी २ जातियां होती हैं। एक छोटी और दूसरी बड़ी।

गुणदोष और प्रभाव--

आयुर्वेदिक मतसे छोटा नरसल शीतल, रुचिकारक, कसैला, मधुर, वीर्यवर्धक, कड़वा, अग्निदीपक, मूत्रशोधक और विसर्प, मूत्रकृच्छ्र दाह, रुधिरविकार, पित्त, कफ, हृदयरोग, वस्तिशूल, योनिरोग और रक्तपित्त को नष्ट करता है।

बड़ा नरसल अत्यन्त मधुर, वीर्यवर्धक, किंचित् कसैला, छोटे नरसलकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली और रसक्रियामें उत्तम होता है।

यह वनस्पति संकोचविकास प्रतिबंधक, कफनाशक और वामक होती है। शरीर पर इसकी क्रिया तम्बाकूसे मिलती जुलती होती है। श्वासोच्छ्वासके केन्द्र स्थान पर इसकी क्रिया प्रत्यक्ष दिखलाई देती है। छोटी मात्रामें देनेसे यह पहले रक्तके दबावको बढ़ाती है और बाद में कम करती है। इससे पसीना छूटता है और पेशाबकी मात्रा बढ़ती है। बड़ी मात्रामें देने से दस्त होते हैं, वमन होती है और नाड़ी शिथिल हो जाती है। कभी कभी यह प्राणघातक भी हो जाती है।

दमेके लिये यह वनस्पति बहुत उपयोगी है। इससे श्वासनलिकाके संकोचविकासकी कमी हो जाती है और कफ निकल जाता है जिससे रोगीको शांति मिलती है।

यूनानी मत—

यूनानी मत से यह साधारण हालतमें सर्द और खुश्क और जली हुई हालतमें गर्म और खुश्क होता है। यह आंतोंको ताकत देता है। पित्त और खूनके जोशको शांत करता है। योनिके मैलको साफ करता है, पेशाब लाता है, कुष्टमें लाभदायक है इसकी दूसरी जाति फञ्जको दूर करती है, धातुवर्धक होती है, पेशाबमें शक्कर जानेको रोकती है, सूजन को विखेरती है और हरकिसकी गठियामें लाभदायक है। इसकी कोंपल कफके साथ खून जानेको दूर करती है, खांसी और उपदंशमें लाभ पहुंचाती है पेशाबकी नालीके दर्दको दूर करती है। इसको तिलोंके तेलमें पकाकर गठियो पर लेप करनेसे लाभ होता है।

मुजिर—अधिक मात्रामें लेनेसे यह वामक और प्राणघातक हो जाती है।

दर्पनाशक—कतीरा।

# नलीर

नाम—

यूनानी—नलीर।

वर्णन—

यह एक बेल होती है जो दूसरे वृक्षों पर चढती है। इस बेलमें गठाने होती हैं और हर गठानके पास १ छोटा और मस्त पत्ता होता है। इसको चबानेसे जबान पर बहुत खुजली होती है। इसका स्वाद तेज और खट्टा होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति क्षुधावर्धक और मेदेको ताक़त देनेवाली होती है। खासी, दमा, वात, पेटके कृमि, बवासीर और भोजनके बाद होनेवाली वमनको यह दूर करती है। इसकी जड कानके दर्दको दूर करती है। इसकी चटनी और आचार भी बनाया जाता है।

---

# नलिकोरा

नाम—

यूनानी—नलिकोरा।

वर्णन—

यह वनस्पति पहाडों पर पत्थरोंकी दर्जों में उगती है। इसकी शाखाएँ जमीन पर बिछी हुई रहती हैं। इसके पत्ते लाल मिरचीके पत्तोंसे मिलते जुलते रहते हैं। इन पत्तोंमे तुलसीके पत्तोंके समान गंध आती है। इसका स्वाद मीठा और कुछ कडवा होता है। इसके अन्दर चेप भी रहता है। इसका शाक बनाकर भी खाया जाता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह वनस्पति त्रिदोषनाशक, क्षुधावर्धक दस्त साफ लानेवाली, गले और मुँहकी बीमारियोंमे लाभदायक और दमेको दूर करनेवाली होती है।

---

# नरगिस

नामः—

हिन्दी—नरगिस। लेटिन—Narcissus Tazetta ( नरकिसस टेजेटा )।

वर्णन—

यह एक खुशबूदार फूलका वृक्ष होता है। इसके पत्ते, डाली, जड और बीज प्याजके समान होते हैं। इसके फूल बहुत खुशबूदार होते हैं। इसके पत्ते सफेद नीले और पीले रंगके होते हैं। यह बसन्तऋतुमें खिलता है। इसकी नर और मादा दो जातियां होती हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानीमत-इसके फूल और पत्ते पहले दर्जेमें गरम होते हैं। इसके बीज बहुत गरम और खुश्क होते हैं। यह वनस्पति कफके कोपको नष्टकर देती हैं। इसका फूल सूंघनेसे सर्दीका जुकाम और नजला मिट जाता है। कुछ हकीमों का मत है कि इसे हमेशा सूंघा जाय तो जाड़ों में भी जुकाम न हो। सिर दर्द, गंज और खुजली में भी यह लाभदायक है। इसको आंखमें लगाने से नाखुना मिट जाता है। शरीरमें यदि कांटा या कील घुस गई हो तो इसके रसको लगाकर खींची जा सकती है। नरगिस की जड़को गायके दूधमें ८ प्रहर तक पकाकर फिर पीसकर कामेन्द्रिय पर लगाया जाय तो कामेन्द्रिय में बहुत जोश पैदा होता है और उसकी मोटाई और लंबाई बढ़ती है। इसकी जड को ३ माशे की मात्रामें पीसकर शहदके साथ देनेसे गर्भाशयसे मरा हुआ बच्चा निकल जाता है। मादा नरगिस को बारीक पीसकर जखम पर भुरभुरानेसे बहता हुआ खून बन्द हो जाता है। इसको योनिमें लेप करनेसे गर्भाशयके दोष निकल जाते हैं। इसको शहदमें पीसकर आगसे जले हुए स्थान पर लगानेसे शांति मिलती है। मादा नरगिस वमनकारक औषधियों में एक है।

नरगिस का तेल छाती पर मालिश करनेसे सीनेके परदो की वरम दूर हो जाती है। इसको गर्भाशयमें रखनेसे गर्भाशय का मुंह खुल जाता है। नरगिस के बीज कामशक्ति को उत्तेजना देनेवाले होते हैं।

मुजिर—नरगिस का फूल सूंघनेसे गरम मिजाज वालों को सिरदर्द पैदा होता है और दिमाग को भी नुकसान पहुँचता है।

दर्पनाशक—बनपशा, कपूर और नीलोफर।

मात्रा—६ माशे।

# नमाम

नामः—

यूनानी—नमाम।

वर्णन—

यूनानी हकीमोंके मतसे यह रीहा (वन तुलसी) की जाति की वनस्पति है। इसके बीज रिहाके बीज से कुछ छोटे होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानीमत—यह तीसरे दर्जे में गरम और खुश्क होता है, वायुको बिखेरता है, पेटके कीड़ोंको नष्ट करता है, दाघोंको मुलायम करता है, पेशाब लाता है हृदयको शक्ति देता है, मरे हुए बच्चेको गर्भाशयसे निकालता है वमन, मतली और हिचकीको शांत करता है, यकृतकी सूजन, तिल्ली और सीनके दर्दमें मुफीद है, गुर्दे और मसानेकी पथरीको तोड़ता है। शहद और पानीके साथ इसको देनेसे बिच्छूके विषम और शिकंज बीनके साथ देनेसे ततैयेके विषमें लाभ पहुँचाता है।

सरदीकी सूजन और कफके दोषोंमें यह लाभदायक है। इसके लेपसे चेहरेकी कांति बढ़ती है। बनफशाके साथ इसको लेनेसे हृदयको शक्ति मिलती है। आमाशयकी खराबीसे पैदा हुई हिचकी को यह दूर करता है। इसके बीजोंको पीसकर यकृतकी सूजन और तिल्ली पर लगानेसे लाभ होता है। ७ माशेकी मात्रामें इसको सिरके के साथ लेनेसे खूनकी वमन रुक जाती है। पेटमें पड़ने वाले हर जातिके कीड़ोंको यह मारकर निकाल देता है। इसकी जंगली जाति बूंद २ पेशाब आनेकी बीमारीको दूर करती है। नमामका तेल बालोंपर लगाने और शरीर पर मलने से शक्तिदायक वस्तुका काम करता है।

मुजिर—इसका अधिक सेवन फेंफड़े और गुर्देको नुकसान पहुँचाता है।

दर्पनाशक—कतीरा और बनफशा।

प्रतिनिधि—जंगली तुलसी।

मात्रा—बीजोंकी ४ माशे पत्तोंकी १२ माशे।

---

# नल ईश्वरी

नाम—

तेलगू—नल ईश्वरी । लेटिन—Aristolochia Tagala एरिस्टोलाकिया टेगेला )।

वर्णन—

यह ईश्वर मूलके वर्गकी एक वनस्पति होती है। इसकी झाडीनुमा बेल होती है। यह बंगाल, आसाम, सिलहट, बरमा और सीलोनमें पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसका पौधा आंतोंकी शिकायतों को दूर करनेके उपयोगमें लिया जाता है।

---

# नहानीखपट

नाम —

संस्कृत—जया, जयती, । गुजराती—नहानीखपाट, भोंयकासकी, भोंयखपाट। कच्छी—पटखापटां। अंग्रेजी—Americanjute Indian Mallow लेटिन—Abutilon Avicennae ( एब्यूटिलन एविसिनेइ )।

वर्णन—

यह अतिबलाकी एक छोटी जाति होती है। इसके पौधे १ से लेकर २ हाथ तक ऊंचे होते हैं। इसके पत्ते अतिबलाके समान मगर बहुत कोमल और सुहावने होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

देहाती लोग इसकी जड की छालका क्वाथ काली मिरचके साथ सर्पविष को दूर करनेके लिये पिलाते हैं। इस वनस्पतिके दूसरे उपयोग अतिबल या बलबीजके समान ही होते हैं।

---

# नन्हा झुनका

नाम —

बंगाल—छोटा भुझन। संथाल—नन्हा भुनका, खेतिका झुनका। तेलगू—सेरीगेली गिस्टा। लेटिन—Crotalaria Prostrata ( क्राटोलेरिया प्रोस्ट्रेटा )।

बयान—

यह सनकी जाति का ही एक पौधा होता है जो हिन्दुस्तान के शुष्क प्रान्तों, बरमा और सीलोनमें पैदा होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

मुंडा जातिके लोग इस वनस्पतिको एक अग्निवर्धक औषधि की तरह काममें लेते हैं। बच्चोंके प्रवाहिका अतिसारमें यह विशेष रूपसे काममें ली जाती है।



# नत्ता तिवसा

नाम —

तेलगू—नत्तातिवसा। लेटिन—Cryptocoryne Spiralis ( क्रिप्टाकारिन स्पिरालिस )

बयान—

यह क्षुद्र जाति की वनस्पति दक्षिणीभारत और सीलोनमें पानीके गड्ढोंके किनारे पैदा होती है। इसके पत्ते शल्याकृति और नोकदार होते हैं। इसका स्वाद तीखा होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

सीलोनके अन्दर यह एक मशहूर वनस्पति है। वहांके देशी वैद्य दूसरी औषधियोंके साथ इसका काढा बनाकर बच्चों की वमन और खांसी रोकनेके लिये देते हैं। यह आदमियों की उदार सम्बन्धी शिकायतोंको दूर करनेके लिये तथा ज्वरमें इस औषधि का उपयोग होता है।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह वनस्पति इपिकेकेनाकी प्रतिनिधि मानी जाती है। लेकिन न तो यह वामक है और न यह कफ निस्सारक है।

# नरमा

नाम.—

संस्कृत—उद्यानकार्पास। हिन्दी—नर्म, नरमा। मराठी—देवकापुस। बंबई—देवकपास। बुंदेलखंड—बुजाली, नरमा। मध्यभारत—देवमनुआ। ढाका—बोराइली। मलयालम-चेंपारुटी। सीमाप्रांत—मनुआ, नरमा। पंजाब—कपास। संथाल-भोगाकुस कोम, बुदीकसकोम। तामील—सेंधारुटी। तेलगू—पट्टी। अंग्रेजी—Tree cotton लेटिन—Gossypium Arboreum (गॉसिपियम आरबोरियम)।

वर्णन—

यह कपासकी जातिकी एक वनस्पति होती है मगर इसका वृक्ष बहुत बडा होता है और कई वर्षों तक टिकता है। इसका वृक्ष झाड़ीनुमा होता है। इसके पत्ते और फल भी साधारण कपासकी अपेक्षा बडे होते हैं। इसके फूल लाल रंगके होते हैं। इसकी रूई बहुत मुलायम होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानीमत—यह पहले दर्जेमे गरम और दूसरे दर्जेमे खुश्क होता है। इसके पत्ते सूजनको बिखेरते हैं, मासिकधर्मको साफ करते हैं। इसकी जडका काढा पिलानेसे बुखार मिट जाता है। इसके पत्तोंको कालीजीरीके साथ पीसकर लेप करनेसे बुखारके बाद होनेवाले फोडे फुन्सी मिट जाते हैं। इसके पत्तोंको दूधके साथ पीसकर पिलानेसे पेशाबकी तकलीफ दूर हो जाती है।

साधारण कपासकी अपेक्षा इस वनस्पतिमे स्निग्धता अधिक होनेकी वजहसे इसके पत्ते और इसकी जड़ें लेप करनेके उपयोगमे बहुत ली जाती हैं। जखम भरनेके लिये इसके कोमल पत्तोंको पनडीके पत्तोंके साथ पीसकर बांधते हैं। शरीरमे खुजली होने पर इसके पत्तोंको अरण्यजीरक या बावचीके साथ पीसकर उसका उबटन लगाया जाता है। बिच्छू काटने पर इसकी जडको मनुष्यके पेशाबमे उबालकर दंश स्थान पर लेप किया जाता है और पत्तोंको पीसकर जहां तक जहर चढ जाता है वहां तक मालिश किया जाता है। सुजाकमे इसके पत्तोंको दूधके साथ पीसकर देते हैं। बच्चोंके नेत्राभिष्यन्द रोगमे इसके पत्तोंको मांके दूधमे पीसकर लेप करते हैं। इसके बीजोंको जीरा, सोंफ और वंशलोचनके साथ घोटकर पानीमे छानकर पिलानेसे सुजाकमें लाभ होता है।

बम्बईमें इसकी जड़ ज्वरको दूर करनेके काममें उपयोगमें ली जाती है।

इसकी रूई अग्नि ग्ध घाव और दूसरी सर्जिकल बीमारियोंमें बाह्य उपचारके लिये बहुत उपयोगी वस्तु है। इसके बीज सुजाक, पुरातन प्रमेह, पुरातन मुत्राशय प्रदाह, क्षय और कुछ जुकाम सम्बन्धी बीमारियों पर अच्छा काम करते हैं।

---

## नरक्याऊद

नाम —

हिन्दी—नरक्याऊद। नीलगिरी—रोमनिग। तामील—कोडाइतानी। कनाडी—गड्डू-चेक्के, नरकाभू तेल। नेपाल—सुकर। लेटिन—Gironniera Reticulata (गिरोनिएरा रेटिक्यूलेटा)।

वर्णन—

यह वृक्ष हिमालयमें, भारतके दक्षिणी टोक पर और लकामें पैदा होता है। इसकी लकडी फीकी उदी रंगकी होती है और उसमे विष्ठाके समान दुर्गन्ध आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

लङ्काके अन्दर यह वनस्पति एक प्रभावशाली औषधिकी तरह काममें ली जाती है। दाद, खाज, खुजली इत्यादि रोगोंको दूर करनेके लिये तथा रक्तको शुद्ध करनेके लिये और रक्तकी गरमी को निकालनेके लिये इसकी लकडीको नीमके रसमें उबाल कर अथवा नीबूके रसमें मिलाकर देते हैं।

---

## नवल

नाम —

बम्बई—नवल। गुण्डारी—बुतरेदा, बुतसाद, बुडसगा। लेटिन—Merremia Vitif olia (मेरीमिया विटिफोलिया)।

वर्णन—

यह वनस्पति सीलोन और मलायामें विशेष तौरसे पैदा होती है। भारतवर्षमें भी कहीं २ यह मिलती है। यह एक भाडीनुमा पौधा होता है।

गुणदोष, और प्रभाव.—

यह वनस्पति मूत्रकृच्छ, पथरी और पेशाव सम्बन्धी वीमारियोंमे उपयोगी मानी जाती है।

कोकणमे इसका रस ठंडा और मूत्रल माना जाता है। इसको दूध और शक्करके साथ दिया जाता है। इसके रसमे १ हिस्सा चूनेका पानी, आधा हिस्सा अफीम और चौथाई, हिस्सा ममीरा ( Copti Teeta ) मिलाकर एक प्रकारका लेप तैयार किया जाता है जो आखों की सूजनको दूर करनेके लिये आखोंके आसपास लगाया जाता है।

छोटा नागपुर की मुण्डा जाति के लोग इसकी जड़को उदरशूल दूर करने के काम में लेते हैं।



## नन्द्रू

नाम—

पंजाब—वजरवंग, ददर्वा, खरदाग, लॅगटॅग, नन्द्रू शोलर। लेटिन—Physochlaina Praealta ( फिसोक्लेइनाप्रेइलटा )

वर्णन—

यह वनस्पति काश्मीरमे १२ हजार फीटसे साढे पन्द्रह हजार फीट की ऊंचाई तक पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके पत्ते जहरीले माने जाते हैं और ये बाल तोड, फोडा और स्फोटक पर लगाने के काममे लिये जाते हैं। इनके स्पर्शसे मुंह पर सूजन आजाती है और इनके खानेसे गले और सिरमे विकृति पैदा हो जाती है।



## नलेतिगे

नाम—

तेलगू—नलेतिगे, पेड्डागुमड़ी । उरिया—टकुआनोइ । लेटिन—Vitis Pallida ( व्हिटिस पेलिडा )।

वर्णन—

यह एक झाड़ीनुमा वनस्पति होती है। इसके पत्ते ७५ से १५ सेंटिमीटर तक डायमीटर के रहते हैं। इसके बीज मटरके समान होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति गठिया और सन्धिवात में उपयोगमे लीजाती हैं।



## नरवेल

नाम—

बम्बई—नरवेल। लेटिन—Viburnum Foetidum ( व्हिबुरनम फोइटिडम )।

वर्णन—

यह वनस्पति खासिया पहाडिया और आसाममे ३ हजार फीट से ५ हजार फीट की ऊ चाई तक होती है। यह एक झाडी होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति चरपरी कडवी और सकोचक होती हैं और ऋतुस्राव को नियमित करनेके काममे ली जाती है। इसके पत्तों का रस एक वाइन ग्लास की मात्रामे रोजाना पीने से अत्यधिक रजश्राव और प्रसूतिक बाद होनेवाला रक्तस्राव बन्द हो जाता है।



## नलिका

नाम—

सस्कृत—नलिका, विद्रुमलता, कपोत चरणा, अञ्जनवेशी, धमनी इत्यादि। हिन्दी—नलिका। करनाटक—वेसनलिके।

वर्णन—

यह सुगन्धि द्रव्य उत्तर खण्डमे नली नामसे प्रसिद्ध है। इसका स्वरूप मू गेके समान होता है। कहीं कहीं इसे प्रवाली भी कहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे नलिका चरपरी, कडवी, तीक्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, शीतल, नेत्रों को हितकारी तथा वातपित्त, रक्तपित्त, कृमि, विष, कफ, वातोदर, शूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, रुधिर विकार, तृषा, खुजली, कोढ, ज्वर, घाव और बवासीर को दूर करती है।

---

# नरोक

नाम—

यूनानी—नरोक।

वर्णन—

यह एक छोटी जाति की वनस्पति है। किरमानके पहाड़ोंमे पैदा होती है। इसके पत्ते खरबूजेके पत्तों की तरह होते है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसकी जडको १॥ से २ रत्ती तक की मात्रामे खानेसे और थोड़ी सी गर्भाशयमे रखने से स्त्री बाझ हो जाती है। इसके टुकडे को नासूर पर रखनेसे अथवा इसका लेप नासूर पर करनेसे नासूर भर जाता है। प्रसूतिके समय अगर स्त्री इसको हाथमे ले ले तो बच्चा आसानी से पैदा हो जाता है। इसको १॥ रत्तीसे ज्यादा मात्रामें कभी नहीं लेना चाहिये।

( ख अ )



# नर्तकिस

नाम—

यूनानी—नर्तकिस।

वर्णन—

यह एक वनस्पति है। इसका फल इंद्रायणके फल की तरह होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यह गरम और खुश्क है। इसके रस को सूँघनेसे नाक की दुर्गन्ध मिटती

है। इसका टुकड़ा नाकमें रखनेसे नकसीर का रक्त बन्द हो जाता है। इसको जैतूनके तेलमें पीसकर लगानेसे पसीना बहुत आता है। इसका शराबके साथ खानेसे बिच्छूके विषमें लाभ होता है। अगर छातीमें खून जम जाय तो इसके ताजा मगज को खिलानेसे कफके साथ निकल जाता है। इसके ताजा मगज को खिलानेसे पुराने दस्त बन्द हो जाते हैं।

## नमली नारा

नाम —

यूनानी—नमली नारा।

वर्णन—

इसका वृक्ष बड़गूदे के समान मगर उससे कुछ छोटा होता है। इसके पत्ते भी बड़-गूदेके समान लेकिन जरा नोकदार और खुरदरे होते हैं

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानीमतसे यह तीसरे दर्जेमें गरम और खुश्क है पेटके कृमियों को नष्ट करता है, बवासीर और धातुस्रावमें लाभदायक है, निमोनिया और पसलीके दर्द पर इसके पत्तोंको बांधनेसे लाभ होता है। इसकी छालको किसी अंग पर बांधकर रात भर रहने देनेसे उस जगह छाला पैदा हो जाता है।

## नवारस

नाम —

यूनानी—नवारस।

वर्णन—

यह वृक्ष रूम और सलीब की गीली जमीनोंमें बहुत पैदा होता है। इसके सारे झाड़ पर ऊनके समान रुआं जमा हुआ रहता है। इसका फूल पीला और खुशबूदार होता है। इसके कांटे सूई की तरह तेज होते हैं। इसके गोंदका रंग सुरखी लिये हुए सफेद होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानीमत—यूनानीमतसे इसकी जड़ तीसरे दर्जेमें गरम और खुश्क तथा दूसरे सब

अंग दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क होते हैं। यह वनस्पति पट्ठो को बीमारीके लिये बहुत उपयोगी है। इसके लगानेसे कटा हुआ पट्ठा जुड़ जाता है। अगर किसीके पट्ठोंमें बीमारी हो तो इसका काढा बनाकर पिलाना चाहिये। इसका गोंद लगानेसे जख्म भर जाता है और कटा हुआ पट्ठा भी जुड जाता है। अगर बदनमें कहीं चोट लग जाय या मोच आ जाय तो इसका लेप करनेसे बडा लाभ होता है। अगर किसी अगमे बहता हुआ खून न रुके तो इसके चूर्णको भुरभुराने से रुक जाता है। ( ख० अ० )

---

## नाकुली

नाम —

संस्कृत—गंधटा, नाकुली। हिन्दी—नाकुली। मलयालम—कानभेर। कनाडी—मरवाले। लेटिन—Saccolabium Papillosum ( सेकोलेबियम पेपिलोसम )।

वर्णन—

यह वनस्पति बगाल और हिमालयके निम्नवर्ती प्रदेशोंमे तथा सिक्किम और आसाममें पैदा होती है। इस वनस्पति की जड़ें पसारी लोग रासनाके बदलेमें दे दिया करते हैं। मगर यह असली रासना नहीं है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति सार्सापरिला की एक उत्तम प्रतिनिधि है। गठिया और सधिवातके अन्दर यह लाभ पहुँचाती है। कानके अन्दर फोडा होनेसे जो कर्णशूल होता है। उसमे भी यह लाभ पहुँचाती है।

---

## नागरमोथा

नाम—

संस्कृत—चक्राहा, नागरमुस्त, नादेई, कच्छरुहा, कलापिनि, इत्यादि। हिन्दी—नागर मोथा। बगाल—नागरमूथा। गुजराती—नागरमोथ्या। मराठी—लवाला, मोथे, नागरमोथे। फारसी—मुश्के जामिन। तेलगू—कोलतुंगा मुस्त। पजाब—डीला। तामील—कोटाइकिलगू।

अरबी—सोद्, सोदेकुफी। लेटिन—Cyprus Scarious (साइप्रस स्केरिअस)।

वर्णन—

यह क्षुद्र वनस्पति भारतवर्षमें सब दूर पैदा होती है। इसका पौधा घासकी तरह होता है। इसकी जड बहुत गहरी होती है और जड़के नीचे काली २ छोटी २ गठान होती है। जिस खेतमें यह घास होता है उस खेतमें दूसरी फसल होना बडी कठिन होती है। दूबकी तरह इसको भी किसी खेतसे नष्ट कर देना बड़ा कठिन है। इसकी गठानों में एक प्रकारकी उत्तम खुशबू आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे नागर मोथा चरपरा, कसला, शीतल, कफ नाशक तथा पित्त, ज्वर, अतिसार, अरुचि, तृषा, दाह और श्रमको दूर करता है।

यूनानी मत—

यूनानी मतमें यह गर्म और खुश्क होता है। कफ और खांसीमें फायदा पहुँचाता है, कफ पित्त प्रधान ज्वरमें लाभदायक है, दस्तों को रोकने वाला है, तृष शामक, मुश्के स्वासको ठीक करने वाला, त्रिदोष नाशक, दिल और मेदेकी बीमारीको दूर करने वाला और पेटके कृमियोंको नष्ट करने वाला होता है। यह पसीना लाता है, पेशाब बढाता है, सुजाक्में इसका काढा लाभदायक है। उसबेक माथ इसको जाश देकर पीनेसे उपदशम लाभ होता है। इसको पिलाने और लगानेसे बिच्छूका जहर उतर जाता है। नागर मोथेको मुहमें रखनेसे अगर गलेमें जोंक चिपक गई हो तो निकल जाती है। इसको खानेसे वमन रुक जाती है। एक हिस्सा दूध और ३ हिस्से पानीमें नागर मोथेको डाल कर इतना औटावे कि पानी सब जल जाय और सिर्फ दूध रह जाय। उस दूधको पिलानेसे आवक दस्त बन्द होते हैं। इसको उत्तर दिशाकी तरफसे पुष्य नक्षत्रमें अच्छे दिनमें उखाड़ कर एक रंगकी गायके दूधमें पिलानेसे मृगी रोग मिटता है।

नागर मोथेका धर्म साधारणतया चदनके समान होता है। इसके अन्दर स्वेद जनन, मूत्र जनन, माही और उत्तेजक धर्म प्रधान रूपसे रहते हैं।

इतने धर्मों के रहते हुए भी यह वनस्पति किसी औषधिका प्रधान अङ्ग नहीं मानी गई है। हर जगह इसका सहायक औषधिकी तरह ही उपयोग होता है। अरुचि, आमातिसार, खूनी बवासीर और अजीर्णके रोगोंमें नागरमोथा गुणकारी होता है। संग्रहणीमें भी यह अच्छा काम करता है। ज्वर, पित्तज्वर और सूतिका ज्वरमें यह हमेशा काममें लिया जाता है। इससे धाराहट कम होती है, पसीना छूटता है, शरीरमें उत्तजना पैदा होती है, जीभ सुधरती है और पेशाब साफ होता है। यह गर्भाशयका कुछ सकोचन करता है। स्त्रियोंका दूध बढ़ाने

लिये और उनका दूध शुद्ध करनेके लिये नागरमोथा खिलाया जाता है और उसको पानीमें औटाकर स्तनों पर लेप भी किया जाता है। सुजाकमें भी नागरमोथा बहुत गुणकारी है। सुजाककी प्रथम और द्वितीय अवस्थामें यह विशेष लाभदायक होता है। इसका कृमिनाशक धर्म तो इसको बडी मात्रामें देनेसे ही दृष्टिगोचर होता है।

इसकी जड अग्निवर्धक और हृदयको लाभदायक मानी जाती है। यह पसीना लाने वाली और मूत्रल होती है। सकोचक होनेकी वजहसे यह प्रवाहिका या अतिसारमें लाभदायक है। मृगी रोगमें इसको जटामासीके साथ देनेसे लाभ होता है। इसका काढा सुजाक और उपदंशमें लाभ पहुंचाता है।

केस और हस्करके मतानुसार यह सर्पविषमें निरुपयोगी है।

---

# नागदमनी

नाम—

सस्कृत—नागदमनी, बला, विषापहा, नागपुष्पी, नागपत्रा, महायोगेश्वरी, दुर्धर्षा, कन्दशालिनी, विषमर्दिनी इत्यादि। हिन्दी—नागदमनी, चिन्दार। बङ्गाल—नागदौन, बडा कनूर। गुजराती—नागदमनी। मराठी—नागदवण। फारसी—मारचोबिया। तामील—तुडैवाची, विषमुङ्गिल। तेलगू—केसरी चेट्टु। उर्दू—नागदौन। लेटिन—*Crinum Asiaticum* (क्रिनम एसिया टिकम)।

वर्णन—

यह वनस्पति सारे भारतवर्षके गरम प्रान्तोंमें तथा बंगाल, कोकण और सीलोनमें पैदा होती है, यह जङ्गलमें भी पैदा होती है और इसकी खेती भी की जाती है। इसके पत्ते २।३ हाथ लम्बे, बालिश्त भर चौड़े और गुदगुदे होते हैं। इसके फूल सफेद और सुगन्धित होते हैं। इसकी जडमें एक कन्द रहता है जो सफेद रङ्गका होता है। औषधिमें इसका कन्द और पत्ते काममें आते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—भावप्रकाशके मतानुसार नागदमनी चरपरी, कडवी, हलकी, ग्रहोंको शात करनेवाली, विषनाशक, तथा पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, घाव, राक्षस बाधा और जालगर्दभ रोगको दूर करनेवाली होती है।

राजनिघन्टुके मतानुसार नागदमनी त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, कड़वी, पेटके आफरेको दूर करनेवाली और कोठेको शुद्ध करनेवाली होती है।

निघन्टुरत्नाकरके मतानुसार नागदमनी गरम, कड़वी, हलकी, रुचिदायक, कोठेको शुद्ध करनेवाली, तीक्ष्ण, चरपरी तथा योनिदोष, मकड़ी और सांपका विष, कफ, वमन कृमि, घाव, मूत्रकृच्छ्र, उदररोग, जालगर्दभ, त्रिदोष, प्रमेह, खासी, कण्ठरोग, शूल, गुल्म, रुधिर विकार, सबप्रकारके विष, आफरा और ग्रहपीड़ाको दूर करनेवाली है।

नागदमनीके कन्दकी क्रिया शरीरमें इपिकेकोना, अडूसा, अथवा जङ्गली प्याजके समान होती है। छोटी मात्रामें यह पसीना लानेवाली और कफ निस्सारक है। बड़ी मात्रामें यह एक विश्वास योग्य सौम्य और उत्तम वामक वस्तु है। इससे होनेवाली वमन मनुष्यमें घबराहट और थकावट पैदा नहीं करती तथा मरोड़, जुलाब इत्यादि दूसरे दुष्परिणाम इससे नहीं होते। कोली कांदा या जङ्गली प्याज वमन लानेके लिये नहीं दिया जाता, मगर इसका कन्द निर्भय होकर दिया जाता है। इसके सूखे हुए कन्दमें ताजा कन्दकी अपेक्षा आधा गुण रह जाता है। रेक्टिफाइड स्पिरिटमें इसका तैयार किया हुआ अर्क बेकार होता है। इसी प्रकार इसका शरबत और अवलेह भी अधिक उपयोगी नहीं होते। वमन लानेके लिये इसके कन्दका ताजा रसही सबसे अधिक उपयोगी होता है। यह इस कामके लिये १ से लेकर २ तोले तक की मात्रामें दिया जाता है।

जावाद्वीपमें इपिकेकोनाके अभावमें इसके कंदका बहुत उपयोग किया जाता है। श्वास नलिकाकी सूजनकी पहली और दूसरी अवस्थामें इसके प्रयोगसे बड़ा लाभ होता है। बच्चा को भी यह बेखटके दी जा सकती है। जहरका उतारनेके लिये अथवा छातीमें भरे हुए कफको निकालनेके लिये इसको देनेसे वमनके द्वारा विष और कफ निकल जाता है।

हर प्रकारकी सूजनको दूर करनेके लिये इसके पत्तों पर अरंडीका तेल लगाकर जरा गरम करके बांधते हैं। इससे सूजन बहुत जल्दी उतर जाती है। बाल तोड़, विद्रधि, विसर्प, नारू वगैरे ऐसे चर्म रोगोंमें जिनमें पीप पड़ने का अन्देशा होता है, इन पत्तों को बांधनेसे पीप नहीं पड़ने पाता। कर्ण शूलमें इसके पत्तोंको गरम करके उनका रस निकाल कर कानमें टपकाया जाता है। दाद परभी इसके पत्तोंका रस लेप करनेसे लाभ होता है।

कार्टरके मतानुसार इसकी ताजी जड़ साधारण खुराकमें पसीना लानेवाली, ज्वर निवारक और अधिक मात्रामें वमनकारक होती है।

मलायामें इसकी जड़ विष निवारक मानी जाती है।

केस और महरकरके मतानुसार यह वनस्पति सर्प-विषम निरुपयोगी है।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे इसके पत्तोका रस हर किसमके जहर पर मुफीद है। किसी भी विषम बीमारको इसकी जड़ १ माशेकी मात्रामें ५ काली मिरचके साथ पीसकर पिलानेसे लाभ होता है। अगर आदमी जहरसे बेहोश होगया हो तो नागदमनीके साथ १ दाना सफेद घुघचीका मिलाकर देनसे वह होशमें आजाता है। सर्दीका बुखार, लकवा, अर्धांग, कपवात और मकड़ीके विषमें भी यह लाभदायक है।

तालीफ शरीफमें एक दूसरी प्रकारकी नागदमनीका वर्णन लिखा है। उसका कथन है कि इसके पत्ते और इसकी जड़ें सांपकी तरह होती हैं। सैय्याद लोग इसको पहाड़से लाते हैं। हिन्दू फकीर भी इसको अपने पास रखते हैं। इसकी सफेद, लाल और काला ३ जातियाँ होती हैं, यह बदनको मोटा करती है, शक्तिदायक है, कफ और पित्तके उपद्रवको मिटाती है। कोई २ इसे सांपके जहरको दवा मानते हैं। यह भूख बढ़ाती है, दस्त साफलाती है, प्रसूति रोगमें मुफीद है। धातुका गिरना, खासी, और पेटके अफरे को यह दूर करती है।

---

## नागदौन

नाम—

बम्बई—नागदौन—बंगाल—सुदर्शन, सुखदर्शन। गुजराती—नागरी कन्द। मद्रास—विषमुगिन। मुडारि—केंद्रिजादू। तेलगू—केसर चेट्टु। लेटिन—Crinum Defixum (क्रिनम डेफिक्सम)।

वर्णन—

यह नागदमनी की ही एक दूसरी उपजाति होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसका कन्द वमनकारक, कफनिस्सारक और स्निग्धता पैदा करने वाला होता है।

मेडागास्कर में इसका कन्द कारबंकल, अंगुली विद्रधि और अग्निदग्ध की चिकित्साके लिये भीतरी और बाहिरी दोनों उपचारोंमें बहुत काममें लिया जाता है। कर्ण प्रदाहके अन्दर इसके पत्तोंके रसकी थोड़ीसी बूंदें कानमें टपकाई जाती हैं।

---

# नागकेसर ( नागचम्पा )

नाम—

संस्कृत—भुजगाख्य, चापेय, हेम, हेमकिंजल्क, केसर, नागकेशर, नागपुष्प, पुन्नाग केशर, इत्यादि। हिन्दी—नागकेशर, पुन्नाग। बिहार—नागकेशर। बंगाल—नागेसर, नाग कसर। बंबई—नागचम्पा, थोरला चम्पा। मराठी—नागचापा। फारसी—नरमिश्का। तामील—इसल, कठननगू, मन्नाइननगू, नागन चम्पागम। तेलगू—गजपुष्पयु, केसरायु, नागपचकमू। इंग्लिश—Ceylon Ironwood लेटिन—Mesua Ferrea ( मेसुआ फेरा )।

वर्णन—

यह एक मध्यम आकार का सुन्दर और सुशोभित वृक्ष होता है। इसकी पैदाइश सारे भारतवर्ष मे और विशेष कर दक्षिणी कोकण, पूर्व बंगाल और पूर्व हिमालयमे होती है। इसके पत्ते शल्याकृति, फूल पीलापन लिये हुए सफेद रंगका और बहुत खुशबूदार होता है। इस फूलमें नरकेशर का पीले रंग का जो गुच्छा होता है उसीको नागकेशर कहते है।

नागकेशर के नामसे बाजारमें कई प्रकार की वस्तुए मिलती है। मगर असली नाग केशर चम्पेके फूलमे रहने वाले पीले गुच्छे से ही बनती है। इसमे केशरिया रंगके छोटे छोटे तन्तु रहते है। लाल नागकेशर सुरंगी की सूखी हुई कलियों को कहते है और काली नाग-केशर सुलतान चम्पे की सूखी हुई कलियों को कहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मत से नागकेशर कडवी, कसेली, आम पाचक, किञ्चित गरम, रूखी, हल्की तथा पित्त, नाति, कफ, रुधिरविकार, वात, कण्डू हृदय की पीड़ा, पसीना, दुर्गन्ध, विष, तृषा, कोढ विसर्प, वस्तिपीड़ा, वात रक्त, कण्ठरोग और मस्तक शूल को नष्ट करती है।

भावप्रकाशके मतसे नागकेशर कसेली, गरम, रूखी, हलकी, आमपाचक तथा ज्वर, खुजली, प्यास, पसीना वमन, उबकाई, दुर्गन्ध, कोढ, विसर्प कफ, पित्त और विषको दूर करती है।

रक्तआम मे और रक्तार्शमें गुदाद्वार की जलन को बन्द करनेके लिये यह एक उत्तम औषधि है। हाथ पाव की जलन को दूर करनेके लिये भी इसका उपयोग किया जाता है। अधिक कफ युक्त खासीमे इसे देते है। बंगालमे सर्पदंशमे इसके फूल और पत्ते पिलाये

जाते हैं। इसके बीजों का तेल सन्धियों के दर्द और कमर की वेदनामे मालिश किया जात है। खुजली पर भी यह लगाया जाता है।

चरक, सुश्रुत और वाग्भट्ट के मतसे इसके पत्ते और फूल दूसरी औषधियोंके सा मिलाकर साप और विच्छूके विषपर देनेसे लाभ होता है।

इसके फूल सकोचक और अग्निवर्धक होते हैं। बहुत सी जगह पर इन्हें खासी औ कफ नाशक दवा की तरह काममे लेते हैं। जब खासी मे कफकी विशेषता होती है तब य विशेष रूपसे काममे ली जाती है। नागकेशर का चूर्ण मक्खन और शक्करके साथ खून बवासीर का खून रोकनेके लिये और पैरो की जलन मिटानेके लिये सफलता पूर्वक उपयोग किया जाता है।

उत्तरी कनाडामे इसके बीजों का तेल सन्धिवात और गठियामें उपयोगी माना जाता है। खुजली की चिकित्सामे भी उपयोगी माना जाता है।

कोमानके मतानुसार इसके कच्चे फल पसीना लाने वाले होते हैं। इसके फूलों की कलिया रक्तातिसारमे उपयोगी मानी जाती हैं। इसके फूलों का शरबत रक्तातिसारके बीमारों पर प्रयोगमे लिया गया, जो इस बीमारी के साधारण बीमार थे वे तो इससे अच्छे हो गये मगर पुराने और गहरे बीमारों पर इसका कुछ भी असर नहीं हुआ।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जे में गरम और खुश्क होती है। पित्त, कफ, और विषके विकारको दूरकरती है। हर प्रकारकी बवासीर और पेटके कृमियों का नाश करती है। इसके लम्बे इस्तेमालसे बवासीरके मस्से गिर जाते हैं। बवासीर के लिये इसके फूलके अन्दर की जर्दी को १३ माशे की मात्रामे रातको पानीमे भिगो दें। सुबह उस पानी को छानकर मिश्री मिलाकर पी ले। इससे ४० दिनमे मस्से सूख जाते हैं। नागचम्पे के इत्रकी मालिश कामेंद्रिय-पर करनेसे काम-शक्ति बहुत बढती है इसको पानमें लगाकर खानेसे भी कामोत्तेजना होती है मगर यह गरम प्रकृति वालों को कभी नहीं खाना चाहिये। इसके बीजों की मगज को पोटलीमे बाधकर उस पोटली को पानीमे भिगाकर खुजली पर खूब मलें। इससे दोनों प्रकार की खुजली आराम हो जाती है। इसके बीजोंका तेल निकाल कर उसमे कपिला मिला कर लगाने से भी खुजली आराम हो जाती है।

तालीफ शरीफके मतानुसार यह पसीने की दुर्गन्ध को दूरकरती है। कुष्ठ, कफका उपद्रव और पित्त की तेजी को मिटाती है।

मुजिर—यह गरम प्रकृतिवालोंको गर्मी से होनेवाली यकृतकी बीमारी को और मसानेको नुकसान पहुँचाती है।

दर्पनाशक—कासनीके बीज, बंशलोचन।

प्रतिनिध—बालछड़ और खोपरा।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा ४ रत्तीसे १ माशे तक है। जो मिश्री और मक्खनके साथ दी जाती है। खजाइनुलअदवियाके मतानुसार इसकी मात्रा ॥ माशे की है।

और इसके इत्र की मात्रा १ रत्तीकी है।

उपयोग—

रक्तार्श—नागकेशर और शक्कर को पीसकर मक्खनमें मिलाकर खानेसे बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

पैरों की जलन—पैरों की पगतली पर इसका लेप करनेसे पैरों की जलन मिट जाती है।
सर्पदंश—सर्पके दंशित स्थान पर नागकेशर और इसके पत्तों का लेप करनेसे सर्प-विषमें लाभ होता है।

गठिया—इसके बीजोंके तेल को मर्दन करनेसे गठिया मिटती है।
बिगड़े हुए घाव—ऐसे बिगड़े हुए घाव जिनमें दुर्गन्धित पीव निकलता हो इसका तेल लगानेसे आराम हो जाते हैं।

श्वेत प्रदर—नाग केशरके चूर्ण को मट्ठेके साथ पीनेसे श्वेत प्रदरमें लाभ होता है।
गर्भपात—अगर किसी स्त्री को तीसरे महीनेमें गर्भ गिरने का भय होय तो इसके चूर्ण में मिश्री मिलाकर दूधके साथ फक्की देना चाहिये।

---

## नागवेल

नाम —

हिन्दी—नागवेल, नागफेनी, नराइ गारवा, छगरियारुवा, सिंजुरगोरवा। बंगाल—बोरुना, गोंडा। संथाल—भादू, मारक। आसाम—थोसाइ। कनाडी—नवलाडी। लेटिन—Vitox Padanculans (व्हिटेक्स पेडनक्यूलेरिस)।

वर्णन—

यह निर्गुण्डीके वर्ग की एक वनस्पति है। इसका वृक्ष ६ से लेकर १२ मीटर तक ऊँचा होता। इसके पत्ते ११ १५ सेंटिमीटर लम्बे और २ ५ सेंटिमीटर चौडे होते हैं। यह वनस्पति विहार, वगाल, आसाम और तेनासिरम में पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

कॅंपवेलके मतानुसार छोटा नागपुरमें छातीके अन्दर होनेवाले दर्द को दूर करनेके लिये इसकी छाल को पीसकर उसका लेप किया जाता है।

ब्रिटिश मेडिकल जर्नलके फरवरी १६२१ के अकमें इस वनस्पतिके सम्बन्धमें प्रतिपादित किया गया कि इसके पत्तों का शीतनिर्यास अथवा इसकी जडका शीतनिर्यास मलेरिया टाइप के बुखारको दूर करनेके लिये और खासकर गरम देशोमें होनेवाले भयकर पैत्तिक ज्वरके (Blackwater Fever) दूर करनेके लिये दिया जाता है। मलेरिया ज्वर और ब्लेक वाटर फीवरके अनेको केस इसके पत्तोंके शीत निर्याससे आराम किये गये हैं (J C S Vaughan) ब्रिटिश मेडिकल जरनल फेब्रुआरी १६२१)

इसके सूखे पत्तों का रासायनिक विश्लेषण करने पर इसमे एक प्रकार का अलकेलाइड पाया गया है। चोपराके मतसे यह वनस्पति मलेरिया ज्वरमे निरुपयोगी सिद्ध हुई है।



## नागन

नाम —

यूनानी—नागन।

वर्णन—

यह एक वनस्पति है जो प्राय मद्रासके बगीचोंमे बोई जाती है। इसका वृक्ष ७।८ फीट तक उचा होता है। इसकी जडें जमीनमें आधा गज तक नीचे जाती हैं। तेलगू भाषामे इसकी जडको पजर कहते हैं। पजर एक प्रकारके सॉपका नाम है जिसके काटनेसे शरीरसे खून जारी हो जाता है। इस वनस्पति की जड़ उसके जहर को फायदा पहुँचाती है। इसके पत्ते १ गज लम्बे और बहुत घने होते हैं। इनका रग कुछ पीलापन लिए हुय काला होता है। इसके पत्ते का आकार नागनके समान होता है। इसीलिये इसको नागन कहते हैं। इसके सिर पर सफेद फूल आता है जो बहुत खुशबूदार होता है। हर फूलमें ६ पखडिया होती हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके पत्ते संधियों की सूजन पर बाँधनेसे सूजन बिखर जाती है और दर्द मिट जाता है। इसके पत्तोंके रसको कानमें टपकानेसे कर्ण-शूल मिटता है। इसका फूल ज्ञानेन्द्रियको शक्ति देता है। इसके फूलों का तेल लगानेसे बाल बहुत पैदा होते हैं। कामेन्द्रिय पर इसके तेल की मालिश करनेसे उसमें बहुत ताकत और सख्ती पैदा होती है।

## नागोर

नाम—

यूनानी—नागोर।

वर्णन—

यह एक बड़ी जातिका वृक्ष होता है। इसमें डालिया बहुत होती हैं। इसके पत्ते चौड़े, लंबे और नोकदार होते हैं। इनका आकार तमाकूके पत्ताके समान होता है। इनपर रुआ बहुत होता है। इसके फूल खुशबूदार और फल गोल होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यह गरम और खुश्क होता है। सिर दर्द, कमरका दर्द और मूत्राशयके दर्दमें यह लाभदायक है फोड़े फुन्सीको मिटाता है पेटके कीड़ोंको नष्ट करता है, प्रमेहमें लाभदायक है, पारा खानेसे शरीरमें जो विकार पैदा होजाते हैं, वे इसके पत्तोंसे मिट जाते हैं।



## नागसर गड़हा

नाम—

यूनानी—नागसर गड़हा।

वर्णन—

यह एक छोटी जातिकी वनस्पति होती है। इसका पौधा जमीन पर बिछा हुआ रहता है। इसके पत्ते कन्दोरीके पत्तों को तरह होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे इसकी जड़ें गरम और खुश्क होती हैं। सांपके जहर की यह मशहूर दवा है। कोढ, उपदंश और जहरबादमें भी यह लाभदायक है, खांसी को दूर करती है, धातु-वर्धक और काम शक्ति को बढाने वाली है तथा गठिया के दोषों को दूर करती है। इसको तीन माशे की मात्रामें गायके घीके साथ खिलानेसे और पथ्यमें अरहर की दाल, चावल और अधिक मात्रामें घी खिलानेसे गठियामें बहुत लाभ होता है। इसकी जड़को २ माशे की मात्रामें पानके साथ रातको सोते समय खिलानेसे ३ दिनमें दमा आराम हो जाता है। छछून्दर के जहर पर इसको एक माशे की मात्रामें १२ दिन तक खिलाने से जहरका प्रभाव हो जाता है।

# नाड़ीका शाक

नाम —

संस्कृत—नाडीक, कालशाक, श्राद्धशाक, कालक, दीर्घचंचु, कोटी। हिन्दी—नाडी काशाक, पटुआसाग, पात। मराठी - कडचोंचे। नसीराबाद—रतराव। पोरबन्दर—लँबी-चूंच। गुजराती—मोटी—छूंछ। तामील—पेरहि।। तेलगू—परिंट। कनाड़ी—तएडा-रिसर। लेटिन—Ourchorus Triloocularis ( कोरचोरस ट्रिलोक्यूलेरिस )।

वर्णन—

यह एक छोटी जाति की वनस्पति है जो बरसातके दिनोंमे पैदा होती है। इसके पौधे १ से लेकर ३।। फीट तक ऊंचे होते हैं। इसके पत्ते सुन्दर कगरीदार १ से ४ इंच तक लम्बे, फूल पीले और फली तिधारी या चौधारी १ से लेकर ३।। इंच तक लम्बी होती है। इसमे बहुत बीज होते हैं। इन बीजों का रंग खाकी या काला होता है। इनके दोनों सिरे दबे हुए रहते हैं। इनका स्वाद कडवा होता है। इसके बीजों को राजजीरा कहते हैं। बरसात मे गरीब लोग इसका साग बना कर खाते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मत से नाडीका शाक कडवे और मीठेके भेदसे दो प्रकार का होता है। कडवा शाक रक्तपित्त नाशक तथा कृमि और कुष्ठ को नष्ट करता है। मीठा शाक पिच्छिल, शीतल, मलरोधक और कफवात कारक होता है।

नाड़ीके सूखे पत्ते ज्वर, विशेष करके पित्त और कफ ज्वर को नष्ट करने वाले होते हैं। ये जलदोष नाशक, पित्त, कफ और आम वात विनाशक हैं। अफीम के विष को दूर करनेके लिये इसके ताजे पत्तों का रस दिया जाता है।

इसके बीज स्नेहन और आनुलोमिक होते हैं। इनको ४० रत्ती की मात्रामे देनेसे यकृत् की क्रिया सुधरती है। आनवात और गुल्ममे भी ये उपयोगी हैं। ज्वरमे इसके बीजों और पत्तों की फाट बनाकर दी जाती है।

यूनानी मत

यूनानी मतसे इसकी दोनो जातियां सर्द और तर होती हैं। ये पित्तज बीमारियोंमें लाभदायक हैं। इनके पत्तों को भाफ से नरम करके फोडेपर बांधनेसे फोडा पक जाता है। रक्तविकार मे भी यह लाभदायक है। इसको सूखी या गीली जलाकर उस भस्म को थोडी शहदके साथ चटानेसे तिल्ली आदि यन्त्रों के बहाव की रुकावट मिट जाती है। इसके पत्तों का हिम या फाट पिलानेसे ज्वर का दाह मिट जाता है। इसके तीन रत्ती चूर्णमे तीन रत्ती हलदी मिलाकर फक्की देनेसे तीव्र आमातिसार मिटता है। संखिया खानेवालेको ३।४ तोला नाडी के पत्तों को पीस कर पिलानेसे जहर उतर जाता है।

इसके अधिक सेवन से पेटमें वायु पैदा होती है और मेदा कमजोर हो जाता है।

---

## नानका

नाम—

बंगाल—नानका। मुण्डारि—डेमडेमारा। तेलगू—निरोकँच। लेटिन Monochoria Vaginalis (मोनो कोरिया व्हेगिनेलिस)।

वर्णन—

यह वनस्पति सारे भारतवर्ष, सीलोन और मलायामे पैदा होती है। इसके पत्ते ६ से लेकर १० सेण्टिमीटर तक लम्बे और ३-२ से ६ सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं। इसके फूल कुछ ललाई लिये नीले रंगके होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

दन्तशूलको मिटानेके लिये इसकी जड़को चबाना चाहिए इसकी छालको शक्कर के साथ लेनेसे उसमे लाभ होता है।



गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे इसकी जड़ें गरम और खुश्क होती हैं। सापके जहर की यह मशहूर दवा है। कोढ़, उपन्श और जहरवाभैंज भी यह लाभदायक है, खासी को दूर करती है, धातु-वर्धक और काम शक्ति को बढाने वाली है तथा गठिया के दोषों को दूर करती है। इसको तीन माशे की मात्रामे गायके घीके साथ खिलानेसे और पथ्यमे अरहर की दाल, चांवल और अधिक मात्रामे घी खिलानेसे गठियामे बहुत लाभ होता है। इसकी जडको २ माशे की मात्रामे पानके साथ रातको सोते समय खिलानेसे ३ दिनमे दमा आराम हो जाता है। छछून्दर के जहर पर इसको एक माशे की मात्रामे १२ दिन तक खिलाने से जहरका प्रभाव हो जाता है।

# नाड़ीका शाक

नाम —

सस्कृत—नाडीक, कालशाक, श्राद्धशाक, कालक, दीर्घचंचु, कोटी। हिन्दी—नाडी काशाक, पटुआसाग, पात। मराठी - कड़चोंचे। नसीराबाद—रतराथ। पोरबन्दर—लॅबी-चूच। गुजराती—मोटी—छूछ। तामील—पेरहि।। तेलगू—परिंट। कनाड़ी—तएडा-सिसर। लेटिन—Ourohorus Triloocularis (कोरचोरस ट्रिलोक्यूलेरिस)।

वर्णन—

यह एक छोटी जाति की वनस्पति है जो बरसातके दिनोंमे पेदा होती है। इसके पौधे १ से लेकर ३॥ फीट तक ऊचे होते हैं। इसके पत्ते सुन्दर कगारीदार १ से ४ इच तक लम्बे, फूल पीले और फली सिधारी या चौधारी १ से लेकर ३॥ इच तक लम्बी होती है। इसमे बहुत बीज होते हैं। इन बीजों का रग खाकी या काला होता है। इनके दोनों सिरे दबे हुए रहते हैं। इनका स्वाद कड़वा होता है। इसके बीजों को राजजीरा कहते हैं। बरसात मे गरीब लोग इसका साग बना कर खाते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मत से नाडीका शाक कड़वे और मीठेके भेदसे दो प्रकार का होता है। कडवा शाक रक्तपित्त नाशक तथा कृमि और कुष्ठ को नष्ट करता है। मीठा शाक पिच्छिल, शीतल, मलरोधक और कफवात कारक होता है।

नाड़ीके सूखे पत्ते ज्वर, विशेष करके पित्त और कफ ज्वर को नष्ट करने वाले होते हैं। ये जलदोष नाशक, पित्त, कफ और आम वात विनाशक हैं। अफीम के विष को दूर करनेके लिये इसके ताजे पत्तों का रस दिया जाता है।

इसके बीज स्नेहन और आनुलोमिक होते हैं। इनको ४० रत्ती की मात्रामें देनेसे यकृत् की क्रिया सुधरती है। आमवात और गुल्ममें भी ये उपयोगी हैं। ज्वरमें इसके बीजों और पत्तों की फाट बनाकर दी जाती है।

यूनानी मत

यूनानी मतसे इसकी दोनों जातियां सर्द और तर होती हैं। ये पित्तज बीमारियोंमें लाभदायक हैं। इसके पत्तों को भाफ से नरम करके फोड़ेपर बांधनेसे फोड़ा पक जाता है। रक्तविकार में भी यह लाभदायक है। इसको सूखी या गीली जलाकर उस भस्म को थोड़ी शहदके साथ चटानेसे तिल्ली आदि यन्त्रों के बहाव की रुकावट मिट जाती है। इसके पत्तों का हिम या फाट पिलानेसे ज्वर का दाह मिट जाता है। इसके तीन रत्ती चूर्णमें तीन रत्ती हलदी मिलाकर फक्की देनेसे तीव्र आमातिसार मिटता है। संखिया खानेवालेको ३।८ तोला नाडी के पत्तों को पीस कर पिलानेसे जहर उतर जाता है।

इसके अधिक सेवन से पेटमें वायु पैदा होती है और मेदा कमजोर हो जाता है।

---

## नानका

नाम—

बंगाल—नानका। मुण्डारि—डेमडेमारा। तेलगू—निरोकंच। लेटिन Monochoria Vaginalis (मोनो कोरिया व्हेगिनेलिस)।

वर्णन—

यह वनस्पति सारे भारतवर्ष, सीलोन और मलायामें पैदा होती है। इसके पत्ते ६ से लेकर १० सेंटिमीटर तक लम्बे और ३-५ से ५ सेंटिमीटर तक चौड़े होते हैं। इसके फूल कुछ ललाई लिये नीले रंगके होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

दन्तशूलको मिटानेके लिये इसकी जड़को चबाना चाहिए इसकी छालको शक्कर के साथ लेनेसे दमेमें लाभ होता है।



# नावर

नाम—

पंजाब—नावर, वेली, हदर, मडरी, मुराघ, इत्यादि। कुमाउ—पापेर। इंग्लिश—Blackcurrant, quinsy Berry। लेटिन—Ribes Nigrum (रायवस नायग्रम)।

वर्णन—

यह वनस्पति पंजाब और काश्मीरमें विशेष रूपसे पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके फल ठंडे, मृदुविरेचक, श्लक्ष्ण और वेदनानाशक होते हैं।

इंग्लैंडमें प्राचीनकालसे इसके फलोंसे एक प्रकारका अवलेह (Folly) तैयार किया जाता है जो गलेकी सूजन (Sore Throat) को दूर करनेके लिये लगाया जाता है। इसके पत्तों या छालका काढ़ा कुल्ले करनेके काममें लिया जाता है।

स्पेन, फ्रांस और इटालीमें इसके फल और पत्ते मूत्रल और कामोत्तेजक माने जाते हैं।

इसके ताजा पत्ते ग्रन्थिवातके ऊपर सूजन और दर्दको दूर करनेके लिये लगाये जाते हैं। इङ्गलिश वनस्पति शास्त्री इसके पत्तों और फूलोंको जङ्गली गाजरके बीजोंके साथ मिलाकर जलोदरमें (Passine Dropsy) किडनीको (गुर्दे) उत्तेजित करनेके लिये देते हैं।

---

# नारङ्गी

नाम—

संस्कृत—नारंग, नागरंग, सुरप्रिय, इरावत, गन्धाढय योगरंग, इत्यादि। हिन्दी—नारंगी, सन्तरा, अमृत फल, कामलानींबू। बम्बई—नारंगी, सन्तरा। बंगाल—कामलानींबू, नारंगी। गुजराती—नारंगी। मराठी—सन्तरे। पंजाब—नारंगी, सन्तरा। तेलगू—नारंगमू। तामील—नारंगम्। अंग्रेजी—China Orange, orange Tree लेटिन—Citrus Aurantium (सायट्रस ओरंटियम)।

वर्णन—

नारंगी या सन्तरेका वृक्ष सारे भारतवर्षमें, विशेष कर नागपुर और सिलहटमें पैदा होता है। नारंगी या सन्तरेका फल सारे भारतवर्ष में आमतौरसे खाया जाता है। इसको सब कोई जानते हैं। इसलिये इसके विशेष परिचयकी आवश्यकता नहीं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदके मतसेनारगी खट्टी और मीठी दोनो प्रकारकी है। यह कफ, पित्त और आमकारक है। यह कठिनता से पचनेवाली, कुछ दस्तावर, अत्यन्त अम्ल, वातनाशक और मधुर होती है। खट्टी नारंगी—हृदयको हितकारी, अम्ल, वलवर्धक, त्रिघ्न, भारी, रुचिकारक,सारक, उष्ण,सुगन्धित,स्वादु तथा आम,कृमि, वात, श्रम और शूलको नष्ट करती है।

सन्तारे का रस ज्वरनाशक, प्यास बुझाने वाला, ग्राही, रक्त पित्तनाशक और रक्त वर्धक है। इसके फलकी छाल दीपन, मृदुस्वभावी, सुगन्धित और कटु पौष्टिक है। इससे भूख लगती है और आमाशयको बल मिलता है। इस फूकेल मृदु स्वभावी होते हैं।

सन्तरेका रस ज्वरके अन्दर बहुत लाभदायक होता है। ज्वरमें ५।६ सन्तरे रोज खानेको देने पर भी कोई नुकसान नहीं होता। अतिसार और वातरक्तमें भी यह उत्तम पथ्य है।

इसके फलकी छाल शिथिलता प्रधान अजीर्ण, अग्निमांद्य और निर्बलतामें देते हैं। इसकी छाल १ औंस, ताजी नीमकी छाल १ ड्राम, लौंग आधा ड्राम और खौलता हुआ पानी १० औंस, इन सबको एक बर्तन में १५ मिनिट तक बन्द करके फिर छानकर १ से २ औंस तकका मात्राम देनेसे आमाशय पर अच्छी क्रिया होती है।

कम्बाडिया मे इसके पत्ते मोकाइटीज की बीमारीमें उपयोगमें लिये जाते हैं। नारंगीके फूलोंका अर्क निकाल कर १ या २ औंसकी मात्रामें हिस्टीरिया, मृगी और दूसरी नर्वस बीमारियों में आक्षेप-निवारक और उपशामक वस्तुकी तरह देते हैं।

नारंगीका पुल्टिस—विसर्पिका इत्यादि बहुत से चर्म रोगों मे लाभदायक होता है। नारंगीका फल विषनाशक भी माना जाता है। इसका रस उत्तेजक और शांतिदायक होता है।

सन्तरेके फलमें व्हिटामिन "ए" और "बी" साधारण मात्रामे तथा व्हिटामिन "सी" विशेष मात्रामें पाया जाता है। १॥ छटाक नारंगीके रसमें व्हिटामिन "सी" ४८ मिलिग्रामकी मात्राम पाया जाता है। अत जिन लोगोंकी हड्डियां और दांत कमजोर हों, पायरियाकी शिकायत हो, पाचन शक्ति की कमजोरी हो, रक्तभार बढ़ा हुआ हो, लकवा या गठियाकी शिकायत हो, या गर्भवती स्त्रीको अधिक वमन आती हो। ऐसे रोगोंमे नियमित रूपसे सन्तरेका रस सेवन करनेसे बड़ा लाभ होता है। सन्तुलित भोजनके साथ नित्य आधसेर सन्तरेका रस पीनेसे पायरिया रोग नष्ट होजाता है। इसमें व्हिटामिन A B C के अलावा लोहा और अन्य कई पदार्थ पाये जाते हैं। सन्तरेका प्रयाग तन्दुरुस्ती और बीमारी दोनोमे ही किया जासकता है।

मीठे सन्तरेका रस बुखार, दमा और निमोनियामे भी दिया जाता है। उपवासके दिनोंमे इसके रससे बहुत सहारा मिलता है, साथ ही लाभ भी होता है। तन्दुरुस्ती की हालतमें झिल्लीके साथ सन्तरेकी फाकों को खाना चाहिये।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जे में सर्द और तर है। नारंगी के फूल उत्तेजक हैं। इनको सूंघनेसे सरदी और जुकाम दूर होता है। इसका काढा ज्वर में लाभदायक है। इसका रस पौष्टिक, मूत्रल, बवासीर में लाभदायक, बढी हुई तिल्लीको अच्छी करने वाला, छातीके दर्दमें लाभदायक, और कटिवातको दूर करने वाला होता है। इसका फल खट्टा, मीठा, ठंडा, कामोत्तेजक, आंतोंका संकोचन करनेवाला लीवर को शक्ति देने वाला, वमन और मतली रोकने वाला, पित्त प्रकोपको दूर करने वाला, और छातीके दर्द में लाभदायक है। इसका छिलका कृमि नाशक, वमन और चर्म रोगोंको दूर करनेवाला होता है। इस छिलके का रस पित्तज अतिसारमें लाभदायक है।

उपयोग—

गर्भवतीका अतिसार—मीठी नारंगीका शरबत पिलानेसे गर्भवतीका अतिसार मिटता है।

उदर शूल और मंदाग्नि—नारंगीकी फाकका छिलका उदरशूलमें लाभदायक है। दूसरी उपयोगी औषधियोंके साथ मिलाकर इसको देनेसे साधारण मंदाग्नि और सब शरीरकी निर्बलता मिटती है।

बाइंठे—नारंगी के फूलों का भफकेसे खींचा हुआ अर्क १॥ तोलेसे ४ तोले तककी मात्रामें पिलाने से बाइंठे मिटते हैं।

स्त्रियोंका आवेश रोग—नारंगीके फूलो का खिंचा हुआ अर्क पिलानेसे स्नायुजाल की एंठन और स्त्रियों का आवेश रोग मिटता है।

ज्वर और खांसी—नारंगी की फाक का गूदा निकालकर उस पर शक्कर डालकर उसको गरम करके खिलानेसे ज्वर और खांसी में लाभ होता है।

पित्त का अतिसार—नारंगी का शर्बत पिलानेसे पित्त का अतिसार मिटता है।

वमन—नारंगी के छिलके का चूर्ण बनाकर चटानेसे वमन मिटती है।

पेटके कृमि—नारंगीके छिलके के क्वाथमें हींग डालकर पिलानेसे पेटके कृमि मिटते हैं।

दाद—ऐसे दाद जिनके भी तरका भाग सफेद रहता है और ऊपर खुरट रहता है नारंगी का पुल्टिस बांधनेसे मिट जाता है।

रुधिर विकार—चिरायतेके अर्कमे नारंगी का शरबत मिलाकर पिलानेसे रुधिर शुद्ध होता है।
खुजली—खुजली और फुन्सी पर इसके ताजा छिलकों को रगड़नेसे लाभ होता है।

---

# नारी

नाम —

पजाब—नारी। बगाल—वेखुअबाज। मराठी—धाकटाशेरल। मुडारि—गरारा, नेआरा। तामील—अटलारी। तेलगू—काटेमाली। लेटिन—*Polygonum Barbatum* (पाली गोनम बारबेटम)।

वर्णन—

यह एक चूका वर्ग की वनस्पति है। इसका पौधा बहुत छोटा होता है। इसके पत्ते ७५ से १२.५ सेन्टिमीटर तक लम्बे होते हैं। इसके फूल सफेद और छोटे होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

मलाबारमें इसके बीज कालिक उदर शूलको दूर करनेके लिये दिये जाते हैं। पटनेमें इसकी जड़ एक सकोचक और ठडा औषधि की तरह काममें ली जाती है। चीनमें इसके पत्तों का काढ़ा घावों को धोनेके लिये उपयोगी माना जाता है।

---

# नारियल

नाम —

सस्कृत—नारिकेल, दृढफल, लागली, तुग, स्कदफल, श्रीफल, तृणराज, सदाफल, महापुष्प, महाफल, नीलतरु, तोयगर्भ, इत्यादि। हिन्दी—नारियल, श्रीफल, खोपरा। बगाल—नारिकेल, डाब, नारियल। बाबे—नारियल, महाद, माड। गुजराती—नारियल, नारेल। तेलगू—नालिकेरम्मू, नारि केदामू, मागली। तामील—टेंगाम, येलि, नालिगेरम। कोंकण—माड। फारसी—जौज हिन्दी, थादिज, नर्गिल। लेटिन—*Cocos nucifera* (कोकोस नुसीफेरा)। इंग्लिश—Cocoanut कोकोनट।

वर्णन—

नारियल का वृक्ष बहुत बडा होता है। यह खजूर और ताडके वृक्षोंके समान एकदम

सीधा और ऊंचा बढता है। इसके ऊपरके भागमें खजूरके समान पत्ते लगते हैं। उन्हीं पत्तोंके बीच नारियल लगते है। हिन्दू धर्म शास्त्रोंमें नारियल को मंगल द्रव्य माना गया है। इसलिये इसे सब कोई जानते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदके मतसे नारियल भारी, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्धक, कठिनता से पचनेवाला, वस्तिशोधक, बलकारक, पौष्टिक, कफकारक, स्वादिष्ट, संकोचक तथा शोष, तृषा, पित्त, वातपित्त, रुधिर दोष, दाह और क्षत क्षयका नाश करता है।

यह स्वादु रसयुक्त, पाकमें मधुर, हृदय को हितकारी, भारी, पित्तनाशक, मदकारक, श्रम नाशक, और कामशक्ति को बढानेवाला है।

कोमल नारियल—पित्तज्वर, रक्तविकार, तृषा, वमन, दाह और रक्तपित्त से उत्पन्न हुए रोगों का शीघ्र ही नाश करता है।

पका नारियल—दाह कारक, पित्तजनक, भारी, मलरोधक, रुचिदायक, मधुर, बलवर्धक और वीर्यवर्धक होता है।

सूखा नारियल—सूखा नारियल कठिनतासे पचनेवाला, दाह कारक, भारी, स्निग्ध, मलरोधक तथा बल, वीर्य और रुचि को पैदा करनेवाला होता है।

नारियल का दूध—नारियल का दूध बलकारक, रुचिदायक, भारी, पचनेमें स्वादिष्ट, स्निग्ध, वीर्य वर्धक, दाह कारक, किंचितगरम तथा वात, कफ, गुल्म और खांसी को दूर करता है।

नारियल का पानी—कच्चे नारियल का जल विरेचक, शीतल तथा वमन, मूर्च्छा और पित्त ज्वर को दूर करता है। पके नारियल का जल मलरोधक, भारी और शीतल होता है।

नारियल का फूल—नारियल का फूल शीतल, मलरोधक और रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और सोम रोग को दूर करता है। नारियलके फूल का जल भारी, वीर्यवर्धक, तत्काल मद कारक, अत्यन्त स्निग्ध, अम्ल, कफकारक, पित्तजनक तथा कृमि और वात नाशक है।

नारियल की ताडी—नारियल की ताड़ी अत्यन्त स्निग्ध, तत्काल मदकारक, भारी और वीर्यवर्धक होती है। दुपहरके पश्चात् यही ताडी अम्ल भाव युक्त होकर कफ कारक, पित्त जनक और कृमि नाशक हो जाती है।

नारियल का तेल—नारियल का तेल वाजिकरण, भारी, क्षीणधातु वाले मनुष्योंके लिये पौष्टिक, वातपित्त नाशक तथा मूत्राघात, प्रमेह, श्वास, खासी, राजयक्ष्मा, और स्मरण शक्ति की कमीमे लाभदायक है तथा क्षत रोग को भरने वाला है।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे इसकी छाल दांतों के लिये और गीली खुजलीके लिये लाभदायक है। इसका फल मीठा, कामोत्तेजक मूत्रल और ज्वर, पक्षाघात, बवासीर, यकृत सम्बन्धी रोग और रक्त सम्बन्धी रोगोंमे लाभदायक है। इसके सेवनसे मनुष्य का वजन बढता है। सर्द प्रकृति वाले लोगों को होने वाले कटिवात और किडनीके दर्दमें यह लाभदायक है। इसका खमीर उठाया हुआ रस या इसकी ताडी अग्निवर्धक और कृमिनाशक होती है। इसका तेल मीठा, बलवर्धक, मूत्रल, कृमिनाशक, बालों को बढाने वाला और कमरके दर्द, बवासीर, गीली खुजली और सूजन को नष्ट करनेवाला होता है।

इसकी जड एक मूत्रल द्रव्य की तरह काममे ली जाती है। गलेके छालों को दूर करनेके लिये यह एक सकोचक द्रव्य की तरह काममे ली जाती है। मूत्र सम्बन्धी बीमारियोंमे भी यह उपयोगी मानी जाती है।

इसकी जटा घावमे से बहनेवाले खूनको रोकनेके लिये और रगड तथा जोंकके काटने पर उपयोगी माना जाता है।

इसके फूल सकोचक माने जाते हैं। इसकी ताजा ताड़ी शान्तिदायक और मूत्रल मानी जाती है।

इसका अपरिपक्व फल बच्चों को होने वाले गलेके छालोंमे लगाया जाता है। नारियल का पानी एक बहुत अच्छा तृषाशामक पदार्थ है। प्यास युक्त ज्वरमें और पेशाबसम्बन्ध रोगोंमे यह उपयोगी है। यह चाहे जितनी मात्रामे बिना किसी हानि के दिया जाता है। यह रक्त को भी शुद्ध करता है। बगालके अन्दर आमतौर पर यह विश्वास किया जाता है कि नारियल का दूध अण्डकोषाकी सूजन और अण्डकोषोंमे पानी भर जानेपर अच्छा लाभ करता है।

इसका ताजा दूध कमजोरी को दूर करनेके लिये सफलता पूर्वक दिया जाता है। क्षय की प्रारम्भ अवस्थामे और धातु विकृति से होने वाली कमजोरी पर यह बहुत लाभदायक है। बड़ी मात्रामे देनेसे यह मृदु विरेचक का काम करता है और कभी कभी इससे जुलाब भी हो जाता है।

सीधा और ऊंचा बढ़ता है। इसके ऊपरके भागमें खजूरके समान पत्ते लगते हैं। उन्हीं पत्तोंके बीच नारियल लगते हैं। हिन्दू धर्म शास्त्रोंमें नारियल को मंगल द्रव्य माना गया है। इसलिये इसे सब कोई जानते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदके मतसे नारियल भारी, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्धक, कठिनता से पचनेवाला, बस्तिशोधक, बलकारक, पौष्टिक, कफकारक, स्वादिष्ट, सकोचक तथा शोष, तृषा, पित्त, वातपित्त, रुधिर दोष, दाह और क्षत क्षयका नाश करता है।

यह स्वादु रसयुक्त, पाकमें मधुर, हृदय को हितकारी, भारी, पित्तनाशक, मदकारक, श्रम नाशक, और कामशक्ति को बढानेवाला है।

कोमल नारियल—पित्तज्वर, रक्तविकार, तृषा, वमन, दाह और रक्तपित्त से उत्पन्न हुए रोगों का शीघ्र ही नाश करता है।

पका नारियल—दाह कारक, पित्तजनक, भारी, मलरोधक, रुचिदायक, मधुर, बलवर्धक और वीर्यवर्धक होता है।

सूखा नारियल—सूखा नारियल कठिनतामें पचनेवाला, दाह कारक, भारी, स्निग्ध, मलरोधक तथा बल, वीर्य और रुचि को पैदा करनेवाला होता है।

नारियल का दूध—नारियल का दूध बलकारक, रुचिदायक, भारी, पचनेमें स्वादिष्ट, स्निग्ध, वीर्य वर्धक, दाह कारक, किंचितगरम तथा वात, कफ, गुल्म और खासी को दूर करता है।

नारियल का पानी—कच्चे नारियल का जल विरेचक, शीतल तथा वमन, मूर्च्छा और पित्त ज्वर को दूर करता है। पके नारियल का जल मलरोधक, भारी और शीतल होता है।

नारियल का फूल—नारियल का फूल शीतल, मलरोधक और रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और सोम रोग को दूर करता है। नारियलके फूल का जल भारी, वीर्यवर्धक, तत्काल मद कारक, अत्यन्त स्निग्ध, अम्ल, कफकारक, पित्तजनक तथा कृमि और वात नाशक है।

नारियल की ताड़ी—नारियल की ताडी अत्यन्त स्निग्ध, तत्काल मदकारक, भारी और वीर्यवर्धक होती है। दुपहरके पश्चात् यही ताडी अम्ल भाव युक्त होकर कफ कारक, पित्त जनक और कृमि नाशक हो जाती है।

नारियल का तेल—नारियल का तेल वाजिकरण, भारी, चीणधातु वाले मनुष्योंके लिये पौष्टिक, वातपित्त नाशक तथा मूत्राघात, प्रमेह, श्वास, खांसी, राजयक्ष्मा, और स्मरण शक्ति की कमीमे लाभदायक है तथा चत रोग को भरने वाला है।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे इसकी छाल दातों के लिये और गीली खुजलीके लिये लाभदायक है। इसका फल मीठा, कामोत्तेजक मूत्रल और ज्वर, पक्षाघात, बवासीर, यकृत सम्बन्धी रोग और रक्त सम्बन्धी रोगोंमे लाभदायक है। इसके सेवनसे मनुष्य का वजन बढता है। सर्द प्रकृति वाले लोगो को होने वाले कटिवात और किडनीके दर्दमे यह लाभदायक है। इसका खमीर उठाया हुआ रस या इसकी ताडी अग्निवर्धक और कृमिनाशक होती है। इसका तेल मीठा, बलवर्धक, मूत्रल, कृमिनाशक, बालो को बढाने वाला और कमरके दर्द, बवासीर, गीली खुजली और सूजन को नष्ट करनेवाला होता है।

इसकी जड एक मूत्रल द्रव्य की तरह काममे ली जाती है। गलेके छालों को दूर करनेके लिये यह एक संकोचक द्रव्य की तरह काममे ली जाती है। मूत्र सम्बन्धी बीमारियोंमे भी यह उपयोगी मानी जाती है।

इसकी जटा घावमे से बहनेवाले खूनको रोकनेके लिये और रगड तथा जौंकके काटने पर उपयोगी मानी जाता है।

इसके फूल संकोचक माने जाते है। इसकी ताजा ताड़ी शान्तिदायक और मूत्रल मानी जाती है।

इसका अपरिपक फलबच्चों को होने वाले गलेके छालोंमे लगाया जाता है। नारियल का पानी एक बहुत अच्छा शुधागामक पदार्थ है। प्यास युक्त ज्वरमें और पेशाबसम्बन्ध रोगोंमे यह उपयोगी है। यह चाहे जितनी मात्रामे बिना किसी हानि के दिया जाता है। यह रक्त को भी शुद्ध करता है। बंगालके अन्दर आमतोर पर यह विश्वास किया जाता है कि नारियल का दूध अण्डकोषोंकी सूजन और अण्डकोषोंमे पानी भर जानेपर अच्छा लाभ करता है।

इसका ताजा दूध कमजोरी को दूर करनेके लिये सफलता पूर्वक दिया जाता है। क्षय की प्रारम्भ अवस्थामे और धातु विकृति से होने वाली कमजोरी पर यह बहुत लाभदायक है। बड़ी मात्रामे देनेसे यह मृदु विरेचक का काम करता है और कभी कभी इससे जुलाब भी हो जाता है।

कम्बोडियामें इसकी जड़, इसका दूध, इसका तेल, इसका गूदा और इसकी नरेटी औषधि प्रयोगमें काममें ली जाती है। वहा इसकी जड मूत्रल मानी जाती है। इसकी जड का काढा सुजाक, ब्रोंकाइटीज और ऐसे यकृत सम्बन्धी रोगों में जिनमें पीलिया की शिकायत नहीं होती है दिया जाता है। इसका दूध विरेचक समझा जाता है। और यह कफके साथ खून जाने की बीमारीमें और प्रवाहिक ज्वर में दिया जाता है इसका तेल प्रधानतया मलहम बनानेके काममें लिया जाता है और यह मलहम गीली खुजली और दाद पर लगाया जाता है। इसका गोला दूसरी औषधियों के साथमें चमडेपर होने वाले व्रणों और खासकर नाक की श्लेष्मिक झिल्ली पर होने वाले व्रणोंपर खिलानेके काममें लिया जाता है। इसकी लकडी बवासीरके इलाजमें उपयोगी मानी जाती है।

केस और महस्करके मतानुसार एक नारियलका दूध और उसका खोपरा बडे सवेरे खाली पेट खानेसे पेटमें पडने वाले चुन्ने ( Hook worm ) बाहर निकल जाते हैं।

सुआरोग और नारियल—

सुआ या सूतिका रोग प्रसूतिके समय स्त्रियोंको होनेवाला एक महा भयकर रोग है। इस रोगसे प्रतिवर्ष हजारों स्त्रियोंका जीवन खतरेमें पड जाता है। नारियलके द्वारा इस रोगकी चिकित्सा बहुत सफलतापूर्वक की जाती है। कोकणमें जहा कि नारियल बहुत पैदा होते हैं यह औषधि कोकाकी औषधिके नामसे प्रसिद्ध है। इसके बनाने की तरकीब इसप्रकार है।

नारियलके वृक्ष पर नारियल लगनेके पहिले नारियलका फूल लगता है। यह फूल जब कलीके रूपमें रहता है तब इसको नारियलका कोका या नारियलकी पोइ कहते हैं। ऐसी बिना खिली हुई एक पोइको लाकर उसका छिलका निकाल कर उसके अन्दरके दानोंको एक लकडीकी खरलमें डालकर बारीक कूट लेना चाहिये। फिर जायफल, जावपत्री, लवंग, मिर्च और सोंठ, ये सब चीजें २-२ तोला और केशर ०॥ तोला लेकर, पीसकर, कपडेमें छानकर उसमें मिला देना चाहिये। फिर इन सब चीजोंको उस लकडीकी खरलमें डालकर एक जीव हो जाने पर उसकी १४ गोलिया बना लेना चाहिये। अगर पोइ ताजी नहीं होती है तो औषधि भुरभुरी होनेसे गोलिया नहीं बनती है। अगर ऐसा हो तो उसमें थोडा गायका दूध मिला लेना चाहिये। पर जहा तक बने वहा तक ताजी पोइ लेना ही उत्तम होता है।

इन १४ गोलियोंमें से प्रतिदिन सवेरे शाम एक २ गोली पाव भर गायके दूधके साथ देना चाहिये। पथ्यमें सिर्फ गायका दूध पीनेको देना चाहिये। अगर सिर्फ अकेले दूधसे न रहा जाय तो थोडा साठी चावलका भात दिया जा सकता है। मुँहमें रुचि पैदा करनेके लिये कुछ अदरक भी दिया जा सकता है। मगर पानीका इस औषधिमें बहुत सख्त परहेज रखना

पडता है। प्यास लगने पर भी सिर्फ गायका दूध ही पिलाया जाता है। औषधि चलनेके समय अगर भूलसे भी रोगीको पानी दे दिया जाय तो उसके जीवनकी आशा नहीं रहती है।

रोगीकी स्थितिके अनुसार ७।१४ अथवा २१ दिन तक यह औषधि दी जाती है और औषधि पूरी होनेके पश्चात भी ४।५ दिन तक पानी पीनेका नहीं दिया जाता है। नहाना मना रहता है। यहा तक कि पानी का स्पर्श करनेकी भी मनाई रहती है। इसके पश्चात धीरे २ दूधका प्रमाण घटाते हुए भातका प्रमाण बढाते जाना चाहिये और धीरे २ पानी देना भी शुरू करना चाहिये।

इस औषधिको लेनेसे भूख अच्छी लगने लगती है। दूध पचता है जिससे शरीरमें रक्त वृद्धि होकर नाडी भरपूर चलने लगती है। चेहरे पर तेज और लाली दिखने लगती है। रोगीका प्रसन्नता अनुभव होने लगती है। पहिले ही सप्ताह मे इस औषधिका गुण दृष्टि गोचर होने लगता है। अगर भूख अच्छी तरह लगने लगे, दिन भरम ४।५ सेर दूध हजम होजाय और रोगके लक्षणों मे कमी दिखलाई दे तो यह औषधि अपना काम कर रही है ऐसा समझना चाहिये। अगर रोगकी प्रारंभिक स्थितिमें ही इसको दे दिया जाय तो बहुत जल्दी लाभ हो सकता है। सूतिका रोगके सिवाय क्षय, संग्रहणी और मंदाग्नि पर भी यह औषधि बहुत अच्छा काम करती है।

बड़ोदा स्टेटके चीफ मेडिकल ऑफिसर डॉक्टर सर भालचन्द्र कृष्ण भाटवडेकरने भी अपने अबला सजीवन ग्रथमे इस औषधिकी बहुत प्रशसा की है।

नारियलकी पाई सब जगह सुलभ नहीं होती है। जहा नारियलके वृक्ष होते हैं। वहीं पर यह प्राप्त हो सकती है। अत जिन लोगों का यह नहीं मिल सके उनका यह औषधि तयार रूपमें पनवेलके आर्यौषधि कारखानेसे मँगा लेना चाहिये। वहा पर इसकी २८ गोलिया ५ रुपये मे मिलती हैं।

जगलनी जडी बूटीके लेखक वैद्यशास्त्री शामलदास लिखते हैं कि हमारे पास सूतिका रोगवाली एक ऐसी स्त्री चिकित्साके लिये आई जो बम्बई के अनेकों नामांकित डॉक्टरों और वैद्योंके पास चिकित्सा करवा चुकी थी और वहाँसे उसको जवाब मिल चुका था। हमने उसको पनवेलमे मगाई हुई औषधि देना प्रारम्भ की और उसे सिर्फ दूधके पथ्य पर रखा। जिसके परिणाम स्वरूप वह असाध्य केस बहुत सफलताके साथ अच्छा होगया। इसी प्रकार बबईके सर आदमजी की फर्म पर काम करनेवाले एक मुनीम को जो कि संग्रहणीके भयंकर रोगसे पीडित था और जो बम्बई, जैपुर और इन्दौर वगैरे के प्रसिद्ध चिकित्सकोंसे इलाज करा चुका था और उसे कोई लाभ नहीं हुआ था। वह भी हमारे पास आया और हमने इसी औषधिके द्वारा आराम किया।

रासायनिक विश्लेषण—

रासायनिक विश्लेषणमे खोपरे के अन्दर मासवर्धक द्रव्य ५॥ प्रतिशत, चर्बी ३५॥। प्रतिशत और पानी ४६॥। प्रतिशत होता है। मलाबार में नारियल का गुड़ बनाया जाता है। इसमें पानी १॥ प्रतिशत, ईखजन्य शक्कर ८७३ प्रतिशत और इनव्हर्टशुगर ( Invert Sugar ) ६॥। प्रतिशत रहती है। सूखे हुए गुडमे ८९३ प्रतिशत शक्कर रहती है। कोमल नारियलके दूध मे ग्लूकोज ३॥ प्रतिशत और ईखजन्य शक्कर अल्प मात्रामे पाई जाती है। पके हुए नारियलके दूधमें ईखजन्य शक्कर ४। प्रतिशत होती है। मगर इसमे ग्लूकोज नहीं होता है। नारियल का तेल रसशास्त्र की दृष्टिसे सुहागके तेलके समान होता है। इसमे अम्लता रहती है। ताजे पके हुए नारियल को सुखाकर तुरन्त उसका तेल निकालनेसे उसमे अम्लता नहीं होती। इसका ताजा निकाला हुआ तेल चर्बी के बदलेमे काममें लिया जाता है और चर्बी की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध हो चुका है। मलहम तैयार करनेमे चर्बी की अपेक्षा नारियल का तेल विशेष उपयोगी होता है।

डॉक्टर देसाई के मतानुसार नारियलकी नरेटी जलाकर प्राप्त किया हुआ तेल कुष्ट नाशक होता है। नारियलके खोपरेका तेल केश वर्धक, कृमिनाशक, व्रणरोपक, कफको दूर करने वाला और सूजनको नष्ट करने वाला होता है।

कोमल नारियलका पानी शीतल, मूत्रल और तृपाशामक होता है। कोमल नारियलका दूध मूत्रल और शातिदायक होता है नारियलकी ताडी मलदायक, दीपन पाचक कोठेकी वायुको नष्ट करने वाली, ज्वर नाशक और वाजि करण होती है। इसका खोपरा कृमिनाशक होता है।

पेटमें चपटे कृमि पडने पर नारियलका खोपरा खिलानेसे वे जन्तु मर जाते हैं और कोई जुलाबकी दवा देने पर वे बाहर निकल जाते हैं। नारूके रोगमे खोपरेके साथ हींग देनेसे लाभ होता है। पके हुए नारियलका स्वरस खासी, क्षय और कमजोरी में दिया जाता है। इससे कब्ज मिट जाती है। आपरेशन या शस्त्र क्रिया करनेके पूर्व कोमल नारियलका दूध देनेसे रक्त स्राव कम होता है। कोमल नारियल का पानी ज्वर और सुजाकमें दिया जाता है। हैजेकी वमनको रोकनेके लिये भी यह उपयोगी है। पुराने नारियलको कसकरके उबाल करके निकाला हुआ तेल खासी और क्षय रोगमें काडलीव्हर आईलके बदलेमें दिया जाता है। इस तेलको निकालने समय अगर उसमें थोडा अगर डाल दिया जाय तो वह तेल उत्तम व्रण रोपक हो जाता है। ज्वरकी वजहसे अगर किसीके बाल गिर गये हों तो सिरमें नारियल का तेल डालनेसे नये बाल पैदा हो जाते हैं। मेद रोगमे खोपरेका तेल खिलानेसे शरीरके अन्दर बढी हुई चर्बी कम हो जाती है।

उपयोग—

दाद—नारियलकी नरेटीके टुकडे करके उनका हाडीम भरकर पाताल यन्त्रसे तेल निकाला जाता है। इस तेलका दाद पर लगानेसे दाद मिट जाता है।

अग्निदग्ध—पके खोपरेमे से निकाले हुए दूधमें तेल डालकर आगपर औटाकर अग्निसे जले हुए स्थानपर और सिरकी गजपर लगाया जाता है।

कफक्षय—खोपरेको पानीके साथ पीसकर पानीमें उसका दूध बनाकर पिलानेसे कफ क्षयके रोगियों को बड़ा लाभ होता है।

रक्तश्राव—नारियलकी शाखाके नीचेके भागमें बाहरकी ओर रुई जैसा एक कोमल, हलका और भूरे रंगका पदार्थ चिपका रहता है। उसको घाव, चोट या जोंकके डकपर लगानेसे खूनका बहना बन्द हो जाता है।

चर्मरोग—नरेटीका चोया लगानेसे सब प्रकारके चर्मरोग मिटते हैं।

हैजेकी वमन—हैजेकी वमन अगर किसी दूसरी औषधिसे बन्द न होवे तो नारियलका जल पिलानेसे अवश्य बन्द होजाती है।

गर्भावस्थामे बालकको सुन्दर बनाना— इसके वृक्षमें से निकलने वाली ताडी या मीठा मादक रस गर्भवती स्त्रीको हर सप्ताहमे २।४ बार लगातार पिलाते रहनेसे गर्भमें बालकका रंग पलट जाता है। अर्थात काले रगकेमा बापके बालक का रग गेहुँआ, गेहुँए रगवाले मा बापोंके बालक का रग गोरा। और गोरे रग वाले मा बापों के बालकों का रग यूरोपियनों की तरह हो जाता है।

पित्तज्वर -नारियलके फूलोके गुलकन्दमें खस और सफेद चन्दनका बूरा मिलाकर पानीके साथ पिलानेसे पित्त ज्वरमें बहुत लाभ होता है, वमन मिट जाती है, कलेजेमें ठडक होती है और अतिसार तथा मुखपाक मिटता है।

हिचकी—नारियलकी जटाकी राखको पानीमे घोल कर उस पानीको नितार कर पिलानेसे हिचकी आना बन्द हो जाता है।

चोट और मोच—पुराने नारियलकी गिरीको बारीक कूटकर उसमे चौथाई हिस्सा पीसी हुई हल्दी मिलाकर पोटलीमें बाध कर सेक करनेसे चोट और मोचकी पीडा तथा सूजन मिट जाती है।

आधा शीशा—नारियलके पानीको नाकमे टपकानेसे आधा शीशीमे लाभ होता है।

शीतला—दूध पीने वाले बालक की माको ७ दिन तक नारियलकी गिरी खिलानेसे बच्चेको शीतला कम निकलती है।

गर्भाशयकी पीड़ा-प्रसूतिके पश्चात् गर्भाशयमें पीड़ा होती होतो खोपरा खिलानेसे लाभ होता है।

---

# नारदेन

नाम—

यूनानी—नारदेन।

वर्णन—

नारदेन एक प्रकारके घासकी खुशबूदार जड़ होती है। इसका रंग पीला हलदीके समान होता है। नेत्र बाला की तरह बहुतसे तार इस पर लगे हुए होते हैं। जड़की उत्तमता उसके मोटेपन, उसकी सुगन्ध और उसके पीले रंगसे मानी जाती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जे में गरम और तीसरे दर्जे में खुश्क है। इसको पीनेसे फालिज, लकवा और पीलियामें लाभ होता है। पेशाब और मासिक धर्म अधिक आता है। सूजनमें भी लाभ पहुँचता है। इसके काढेके टबमें बैठनेसे यकृत, गुर्दे और गर्भाशयकी बीमारियोंमें लाभ पहुँचता है। इसको गरम मलहमों में भी शामिल करते हैं।

---

# नारू की बूटी

नाम—

हिन्दी—यूनानी—नारूकी बूटी।

वर्णन—

यह एक क्षुद्र जातिकी वनस्पति है। इसका पौधा जमीनसे सिर्फ ४ अंगुल ऊंचा उठता है। इसमें बहुत सी डालियां तारके मुआफिक निकलती है। ऐसा मालूम होता है मानों तारोंका गुलदस्ता हो। इसकी डालियोंके चारों तरफ बालके समान तंतु रहते है। इसके फूलकी पॅखडियां गुलाबी होती है। फूल बहुत छोटा होता है। फूल पकने पर उसमें घुंडी बंधती है। यह धनियेके दानेसे भी छोटी होती है और दानोंके अन्दर बीज होते हैं। यह वनस्पति नारूके बीमारोंके लिये मुफीद है। इसीलिये इसको नारूकी बूटी कहते हैं।

गुण दोष और प्रभाव—

इस सारी वनस्पतिको पीसकर नारू पर लेप करनेसे नारू निकल जाता है ।

---

# नावां

नाम —

संस्कृत—रक्तपूरक । हिन्दी—नावा । यूनानी नाय ।

वर्णन—

यह एक छोटी जातिकी वनस्पति है । जो राजपुताना और मालवेमे बहुत पैदा होती है । इसकी छोटी और बडी दो जातिया होती है । इसकी शाखाएँ पतली और गिरहदार होती हैं । इसके पत्ते लम्बे और चौडाई लिये हुए होते हैं । इसके पत्तोंका स्वाद बहुत कडवा होता है । कड़वेपनमे यह कुनैनसे कम नहीं होती ।

गुणदोष और प्रभाव—

राजपूताना और मालवामे यह वनस्पति बुखारका एक घरेलू इलाज है । यहाके लोगों का विश्वास है कि इसके पत्तोंको ३ दिन तक घोटकर पिलानेसे कैसा ही तीव्र बुखार हो निकल जाता है । इसके १ तोला पत्तोंको २१ मिरचोंके साथ घोटकर १ दिन तक पीनेसे नारू बिलकुल निकल जाता है ।

यूनानी मत—

यूनानीमत से यह तीसरे दर्जेमे गरम और खुश्क है । वायु और कफको मिटाती है । भूख बढाती है । इसके पत्तोंका शीत नियोस जीरा, काली मिरच और लहसनके साथ देनेसे मासिक धर्म और पेशाब साफ होता है । गठिया और अर्धाङ्गवायु मे भी यह मुफीद है । इसके सेवनसे पेटके कीड़े मर जाते हैं ।

# नासपाती

नाम—

संस्कृत—अमृतफल। हिन्दी—नासपाती। काश्मीर—अमरूद, वतक, किश्ता वाहि नासपाती। अफगानिस्तान—अमरूचा। पजाव—वातग, वतक, चारकेत, ज्ञी, नाक, नासपात सकेत, टाग, टागी। तामील—पेरीकेइ। तेलगू—वेरीपाइ। अग्रेजी—Pear लेटिन-Pyrus Communis (पयरस कम्यूनिस)।

वर्णन—

नासपातीका बडा वृक्ष होता है। इसके पत्ते अमरूदके पत्तोंक वरावर मगर कुछ चौ होते हैं। इसकी कई जातिया होती हैं। जैसे—जगली, पहाडी, वस्तानी, इत्यादि। वस्तानी भी खुरासानी, चीनी, काश्मीरी, इत्यादि कई जातिया होती है। इसमे चीनकी नासपाती सबसे अच्छी होती है। काश्मीरकी नासपाती भी वहुत मीठी होती है जिसको नाक कहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे नासपाती धातुवर्धक, मधुर, भारी, रुचिकारक, अम्ल, वातनाशक और त्रिदोषको शान्त करनेवाली होती है।

यूनानी मत—

यूनानीमतसे यह दूसरे दर्जेमे गरम और तर है। मीठी नासपाती समशीतोष्ण होती है।

खाटी नासपाती देरसे पचनेवाली और काबिज होती है। इसके लेपसे नजलेमे लाभ होता है, यह दिमागमे तरावट पैदा करती है, दिल और आमाशयको ताकत देती है, पागलपन को मिटाती है, तृषाशामक है, मसानेकी जलन व सूजनको शान्त करती है, दिमागमें गेस चढनेसे रोकती है, शफरी (चीनी नासपाती) प्यास और पित्तको शात करती है, फेफडेके दर्दको मिटाती है, वमनको रोकती है। इसको कुचल कर रस निकाल कर उसका सत तैयार करके देनेसे मेदेको ताकत है मिलती और दस्त वन्द होजाते हैं। इसके लेपसे आखकी सूजन उतरती है, इसके सेवन से कफके साथ खून जाना रुकता है। इसके बीज फेफडेके दर्दको दूर करते हैं, धातुवर्धक हैं और आमाशयके कीडोंको मारकर निकाल देते हैं।

इसके वृक्ष का गोंद सूजन को उतारता है। दोषों को पकाता है। फेफड़े के दर्द और

जखममे मुफीद है। इसके पत्तो का पीसकर पिलानेस सापके विषम लाभ होता है। इसके पत्तों व लकड़ी की राख जखम पर भुरभुरानसे जखम भर जाता है।

मुजिर—यह सर्द मिजाज के बुड्ढा और कफ प्रकृति वालोके पेटमें फुलाव और उदर शूल पैदा करती है। कच्ची खानेसे गुर्देका नुकसान पहुँचाती है। इसका गोंद तिल्ली को नुकसान पहुँचाता है।

प्रतिनिधि—बिही।

मात्रा—बीज की १४ माशे और गोंद की ६ माशे।

उपयोग—

रक्तातिसार—नासपातीके शरबतमे बेलगिरि या अतीस मिलाकर चटानेसे रक्तातिसार मिटता है।

रक्त की वमन—इसके शरबतमें बेर की मींजी भुरभुराकर चटानेसे रक्त की वमन मिटती है।

पित्त की मस्तक पीड़ा—नासपातीके स्वरसमें शक्कर डालकर पिलानेमे पित्त की मस्तक पीड़ा मिटती है।

खूनी बवासीर—इसके मुरब्बेमे नागकेसर मिलाकर खिलानेसे बवासीर का खून बन्द होता है।

मन्दाग्नि—इसके रसमे पीपल भुरभुराकर पिलानेसे पित्त की मन्दाग्नि मिटती है।

अरुचि—इसके रसमे सेंधा निमक, काली मिरच और भुना हुआ जीरा भुरभुराकर चटानेसे अरुचि मिटती है।

---

## नासपाती खट्टी

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मतसे यह पहले दर्जेमें खुरक होती है। मेदे और जिगर को ताक्त देती है। भूख पैदा करती है। मतली को रोकती है। खून और पित्त की तेजी को शान्त करती है। शरीर में नया खून पैदा करती है।

इसको शराब पीनेके बाद खाना और इसको खाने के बाद स्नान करना बहुत बुरा है।

# नासपाती जंगली

गुणदोष और प्रभाव—

वर्णन—

इसका वृक्ष साधारण नासपातीसे छोटा और फल भी छोटा होता है। यह दूसरे दर्जे में सर्द और तीसरे दर्जेमे खुश्क है। कब्ज पैदा करती है, पेटमे सुद्दे जमाती है, इसको सुखा कर चूर्ण करके खानेसे दस्त बन्द होते हैं। इस चूर्ण को जखम पर छिड़कनेसे जखम भर जाता है।

---

# निर्मली

नाम —

संस्कृत—कतकम, तोयप्रसादनम्, अम्बुप्रसाद, तिक्तमरिच, गुच्छफल। हिन्दी—निर्मली पायपसारी। बंगाल - निर्मली। बम्बई-गजराह, निर्मली। मध्यप्रान्त—कुथी। दक्षिण—चिलबिज। मराठी—निर्मली, चिलबिंग, गजरा। पंजाब—निर्मली। तामील—अक्कोलम, कदालि तेलगू—अड्डूगू। उर्दू—निर्मली। इंग्लिश—Clearingnut Tree लेटिन—Strychnos Potatorum ( स्ट्रिकनस पोटेयेरम )।

वर्णन—

निर्मली के वृक्ष मध्य प्रान्त, दक्षिणी भारत, बंगाल और बिहारमे होते हैं। इसके वृक्ष बकायनके वृक्षके बराबर और कोई कोई इससे बड़े भी होते हैं। इसकी छाल गहरे धुएं के रंग की होती है। इसके फूल सफेद और खुशबूदार होते हैं। पत्ते तरणद्ध के पत्तों की तरह होते हैं। इसका फल पकने पर जामुन की तरह काला पडजाता है और उसके अन्दर एक बीज गूदेमे लिपटा हुआ, कुचले का आकार का मगर उससे कुछ छोटा निकलता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मतसे निर्मली वृक्ष चरपरा, कडवा, लेखन, रुचिकारक, हलका, नेत्रों को हितकारी, कसेला, शीतल, विशद, मधुर तथा तृषा, दाह, विष, गुल्म, शूल, कृमि, प्रमेह, नेत्ररोग और जलको निर्मल करने वाला होता है। इसका कोमल फल—नेत्रों को हितकारी, वात वर्धक, शीतल तथा रक्तपित्त, तृषा, विष और मोहको दूर करता है।

इसका तरुण फल दुर्जर, रुचिकारक, कफ और पित्त को नष्ट करनेवाला होता है। उसका पका फल पित्त कारक, वमन कारक, पसीना लाने वाला तथा मृजन पाण्डुरोग, विष, जुकाम और कामला रोगको दूर करने वाला होता है।

इसके बीज नेत्रों को हितकारी, कसेले, भारी, जलको निर्मल करने वाले, मधुर तथा पथरी, वात, कफ, मूत्रकृच्छ्र, तृषा, नेत्र रोग, विष, प्रमेह, और मस्तक रोग को दूर करते हैं।

निर्मली की जड़ सब प्रकारके कुष्टों को दूर करनेवाली है।

बहुत प्राचीनकालसे भारतवर्षमें निर्मलीके बीज जल को साफ करनेके उपयोगमें लिये जाते हैं। सुश्रुतसंहिता में भी पानीके प्रकरणमें इनका वर्णन किया गया है। औषधिके रूपमें इनका प्रधान प्रयोग नेत्र रोगोंके ऊपर बाहरी उपचार की तरह किया जाता है।

इसके बीजों को पीसकर शहदमें मिलाकर थोडी सी कपूर मिला कर उसका लेप आखोंके आस पास किया जाता है। इससे आखोंके अन्दर से पानी का बहना बन्द हो जाता है। इनको पीसकर पानी में कुछ सेंधे नमकके साथ मिलाकर आखोंके आस पास लगानेसे नेत्र शुक्ल रोग और चक्षुप्रदाह दूर होते हैं।

मद्रासमें इसके बीज मधुमेह और सुजाकमें उपयोगी माने जाते हैं।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे यह वनस्पति समशीतोष्ण है। इसके बीजों को पानीमें पीसकर नाभि के आस पास लेप करनेसे पेटके कीड़े मर जाते हैं। इनको पीसकर सांपके काटे हुए को भी खिलानेसे लाभ होता है। इसके ४ दानों को पानीमें पीसकर मिश्री मिलाकर पिलाने से सुजाक में लाभ होता है, बन्द पेशाब खुल जाता है और जलन मिट जाती है। ७ दिन तक खानेसे पूरा लाभ होता है। इसके ४ दानों को पानीमें पीस कर दहीमें मिलाकर चीनी के प्यालेमें रखकर मुंह पर कपडा बांध कर रात भर पडा रहने दे, सवेरे उसको खालें। इस प्रकार ७ दिन तक खानेसे और पथ्यमें दही चावल लेनेसे सुजाक, पेशाब की जलन और पेशाब के साथ खून आना बन्द होता है। इसके बीजों को जला कर खानेसे बवासीर से जानेवाला खून बन्द हो जाता है।

निर्मली के बीजो को पीस कर आंखमें लगानेसे अर्जुन रोग मिटता है। आंख की कई बीमारियोंमें इसके बीज काम आते हैं। इनको आंखमें लगाने से आंख की ज्योति बढ़ती है। निर्मलीके १ बीज को पीस कर मट्ठेमें मिलाकर ७ दिन तक खिलानेसे बहुत दिनों के पुराने दस्त जो किसी दवासे बन्द न होते हों वे बन्द हो जाते हैं।

इसके बीजों को पीसकर दूधके साथ फक्की लेनेसे सुजाक मे लाभ होता है। निर्मली को जला कर उसकी राखमे थोडीसी शक्कर मिला कर खानेसे खूनी बवासीर मिटता है। निर्मली को शहदमे पीसकर आखमे लगानेसे मोतियाबिंद मिटता है। इसके बीज को मट्ठे के साथ पीस कर शहद मिला कर खानेसे सब प्रकारके प्रमेह मिटते हैं।



# निर्गुण्डी

नाम —

सस्कृत—इन्द्राणी, नीलपुष्पा, नील निर्गुण्डी, निर्गुण्डी, शेफाली, सुरसा, सुवाहा, श्वेत सुरसा। हिन्दी—निर्गुण्डी, निंगोरी, सम्भालू सिंदुआरी। बगाली—निर्गुण्डी, निशिन्दा, समालू। बरार—सेमालू। बम्बई—निर्गुण्डी, कतरी, लिंगुर शिवारी। गुजराती—नगोड, नगोरम निगोड, निर्गोरी। मराठी—निगुण्डी, लिंगड। फारसी—बजानगश्त, सिसबन। पजाब—बनकाहू, मरवा, मरवार, विन्ना, मावा, मोरीन, सनक, ख्वारी। तामिल—निकुण्डी, नोचि, सिन्दुवरम्। तेलगु- नल्लाहा विली मिन्दुवरम्। इगलिश—Indian Privete ( इण्डियन प्रिवेट )। लेटिन—Vitex Negundo ( विटेक्स नेगुण्डो )।

वर्णन —

निर्गुण्डीके वृक्ष ८ से लेकर १० फीट तक ऊँचे होते हैं। इनमे पतली पतली बहुत सी शाखाएं निकली हुई होती हैं। ये शाखाए फीकी, सफेद और भस्मी रग की होती हैं। इसके पत्ते जुडमा और तीन तथा पाचके झुण्डमे लगे हुए रहते हैं। ये ऊपर की तरफ सफेद रगके रोएदार होते हैं। इस वृक्षमे ऊपर हलके नीले रगके छोटे फूल आते हैं। इसके फल काले रगके होते हैं।

इस सारे पौधेमे एक प्रकार की तीव्र और अरुचिकारक गन्ध आती है। इस वनस्पति की दो जातिया होती हैं। एक सादे पत्तेवाली और दूसरे कगूरेदार पत्तेवाली। कंगूरेदार पत्तेवाली जाति अधिक प्रभावकारी और अधिक गुणकारी होती है। यही जाति औषधि-उपयोगमे ली जाती है। औषधिमे इसका पञ्चाग उपयोग मे लिया जाता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे निगुण्डी कडवी, तीखी, तूरी, हलकी, गर्म, दीपन, वातनाशक, वेदना शामक, कुष्टघ्न, व्रणशोधक, व्रणरोपक, शोथघ्न, कफनिस्सारक, ज्वर-नाशक, पार्यायिक ज्वरोंको रोकनेवाली, खामी को दूर करनेवाली, मूत्रल, आर्त्तव, कृमिनाशक, मज्जा-तन्तुओं को शक्ति देनेवाली, बलवर्धक और परम रसायन है।

निगुंएडीका सूजन को नष्ट करनेवाला, वेदनानाशक और वातनान्तक गुण बहुत प्रभावशाली है। इन कार्यांमे इसकी जितनी प्रशसा की जाय वह कम है। जिन रोगोंके अन्दर सूजन प्रधान होती है उन रोगोंके अन्दर यह एक अकसीर औषधि है। किसी भी प्रकार की सूजन, फिर चाहे वह शरीरके भीतर हो चाहे बाहर, इस औषधिसे दूर होती है। फेफड़े की सूजन, फेफड़ेके परदे की सूजन, आंतोंके परदे की सूजन, सन्धियों की सूजन, तीव्र आमवातमें होनेवाली सन्धियों की सूजन इत्यादि हर प्रकार की सूजन म इसके बराबर लाभ पहुँचानेवाली दूसरी औषधि शायद ही कोई हो। वैसे पुनर्नवा नागदमन, कटकरंज, वत्सनाग, अफीम, पारा, सोना इत्यादि कई औषधियां आयुर्वेदमें सूजन को दूर करने वाली बतलायी गयी हैं, मगर निर्गुण्डी इन सबमें अग्रगण्य, गुणकारी और सर्वसुलभ है। किसी भी विकारसे पैदा हुई सन्धियों की सूजन अथवा दूसरी सूजनमें दर्द और सूजन को कम करनेके लिये निगुंएडीके समान उस्ताद औषधि शायद ही कहीं नसीब हो।

हर प्रकार की सूजनमें इसको देने की पद्धति इस प्रकार है –

इसके पत्तोंको थोड़ा कुचलकर एक मिट्टी की हण्डीमें डालकर, उस हण्डीमें ढक्नी लगाकर, उस ढक्नी की सन्धियों को कपड़ मिट्टीसे बन्दकर चूल्हे पर चढ़ाकर हलकी आंच दी जाती है। जब यह मालूम होने लगे कि भीतरके पत्ते गर्म हो गये हैं, तब उस हण्डियाको उतार कर, उसकी ढकनी को खोलकर भीतरके पत्तों को निकालकर सूजनके ऊपर बांधते हैं। इस कार्यके लिए अगर निगुंएडीके पत्तेके साथ थोड़े नीम और धतूरेके पत्ते भी डाल दिये जायं तो विशेष लाभदायक होते हैं। चार घण्टेके बाद इन पत्तों को खोलकर फिर पीछे उसी प्रकार गर्म करके दुबारा बांध दिये जाते हैं। हाथ पैरमें होनेवाली लचक और मोच पर भी इन पत्तों के बांधनेसे बड़ा लाभ होता है। कण्ठमालमें भी इसके पत्तोंके सेंकसे और इसके पत्तोंके स्वरसको नाकमें टपकानेसे विशेष लाभ होता है।

नारू रोगमें भी इसके पत्तों का स्वरस पिलानेसे और इसके पत्तोंसे सेंक करनेसे लाभ होता है। कानके अन्दर पीब पड़ने की हालतमें इसके स्वरससे सिद्ध किये हुए तेलको शहदके साथ कानमें डालते हैं। व्रण, कुष्ठ, कफयुक्त विसर्प, रक्तपित्त वगैरह चर्म रोगोंमें निगुंएडी का अन्तः प्रयोग और बाह्यप्रयोग दोनों किया जाता है। सुजाक की पहली अवस्थामें निगुंएडीका काढ़ा बहुत गुणकारी होता है। सुजाकके रोगियोंका कभी कभी पेशाब बन्द हो जाता है, ऐसी स्थितिमें, इसके पत्तों के गर्म काढ़ेमें रोगी को बिठानेसे पेशाब बहुत जल्दी हो जाता है।

कफ ज्वर और फेफड़े की सूजनमें निगुंएडी का स्वरस अथवा इसके पत्तों का काढ़ा पीपरके साथ दिया जाता है और इसके पत्तों का सेंक किया जाता है।

यद्यपि निगुंएडी एक उत्तम शोथघ्न औषधि है, पर इससे दस्त साफ नहीं होता

यह इसमें एक बड़ा दोष है। इसलिए, शोथरोगमे इसको देनेके पहले रोगी को जुलाब दे देना चाहिए और बीच बीचमें जब भी कब्जियत हो, तब जुलाब देते रहना चाहिए। अथवा इसके आनुलोमिक धर्म की कमी को दूर करने के लिए इसके साथ नागदन्ती को मिलाकर देना चाहिए।

गलेके अन्दर होने वाली नवीन सूजनमें इसके सूखे पत्तोको चिलममें रखकर पिलाये जाते है और इसके पत्तोंका काढा छोटी पीपर और चन्दनके साथ बनाकर पिलाया जाता है।

बारीसे आने वाला मलेरियाज्वर, सूतिकाज्वर और दूसरे प्रकारके ज्वरों में इसके पत्तोंका चूर्ण, पचांगका स्वरस, फाण्ट अथवा काढा बनाकर देते हैं और इसके काढेसे रोगीके शरीरको धोते हैं। इससे रोगीके शरीरकी गर्मी और दुर्गन्ध कम होती है और पेशाब साफ होता है। मलेरिया ज्वरमे अगर रोगीका यकृत या तिल्ली बढ गयी हो तो निर्गुण्डीके पत्तोंका चूर्ण हरड़ और गोमूत्रके साथ देते हैं अथवा निर्गुण्डीके पत्ते काली कुटकी और रसोतके साथ देते हैं। ज्वरके अन्दर होने वाली वमन और घबराहटका कम करनेके लिए निर्गुण्डीके फूल शहदके साथ देना चाहिए। सूतिका ज्वरमें निर्गुण्डीका देनेसे गर्भाशयका संकोचन होता है और भीतर की गन्दगी निकाल कर साफ हो जाती है। गर्भाशय और उसके भीतरी भागमें होने वाली सूजन भी इससे उतर जाती है और वह पूर्वस्थितिपर आजाता है।

पेटके अन्दर होने वाला वात संचय और उससे होने वाले उदर शूलमें इसके पत्तोंके स्वरसको काली मिर्च और अजवाइनके साथ देते हैं। इससे मनुष्यकी पाचन-शक्ति सुधर जाती है और पेटके अन्दर वायुका संचय नहीं होता। यकृत् की क्रिया सुव्यवस्थित रखनेके लिए निर्गुण्डीको भागरेके साथ देते हैं। जलन्धरमें निर्गुण्डीको पेटमें देनेसे और इसके पत्तोंको पीसकर हाथ पाव पर बांधनेसे बहुत लाभ होता है। निर्गुण्डी मज्जा तन्तुओंके लिए भी एक पौष्टिक पदार्थ है। इसलिए मज्जातन्तुओंकी बकावटसे होने वाले रोगों में इसको देनेसे बड़ा लाभ होता है।

सब प्रकारके रोगोंमे निर्गुण्डीको शिलाजीतके साथ देनसे बड़ा लाभ होता है। निर्गुण्डी और शिलाजीतका मिश्रण अमृतके समान है।

सन् १९२४ के अखिल भारतीय वैद्य-सम्मेलनके अध्यक्ष कविराज योगीन्द्र नाथ सेन एम ए ने निर्गुण्डीके तेलका एक चमत्कार पत्रोंमें प्रकाशित करवाया था। उन्होंने लिखा था कि अहमन सिंह नामक एक वृद्ध मनुष्यको उसके दुश्मनोंने खून मारकर एक खेतमें डाल दिया था, वहासे उसके सम्बन्धी उसको उठाकर अस्पतालमें लेगये। उसके शरीरमे कई घाव लगे हुए थे और घाव तो वहाकी चिकित्सामें आराम होगये, मगर उसके बाए हाथ पर एक बड़ा और गहरा घाव था जो दिन दिन अधिक सडता जाता था। तीन महीने तक डाक्टरोंने उसको

अच्छा करनेके लिए बहुत परिश्रम किया मगर जब वह और भी अधिक सड़ गया तब उन्होंने उससे कहा कि तू लखनऊ जाकर अपना हाथ कटवा डाल। इसी अर्से में प्रसगवश मेरा वहाँ जानेका काम पड़ा और मैंने उस रोगीके घावपर निर्गुण्डीके पत्तोंके रससे सिद्ध किया हुआ तेल लगाना प्रारम्भ किया। सब लोगोंने आश्चर्यके साथ देखा कि उसका वह न भरने वाला घाव तीन हफ्तेमें बिलकुल भरकर बराबर होगया।

खासी दमा और निर्गुण्डी—

सिद्धनित्यनाथ अपने रस रत्नाकर नामक ग्रन्थमें लिखते हैं कि निर्गुण्डीके पत्तोंका रस एक बर्तनमें डालकर हलकी आचपर पकाना चाहिए। जब वह गुड़की चासनीके समान गाढ़ा हो जाय तब उसको उतार लेना चाहिए। दमा, खासी और क्षयके रोगियोंको वमन, विरेचन इत्यादि पंचकर्मों से शरीरको शुद्ध करके इस अवलेहका सात दिन तक सेवन करना चाहिए। इसके सेवनसे मुँह, नाक आख और कानके रास्तेसे इन रोगोंके रोगोत्पादक जन्तु निकल जाते हैं। इसके सात दिनके सेवनसे खासी और क्षय में बहुत लाभ होता है और तीन महीनेके सेवनसे मनुष्यकी वृद्धावस्था दूर होकर दीर्घायु प्राप्त होती है। जब तक यह प्रयोग चालू रहे तब तक अन्न और जल का त्याग करके सिर्फ दूध पर रहना चाहिए।

कीर्तिकर और बसुके मतानुसार इसके पत्ते सुगन्धित, पौष्टिक और कृमिनाशक होते हैं। निर्गुण्डीके पत्तोंका काढ़ा जुकामयुक्त ज्वरमें सिर दर्द में, तथा कानोंके बहरेपनमें दिया जाता है। इसके पत्तोंके रसमें ऐसे पदार्थ हैं, जो प्रसूतिके समय होनेवाले स्रावको दूर कर देते हैं और घावोंके अन्दरके कृमियोंको नष्ट कर देते हैं। इसके पत्तोंसे सिद्ध किया हुआ तेल नासूर और कण्ठमालाके फोड़ों पर लाभदायक माना जाता है।

इसके पत्ते सन्धियोंकी सूजन, गठिया और सुजाककी वजहसे होनेवाली सूजनमें उपयोगी होते हैं। कोकणमें इसके पत्तोंका रस भागरा और तुलसीके पत्तोंके रसके साथ अजवाइनका चूर्ण मिलाकर छः मासेकी मात्रामें सन्धिवातको दूर करनेके लिए दिया जाता है। बढ़ी हुई तिल्लीको ठीक करनेके लिए इसका दो तोला रस दो तोले गोमूत्रके साथ मिलाकर प्रतिदिन सवेरे पिलाया जाता है।

सीलोनमें इसके पत्ते छाल और जड़ उदरशूल, सन्धिवात और नेत्ररोगोंको दूर करनेके लिए दिये जाते हैं और ये पौष्टिक शान्तिदायक और कृमिनाशक समझे जाते हैं।

चरक और सुश्रुत के मतानुसार इसका पौधा सर्पविष और बिच्छूके विष पर उपयोगी होता है।

रावर्टके मतानुसार सर्पविषके केसोंमे इसकी जड, छाल और पत्तोंको कुचलकर द
स्थान पर लेप किया जाता है और इसके पत्तोंका ताजा रस रोगीकी बेहोशी और अचेतन
को दूर करनेके लिए नाकमें टपकाया जाता है और इसकी जड और छालका काढ़ा बनाक
पिलाया जाता है ।

कैस और महस्करके मतानुसार इसका पौधा सर्पविषमें बिलकुल निरुपयोगी है ।

यूनानी मत—

यूनानी मत से निर्गुण्डी गर्म और खुश्क है । यह कफकी अधिकताको मिटाती है
वायु, खुजली और खूनके उपद्रवोंको दूर करती है । सर्दीकी बीमारियोंमे बहुत मुफीद है
बुद्धिको बढाती है, आखकी रोशनीको तेज करती है, उदरशूल और सूजनमे लाभदायक है
पेटकी कृमियोंको मारकर निकाल देती है । भूख बढाती है, इसको घिसकर कामेन्द्रिय प
लेप करनेसे कामेन्द्रियकी शिथिलता दूर होती है । चार तोला निर्गुण्डीको चार तोला सोंठके
साथ पीसकर आठ पुडिया बाध लें, इसमेसे एक एक पुडिया रोजाना दूधके साथ लेनेसे
मनुष्यकी कामशक्ति बहुत बढती है । इसके पत्तोंको पीसकर पागल कुत्तेके काटे हुए स्थान प
लगानेसे उसका विष नष्ट हो जाता है । आधा शीशीमे सिरके जिस हिस्सेमें दर्द हो उसके
दूसरी तरफके नथनेमे इसके रसकी पाच बूँदें टपकानेसे दर्द दूर हो जाता है ।

बनावटें —

निर्गुण्डीकल्प—निर्गुण्डी की जडका चूर्ण ३२ तोला लेकर उसमें ६४ तोला शहद
मिलाकर, घी भरनेसे तर हुई हाडीमे भर देना चाहिए, फिर उस पर ढकनी लगाकर उस ढकनीकी
सन्धियो को कपडमिट्टीसे बन्द करके एक महीने तक अनाजके कोठेमें दबा देना चाहिए । उसके
पश्चात् उसको निकालकर एक तोलेसे दो तोले तक की मात्रामें सबेरे शाम खा लेना चाहिए ।
इस प्रकार एक महीने तक सेवन करनेसे मनुष्य सब रोगोंसे रहित होकर वृद्धावस्थासे मुक्त होता
है । यदि हर साल एक महीने इस औषधि का सेवन कर लिया जाय तो मनुष्य कई प्रकार के
शारीरिक रोगोंसे मुक्त रहता है । अगर इसी औषधि को गोमूत्रके साथ सेवन किया जाय तो
कुष्ठ, नासूर, खुजली, गुल्म, तथा तिल्ली की वृद्धि इत्यादि रोग नष्ट होते हैं ।

---

# निमुर्डी

नाम:—

मराठी—निमुर्डी । लेटिन—Blumea, Eriantha ( ब्लूमिया एरिन्था )।

वर्णन—

यह ककरोंद की जातिकी एक वनस्पति होता है। इसके पत्ते ८ से ७५ सेन्टीमीटर तक लम्बे और १३ से १८ सेन्टीमीटर तक चौड़े होते हैं। यह वनस्पति बुन्देलखण्ड, कोंकण, मद्रास और दक्षिणी प्रदेशोंमे पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पति का रस एक शान्तिदायक पदार्थ की तरह काममे लिया जाता है। इसके पत्ते निगुंडी और कुम्भीके पत्तेके साथ सेंक करनेके काममे लिये जाते हैं। इसका गर्म काढा जुकाम और सर्दी को दूर करनेके लिए पसीना लानेवाली वस्तु की तरह दिया जाता है और इसका शीत निर्यास मूत्रल और ऋतु स्राव नियामक माना जाता है।



# निराधारी

नाम—

हिन्दी—निराधारी। गुजराती—अमरवेल। मराठी—निर्मूली। काठियावाड़—चिदिओ लेटिन—Cuscuta Hyalina ( कस्क्यूटा हेलेना )।

वर्णन—

यह अमरवेलि की ही एक दूसरी उपजाति है। यह बलूचिस्तान सीमाप्रान्त और अबिसीनियामें पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

स्टेटर और हलबर्गके मतानुसार हिन्दुस्तानके मरु भूमिवाले प्रान्तोंमें इसका पौधा पानीमें उबालकर छाती के दर्द दूर करनेके लिए दिया जाता है।

# नियाम नियम

नाम—

मलाया—नियाम नियम। सीलोन—नमनम। मलयालम—इरिया। लेटिन—Cyno metra Couliflora ( सिनोमेट्रा, कालीफ्लोरा )।

वर्णन—

यह वनस्पति विशेषकर मलायामें पैदा होती है। हिन्दुस्तानके बगीचोंमे भी कहीं कहीं यह बोयी जाती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके बीजोंसे तयार किया हुआ तेल गलित कुष्ठ और दूसरे चर्म रोगों पर लगानेके काममें लिया जाता है।

---

# निर्विष

नाम —

*संस्कृत—निर्विषा, अपविषा, विषभवा, विषहन्त्री। हिन्दी—निर्विष, निर्विषी। बंगाल—* निर्विषी। मराठी—मुस्त। लटिन—Kyllingia Trileps ( किलिञ्जया ट्राइलेप्स )।

वर्णन—

यह एक क्षुद्र जाति की वनस्पति होती है। इसकी दो जातियां होती हैं। एक जाति की जड़ जमीनमें सीधी जाती है और दूसरी जाति की जड़ जमीनमें फैली हुई रहती है और इसमें गठान रहती है। इसके पत्ते रोएंदार होते हैं। इसकी जड़में नागरमोथे की तरह सुगन्ध आती है। इसका स्वाद कड़वा होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मतसे यह वनस्पति कड़वी, ठण्डी और कफवात तथा रक्त रोग को नष्ट करनेवाली होती है। इसके गुण साधारणतया नागरमोथे की तरह होते हैं। इसकी जड़की फांट बनाकर ज्वरमें और मधुमेह में प्यास को दूर करनेके लिए देते हैं। इसको अधिक मात्रामें देनेसे वमन हो जाती है। इसकी जड़का तेलमें उबालकर उस तेल को खुजली दूर करनेके लिए शरीर पर मला जाता है। इसका काढा व्रण धोनेके काममें आता है।

यूनानी मत —

यूनानी मत से यह वनस्पति त्रिदोष नाशक और रक्तविकार को दूर करनेवाली होती है। यह हर प्रकारके जहरको दूर करने मे सहायता पहुँचाती है। हर प्रकारके जखम पर लगानेसे यह जखमको जल्दी भर देती है। इससे सिद्ध किया हुआ तेल फोडे फुन्सियों पर लगानेसे फोडे फुन्सी मिट जाते हैं। जिस बच्चे को मृगी आती हो उसको थोडी सी निर्विषी उसकी मा के दूधमें घिसकर [illegible] पानेसे लाभ होता है। इसके सेवनसे गुर्दे का दर्द दूर होता है और गुर्दे को ताकत मिलती है। ज्वर आर कफ क दस्तों को भी यह बन्द करती है, खासी और वमनमें लाभ पहुचाती है। हृदय, आमाशय, यकृत् और मस्तिष्कको ताकत देती है। इसकी साधारण मात्रा ३ मासे तक है, जो गाय के दूधके साथ दी जाती है।

इसकी जड़ोंसे एक प्रकार का तेल बनाते हैं, जो यकृत् की क्रिया को बढ़ाने और गुदाद्वार की खुजली को मिटाने के काममें लिया जाता है।

---

# निसोथ

नाम —

संस्कृत—त्रिवृत् सुनहा, त्रिपुटा, त्रिभंडी, रेचनी, मालविका, श्यामा, इत्यादि। हिन्दी—निसोथ, पनीलर। बगाल—तेओरी, दूधकल्मी। पंजाब—चितवउस। गुजराती—नसोतर। मराठी—निशोतर। तामील—चिवदे, शिवदइ। तेलगू—तेल्लतेगड। अंग्रेजी—Indian Jalap लेटिन—Ipomoea Turpethum (इपोमिया टरपेथम)।

वर्णन—

निसोथ की काली, सफेद और लाल ये तीन जातिया होती हैं। इस वनस्पति की वेल होती है। इसके पत्ते नोकदार होते हैं। इसके फूल का रंग नीला होता है। इसकी वेल की लकडीमें तीन धारें होती हैं। सफेद निसोथ के फूल सफेद, काली निसोथके फूल नीले और लाल निसोथ के फूल लाल होते हैं। औषधि प्रयोगमे सफेद निसोथ ही विशेष उपयोगी मानी जाती है। इसका फल गोल होता है और हर एक फल मे चार चार बीज होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक मतसे निसोथ मधुर, रूखी, तीक्ष्ण, वात जनक, कसेली,

तिक्त, कटुपाकी, रेचक तथा मलस्तम्भ, संग्रहणी, कफोदर, सूजन, पाण्डुरोग, कृमि, प्लीहा, ज्वर, पित्त, कफ, वातरक्त, उदावर्त और हृदयरोग को हरने वाली है।

काली निसोथ सफेद निसोथकी अपेक्षा हीन गुण वाली होती है। किन्तु विरेचन गुण इसमे तीव्र है तथा यह मूर्च्छा, दाह, मद और भ्रान्ति पैदा करती है।

लाल निसोथ कडवी, चरपरी, गरम, रेचक तथा संग्रहणी को नष्ट करनेवाली है।

निसोथ एक उत्तम रेचक वस्तु है। पेटके अन्दर इस की क्रिया जेलपके समान होती है। इससे पानीके समान पीले रंगके दस्त होते हैं। इसको अकेली देनेसे पेटमे मरोड पैदा होती है। इसलिये इसको सोंठके साथ देना चाहिये। इसको छोटी मात्रामे देनेसे आतों की और आमाशय की पाचन शक्ति बढती है। जेलप की अपेक्षा यह कुछ मृदुस्वभावी होती है।

विरेचनके लिये जिन रोगोंमें यूरोपके अन्दर जेलप देने का रिवाज है उन रोगोंमे भारतके अन्दर निसोथ दी जाती है। सुख विरेचन द्रव्योंमे यह श्रेष्ठ मानी जाती है। जलोदरमे इसको देनेका विशेष रिवाज है। आमवात और वातरक्तमे भी यह विशेष गुणकारी है। वातरोगोंमे और स्निग्ध वृत्तिवाले मनुष्यों को यह विशेष उपयोगी होती है।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जे मे गरम और दूसरे दर्जे में खुश्क है। यह कफकी बीमारीको नष्ट करती है। मस्तिष्क, आमाशय, यकृत, और गर्भाशय में जमे हुए कफको पतला करके दस्त की राहसे निकाल देती है। फालिज, लकवा और संधिवातमें मुफीद है। आमाशयकी खराबीसे जो खांसी होती है वह इसके सेवनसे मिट जाती है। निसोथको काबुली हर्रके साथ देनेसे मिरगी और पागलपन मे लाभ होता है।

शरह गाजरूनीने कहा है कि निसोथमे कफको पतला करके निकाल देनेकी खासियत है। सोंठ वगैरहके साथ देनेसे यह गाढे और जमे हुए कफको भी निकाल देती है। निसोथके चूर्ण को अधिक बारीक नहीं पीसना चाहिये और न कपडेमें छानना चाहिये। अधिक बारीक होनेसे यह मेदे और आतों मे चिपक जाता है। हा अगर यदि इसको माजूनमे मिलाना हो तो इसको खूब बारीक पीसना चाहिये।

हकीम अब्बू कासमका मत है कि निसोथको थोडे थूहरके दूधमे तर करके सुखा कर जलोदर वालेको देनेसे बडा लाभ होता है। कई ताकत वर आदमियों को यह प्रयोग दिया गया और उनका जलोदर जाता रहा। मगर यह प्रयोग कमजोर आदमियोंको नहीं देना चाहिये। क्योंकि इससे बहुत जोरके दस्त लगते हैं।

काली निसोथ एक जहरीली वस्तु है। इसको लेनेसे बहुत जोरसे दस्त आते हैं। सिरमे चक्कर और जलन पैदा होती है और आवाज खराब होजाती है।

भारतवर्ष में बहुत पुराने जमानेसे यह वनस्पति जुलाबके उपयोगमे लीजारही है। गठिया और और अर्धाङ्गमें इसका जुलाब बहुत ख्याति प्राप्त है। अगर इसको काबुली हर्रके साथ मिलाकर लिया जाय तो माली खोलिया और अर्धाङ्गमें भी लाभदायक होता है।

मुजिर—इसके अधिक सेवनसे आतों को नुकसान पहुँचाता है। गरम प्रकृति वालो को भी यह हानिकारक है।

दर्पनाशक—इसका दर्पनाशक कतीरा और बबूलकी छाल है।

प्रतिनिधि—काला दाना।

मात्रा—४ माशे।

---

## नीम

नाम—

संस्कृत—निम्ब नियमन, नतर, पिचुमन्द, सतिक्तक, अरिष्ट, सर्वतोभद्र, सुभद्र, पारिभद्रक, हिंगु, पीतसार, रविप्रिय इत्यादि। हिन्दी—नीम। बगाल—नीमगाछ। मराठी—कडु निम्ब। गुजराती—लीमडो। तेलगू—वेप। तामील—वेंबू। उर्दू—नीम। अंगरेजी—Indian Lilac (इण्डियन लिलाक)। लेटिन—Azadirachta Indica (एजाडिरेक्टा इंडिका)।

वर्णन—

नीम-भारतवर्षकी एक अनोखी नियामत है। इसके वृक्ष हिन्दुस्तानमें सब दूर कमबेश पैदा होते हैं और यह यहा के जन समाजमें रात दिन काममें आने वाली एक घरेलू दवा है। इसे सब कोई जानते हैं। इसलिये इसके विशेष वर्णनकी आवश्यकता नहीं है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे नीम हलका, शीतल, कड़वा, ग्राही, व्रणशोधक, बालकोंके लिये हितकारी तथा कृमि, वमन, व्रण, कफ, शोथ, पित्त, विष, वात, कुष्ठ हृदयकी जलन, श्रम, खासी, ज्वर, तृषा, अरुचि, रुधिर विकार और प्रमेहको नष्ट करता है।

नीमके पत्ते नेत्रोंके लिये हितकारी, पचनेमें कटु और कृमि, पित्त, अरुचि, विषविकार और कुष्टको नष्ट करते हैं।

क्त, कटुपाकी, रेचक तथा मलस्तम्भ, सग्रहणी, कफोदर, सूजन, पाडुरोग, कृमि, प्लीहा, वर, पित्त, कफ, वातरक्त, उदावर्त और हृदयरोग को हरने वाली है।

काली निसोथ सफेद निसोथकी अपेक्षा हीन गुण वाली होती है। किन्तु विरेचन ण इसमे तीव्र है तथा यह मूर्च्छा, दाह, मद और शान्ति पैदा करती है।

लाल निसोथ कडवी, चरपरी, गरम, रेचक तथा संग्रहणी को नष्ट करनेवाली है।

निसोथ एक उत्तम रेचक वस्तु है। पेटके अन्दर इस की क्रिया जेलपके समान होती । इससे पानीके समान पीले रगके दस्त होते हैं। इसको अकेली देनेसे पेटमे मरोड पैदा ोती है। इसलिये इसको सोंठके साथ देना चाहिये। इसको छोटी मात्रामे देनेसे आतों ो और आमाशय की पाचन शक्ति बढती है। जेलप की अपेक्षा यह कुछ मृदुस्वभावी ोती है।

विरेचनके लिये जिन रोगोंमे यूरोपके अन्दर जेलप देने का रिवाज है उन रोगोंमे ारतके अन्दर निसोथ दी जाती है। सुख विरेचन द्रव्योंमे यह श्रेष्ठ मानी जाती है। ालोदरमे इसको देनेका विशेष रिवाज है। आमवात और वातरक्तमे भी यह विशेप गुण- ारी है। वातरोगोंमे और स्निग्ध वृत्तिवाले मनुष्यों को यह विशेष उपयोगी होती है।

ूनानी मत—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जे मे गरम और दूसरे दर्जे में खुश्क है। यह कफकी बीमारीको ाष्ट करती है। मस्तिष्क, आमाशय, यकृत, और गर्भाशय मे जमे हुए कफको पतला करके दस्त ी राहसे निकाल देती है। फालिज, लकवा और सधिवातमें मुफीद है। आमाशयकी खराबीसे ा खासी होती है वह इसके सेवनसे मिट जाती है। निसोथको काबुली हरेंके साथ देनेसे मिरगी ग्रौर पागलपन में लाभ होता है।

शरह गाजरूनीने कहा है कि निसोथमे कफको पतला करके निकाल देनेकी खासियत है। ोठ वगैरहके साथ देनेसे यह गाढे और जमे हुए कफको भी निकाल देती है। निसोथके चूर्ण ो अधिक बारीक नहीं पीसना चाहिये और न कपडेमें छानना चाहिये। अधिक बारीक होनेसे यह मेदे और आतों में चिपक जाता है। हा अगर यदि इसको माजूनमे मिलाना हो तो इसको ूब बारीक पीसना चाहिये।

हकीम अब्बू कासमका मत है कि निसोथको थोडे थूहरके दूधमें तर करके सुखा कर जलोदर वालेको देनेसे बड़ा लाभ होता है। कई ताक़त वर आदमियों को यह प्रयोग दिया गया और उनका जलोदर जाता रहा। मगर यह प्रयाग कमजोर आदमियोंको नहीं देना चाहिये। क्योंकि इससे बहुत जोरके दस्त लगते हैं।

काली निसोथ एक जहरीली वस्तु है। इसको लेनेसे बहुत जोरसे दस्त आते हैं। सिरमें चक्कर और जलन पैदा होती है और आवाज खराब होजाती है।

भारतवर्षमें बहुत पुराने जमानेसे यह वनस्पति जुलाबके उपयोगमें लीजारही है। गठिया और और अर्धांङ्गमें इसका जुलाब बहुत ख्याति प्राप्त है। अगर इसको काबुली हर्रके साथ मिलाकर लिया जाय तो माली खोलिया और अर्धांङ्गमे भी लाभदायक होता है।

मुजिर—इसके अधिक सेवनसे आतों को नुकसान पहुँचाता है। गरम प्रकृति वालों को भी यह हानिकारक है।

दर्पनाशक—इसका दर्पनाशक कतीरा और बबूलकी छाल है।

प्रतिनिधि—काला दाना।
मात्रा—४ माशे।

---

## नीम

नाम—

*संस्कृत—निम्ब नियमन, न्तर, पिचुमन्द, सतिक्तक, अरिष्ट, सर्वतोभद्र, सुभद्र, पारिभद्रक, हिंगु, पीतसार, रविप्रिय इत्यादि। हिन्दी—नीम। बंगाल—नीमगाछ। मराठी—कडु निम्ब। गुजराती—लीमडा। तेलगू—वेप। तामील—वेंन्र्। उर्दू—नीम। अंगरेजी—Indian Lilac (इण्डियन लिलाक)। लेटिन—Azadirachta Indica (एजाडिरेक्टा इंडिका)।*

वर्णन—

*नीम-भारतवर्षकी एक अनोखी नियामत है। इसके वृक्ष हिन्दुस्तानमें सब दूर ज्यादातर* पैदा होते हैं और यह यहां के जन समाजमें रात दिन काममें आने वाली एक घरेलू दवा है। इसे सब कोई जानते हैं। इसलिये इसके विशेष वर्णनकी आवश्यक्ता नहीं है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतमे नीम हलका, शीतल, कड़वा, ग्राही, व्रणशोधक बालकोंके लिये हितकारी तथा कृमि, वमन, व्रण, कफ, शोथ, पित्त, विष, वात, कुष्ठ, हृदयकी जलन, श्रम, खासी, ज्वर, तृषा, अरुचि, रुधिर विकार और प्रमेहको नष्ट करता है।

नीमके पत्ते नेत्रोंके लिये हितकारी, पचनेमें कडवे और कृमि, पित्त, अरुचि, विषविकार और कुष्टको नष्ट करते है।

तिक्त, कटुपाकी, रेचक तथा मलस्तम्भ, सग्रहणी, कफोदर, सूजन, पाडुरोग, कृमि, प्लीहा, ज्वर, पित्त, कफ, वातरक्त, उदावर्त और हृदयरोग को हरने वाली है।

काली निसोथ सफेद निसोथकी अपेक्षा हीन गुण वाली होती है। किन्तु विरेचन गुण इसमे तीव्र है तथा यह मूर्च्छा, दाह, मद और शान्ति पैदा करती है।

लाल निसोथ कडवी, चरपरी, गरम, रेचक तथा सग्रहणी को नष्ट करनेवाली है।

निसोथ एक उत्तम रेचक वस्तु है। पेटके अन्दर इस की क्रिया जेलपके समान होती है। इससे पानीके समान पीले रगके दस्त होते है। इसको अकेली देनेसे पेटमे मरोड पैदा होती है। इसलिये इसको सोंठके साथ देना चाहिये। इसको छोटी मात्रामे देनेसे आंतों की और आमाशय की पाचन शक्ति बढती है। जेलप की अपेक्षा यह कुछ मृदुस्वभावी होती है।

विरेचनके लिये जिन रोगोंमें यूरोपके अन्दर जेलप देने का रिवाज है उन रोगोंमे भारतके अन्दर निसोथ दी जाती है। मुख्य विरेचन द्रव्योंमे यह श्रेष्ठ मानी जाती है। जलोदरमे इसको देनेका विशेष रिवाज है। आमवात और वातरक्तमे भी यह विशेष गुणकारी है। वातरोगोंमे और स्निग्ध वृत्तिवाले मनुष्यों को यह विशेष उपयोगी होती है।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे यह तीसरे दर्जे में गरम और दूसरे दर्जे में खुश्क है। यह कफकी बीमारीको नष्ट करती है। मस्तिष्क, आमाशय, यकृत, और गर्भाशय मे जमें हुए कफको पतला करके दस्त की राहसे निकाल देती है। फालिज, लकवा और सधिवातमें मुफीद है। आमाशयकी खराबीसे जो खासी होती है वह इसके सेवनसे मिट जाती है। निसोथको काबुली हर्रके साथ देनेसे मिरगी और पागलपन में लाभ होता है।

शरह गाजरूनीने कहा है कि निसोथमें कफको पतला करके निकाल देनेकी खासियत है। सोंठ वगैरहके साथ देनेसे यह गाढे और जमे हुए कफको भी निकाल देती है। निसोथके चूर्ण को अधिक बारीक नहीं पीसना चाहिये और न कपडेमें छानना चाहिये। अधिक बारीक होनेसे यह मेदे और आतो में चिपक जाता है। हा अगर यदि इसको माजूनमे मिलाना हो तो इसको खूब बारीक पीसना चाहिये।

हकीम अब्बू कासमका मत है कि निसोथको थोडे थूहरके दूधमें तर करके सुखा कर जलोदर वालेको देनेसे बडा लाभ होता है। कई ताक़त वर आदमियों को यह प्रयोग दिया गया और उनका जलोदर जाता रहा। मगर यह प्रयोग कमजोर आदमियोको नहीं देना चाहिये। क्योंकि इससे बहुत जोरके दस्त लगते हैं।

कटुविपाकी लिखा है। इससे मालूम होता है कि नीम तत्कालिक रूपसे चाहे शीतल हो मगर उसका अन्तिम परिणाम गरम ही है। क्योंकि नीमको मन्दाग्नि नाशक भी लिखा है और यदि वह शीतल होता तो मन्दाग्निकी चिकित्सामे उसका उल्लेख नहीं किया जाता। क्योंकि मन्दाग्निकी चिकित्सामे प्राय उष्ण द्रव्योंका ही प्रयोग होता है। शीतल पदार्थोंसे वायुकी वृद्धि होती है और वायुकी वृद्धिसे मन्दाग्नि होती है। यदि मद जठार वालेको शीतल पदार्थ दिये जायँ तो उसकी वायु और भी बढकर जठराग्निके बचेखुचे हिस्सेको नष्ट कर डालती है।

इसलिये यद्यपि कई निघटुकारोंने इसको शीतवीर्य लिखा है। फिर भी सुश्रुत सहिता का यह मत कि नीम उष्ण वीर्य है, असगत मालूम नहीं होता।

रासायनिक विश्लेषण—

रासायनिक विश्लेषण करने पर इसके बीजोंमे एक प्रकारका कड़वा और स्थायी तेल पाया जाता है। यह तेल रगमे गहरे पीले रङ्गका होता है, स्वादमे खराब और कसेला रहता है। इसमे स्टिआरिक, ओलेक और लॉरिक एसिडस रहते है।

राय और चटर्जीने इसका रासायनिक विश्लेषण करके निम्नलिखित तत्त्व पाये हैं।

( १ ) सलफर ४२७ प्रतिशत।

( २ ) एक पीले रगका कड़वा तत्व—सम्भवत यह कोई उपक्षार है। ( ३ ) रेझिन्स—( ४ ) ग्लुको साइडस और ( ५ ) अम्लद्रव्य।

सन् १६३१ मे सेन और बनर्जीने स्पष्ट किया कि इसके तेलमें जो कड़वा तत्व रहता है वह सोडियम साल्टकी वजहसे रहता है।

महात्मा गान्धीके कुछ प्रश्नोंके उत्तरमें कुनूरके न्यूट्रीजन रिसर्च डायरेक्टर डाक्टर एक्राइडने नीमकी पत्तियोंके विषयमे निम्न मत जाहिर किया।

हमने अपनी प्रयोगशालामे नीमकी पत्तियोंका रासायनिक विश्लेषण किया। पहिले जिन अनेक हरी पत्तियोंका विश्लेषण किया गया है उनके मुकाबलेमे इन पत्तियोंमें पोषक तत्व अधिक मात्रामे पाये जाते है। पकी हुई पत्तियों और कोंपलों दोनोंमें ही प्रोटीन, केलशियम, लोहा और विटामिन A पर्याप्त मात्रामे पाये जाते हैं और इस दृष्टिसे नीमकी पत्तिया चौलाई, धनिया, पालक, इत्यादि कई तरकारियोंसे अधिक श्रेष्ठ है।

डाक्टर आर० एन० चोपड़ाके मतानुसार नीमके बीजमे एक तरहका तेल होता है जो मारगोसा या नीमके तेलके नामसे मशहूर है। इसकी छालमें एक तरहका स्वाभाविक कड़वा

नीमकी कोंपलें या कोमल पत्ते सकोचक, वातकारक तथा रक्त-पित्त, नेत्ररोग और कुष्टको नष्ट करनेवाले होते हैं।

नीमके फूल पित्तनाशक, कडवे तथा कृमि और कफको नष्ट करने वाले हैं।

नीमके फल खासी, श्वास, बवासीर, गुल्म, कृमि, और प्रमेहको दूर करने वाले हैं।

नीमके कच्चे फल अथवा कच्ची निंबोरी रसमें कडवी, पचनेमें चरपरी, स्निग्ध, हलकी, गरम तथा कोढ, गुल्म, बवासीर, कृमि और प्रमेहको दूर करने वाली है।

पक्की निंबोरी मीठी, कडवी, स्निग्ध तथा रक्तपित्त, कफ, नेत्ररोग, उरक्षत और क्षय रोगको नष्ट करने वाली है।

निम्बोरी की मगज कुष्ट और कृमियों को नष्ट करने वाली है। नीमके बीजोंका तेल कडवा और कुष्ट तथा कृमि रोगको नष्ट करने वाला होता है।

नीमका पचाग, रुधिर विकार, पित्त, खुजली, व्रण, दाह और कुष्टको दूर करता है।

द्रव्य गुण विवेचन—

नीम तिक्त रस है, शीतवीर्य है और विपाकमें कडवा है। तिक्त रस होने पर भी लोगों को इसे खानेके बाद अरुचि नही होती। अधिकतर जितने तिक्त रस वाले पदार्थ होते हैं सभी अरुचिकर होते हैं। परन्तु नीममें यह खास विशेषता है कि वह स्वय अरुचिकर होते हुए भी अरुचिका नाशक है। यह खानेमे बुरा मालूम होता है परन्तु अरुचि वालोंके लिये तुरन्त लाभ पहुँचाने वाला और अमृत तुल्य है। नीमकी कोमल पत्तियोंको घीमे भूनकर खानेसे भयकरसे भयकर अरुचि तुरन्त नष्ट हो जाती है।

नीम पचनेमें कडवा है। जो चीज पचनमे कड़वा होती है वह हलकी होती है। उसका वीर्य पर बुरा असर पडता है और वह वायुको बढाने वाली तथा मलको बाधने वाली होती है। विपाकमें कटु होनेकी वजहसे नीमका वीर्य पर खराब असर पहुँचता है। यदि नीमका कुछ दिनों तक बराबर सेवन किया जावे तो मनुष्यकी काम शक्ति घटने लगती है और कुछ दिनोंके बाद वह नपुसक होने लगता है। इसी वजहसे बहुतसे साधु सन्त अपनी प्रबल काम शक्तिको जीतनेके लिये बारहों मास नीमका सेवन किया करते हैं।

राजनिघटुकारने नीमको शीतल और तिक्त लिखा है। उनके मतसे यह कफ, व्रण, कृमि, वमन और शोथको शान्त करता है, कफका भेदन करता है, नानाप्रकारके पित्तके दोषोंको जीतता है और हृदयकी जलनको शान्त करता है मगर सुश्रुतमे नीमको गरम, रुक्ष और

कटुविपाकी लिखा है। इसमे मालूम होता है कि नीम तत्कालिक रूपसे चाहे शीतल हो मगर उसका अन्तिम परिणाम गरम ही है। क्योंकि नीमको मन्दाग्नि नाशक भी लिखा है और यदि वह शीतल होता तो मन्दाग्निकी चिकित्सामे उसका उल्लेख नहीं किया जाता। क्योंकि मन्दाग्निकी चिकित्सामें प्राय उष्ण द्रव्योंका ही प्रयोग होता है। शीतल पदार्थोंसे वायुकी वृद्धि होती है और वायुकी वृद्धिसे मन्दाग्नि होती है। यदि मद जठार वालेको शीतल पदार्थ दिये जायँ तो उसकी वायु और भी बढकर जठराग्निके बचेखुचे हिस्सेको नष्ट कर डालती है।

इसलिये यद्यपि कई निघटुकारोंने इसको शीतवीर्य लिखा है। फिर भी सुश्रुत सहिता का यह मत कि नीम उष्ण वीर्य है, असगत मालूम नहीं होता।

रासायनिक विश्लेषण—

रासायनिक विश्लेषण करने पर इसके बीजोंम एक प्रकारका कडवा और स्थायी तेल पाया जाता है। यह तेल रगमे गहरे पीले रङ्गका होता है, स्वादमे खराब और कसेला रहता है। इसमे स्टिआरिक, ओलेक और लॉरिक एसिडस रहते हैं।

राय और चटर्जीने इसका रासायनिक विश्लेषण करके निम्नलिखित तत्व पाये हैं।

( १ ) सलफर ४२७ प्रतिशत।

( २ ) एक पीले रगका कडवा तत्व—सम्भवत यह कोई उपक्षार है। ( ३ ) रेजिन्स— ( ४ ) ग्लुको साइडस और ( ५ ) अम्लद्रव्य।

सन् १९३१ मे सेन और बनर्जीने स्पष्ट किया कि इसके तेलमे जो कडवा तत्व रहता है वह सोडियम साल्टकी वजहसे रहता है।

महात्मा गान्धीके कुछ प्रश्नोंके उत्तरमें कुनूरके न्यूट्रीजन रिसर्च डायरेक्टर डाक्टर एक्रायडने नीमकी पत्तियोंके विषयमे निम्न मत जाहिर किया।

हमने अपनी प्रयोगशालामे नीमकी पत्तियोंका रासायनिक विश्लेषण किया। पहिले जिन अनेक हरी पत्तियोंका विश्लेषण किया गया है उनके मुकाबलेमे इन पत्तियोंमे पोषक तत्व अधिक मात्रामे पाये जाते हैं। पकी हुई पत्तियाँ और कोंपलों दोनोंमें ही प्रोटीन, केलशियम, लोहा और विटामिन A पर्याप्त मात्रामे पाये जाते हैं और इस दृष्टिसे नीमकी पत्तिया चौलाई, धनिया, पालक, इत्यादि कई तरकारियोंसे अधिक श्रेष्ठ हैं।

डाक्टर आर० एन० चोपरीके मतानुसार नीमके बीजमें एक तरहका तेल होता है जो मारगोसा या नीमके तेलके नामसे मशहूर है। इसकी छालमें एक तरहका स्वाभाविक कड़वा

साथ समान भाग ब्लेण्ड आइल।( Bland oil ) मिलानेसे इसका उत्तेजक धर्म कम हो जाता है। नीमका तेल परोपजीवी कीटाणुओंसे होनेवाले चर्म रोगोंपर जैसे दाद,खुजली, इत्यादि पर बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। जहा पर कि किसी भी प्रकार के परोपजीवी कीटाणुओंके होने का सन्देह हो वहा इसका उपयोग करने से वे सब कीटाणु नष्ट होकर त्वचा स्वस्थ हो जाती है। अगर परोपजीवी कीटाणु चर्मके अन्दर अधिक गहरे घुस गये हों तो ऐसे स्थानों पर इस तेलको कम से कम १० मिनिट या इससे अधिक समय तक मालिश करना चाहिये।

मलेरिया ज्वर के प्राचीन केसोंमे इसके तेलका ५ से १० बूद की मात्रामें दिनमें २ बार देनेमे अच्छा लाभ होता है। मैं इसका गत १२ वर्षोंस प्राचीन मलेरिया ज्वरके केसोंमे काममें ले रहा हूँ और यह निस्सन्देह भावसे कह सकता हूँ कि ऐसे ज्वरोंमे यह एक उत्तम औषधि है। उपदश, कुष्ट और दूसर चर्म रागोंमे भी इसका असर अच्छा होता है।

कोमानके मतानुसार इसकी छालका टिंचर मलेरिया ज्वरके केसोंमें पार्यायिक ज्वर निवारक वस्तु की तरह कामम लिया गया और बहुत उपयोगी पाया गया। इसका ऊपरी छाल का काढा भी मलेरिया ज्वर के अन्दर दिया गया और उसका भा परिणाम सतोपजनक रहा। प्राचीन चर्म रोगोंमे इसके इमेंसकी ५ से १० बूद पानीके साथ दी गई जिससे रोगी की जनरल स्थितिमें भी सुधार हुआ और उन रागियो का जा दूसरी औषधिया दा गई थीं उनको भी इससे मदद पहुँची।

डॉक्टर कारनिस लिखते हैं कि मैंन सिनकोना की छाल और सखिया के साथ मलेरिया ज्वरमें नीम की छाल का तुलनात्मक अध्ययन करके देखा है। ६ दिनोंके अन्दर मैंन ६० बुखार के रोगियो पर सिनकोना का प्रयाग करके देखा उनमें से ४६ अच्छे हुए। ३८ रोगिया पर सखिया का प्रयोग किया, जिनमे २६ का लाभ हुआ। परन्तु ११४ रोगियों पर जब नीम की छालका प्रयोग किया तब उनमें ६ दिनोंके अन्दर ही १०९ रोगी आराम हुए। ज्वरके अतिरिक्त ज्वरसे होनेवाली कमजोरी का भी दूर करके यह शरीरमे शक्ति का सचार करती है।

डाक्टर वेरिंग का कथन है कि तरह २ के मलेरिया ज्वरमें नीम का बहुत उपयोग होता है। यह शीत को रोकता है और ज्वर तथा अन्यान्य कारणोंसे उत्पन्न हुई कमजोरी को भी दूर करता है।

चर्मरोग, कुष्ठ और नीम —

वैसे तो नीम मनुष्य शरीरमें होनेवाले अनेक रोगोंमें काम आता है। मगर इसका प्रधान क्षेत्र कुष्ट, चर्म रोग और रक्त रोग है। यह विश्वास किया जा सकता है कि चर्म रोगों को दूर करनेके लिये ससारमें इसके बराबर दूसरी औषधिया नहीं हैं।

कुष्ठ रोगियोंके लिये प्रकृतिने विशेष रूपसे नीमको उत्पन्न किया है। प्राचीन आर्य ग्रन्थोंमें लिखा है कि कुष्ठके रोगी को बारहों मास नीमके पेड़के नीचे रहना चाहिये। नीम की लकड़ीसे दतून करना, प्रात काल १ छटाक नीम की पत्तियों का स्वरस पीना, समूचे शरीरमें नीम की पत्तियोंके स्वरस की और नीमके तेल की मालिश करना तथा भोजनके बाद दोनों दफे पाच २ तोले नीम का मद पीनेसे बहुत लाभ होता है। कुष्ठसे पीड़ित रोगियों की शय्या पर नित्य नीम की ताजी पत्तिया बिछाना चाहिये। नीम की पत्तियों का रस निकालकर उस रसको जलमें मिलाकर उस जलसे कुष्ठके रोगी को नित्यप्रति नहाना चाहिये। नीमके तेलमें नीम की पत्तियों की राख मिलाकर कुष्टके व्रणों पर रोज लगाना चाहिये।

नीमके फूल, फल और पत्तिया बराबर २ लेकर सिलपर खूब महीन पीसले और शरबत की तरह पानीमें घोलकर पीना आरम्भ करें। पहिले ॰ मासेस लेना शुरू करें। बढाते बढाते ६ मासे तक बढ़ायें। इस प्रकार ४० दिन तक सेवन करनेसे श्वेत कुष्टमें बहुत लाभ होता है।

अन्यान्य चर्म रोगोंमें इसके पत्तों का रस पिलानेसे और उसका लेप करनेसे अच्छा लाभ होता है। दाद, सड़नेवाले व्रण, माताके व्रण, इत्यादि रोगोंमें यह औषधि बहुत लाभदायक है। नवीन रोगोंकी अपेक्षा प्राचीन रोगोंमें इसका विशेष उपयोग होता है। फिरंगोपदंश और रक्तपित्तमें इसके पत्तों का रस अथवा बीजों का तेल पिलानेसे और शरीर पर उसका मालिश करनेसे आश्चर्यजनक लाभ होता है। बदगाठ और दूसरे व्रणों की सूजन को दूर करनेके लिए इसके पत्तों को कुचलकर गर्म करके बाधना चाहिये। नीम का तेल एक उत्तम कृमिनाशक और पीव नाशक पदार्थ है। इसको पेटमें देनेसे अथवा बाहर लगानेसे कृमि नष्ट हो जाते हैं। कठमाला पककर अगर उसमें घाव पड़ गया हो अथवा उसमें नासूर पड़ गया हो तो उसमें नीमके तेल की बत्ती बनाकर रखनेसे वह भर जाता है। जीर्ण ज्वर, जीर्ण विषम ज्वर, भिन्न २ प्रकार के चर्मरोग, कुष्ट, फिरंगोपदंश इत्यादि रोगोंमें इसके तेलकी ५ से लेकर १० बूंदे दिनमें दो बार देना चाहिये।

सधिवात, आमवात, जोड़ोंके दर्द, इत्यादिमें नीमके तेल का मालिश करनेसे लाभ होता है। नीमके तेलमें यह धर्म इसके अन्दर पाये जानेवाले गंधक की वजहसे रहता है। आमवात में इसका तेल पिलानेसे भी बड़ा लाभ होता है।

एक्जिमा और नीम—

एक्जिमा आजकल के नवीन प्रचलित चर्म रोगोंमें एक प्रधान रोग हो गया है। इसका प्रचार भी दिन ब दिन भारतवर्षमें बहुत हो रहा है। इसके लिये कोई माकूल इलाज अभी तक नहीं निकला है। ऐसा कहा जाता है कि शरीरमें उपयुक्त विटामिन की कमी होनेसे यह रोग

पैदा हो जाता है। ऐलोपेथी में इस रोग को दूर करनेके लिये कई प्रकार की औषधियां और इंजेक्शन निकले हैं। मगर अभी तक यह विश्वास नहीं हो सका है कि इन उपचारोंसे यह रोग जड़ से चला जाता है।

इस ग्रन्थके लेखक की निगाहमें इसी प्रकारके दो केस एक्जिमाके आये। एक रोगीके घुटनेसे लेकर सारी पिंडली बुरी तरहसे सड गई थी। जगह २ से उसमें पीब बहता था। डाक्टरों ने उसको पैर कटानेकी सलाह दी थी जिससे वह गरीब बहुत घबरा गया था दैवयोगसे वह हमारे सम्पर्क में आया और हमने उसको १ तोला मंजिष्ठादि क्वाथ, १ तोला नीमकी छाल, १ तोला पीपलकी छाल और १ तोला नीम गिलोयका क्वाथ, प्रति दिन देना प्रारम्भ किया। एक महिने तक नियमानुसार इस क्वाथका सेवन करनेके बाद आश्चर्यके साथ देखा गया कि उसका वह पैर जो अच्छे २ डाक्टरों के द्वारा असाध्य घोषित कर दिया गया था, बिलकुल दुरुस्त होगया और आज ५ वर्ष होगये उस स्थान पर फिर एक फुन्सी भी नहीं हुई। इसी प्रकार और भी १।२ एक्जिमाके केसों में इस ग्रंथके लेखकने उपरोक्त प्रयोगसे बहुत सफलता प्राप्तकी है और यह शिफारिसकी जाती है कि जिन वैद्योंके हाथ में इस प्रकारके एक्जिमाके दुस्साध्य केस होवें वो इस प्रयोगको अवश्य अजमाकर देखें।

नीम और चेचक—

यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं कि चेचक एक बहुत ही भयंकर रोग है और जब यह उग्ररूप धारण करलेता है तब तो फिर चिकित्सा विज्ञानके सारे प्रयोग बिलकुल बेकार होजाते हैं और इसीलिये हिन्दुस्तानमें इस व्याधिको दैवी प्रकोप समझकर इसकी चिकित्सा देवी पूजन, पाठ, धूप, इत्यादि धार्मिक कृत्योंके द्वाराकी जाती है।

आयुर्वेद शास्त्रमें जो चेचक की चिकित्सा लिखी गई है उसमें सबसे अधिक नीम ही का प्रयोग देखने को मिलता है। वस्तुतः नीम इस रोग की एक खास और सर्व सुलभ औषधि है। जो लोग चेचक के दिनों में नीमका सेवन करते हैं। उन्हें या तो चेचक निकलती ही नहीं और यदि कभी निकली भी तो अधिक उग्र नहीं होती।

यदि किसी मुहल्लेमें चेचक फैली हुई हो तो उससे बचनेके लिये निम्न लिखित प्रयोग करना चाहिये।

नीमकी लाल रंगकी कोमल पत्तियां ७, और काली मिरच ७ इनको नियमपूर्वक १ महीने तक खानेसे १ साल तक चेचक निकलनेका डर नहीं रहता।

नीमके बीज, बहेड़ेके बीज और हल्दी। इन तीनोंको बराबर लेकर शीतल जलमें पीस छानकर कुछ दिनों तक पीनेसे शीतला निकलनेका डर नहीं रहता।

३ माशे नीमकी कोपलोंको १५ दिन तक लगातार खानेसे ६ महीने तक चेचक नहीं निकलती, अगर निकलती भी है तो आँखें खराब नहीं होती।

यदि चेचकके दाने शरीरमें निकल आवें तो उस अवस्थामें बड़ी सावधानी, पवित्रता, और धैर्यके साथ रोगीकी सेवा करना चाहिए। यदि चेचक निकलनेपर किसी प्रकारका उपद्रव नहीं हो तो भूलकर भी औषधि प्रयोग नहीं करना चाहिए। क्योंकि बिना उपद्रवकी चेचक स्वयं समय आने पर अच्छी हो जाती है। यदि चेचकमें उपद्रव हो तो उस मौके पर भी सिर्फ नीम ही के द्वारा रोगीका उपचार किया जाय तो बहुत उत्तम लाभ होता है।

रोगीके कमरेमें नित्यप्रति ताजे नीमकी पत्तियाँ टांगना चाहिये। कमरेके दरवाजे तथा खिड़कियोंमें नीमकी पत्तियोंकी बन्दनवार बांधना चाहिये।

यदि रोगीको अधिक दाह हो तो उसके बिस्तर पर कोमल पत्तियां बिछाना चाहिए। जब बिस्तरे पर की पत्तियां मुरझाजायं तब उनको बदल देना चाहिये।

चेचकके व्रण पर कभी भी मक्खियां नहीं बैठने पावें इस बातका खूब ध्यान रखना आवश्यक है। परिचारिकाको उचित है कि वह नीमकी पत्तियोंका चंवर बनाकर उससे चेचकके रोगीके शरीर पर हवा करती रहे और मक्खियोंको उड़ाती रहे।

यदि रोगीको अधिक जलन मालूम हो तो नीमकी पत्तियोंको पीसकर पानीमें घोलकर कपड़ेसे छान लेना चाहिए और मथानीसे उस पानीको मथकर उसका फेन रोगीके शरीर पर लगाना चाहिए। इससे जलन शीघ्र शांत हो जाती है।

चेचकके दानोंमें इतनी गर्मी होती है कि रोगी उसे बरदाश्त नहीं कर सकता। उसकी गरमीसे रोगीको अगर चैन नहीं पड़े तो ऐसी दशामें नीमकी कोमल पत्तियोंको पीसकर चेचकके दानों पर लेप करना चाहिए। नीमके बीजोंकी गिरीको पानीमें पीसकर लेप करनेसे भी जलन शान्त होती है। बीजों अथवा पत्तियोंको पानीके साथ पीसकर खूब पतला लेप करना चाहिए। चेचकके दानों पर भूलकर भी कभी मोटा लेप नहीं करना चाहिए।

रोगीको यदि अधिक प्यास लगती हो तो नीमकी छालको जलाकर, उसके अंगारेको पानीमें डालकर बुझावें और उसी पानीको छानकर रोगी पिलावें। इससे प्यास शांत हो जायगी। यदि इस प्रयोगसे भी प्यास नहीं रुके तो १ सेर पानीमें १ तोला कोमल पत्तियोंको औटाकर जब आधा पानी शेष रह जाय तब उतारकर छानकर रोगीको पिलावें। इससे प्यास जरूर शान्त हो जायगी। प्यासके अतिरिक्त यह प्रयोग चेचकके विष और ज्वरको भी हलका करनेवाला है। इसके प्रयोगसे चेचकके दाने शीघ्र सूख जाते हैं।

कभी कभी चेचकके दाने ठीकसे न निकल कर बहुत कम निकलते हैं जिससे चेचककी गर्मी और विष शरीरके अन्दर ही रह जाता है। परिणाम यह होता है कि रोगी शरीरके भीतरी गर्मीको सहनेमे असमर्थ होकर छटपटाने लगता है और प्रलाप करने लगता है। यदि ऐसी अवस्था उत्पन्न हो जाय तो नीमकी हरी पत्तियोंका रस सवेरे, दुपहर और शामको एक एक तोलेकी मात्रामे पिलाना चाहिये इससे दाने खूब खुलकर निकल आते हैं।

जब चेचकके रोगीके व्रण सूख जायँ तब उसे नीम की पत्तियों को पानीमें उबालकर उस ठंडा करके उसीसे स्नान करवाना चाहिये। स्नानके बाद निबोलियोंके तेलको सारे शरीरमें मालिश करना चाहिये।

जब चेचक के दाने अच्छे हो जाते हैं। तब उनकी जगह पर छोटे २ गड्ढे दिखाई देते हैं और आकृति बिगड़ जाती है। उन स्थानों पर यदि कुछ दिनों तक नीमका तेल अथवा नीम के बीजों की मगज को पानीमे पीसकर लगाया जाय तो वे दाग मिट जाते हैं।

चेचक होनेके बाद बहुतसे रोगियोंके सिरके बाल झड़ जाते हैं। ऐसी दशामें सिरमे कुछ दिनो तक लगातार नमीके तेल की मालिश करनेसे फिरसे बाल जल्दी जम जाते हैं।

नीम और बवासीर—

बवासीर के ऊपर भी यह औषधि उपयोगी साबित हुई इसके दो प्रयोग नीचे दिये जाते हैं।

(१) प्रतिदिन नीमके २१ पत्तोंको लेकर मूगकी भिगोई और धोई हुई दालके साथ पीसकर बिना किसी प्रकार का मसाला डाले हुए उसकी पकौडी बनाकर, घी मे तलकर खाना चाहिये। इस प्रकार २१ दिन तक इन पकोडियों को खानेसे हर तरहके बवासीर निर्बल होकर खिर जाते हैं। इस औषधि का सेवन करनेवाले को पथ्यमें सिर्फ ताजा मट्ठा ही पीकर रहना चाहिये। दूसरी कोई चीज नहीं खाना चाहिये। अगर इस प्रकार न रहा जाय तो भात और मठ्ठा इन दो चीजो पर रहना चाहिये। अगर नमकके बिना न रहा जाय तो थोड़ा बहुत सेंधा नमक लेना चाहिये।

(२) निम्बोली की मगज १ तोला, रसोत आधा तोला, हीरा दखन आधा तोला, गेलिक एसिड आधा तोला, अफीम आधा तोला बोदरसग पाव तोला ३ माशा ) शंख जरात पाव तोला और कपूर पाव तोला। इन सब चीजो को बारीक पीसकर गायके मक्खनमें मिलाकर मलहम बना लेना चाहिये। इस मलहमको शौच जानेके बाद सवेरे शाम बवासीर पर लगानेसे बवासीर की पीडा दूर हो जाती है।

उपरोक्त खाने और लगानेके दोनों प्रयोगों को कुछ दिन करनेसे बवासीर की भयकर व्याधिसे मनुष्य का छुटकारा हो जाता है। ( जगलनी जड़ी बूटी )

नीम और सूतिका रोग—

नीम को मराठीमें बालन्तनिम्ब कहते हैं। इसका यह नाम प्रसूति समयमें इसका उपयोगिता को जाहिर कर देता है। प्रसूतिके पहिले ही दिन प्रसूता को इसके पत्तों का स्वरस देनेसे गर्भाशय का सकोचन होता है, रज स्राव साफ होता है, गर्भाशय और उसके आसपास के भागों की सूजन मिट जाती है, भूख लगती है। दस्त साफ होता है। ज्वर नहीं होता और अगर कुछ आया तो उसका वेग अधिक नहीं रहता।

प्रसव होनेके बाद ६ दिनों तक प्रसूता को प्यास लगने पर नीम की छालका औटाया हुआ पानी देनेसे उसकी प्रकृति अच्छी रहती है।

नीमके कुछ गरम जलसे प्रसूता स्त्री की योनिको धोनेसे प्रसवके कारण होनवाला योनि शूल और शोथ नष्ट हो जाता है। व्रण जल्दी सूख जाता है और योनिशुद्ध न ग सकुचित हो जाती है।

सुआ रोग नाशक बफारा—

नीमके पुराने झाड़ की अन्तर छाल ३ सेर लेकर उसके छोटे २ टुकडे करके कूटकर ३ भाग कर लेना चाहिये। फिर मिट्टी के ३ घडे २ हण्डे लेकर उनमें बीस बीस सेर पानी और एक २ सेर कूटी हुई छाल डालकर उनपर ढक्कन लगाकर, ढक्कन की सधियों को घुटे हुए गेहूँ के आटेसे बन्द कर देना चाहिये, जिससे उसकी भाफ बाहर न निकल सके। उसके बाद उन बरतनों को चूल्हे पर चढाकर नीचे आग जला देना चाहिये। जब उनका पानी खूब खौलन लगे तब सूतिका रोग ग्रस्त स्त्री को बिना बिस्तर की खटिया पर सुलाकर ऊपर से एक कम्बल ऐसा ओढा देना चाहिये जिससे स्त्री का बदन भी ढक जाय और जो खटिया से लकर जमीन तक झूलता रहे। उसके बाद खौलते हुए पानी का एक हण्डा लकर उस खटिया के नीचे जिस जगह स्त्री का सिर हो वहाँ रखकर उसका मुह खोल देना चाहिये। जब उस बरतन की भाफ का वेग कुछ कम हो जाय तब उस हण्डे को बीमार स्त्री की कमरके नीचे सरकाकर उसके सिरके नीचे दूसरा ताजा खौलता हुआ हण्डा लाकर खोल देना चाहिये। जब दूसरे हण्डे का वेग भी कुछ कम पडने लगे तब कमरके नीचे वाला हण्डा पैरोंके नीचे करके सिरके नीचे वाला हण्डा कमरके नीचे करके तीसरा ताजा हण्डा लाकर सिरके नीचे खोल देना चाहिये। इस प्रकार तीनसे लेकर सात दिन तक करना चाहिये और पथ्यमें दूध, भात और घी खाने को और गरम

करके ठण्डा किया हुआ जल पीने को देना चाहिये। इस प्रयोगमे सूतिका रोगका विष पसीनेके रास्ते निकलकर रोगी को लाभ होता है।

नीम और सूजाक—

सुजाक के अन्दर जब लिगेंन्द्रिय सूजकर रोगी का पेशाब बन्द हो जाता है तब नीमके पत्तोके काढेमे रोगी को बिठानेसे पेशाब बहुत जल्दी होने लगता है।

नीम और प्लेग

नीमकी अन्तर छाल २ तोलाके लगभग जलके साथ पीसकर उसको ५ तोला पानीमें छानकर सवेरे शाम पीनेसे और पथ्यमे सिर्फ दूध पिलानेमे तथा जघाके जोडमे होने वाली गठान पर नीमके पत्तों को बारीक पीसकर पुल्टिस चढानेसे बडा लाभ होता है। इससे गठान बिखर जाती है और ज्वरमें शाति मिलती है।

प्लेगके टाइममें जिस कुटुम्बमें नीमके पत्तोका पीना शुरु रहता है उस कुटुम्बमें प्लेगका प्रवेश नहीं हो सकता। नीमका उपयोग प्लेगके लिये बहुत उपयोगी होता है। यह एक याग वाही वस्तु है जो शरीरके छोटे २ छिद्रों में पहुँचकर वहाके जन्तुओको नष्ट करती है।

नीमके पंचागको लेकर, कूटकर, पानीमें छानकर इस पानीको दस २ तोलेकी मात्रामें पन्द्रह ? मिनिटके अन्तरसे पिलानेसे और गठान पर इसके पत्तोका पुल्टिस बाधनेसे और रोगीके आसपास इसकी धूनी करते रहनेसे प्लेगके रोगमे बड़ा लाभ होता है।

नीमके अन्दर वनस्पतिज गन्धक ( Organie Sulfer ) काफी मात्रामें रहता है, इसी लिये प्लेगकी गठान और दूसरे चर्म रोगो पर इसका उपयोग बडा लाभदायक होता है।

नीम का मद

नीमके कुछ पुराने वृक्षोंमे से—जब वे झाड जोशपर आते हैं तब उनमेसे एक प्रकारका मद या ताडी झरने लगती है। कई वृक्षो से यह मद साल ? भर तक झरता रहता है। यह रस स्वादमें मीठा, गन्धमें कडवा अप्रिय और बहुत गाढा होता है। जिस समय यह मद झरता है उस समय झाडमें से एक प्रकारकी मधुर आवाज निकलती रहती है। इस मदको अग्रेजीमें नीम ताडी ( Nim toddy ) या ( Toddy of Margosa Tree ) कहते है।

यह रस एक बहुत कीमती औषधि है। चर्मरोगोके अन्दर ( याने खुजली, फोड़े-फुन्सी, दाद, विस्फोटक, इत्यादि ) यह बहुत उपयोगी है। यह खूनको साफ करता है। रक्त विकारमें इस रसको पीनेसे बड़ा लाभ होता है।

वातरक्त और दूसरे कुष्ट रोगोंमें इसको लगातार ६-७ महिने या १ साल तक पीनेसे बहुत

लाभ होता है। क्षयके बुखार, बुखारकी जलन और अजीर्ण रोगमें भी यह उपयोगी है। इसकी मात्राका अभी तक कोई निश्चय नहीं हुआ है। मगर बड़े आदमियोंके लिये साधारण तया १ से ४ तोले तककी मानी जाती है।

डॉक्टर मुहीन शरीफ अपनी मटेरिया मेडिका आफ मद्रास नामक पुस्तकमें इस रसका वर्णन करते हुए लिखते हैं कि—

" the Toddy of the margosa Tree appears to be of great service to some Chronic and long standing cases of Leprosy and other skin diseases, Consumption, atonic dyspepsia and general debility and although, I have not prescribed it myself, I am acquainted with several persons who praise the drug very highly from personal use and observation It is however extremely scarce and This is a great drawback to its use and adoption into general practice "

अर्थात् नीमकी यह ताडी पुराने और अधिक काल तक टिकने वाले गलित कुष्ट और दूसरे चर्मरोग, क्षय, बद हजमी और साधारण कमजोरीके बीमारों पर अच्छा काम करती है। यद्यपि मैंने इसका उपयोग नहीं किया है। मगर ऐसे कई लोगासे जिन्होने व्यक्तिगत रूपसे इसे उपयोगमे लिया है उनके द्वारा मैंने इसकी बहुत प्रशसा सुनी है।

देहरादूनके फारेस्ट कालेजके रसायन शास्त्रियोंने इस रसकी रासायनिक परीक्षा करके इसमे निम्न लिखित पदार्थ पाये हैं।

( १ ) माइश्चर ( Moisture ) ८६.५६ प्रतिशत

( २ ) प्रोटेइडज ( Proteids ) ३६ प्रतिशत

( ३ ) गोंद और रगीन पदार्थ ६ १७ प्रतिशत

( ४ ) द्राक्षशर्करा ( जी० ग्लूकोफ ) ? ६६ प्रतिशत।

( ५ ) इक्षुशर्करा ( सक्रोफ ) ३.५१ प्रतिशत।

( ६ ) राख ४१ प्रतिशत।

इसकी राखकी जाच करनेसे उसमें पोटेशियम, लोह, एल्यूमिनियम, केलशियम और कार्बन डायोकसाइड नामक पदार्थ पाये गये हैं।

यूनानी मत—

यूनानी हकीमोंमें किसीके मतसे नीम पहिले दर्जेमें गरम और खुश्क और किसीके मतसे पहले दर्जेमें सर्द और खुश्क है।

खूनको साफ करनेवाली जितनी औषधिया हैं उनमे इसकी जड़की छाल सबसे श्रेष्ठ है। कुष्ट, खुजली और फोडे फुन्सीमे यह बहुत लाभ पहुँचाती है। यह त्रिदोपनाशक, पाचक, पित्तज्वरको दूर करनेवाला और प्यासको मिटानेवाला है। इसके फूल, फल, और पत्ते समान भाग लेकर २ माशेकी मात्रामे खाना शुरू करें। धीरे २ यह मात्रा बढाकर ६ माशे तक कर देना चाहिये। इसप्रकार ४० दिन तक सेवन करनेसे श्वेत कुष्ठ मिट जाता है।

इसके पत्तोंको पीसकर उनपर गीला कपडा लपेट कर, उनका भुरता करके फोडों पर बाधनेसे कभी न भरनेवाले फोडे भी भर जाते हैं। आगसे जले हुए स्थान पर इसका तेल या इसका मरहम बनाकर लगानेसे बडी शान्ति मिलती है। इसके पत्तोंको गरम करके स्त्रीकी नाभिके नीचे बाधनेसे मासिक धर्मके समय होनेवाला कष्ट या पुरुषप्रसङ्गके समयमे होनेवाला दर्द मिट जाता है। वसन्तऋतु के टाइममे इसकी कच्ची कोंपलोंको ७ माशेकी मात्रामे ७।८ काली मिरचोंके साथ पीसकर ७ दिन तक पीनेसे और पथ्यमे सिर्फ बेसनकी रोटी और घी मिलाकर खानेसे सालभर तक किसीप्रकारका चर्मरोग और किसीप्रकारका रक्तरोग नहीं होता है। इसके सूखे पत्ते और बुझे हुए चूनेको इसके हरे पत्तोंके रसमे घोटकर नासूरमे भर देने से नासूर भर जाता है।

इसके ताजे पत्तोंका रस नाकमे टपकानेसे सिरका दर्द और कानमे टपकानेसे कानका दर्द मिटता है। इसकी लकडीसे दतून करनेसे और इसके काढ़ेसे कुल्ले करनेसे दात और मसूडे मजबूत होते हैं। इसके पत्तोको पीसकर उनकी टिकिया बनाकर तवे पर सेक कर पानी के साथ पीनेसे लिंगेद्रियके अन्दरका जख्म भर जाता है।

हैजेके अन्दर यदि दस्त और वमन जारी हों और बहुत प्यास लगती हो तो नीमके पत्तोंको पीसकर उनका गोला बनाकर, उस पर कपडमिट्टी करके भूभलमें दबाकर जब लाल हो जाय तब निकालकर उसकी मिट्टीको हटाकर उसका रस निकालकर थोड़ी २ देरसे एक १ तोलेकी मात्रामे अर्कगुलाबके साथ देनेमे अच्छा लाभ होता है।

नीमके फूल (यूनानीमत)—नीमके फूलका काढ़ा बनाकर उससे कुल्ले करनेसे दात और मसूडे मजबूत होते हैं। इसका अर्क खूनके विकार और कुष्ठको दूर करता है। इमली और शक्करके साथ इसके फूल को देनेसे कफ और पित्तके विकार दूर होते हैं। नीमके फूलोंका काजल बनाकर आखमे आजनेसे आखकी धुन्द और फूली कट जाती है तथा ज्योति बढती है।

नीमकी छाल—नीमकी छालका अर्क २ से ४ तोले तककी मात्रामे पीनेसे और २ घण्टेके बाद ताजा रोटी घीके साथ खानेसे लकवा, अर्धाङ्ग, गठिया, जलोदर, कोढ दूषितव्रण, तर खुजली और दाद इत्यादि रोगोंमे बहुत लाभ होता है।

नीमकी छाल २ तोला, सोंठ ४ माशे, गुड़ २ तोला। इनका काढ़ा बनाकर पीनेसे रुका हुआ मासिकधर्म चालू हो जाता है।

नीमकी छालका काढा या शीतनिर्यास बनाकर पिलानेसे खून साफ होकर खूनके सब रोग दूर हो जाते हैं।

नीमकी अन्तर छालको सुखाकर उसका चूर्ण लेनेसे बारीसे आनेवाला बुखार घट जाता है। भारतवर्षमें कुनैनके पहिले बुखारको दूर करनेके लिये यही औषधि काममें ली जाती थी।

नीमकामद—यूनानीमतसे नीमका मद खूनको साफ करनेवाला और उपदंश तथा कुष्ठको नष्ट करनेवाला होता है। इसको जखम पर डालनेसे जख्मके कीडे मर जाते हैं। ऐसी उपदंश जो किसी दवासे आराम न होती हो नीमके मदसे आराम हो जाती है।

नीमका गोंद—यूनानी मतसे नीमका गोंद खूनकी चालको तेज करनेवाला और शक्तिदायक होता है।

नीमके बीज—नीमके बीज दस्तावर और कृमिनाशक होते हैं। इन बीजोंमें तेल और गन्धक का कुछ अंश पाया जाता है। पुरानी गठिया, पुराने जहरबाज और तर खुजली पर इनका लेप करनेसे लाभ होता है।

नीमकी सींक—नीमकी सींक जिस पर पत्ते लगे हुए होते हैं दमा, खासी, पेटके कृमि, पित्त ज्वर और प्लेगके लिये लाभदायक वस्तु है। २१ नीमकी सींके और ७ काली मिरचको छटाक भर अर्क गुलाबमें पीसकर दो २ घण्टेके अन्तरसे पिलानेसे और प्लेगकी गिल्टी पर बारूद और मिट्टीके तेलको मिलाकर लेप करनेसे प्लेगके रोगीको बड़ा लाभ होता है।

उपयोग—

जीर्ण ज्वर—जो ज्वर शरीरमें हमेशा बना रहे और दूसरी किसी दवासे लाभ न हो तो नीम की अन्तर छालको एक तोलेकी मात्रामें लेकर १० छटाक पानीमें औटाकर जब १ छटाक पानी शेष रह जाय तब उसको छानकर प्रातःकालके समयमें रोगीको पिला देना चाहिये। इस प्रकार कुछ दिनों तक पिलानेसे रोगीके अन्दर रहनेवाला ज्वरांश निकल जाता है।

मलेरिया ज्वर—मलेरिया ज्वरमें नीमकी छालका काढा दिनमें तीन बार पिलानेसे बड़ा लाभ होता है। इससे बुखारके बादकी कमजोरी भी मिट जाती है।

पित्ती—शरीरमें पित्ती निकलने पर इसके तेलमें कपूर मिलाकर मालिश करनेसे पित्तीमें बहुत लाभ होता है।

मन्दाग्नि—नीमकी पकी हुई निम्बोलियों को नित्य प्रति नियम पूर्वक खानेसे मन्दाग्नि में लाभ होता है।

सापके जहरकी परीक्षा—साँप काटे हुए आदमीको नीमकी पत्तियाँ चबानेको दें। यदि वे कड़वी नहीं मालूम दें तो समझलो कि जहरका असर हो गया है।

बवासीर—नीमकी निम्बोली और एल्वेको मिलाकर ६ माशेकी मात्रामें खानेसे बवासीरके मस्से सूख जाते हैं।

प्रसूति कष्ट—नीमकी जड़को गर्भवती स्त्रीकी कमरमें बांधनेसे बच्चा आसानीसे पेदा होजाता है। मगर बच्चा पैदा होते ही नीमकी जड़को खोलकर तुरन्त फेंक देना चाहिये।

सखियाका जहर—नीमकी पत्तियोंका रस पिलानेसे सखियेका जहर उतर जाता है।

अफीमका जहर—नीमके पत्तोंका खूब तेज अर्क निकाल कर पिलानेसे अफीमके जहर में लाभ होता है।

वमन—नीमकी पत्तियोंका स्वरस पिलानेसे वमन होना बन्द हो जाता है।

उरुस्तम्भ—नीमकी जड़को पानीमें घिसकर गरम २ लेप करनेसे उरुस्तम्भमें लाभ होता है।

उपदंश—पाव भर नीमकी छालको जौ कुट करके १ सेर खौलते हुए पानीमें डालकर रात भर पड़ी रहने देना चाहिये। सुबह उसे कपडेसे छानकर उसमें से ५ तोला काढ़ा रोगीको पिला देना चाहिये और बाकी काढेसे गर्मी के घावोंको धोना चाहिये। कई महिनों तक इस प्रयोगको करनेसे उपदंशके रोगमें बड़ा लाभ होता है।

रतौंधी—नीमके तेलको आँखों में आजनेसे और नीमके ६ तोले स्वरसको २ दिनों तक प्रात काल पीनेसे रतौंधी दूर हो जाती है। मगर पीनेके प्रयोगको २ दिनसे ज्यादा नहीं करना चाहिये।

सन्तति निरोध—१ तोला नीमके गोंदके चूर्णको आधा पाव पानीमें गला कर कपडे से छान लें और उसमें १ हाथ लम्बा और एक हाथ चौडा साफ मलमल का कपडा तर करके छाहमें सुखाले जब कपडा सूख जाय तब उसके कैंचीसे रुपये २ बराबर गोल टुकडे काटकर एक शीशीमें रख छोडें। पुरुष संसर्गसे पहिले इसमें से एक कपडेका टुकडा लेकर स्त्री अपनी योनिके जरायु पिंडमें साट दे। सहवासके एक घंटेके बाद उस टुकडेको निकालकर फेंकदें। इस प्रयोगसे जरायुमें विचित्र स्फूर्ति पैदा होती है जिसके कारण गर्भ स्थित होने नहीं पाता।

नीमके शुद्ध तेलमें रूई का फाया तर करके सहवाससे पहिले जरायुपिंडमें रख देनेसे शुक्र कीटाणु १ घण्टे के अन्दर ही मर जाते हैं और गर्भ स्थित होने नहीं पाता।

—( नीमके उपयोग )

बनावटें

ज्वर नाशक नीम क्वाथ—

नीम की जड़ की अन्तर छाल १ छटाक लेकर जौकुट करके ६४ तोले पानी में १५ मिनिट तक उबालकर छान लेना चाहिये। मलेरिया ज्वरमें जब कोई दूसरी दवा फायदा नहीं करती हो, तब इस काढ़े को ४ से ८ तोले तक की मात्रामें बुखार चढ़नेसे पहिले २।३ बार पिलानेसे बुखार रुक जाता है। जिन लोगों को क्विनाइन अनुकूल नहीं पड़ता है उन लोगों को भी इस औषधि से अच्छा लाभ होता है।

*निम्बारिष्ट—*

नीम की अन्तर छाल २॥ सेर जल ६४ सेर। जलमें नीम की छाल को डालकर औटाना चाहिये। जब १६ सेर जल रह जाय तब उसको छान लेना चाहिये। फिर उस क्वाथमें ५ सेर पुराना गुड़, ३२ तोला धायके फूल, २ तोला सफेद जीरा, २ तोला काली मिरच, २ तोला चिरायते के फूल और २ तोला पीपल को कूट पीसकर अच्छी तरह मिला देना चाहिये। फिर एक मजबूत घड़े में घी चुपड़कर, उस बरतनमें इस क्वाथ को भरकर उसका मुंह मजबूतीसे बन्द करके १ महीने तक पड़ा रहने देना चाहिये। उसके बाद उसको पांच ५ दिनके अन्तर से तीन बार छान लेना चाहिये। जिससे लाल रंग का सुन्दर निम्बारिष्ट तैयार हो जायगा।

इस निंबारिष्ट को भोजनके १ घण्टा पश्चात् २॥ तोले की मात्रा में पानीके साथ नियम पूर्वक लेनेसे सब प्रकारके चर्मरोग, सब प्रकारके मलेरिया ज्वर और मलेरिया ज्वरसे होनेवाली कमजोरी दूर होती है।

*निम्बहरिद्राखण्ड—*

नीम का रस ६४ तोला, शक्कर ३२ तोला दोनों को मिलाकर हलकी आंच पर पकाना चाहिये। जब वह रस ऐसा गाढा हो जाय कि चम्मचके चिपकने लगे तब उसमें चित्रक, हरड़, बहेड़ा, आँवला, नागर माथा, कालीजीरी, अजवायन, अजमोद, निर्गुण्डीके बीज, सूंठ, मिरच, पीपर, निसोथ, दंती की जड़, मेंहदी के बीज, नीमके बीज और बावची के बीज दो दो तोला और वायविडंग तथा अनन्तमूल चार २ तोला लेकर। इन सब औषधियों का कपड़ छन चूर्ण करके उसमें मिलाकर कांच की बरनी में भर देना चाहिये।

मन्दाग्नि—नीमकी पकी हुई निम्बोलियों को नित्य प्रति नियम पूर्वक खानेसे मन्दाग्नि मे लाभ होता है।

सापके जहरकी परीक्षा—साँप काटे हुए आदमीको नीमकी पत्तियाँ चबानेको दें। यदि वे कड़वी नहीं मालूम दें तो समझलो कि जहरका असर हो गया है।

बवासीर—नीमकी निम्बोली और एलुवेको मिलाकर ६ माशेकी मात्रामे खानेसे बवासीरके मस्से सूख जाते हैं।

प्रसूति कष्ट—नीमकी जडको गर्भवती स्त्रीकी कमरम बाधनेसे बच्चा आसानीसे पैदा होजाता है। मगर बच्चा पैदा होते ही नीमकी जडको खालकर तुरन्त फेंक देना चाहिये।

संखियाका जहर—नीमकी पत्तियोंका रस पिलानेसे सखियेका जहर उतर जाता है।

अफीमका जहर—नीमके पत्तोंका खूब तेज अर्क निकाल कर पिलानेसे अफीमके जहर में लाभ होता है।

वमन—नीमकी पत्तियोंका स्वरस पिलानेसे वमन होना बन्द हो जाता है।

उरुस्तम्भ—नीमकी जडको पानीमें घिसकर गरम २ लेप करनेसे उरुस्तम्भमें लाभ होता है।

उपदंश—पाव भर नीमकी छालको जौ कुट करके १ सेर खौलते हुए पानीमें डालकर रात भर पड़ी रहने देना चाहिये। सुबह उसे कपडेसे छानकर उसमें से ५ तोला काढा रोगीको पिला देना चाहिये और बाकी काढेसे गर्मी के घावोंको धोना चाहिये। कई महिनो तक इस प्रयोगको करनेसे उपदंशके रोगमें बडा लाभ होता है।

रतौंधी—नीमके तेलको आँखो में आंजनेसे और नीमके ६ तोले स्वरसको २ दिनो तक प्रात काल पीनेसे रतौंधी दूर हो जाती है। मगर पीनेके प्रयोगको २ दिनसे ज्यादा नहीं करना चाहिये।

सन्तति निरोध—१ तोला नीमके गोंदके चूर्णको आधा पाव पानीमें गला कर कपडे से छान लें और उसमें १ हाथ लंबा और एक हाथ चौडा साफ मल २ का कपडा तर करके छाहमें सुखाले जब कपडा सूख जाय तब उसके कैंचीसे रुपये २ बराबर गोल टुकडे काटकर एक शीशीमे रख छोडें। पुरुष संसर्गसे पहिले इसमें से एक कपडेका टुकड़ा लेकर स्त्री अपनी योनिके जरायु पिंडमे साट दे। सहवासके एक घंटेके बाद उस टुकड़ेको निकालकर फेंकदें। इस प्रयोगसे जरायुमे विचित्र स्फूर्त्ति पैदा होती है जिसके कारण गर्भ स्थित होने नहीं पाता।

नीमके शुद्ध तेलमें रूई का फाया तर करके सहवाससे पहिले जरायुपिंडमें रख देनेसे शुक्र कीटाणु १ घण्टे के अन्दर ही मर जाते हैं और गर्भ स्थित होने नहीं पाता।

—( नीमके उपयोग )

बनावटें

ज्वर नाशक नीम क्वाथ—

नीम की जड़ की अन्तर छाल १ छटाक लेकर जौकुट करके ६४ तोले पानी में १५ मिनिट तक उबालकर छान लेना चाहिये। मलेरिया ज्वरमें जब कोई दूसरी दवा फायदा नहीं करती हो, तब इस काढे को ४ से ८ तोले तक की मात्रामें बुखार चढनेसे पहिले २।३ बार पिलानेसे बुखार रुक जाता है। जिन लोगों को क्विनाइन अनुकूल नहीं पड़ता है उन लोगों को भी इस औषधि से अच्छा लाभ होता है।

निम्बारिष्ट—

नीम की अन्तर छाल २॥ सेर जल ६४ सेर। जलमें नीम की छाल को डालकर औटाना चाहिये। जब १६ सेर जल रह जाय तब उसको छान लेना चाहिये। फिर उस क्वाथमें ५ सेर पुराना गुड़, ३२ तोला धायके फूल, २ तोला सफेद जीरा, २ तोला काली मिरच, २ तोला चिरायते के फूल और २ तोला पीपल को कूट पीसकर अच्छी तरह मिला देना चाहिये। फिर एक मजबूत घडे में घी चुपड़कर, उस बरतनमें इस क्वाथ को भरकर उसका मुह मजबूतीसे बन्द करके १ महीने तक पड़ा रहने देना चाहिये। उसके बाद उसको पाच २ दिनके अन्तर से तीन बार छान लेना चाहिये। जिससे लाल रंग का सुन्दर निम्बारिष्ट तैयार हो जायगा।

इस निंबारिष्ट को भोजनके १ घण्टा पश्चात २॥ तोले की मात्रा में पानीके साथ नियम पूर्वक लेनेसे सब प्रकारके चर्मरोग, सब प्रकारके मलेरिया ज्वर और मलेरिया ज्वरमें होनेवाली कमजोरी दूर होती है।

निम्बहरिद्राखंड—

नीम का रस ६४ तोला, शक्कर ३२ तोला दोनो को मिलाकर हलकी आंच पर पकाना चाहिये। जब वह रस ऐसा गाढा हो जाय कि चम्मचके चिपकने लगे तब उसमें चित्रक, हरड़, बहेडा, आँवला, नागर माथा, कालीजीरी, अजवायन, अजमोद, निर्गुण्डीके बीज, सूंठ, मिरच, पीपर, निसोथ, दती की जड़, मेंहदी के बीज, नीमके बीज और बावची के बीज दो दो तोला और वायविडंग तथा अनन्तमूल चार २ तोला लेना। इन सब औषधियों का कपड़ छन चूर्ण करके उसमें मिलाकर काच की बरनी में भर देना चाहिये।

इस औषधि में से प्रतिदिन सवेरे शाम १ तोले की मात्रा में खाकर ऊपर से ठंडा जल पीनेसे सब प्रकारके कृमिरोग, नहीं भरनेवाले घाव, कुष्ठ, नासूर भगन्दर, विद्रधि, दाद, खाज, खुजली इत्यादि नष्ट होते हैं। अजीर्ण, कामला, वायुगोला और सूजन की व्याधि में भी यह लाभ पहुँचाती है। (नागार्जुन संहिता)

बृहत्पचनिंबचूर्ण—

नीमके फूल, फल, छाल, जड और पत्ते प्रत्येक दा २ तोला। हरड़ बहेड़ा, आवला, सोंठ, मिर्च, पीपर, ब्राह्मी, गोखरू, चित्रक की जड़, वायविडंग, अनन्त मूल, वराहीकन्द, लोहभस्म, दारू हल्दी, अमलतास, शक्कर, कूट, इन्द्रजौ, काली पहाड़ की जड़ और गायके गोबरके साथ औटाकर, शुद्ध किये हुए भिलावें। ये सब चीजें एक एक तोला लेकर, इनको कूट पीसकर खेर की अन्तर छालके काढे की ५ भावना देना चाहिये। फिर नीमके अन्तर छालके क्वाथ की ७ भावनाए देकर इस चूर्ण को खा लेना चाहिये। फिर भागरेके रस की ५ भावनाए देकर उसको छायामे सुखा लेना चाहिये उसके बाद इसको कपडछन करके बोतलमें भर देना चाहिये। वमन, विरेचन इत्यादिसे शरीर को शुद्ध करके इस औषधि को ३ माशे से ६ माशे तक की मात्रा में असमान घी और शहदके साथ चाटनेसे सब प्रकारके चर्मरोग, दाद, खुजली, विस्फोटक, हर प्रकार का कुष्ठ, रतवा, भगन्दर, वातरक्त, व्रण, नासूर, विष विकार, इत्यादि रोग दूर हो जाते हैं। इसी प्रकार प्लेग, हैजा, शीतला, मलेरिया इत्यादि उपद्रवोंवाली ऋतुमें इसका सेवन चालू रखनसे इन रोगोंके आक्रमण का भय नहीं रहता।

नीम का मलहम—

नीम का तेल १ पाव, मोम आधा पाव नीम की हरी पत्तियों का रस १ सेर, नीम की जड की छाल का चूर्ण १ छटाक, नीम की पत्तियों की राख २॥ तोला। एक लोहे की कढाईमे नीम का तेल और नीम की हरी पत्तियो का रस डालकर हलकी आचसे पकावें। जब रस जलते २ छटाक आधी छटाक रह जाय तब उसमें मोम डाल दें। जब मोम गलकर तेलमे मिल जाय, तब कढाही को चूल्हे से नीचे उतारकर कपडे से छानकर तेल की गाद को अलग करदें। फिर नीम की छाल का चूर्ण और नीमकी पत्तियों की राख उसमे मिलादें।

यह नीम का मरहम जहरीले तथा दूसरे घावों पर लगानेके योग्य है। इस एक ही वस्तु से घावो का शोधन और रोपण दोनों काम एक ही साथ हो जाते है। सडे हुए पुराने घाव, नासूर तथा पशुओंके घावों पर भी उसका उपयोग किया जाता है।

निम्बवारुणी—

नीम की ताडी ८ सेर, नया गुड़ १। सेर, अदरक १ छटाक, नीम की अन्तरछाल आधा

सेर। एक मिट्टीके घड़े म नीम की ताडी डालकर पहिले उसमें अदरक कूटकर डालदें, फिर उसमें गुड़ और बादमें छाल कूटकर मिलादें। उसके बाद उस मिट्टी क घडे का मुह बन्दकर कपडमिट्टी करके २४ दिन तक जमीनके अन्दर गाड़दें। २५ वें दिन उस घडे को जमीन से निकालकर भफके से उसका अर्क खींचल। इस अर्क को भोजनके पश्चात ४ तोले की मात्रा मे लेनेसे वातरक्त, गठिया, मंदाग्नि, कुष्ट, बवासीर, पुराना बुखार और पालिया राग नष्ट होते हैं।

नीम का काजल—

नीम की पीली सूखी पत्तियाँ नग ७, नीमके सूखे फूलोंका चूर्ण १ माशा, नीम का तेल १ तोला, साफ महीन कपड़ा ४ इच। महीन ४ इच कपडे को लेकर उस पर नीम की सूखी पत्तियाँ और नीमके फूलों का सूखा चूर्ण बिछादे और फिर उस कपडे को हाथसे मसलकर बत्ती बनालें। एक मिट्टीके दीपकमे नीम का तेल डालकर उसम उस बत्ती को डुबाकर जलादें। जब बत्ती अच्छी तरह जलने लगे तब उस पर एक ढकनी लगाकर काजल तैयार कर लें। इस काजलको आँखमें आजने से सब प्रकारके नेत्र राग दूर होकर आँखों की रोशनी बढती है।

मुजिर—

जिनकी कामशक्ति कमजोर हो उन लोगोंको नीम का अधिक सेवन नहीं करना चाहिये। प्रात काल उठकर उपापान करनेवाले का भी नीम नहीं खाना चाहिये।

प्रतिनिधि—

नीमके नहीं मिलने की हालत म बकायन की छाल और उसके पत्तों का व्यवहार करना चाहिये। बकायन भी नीम ही की तरह गुणवाला है। मगर इसमे विष का अश अधिक होता है। इसलिये इसको थोड़ी मात्रामें लेना चाहिये।

दर्पनाशक—

नीमके सेवन स अगर कुछ विकार उत्पन्न हो जाय तो उसका घी, गाय का दूध और सेंधे निमकसे दूर करना चाहिये।

## नीम बकायन

नाम —

बृहत् निम्ब, अद्रादु, गेरिका, गिरिपत्रा, हिमद्रुमा, कैदर्य, ककंडा, केशमुष्टि क्षीरा, महा द्राक्षा, महानिंब, महातिक्ता, पर्वता, पवनेष्टा, शुक्ल सारका, विष मुष्टिका। हिन्दी—बकायननिंब,

महानिंब, डेकना, द्रेक, बकेरजा। गुजराती—बकाण लींबड़ो। बंगाल—घोड़ानीम। गढवाल—डेंकना। फारसी—अफदेदेरचटा, बकन। पंजाब—धकेन, चेन, ढेक, जेफ, रुचेन। तामील—मलइ वेंबू, मलइव्हेपन, सिगारी निंनम। तेलगू—तुर्फाव्हेप, व्हिटीव्हेप। उर्दू—बकायन लेटिन—Melia Azedarach। ( मेलिया अर्मेडेरचा )।

वर्णन—

बकायन का पेड़ हिन्दुस्तानमें बहुत स्थानो पर पाया जाता है। इसके झाड़ ३५ से ४० फुट तक ऊंचे होते हैं। इसका वृक्ष बहुत सीधा होता है। इसके पत्ते नीमके पत्तोसे कुछ बड़े होते हैं। इसके फूल गुच्छोंके अन्दर लगते हैं। ये नीमके फूलोंसे कुछ बड़े और किंचित नीले रंगके होते हैं। इसके फल पकने पर पीले रंग के हो जाते हैं। इसके बीजोंमें से एक प्रकार स्थिर तेल निकलता है जो नीमके तेल की तरह होता है। इस वनस्पति का पंचांग अधिक मात्रामें विपेला होता है।

बकायनके पेडमेसे फागुन और चेतके महिनेमें एक प्रकार का दुधिया रस निकलता है। यह रस मादक और विपेला होता है। इसलिये फागुन और चेतके महिनेमें इस वनस्पति का व्यवहार नहीं करना चाहिये।

इसकी छाल, पत्ते और फलों को अधिक मात्रामें लेनेसे शरीर पर एक प्रकार का विपैला प्रभाव पड़ता है। जिससे मनुष्य अचेत हो जाता है। इसके ६।७ बीजों को खिलाने पर मनुष्य के शरीरमें उल्टी, ऐठन और हैजेके पूर्ण लक्षण दृष्टिगोचर होने लगते हैं और कुछदेरमें मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिमत—आयुर्वेदिक मतसे बकायन कडवा, शीतल, रूक्ष, कसेला, मलरोधक तथा कफ, दाह, व्रण रक्तरोग, पित्त, कृमि, विपमज्वर, हृदय रोग, कुष्ठ, वमन, प्रमेह, ?जा, चूहे का विष गुल्म, शीत पित्त, अर्श और श्वास रोग को दूर करने वाला होता है।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे इसके बीज कडवे और कफनिस्सारक होते हैं। बढी हुई तिल्लीमें इन का उपयोग किया जाता है। हृदय की शिकायतोंमें भी ये लाभदायक हैं। ये वमन कारक, रक्तस्राव रोधक, नकसीर को रोकने वाले, दांतोंको मजबूत करनेवाले, सूजन को नष्ट करने वाले और गीली तथा सूखी खुजली को दूर करने वाले होते हैं। इसके बीजों का तेल मस्तिष्क को ताकत देने वाला, मृदुविरेचक, कर्णशूल को दूर करनेवाला, रक्तशोधक और बवासीर,

तिल्ली और यकृत की विकृति तथा सूजन को दूरकरने वाला होता है। इसके फूल और पत्ते मूत्रल, ऋतुस्राव नियामक और स्नायविक मस्तकशूल और सर्दी की सूजन को दूर करनेवाले होते हैं।

मुसलमानी देशोंमें इस वनस्पति का उपयोग बहुत बड़े पेमाने पर किया जाता है। परशियन हकीम इसकी जानकारी हिन्दुस्तानसे ले गये थे। उन लोगोंके मनसे इस वृक्ष की छाल, फूल, फल और पत्ते गरम और रूक्ष होते हैं, इसके फूल और पत्तों का पुल्टिस व लेप, लगानेसे स्नायविक मस्तक शूल दूर होता है। इसके पत्तों का रस अन्त प्रयोगमें लेनेसे मूत्रल, ऋतुस्राव नियामक, रक्तशोधक और सरदी की सूजन को मिटाने वाला होता है।

पंजाबमें इसके बीजोंको संधियातकी पीडा दूर करनेके लिये दिये जाते हैं। कांगडामें इसके बीजोंका चूर्ण दूसरी औषधियोंके साथ मिलाकर पुल्टिसके रूपमें या लेपके रूपमें गठिया और संधियातकी पीड़ापे लगाया जाता है।

अमेरिकामें इसके पत्तोंका काढा हिस्टीरिया रोगको दूर करनेवाला सकोचक और अग्निवर्धक माना जाता है। इसके पत्ते और छाल गलित कुष्ट और कंठमालाको दूर करनेके लिये खाने और लगानेके काममें लिये जाते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसके फूलोंके पुल्टिसमें कृमिनाशक तत्व मौजूद रहते हैं और इसलिये चर्मरोगोंको दूर करनेके लिये यह एक महत्वपूर्ण औषधि मानी जाती है। इसके फलमें जहरीले तत्व रहते हैं। फिर भी यह गलित कुष्ट और कण्ठमालामें उपयोगमें लिया जाता है।

इडोचायनामें इसके फल और फूल अग्निवर्धक, सकोचक और कृमिनाशक माने जाते हैं। कुछ विशेष प्रकारके ज्वर और पेशाब सम्बन्धी बीमारियोंमें इसके फलोंका उपयोग किया जाता है। इसके बीज टायफाइड फीवर, पेशाबकी रुकावट और पेडूके दर्दको दूर करनेके काममें लिये जाते हैं।

कोमानके मतानुसार इसकी छालका काढा कटुपौष्टिक, पार्यायिक ज्वरोंको दूर करने वाला और मन्दाग्नि नाशक समझा जाता है। वास्तवमें यह एक प्रभावशाली कटुपौष्टिक वस्तु है। मगर इसमें मलेरिया कीटाणुओंको नष्ट करनेवाले कोई तत्व नहीं पाये जाते।

डाक्टर देसाईके मतानुसार बकायन नीमके धर्म साधारण नीमकी तरह होते हैं। यह कृमिनाशक चर्मरोगोंको दूर करनेवाला, गर्भाशयके लिये सकोचक व वेदनानाशक और शोधक होता है। इसके प्रयोगसे गोल जन्तु मर जाते हैं। इसकी अधिक मात्रामें दस्त और उल्टी होकर नशा आ जाता है।

[1] कृमि रोग में अथवा कृमियोंकी वजहसे उत्पन्न होनेवाले ज्वरमें यह एक उत्तम गुणकारी वस्तु है।

यूनानी मत—

यूनानी मत से यह पाचक, क्षुधाकारक, आमाशयको शक्ति देनेवाला, संग्रहणीमें लाभ पहुँचानेवाला, धातु पैदा करनेवाला, कृमिनाशक, कफको छाटनेवाला और मुँहकी बदबूको मिटानेवाला होता है। यह दूसरे दर्जेमें गरम और खुश्क होता है। इसकी जडको घिसकर जहरीले कीडोंके काटनेकी जगह पर लगानेसे लाभ होता है।

आवके दस्त मिटानेके लिये इसके हरे कच्चे फल खिलाये जाते हैं। इसके पत्तोंको पानीके साथ पीसकर शरबतकी तरह पिलानेसे वमन बन्द होती है। ज्वरको दूर करनेके लिये इसके पत्तोंको दूसरी कडवी दवाइयोंके साथ पिलाया जाता है। इसके पत्तोंके चूर्णका लेप करनेसे छोटी छोटी फुन्सियां मिट जाती हैं, खुजलीमें लाभ होता है। इसकी जडके चूर्णको शहद और पानीके साथ चटानेसे पित्तज उपद्रव मिटते हैं। इसकी जडके काढे पर सोंठका चूर्ण भुरभुराकर पिलानेसे उदर शूल मिटता है।

इसके सूखे और गीले पत्ते कढीमें छोंक लगानेके काममें तथा दालको स्वादिष्ट बनानेके काममें आते हैं। इनको चनेके बेसनमें मिलाकर पकौडी भी बनाई जाती है।

गावर्टके मतानुसार मीलोनमें इसके पत्तोंका काढा सर्पदंशमें पिलानेके काममें लिया जाता है और इसकी जड काटे हुए हिस्से पर लगानेके काममें ली जाती है।

कार्टर के मतानुसार लखीमपुर आसाममें इसकी जडका रस मूत्राशयसे सम्बन्ध रखने वाले रोगोंमें उत्तम माना जाता है।

इन्डोचायनामें इसका फल संकोचक माना जाता है और इसके पत्ते रक्तातिसार और आमातिसारमें काममें लिये जाते हैं।

कर्नल चोपराके मतानुसार यह पौष्टिक और अग्निप्रवर्धक है। सर्पदंशमें भी यह उपयोगी माना जाता है। इसमें इसेंशियल आइल, ग्लूकोसाइड और कोइनिगिन (Koenigin) नामक तत्व पाये जाते हैं।

केस और महस्करके मतानुसार इसके पत्ते, जड और छिलका सर्पविषमें बिलकुल निरुपयोगी है।

# नीबू

नाम—

संस्कृत—लिम्बूक, अम्लजम्भीर, दन्तशठ, जन्तुजित, इत्यादि, हिन्दी—नींबू, बंगाल—लिबुक, कागजीलेबू, । मराठी—लिंबू, कागजी लिंबू । गुजराती—लिंबू, कागदलिंबू । तामील—एलमिच्चे । तेलगू—निम्मपण्डु । अंग्रेजी—Lemons लेटिन—Citrus Acida ( साइट्रस एसिडा ) ।

वर्णन—

नींबू का फल सारे भारतवर्षमें खटाई के काममें आता है । इसको सब कोई जानते हैं । इसलिये इस के विशेष परिचय की आवश्यकता नहीं । इसकी ५।६ जातिया होती हैं । जैसे —कागजी नीबू, जम्भीरी नीबू, कन्नानीबू, बिजोरा नीबू, मीठा नीबू, इत्यादि । इन सबके स्वरूप और गुणोंमें थोडा २ भेद होता है ।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत - आयुर्वेदिक मत से नीबू खट्टा, वात नाशक, दीपन, पाचक, हलका, कृमिनाशक, तीक्ष्ण, उदर रोगों को दूर करनेवाला, श्रमहारक, शूलमें हितकारी, अरुचि निवारक और रोचक होता है ।

नींबूसे त्रिदोप जन्य रोग, तत्कालके ज्वर, अनेक प्रकार की मन्दाग्नि, मुंहसे पानी का गिरना, कब्जियत, बद्धकोष्टता और विशूचिका रोगमें लाभ होता है ।

निघण्टु रत्नाकरके मतानुसार नींबू गरम, पाचक, खट्टा, दीपन, नेत्रों को हितकारी, अतिशय रुचिकारक कडवा, कसैला, हलका तथा कफ, वात, वमन, खासी, कण्ठरोग, क्षय, पित्तशूल, त्रिदोप, मलस्तम्भ, विषूचिका और कब्जियतमें गुणकारी होता है । यह आमवात, गुल्म और कृमि को दूर करता है ।

एक आधुनिक चिकित्सक के मतानुसार नींबू का रस दीपन, पाचक हृदयको बल देने वाला, प्यास निवारक, रक्तपित्तनाशक, पार्यायिक ज्वरों को दूर करने वाला, ज्वर नाशक और मूत्रल होता है । इसकी छाल दीपक होती है ।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञानमें भी इस वस्तुने अच्छी ख्याति प्राप्त की है । अनेक प्रामाणिक खोजोंमे यह साबित हो चुका है कि नींबू में जीवन पोपक खटाईके सत्य

डालता है। यही दुष्ट पार्थिव द्रव्य शरीरमें एकत्रित होकर सधिवात, ग्रन्थिवात, गठिया इत्यादि रोगोंको पैदा करते है।

नींबूके अन्दर सिर्फ खट्टे तत्व (Incombined Acids) ही रहते हों यह बात नहीं है। इनके सिवाय इसमें दूसरे अम्ल प्रतियोगी (Alkaline) खनिज तत्व भी रहते हैं। इन तत्वों को साइट्रेटस, मेलेटस और टारट्रेटस कहते हैं। नींबूके एक औंस रसमें ३२ ग्रेन साइट्रिक एसिड रहता है।

पेटके अन्दर कृमियोंकी क्रियाको रोककर, अवांछित पार्थिव द्रव्योंको नष्ट भ्रष्ट करके नींबू का रस रक्त में मिलता है और रक्तको शुद्ध करके उस दुष्ट पदार्थों के संसर्गसे बचाता है।

इस कामको करनेके पश्चात नींबू का रस कारबोनिक एसिड और पानी इन दो रूपोंमे परिवर्तित हो जाता है और इसी रूपांतरकी स्थितिमें वह सर्वोत्तम कार्य करता है।

इस प्रकार नींबू पाचन क्रियाको शुद्ध करके रक्तके साथ मिलनेके पश्चात् पानी और कारबोनिक एसिडके रूपमें परिवर्त्तित होता है। यह कारबानिक एसिडरक्तमें रहनेवाले अम्ल प्रतियोगी लवणोंके साथ मिलता है और फिर उसमें से कारबोनेटस (कारबोनिक एसिड और दूसरे तत्वों का मिश्रण) बनता है। इस कारबानेटसमें खटाई नहीं होती। बल्कि बहुत उग्र अम्ल प्रतियोगी लवण होते हैं। जब रक्त घूमता २ फेफड़ों में जाता है तब यह कारबानेटस कारबोनिक एसिड को श्वासोच्छ्वासके द्वारा शरीरके बाहर फेंक देता है और शरीरमें सिर्फ अम्ल प्रतियोगी तत्व शेष रह जाते हैं। ये अम्ल प्रतियोगी तत्व शरीरमें रहनेवाले यूरिक एसिड, लकटिक एसिड इत्यादि अनेक प्रकारके जहरी एसिडोंको बेकार कर देते हैं। ये सब जहरी एसिडस खराब पाचन क्रियाके द्वारा ही शरीरमें उत्पन्न होते हैं और अनेक प्रकारके विकार पैदा करते रहते हैं।

उपरोक्त विवेचनसे हमें यह बात मालूम हो गई कि इन एसिडों पर विजय पानेके लिये और शरीरमें तन्दुरुस्ती कायम रखनेके लिये रक्तमें अम्ल प्रतियोगी तत्वों का होना कितना आवश्यक है। नींबू का रस रक्तमें उन्हीं अम्ल प्रतियोगी तत्वों को पैदा करता है।

उत्तम और स्वास्थ्य दायक भोजन हमेशा अम्ल प्रतियोगी होता है। रक्त और दूसरी कार्य करनेवाली इंद्रियोंके द्वारा जो जहरी एसिडस पसीनेके रूपमें या पार्थिव द्रव्योंके रूपमे शरीरसे बाहर फेंके जाते हैं वे अम्ल प्रतियोगी पदार्थोंके द्वारा ही छिन्न भिन्न होकर प्रवाही पदार्थोंके रूपमे शरीरसे बाहर निकल जाते हैं। जब रक्तमें अम्ल प्रतियोगी तत्व नहीं होते हैं तब यह जहरी एसिडस शरीरमें गदर मचाकर अनेक प्रकारके रोग पैदा करते हैं।

यह बात अनेक प्रकार की खोजोंसे सिद्ध हो चुकी है कि अगर रक्तको अम्ल प्रतियोगी बनाना हो तो प्रतिदिन ४ से लेकर १४ नींबू तक का रस उपयोग में लेना चाहिये। नींबू

चिकित्सा का सारा आधार ही इस बात पर है कि नीबूके सेवनसे रक्त, अम्ल प्रतियोगी बनता है और अम्ल प्रतियोगी रक्त सब प्रकारके जहरों को शरीरसे धकल कर बाहर निकाल देता है।

यह बात आवश्यक रूपसे हमेशा ख्याल में रखना चाहिये कि नींबू का रस हमेशा भूखे पेट ही लिया जाय। गर्मी का अपेक्षा सर्दियोंमें नींबू का रस कम लेना चाहिये। क्योंकि जाड़ेमें ठण्डी हवा नीबू के द्वारा त्वचा के रास्ते बाहर निकलनेवाले दुष्ट पदार्थों को रोकती है।

जो भोजन अम्ल प्रतियोगी पाचन क्रियाके ऊपर निर्भर रहता हो उस भोजनके साथ नींबू नहीं देना चाहिये। जहां तक बने नींबू का रस दूसरे फलोंके रसके साथमें लेना चाहिये। अन्यथा पानीके साथ जरूर लेना चाहिये। बिना पानी डाले हुए अकेले ताजा नीबू का रस नहीं लेना चाहिये। खाली नीबू चूसना रोगीके लिये कुछ कठिन होता है। इसलिये अगर साधन हो तो अमेरिका में बनी हुई फलोंके रस निकालन की मशीन का उपयोग करना चाहिये। इस मशीन से नीबूमें से सब रस गाढे रूपमें निकल जाता है। उसमें थोडा पानी और थोडा शहद मिला देनेसे बहुत उत्तम पेय तैयार हो जाता है।

अगर यह मशीन सुलभ न हो तो नीबू को भाफकर उपयोग में लेना उत्तम होता है। बहुतसे रोगोंमें बाफे हुए या सेके हुए नीबू ही लेने का विधान होता है क्योंकि गरमी की वजह से नीबूके अन्दर का मावा एकदम मुलायम बन जाता है और उसमें रहनेवाला सुगन्धित तेल और कटुपौष्टिक लवण आसानीसे बाहर आ जाते हैं।

नींबू और मलेरिया—

सिसली टापू में नींबू मलेरिया के ऊपर बहुत अकसीर प्रयोग माना जाता है। बहुत उम्र काफी बनाकर उसमें नीबू का रस मिलाकर देनेसे मलेरियामें बहुत अच्छा काम होता है। बहुत से पुराने हठीले रोगोंमें भी नीबू का रस देनेस अद्भुत परिणाम होते हुए देखे गये हैं। नीबूके मावेमें एक जाति का उग्र कृमिनाशक तेल रहता है। जिसे लेमन ऑइल कहते हैं। इसके सिवाय इसमें दूसरे भी अनेक कटुपौष्टिक तत्त्व रहते हैं। सिनकोना झाड़ की छालमें जैसे गुण हैं वैसे ही नींबूके कटुपौष्टिक तत्त्वोंमें भी माने जाते हैं।

नींबू क्षय और केन्सर—

डाक्टर विल्सने लाइफ और हेल्थ नामक मासिक पत्रमें क्षय ( Consumpotion ) के लिये एक बहुत ही अच्छा नुस्खा लिखा था। केन्सरके लिये भी यह नुस्खा लाभदायक साबित हुआ है। यह नुस्खा इस प्रकार है —

"थोडे रसदार पके हुए अच्छे नींबू ठण्डे पानीमें रख देना चाहिये। फिर उस पानी

को गरम करना चाहिये। जिससे नींबू मुलायम हो जायेंगे। इन नींबुओं को या तो ज्यों का त्यों चूस जाना चाहिये अगर चूसे नहीं जाय तो उनका रस निकाल कर शहद मिलाकर पी जाना चाहिये। आंग पर बाफ करके भी उनका रस निकाला जा सकता है। रस पीने का उत्तम समय सवेरे और शामको है। दुपहरमें खानेके पश्चात् नींबू का रस नहीं पीना चाहिये। पहले दिन एक नींबू से शुरू करके एक एक नींबू रोज बढाते जाना चाहिये। इस प्रकार १२ नींबू तक बढा कर फिर एक एक नींबू घटाना चाहिये। अगर १२ नींबू तक बढाते हुए कुछ घबराहट हो तो आठही नींबू तक बढा करके फिर घटाना शुरू कर देना चाहिये।

नींबू और मेदवृद्धि—

प्रति दिन २ प्याले नीबूके रसमें २ प्याला पानी मिलाकर पीते रहने से और साथमें उपवास जारी रखन से मेदवृद्धिके ऊपर अद्‌भुत असर दृष्टिगोचर होता है। उपवास न हो सके तो थोडा भोजन करके इस प्रयोग को जारी रखना चाहिये पर एक बात का खयाल रखना चाहिए कि दुपहर की २ बजेके पश्चात् जो भोजन लिया जाता है। वह शरीरके आकार को बढाता है। नींबू का रस शरीर के अन्दर बढे हुए पानी को सुखा कर एकत्रित जहरा को नष्ट कर देता है जिससे शरीर का बेडोल मोटापा निकल कर शरीर पतला, सुन्दर और सामर्थ्यवान हो जाता है।

नींबू और कृमिरोग—

नींबू का रस एक शक्तिशाली कृमिनाशक पदार्थ है। आन्तोंके अन्दर नाना प्रकारके जो कृमि पदा हो जाते ह और जिनके द्वारा टायफाइड, अतिसार, हैजा, इत्यादि नाना प्रकार के रोगों के होने का डर रहता है, नींबू का रस उन तमाम रोग कीटाणुओं को नष्ट कर देता है।

इसी जन्तु नाशक शक्तिके कारण नींबू का रस अगर बराबर उपयोग किया जाय तो सन्धिवात और आमवात को भी मिटाता है। यह बात साबित हो चुकी है कि इस प्रकार के रोग एक प्रकारके कृमियोंसे जो कि शरीर की सन्धियोंमें उत्पन्न होते है, पैदा होते हैं। ये जन्तु शरीर की सन्धियोंमें पड़े पडे एक प्रकार का विष छोडते रहते है। यह विष दूसरे दोषों के साथ मिलाकर शरीरमें इस प्रकारके रोग पैदा करता है। नींबू के रसमें इन जन्तुओं को नष्ट करने की ताकत है।

नींबू और स्कर्व्ही रोग—

यह बात तो सर्व सम्मत हो गई है कि नींबू और चूने का पानी स्कर्व्ही रोग को मिटानेके लिये रामबाण औषधि है। इसी कारण जहाज और स्टीमरों के अधिकारी नींबू का ताजा रस अलकोहलके साथ मिलाकर अपने साथ रखते हैं।

स्कर्वी रोगमें नींबू का ताजा रस ४ औंस क्लोरेट आफपोटास ६० ग्रेन, कुनेन ६ ग्रेन, शक्कर २ औंस और पानी ४ औंस। इन सब चीजों को मिला कर २ औंस की मात्रामें दिनमें ३।४ बार लेनेसे स्कर्वी रोगमें बहुत लाभ होता है। पथ्यमें नींबू, अनार,जामुन, आवला टमाटर, सन्तरा, इत्यादि फल और हरी वनस्पतिया विशेष मात्रामें देना चाहिये।

नींबू और चर्म रोग—

बाह्योपचार में नींबू का रस चर्म रोगों को नष्ट करनेके लिये एक सफल इलाज है। दाद, खाज, चमड़ी परके काले दाग, इन्द्रलुप्त इत्यादि रोगों पर नींबूको काटकर रगड़ने से बड़ा लाभ होता है।

डाक्टर नाड करनी लिखते हैं कि नींबू का रस कफ उत्पन्न करनेवाले अवयवों की खराबीसे पैदा हुए अतिसारमें बहुत उपयोगी है। बिलकुल आशा छोड़े हुए रोगी को भी दिनभर में तीस तोला की मात्रामें देते रहनेसे आश्चर्यजनक परिणाम नजर आता है।

उपयोग —

उदरशूल—कच्चे नींबू का छिलका खानेसे पेटमें होनेवाला बादी का उदरशूल मिटता है।

विष विकार—१०-१२ नींबू का रस निकालकर उसमें थोड़ी शक्कर मिलाकर पिलानेसे अफीम और सांपके विषमें लाभ होता है।

वमन—भोजनके बाद होनेवाली वमन को दूर करनेके लिए ताजे नींबू का रस पिलाना चाहिये।

बादी का दर्द—नींबू के रसमें यवाखार और शहद मिलाकर पिलानेसे जोड़ों में होनेवाला बादी का दर्द मिट जाता है।

ज्वर—इसके पेड़ की जड़ की छाल का काढा बनाकर पिलानेसे ज्वर में लाभ होता है।

कृमि—इसके बीजोंके चूर्ण की फक्की देनेसे पेट की कृमि नष्ट होते हैं।

खुजली—इसके रसमें बारूद मिलाकर लगानेसे खुजली मिटती है।

तिल्ली—नींबू का अचार बनाकर खानेसे बढ़ी हुई तिल्ली में लाभ होता है।

---

## नींबू बिजोरा

नाम—

संस्कृत—अम्लकेशरा, चेगापुरा, बीजक बीजफलक, बीजपूर्ण, जन्तुघ्न, महारण,

पंजाब—गुलगुल, खट्टा। तामिल—कोदी मयालयी,मदुलाम। तेलुगू—बीजापुरम् , गजानिंवा। फारसी—कलिम्बाक। अंग्रेजी—Lemon लेटिन—Citrus Limonum (साइट्रस, लिमोनम)।

वर्णन—

यह भी नींबूकी ही एक जाति है। इसका फल नारंगीके समान मगर उससे कुछ छोटा और बहुत खट्टा होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे इसके फलका छिलका तूरा, गर्म, तीक्ष्ण और कृमि नाशक होता है। यह वात कफ और फेंफड़ोंकी तकलीफोंमें लाभदायक है।

इसके पके हुए फलका छिलका अग्निवर्धक, पेटके आफरेको दूर करने वाला और शान्ति दायक होता है। इसके तेलको ग्लेसरिनके साथ मिलाकर खुजली और फोडे फुंसियों पर लगानेके काम मे लिया जाता है। इसके पके फल का रस शीतादि रोग प्रतिशोधक और शान्तिदायक होता है।

स्कर्वी रोगके अन्दर यह एक उत्तम औषधि साबित हो चुकी है। इस रोगमें, यह रोग और रोगके कारण दोनों को नष्ट करती है। यह कृमिनाशक भी है। ज्वर और अन्य प्रादाहिक पीड़ाओंमें इसके रसको पानीमे डालकर शक्कर मिलाकर पिलाते हैं। यह एक उत्तम शान्तिदायक पेय है। तीव्र सन्धिवातमें और गठियामें और गर्म देशो मे होने वाली पेचिश और अतिसार मे इसका उपयोग बहुत सफल सिद्ध हो चुका है। अफीम इत्यादि नींद लाने वाले विषोंके प्रभावको भी यह दूर करती है। इस नींबूके रसको बारूदके साथ मिलाकर गीली खुजली पर लगानेसे अच्छा लाभ होता है।

वेस्ट इण्डीजमें इसकी जड़का छिलका ज्वर निवारक और इसके बीज कृमिनाशक और घाव भरने वाले माने जाते हैं।

इसकी छालमें जेरेनिओल (Geraniol), लिनेलुल (Linalool) और साइट्रल (citral) नामक पदार्थ पाये जाते हैं। इसके फलमें ग्लुकोसाइड् और हेसप्रेरिडिन पाये जाते हैं।

# नींबू करना

वर्णन—

यह एक किस्मका खट्टा नींबू होता है। भारतवर्षके कई स्थानों पर इसका पेड़ लगाया जाता है। इसके पत्ते कागजी नींबूके पत्तेसे चौड़े और बिजोरेके पत्तेसे छोटे होते हैं। इसके बीज भी बिजोरेके बीजसे छोटे होते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

इसका छिलका और फूल पहले दर्जे मे गर्म और दूसरे दर्जे में खुश्क होते हैं। इसका रस शक्करके साथ मिलाकर देनेसे पित्तविकार और खूनकी तेजी मिटती है। शराबकी खुमारीको भी यह दूर करता है। इसके अन्दरका खट्टापन नजला और खांसीके लिए मुफीद है। सबेरेके टाइममें इसका रस पीनेसे गर्मी से पैदा हुआ पागल पन दूर होता है। इसके बीज ७ माशेकी मात्रामें लेनेमें जहरीले जानवरों का जहर दूर होता है। इसके छिलके को सुखाकर पानीके साथ लेनेसे मतली, वमन और मेदेके कीडे नष्ट होते हैं। इसकी जड़के बारीक रेशे सर्व जहरोंके लिए बहुत फायदे मन्द हैं। इस कार्य में इसे ७ माशेकी मात्रामे शराबके साथ लेना चाहिए। इसके ६ माशे छिलके को शराबके साथ लेनेसे बिच्छूका जहर उतर जाता है।

---

# नील

नाम —

संस्कृत—नीलपुष्पिका, नीला, नीलिका, रंगपत्री, रंगपुष्पी, रंजिनी, श्यामा, श्रीफली, असिता, भद्रा इत्यादि। हिन्दी—नील, लील, गोली। बंगाल—नील। गुजराती—गली, नील। मराठी—नीली, नील। पंजाब—नील। तेलगू—अविरी, नीली, श्यामा। तामिल—चामुडी, इरासली, अवरी। फारसी—नील, निल्लाह। अंग्रेजी—Indigo लेटिन—Indigofora Tinctoria ( इण्डिगोफेरा टिंक्टोरिया )।

वर्णन—

नीलके पौधे सरपसेके पौधे की तरह होते हैं। ये बरसातके दिनोंमें सारे भारतवर्ष मे बहुत पैदा होते हैं। आजसे कुछ वर्षोंके पहले जब कि विलायती रंग कम तादाद मे चले थे इस पौधे की रंग निकालनेके लिये बंगाल और बिहारमें बहुत बड़ी तादादमें खेती की जाती थी। अभी भी बंगाल के अन्दर इसकी थोडी बहुत खेती होती है। इसका पौधा ? फीट तक ऊंचा होता है। इसके पत्ते गहरे हरे रंगके आधेसे लेकर १ इंच तक लम्बे और चौथाई से लेकर आधे

चाहिए। थोड़ी देरमे पारा उस बर्तनके नीचे जमा हुआ दिखलाई देगा। इस प्रयोगसे एक ही दिनमे पारेका सब असर नष्ट हो जाता है। मगर यदि जरूरत हो तो दो तीन दिन तक भी इस प्रयोगका कर सकते हैं।

अनाडी वैद्योंके हाथसे बहुतसे लोग पारा, रस कपूर, हींगलू इत्यादि वस्तुए खाकर अथवा चिलमके द्वारा पीकर अपने शरीरकी बेकार हालत कर लेते हैं और अनेक प्रकारके भयकर चर्म रोग उनके शरीर में पैदा हो जाते हैं। ऐसे लोगों को इस प्रयोगसे जरूरत लाभ उठाना चाहिए।

मात्रा—नीलकी मात्रा आधीसे दो रत्ती तक और इसके घन क्वाथकी मात्रा १ से २ रत्ती तक है।

मुजिर—यह फेंफडेके लिए हानिकारक है।

दर्पनाशक—इसके दर्पका नाश करनेके लिए शहद और रब्बेसू स (मुलहठीका सत) उपयोगी हैं।

---

# नीलोफर

नाम—

यूनानी—नीलोफर।

वर्णन—

नीलोफर कमलकी एक जाति है। सस्कृतमें इसको 'नील कमल कहते हैं। इसका वर्णन इस ग्रन्थके दूसरे भागमें कमलके प्रकरणमें थोडा दिया जा चुका है। मगर कुछ यूनानी हकीमों का यह मत है कि बाहरसे जो नीलेफर आता है उसके गुण कुछ विशेष होते हैं, इसलिए हम यूनानी मतसे इसका थोडासा विवेचन यहाँ पर कर देते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मत—यूनानी मतसे इसके तमाम अग दूसरे दर्जेमें सर्द और तर हैं। सिर्फ इसकी जड गर्म और खुश्क होती है। यह दिल और दिमागको ताकत देता है। खासी और सीने की खुश्कीको दूर करता है। इसका फूल सू घनेसे गर्म प्रकृति वालेके दिल और दिमाग को शान्ति मिलती है, नींद आती है तथा गर्मी से होनेवाला सिर दर्द दूर हो जाता है गलेमें होनेवाले जहर बाज और आतोंके जखममें भी यह लाभदायक है।

शेख अपने रिसालेमे लिखता है कि गुल नीलो फरका धर्म साधारणत या कपूरके समान है, मगर कपूर खुश्क है और इसमें चिकनापन रहता है। अपनी सुगन्धि की वजहसे यह

दिलको शक्ति देता है और यदि इसको केसर और गलचीनीके साथ दिया जाय तो इसकी यह शक्ति और भी बढ जाती है। अगर किसी को स्वप्नदोष होता हो तो इसकी जडको पीनेसे बन्द हो जाता है। इसके लगातार सेवनसे मनुष्य की कामशक्ति घट जाती है और उसमें नपुंसकता के आसार दिखाई देने लगते हैं। चेचक की बीमारी मे भी दाने निकल आनेके बाद इसको देना लाभदायक है, मगर दाने निकलने के पहले नहीं देना चाहिए। दाने निकलने के पहले देने से दाने निकलना बन्द हो जाते हैं और रोगी खतरे मे पड जाता है।

नीलोफर की जड पुराने दस्त और आन्तों के जख्ममें मुफीद है।

नीलोफरका शर्बत—नीलोफर का शर्बत गर्मीके सिर दर्द, पित्तज्वर और न्युमोनिया में लाभदायक है। यह रोगी की गर्मी को दूर करके उसे शान्ति देता है।

नीलोफर का अर्क—नीलोफर का भभके से खींचा हुआ अर्क गर्मी के सिर दर्द, पित्त ज्वर, चेचक, क्षय, न्युमोनिया, गर्मीसे होनेवाली खामी, फेफड़े के पर्दे की सूजन और गर्मीसे पैदा हुए पागलपनमे लाभदायक है। नीलोफरके सफेद पत्तों का अर्क दमेके अन्दर बहुत लाभ पहुँचाने वाली वस्तु है।

उपयोग—

अतिसार—नीलोफरके फूल का काढा बनाकर देनेसे अतिसारके दस्त बन्द होते हैं। इसकी जड़का बेलगिरी के साथ काढा बनाकर पिलाने से आव के दस्त बन्द हो जाते हैं।

हैजा—इसकी जड़ या डण्डी को औटा कर पिलानेसे हैजेमे रुका हुआ पेशाब खुल जाता है।

चर्म रोग—इसके बीजों को पीसकर शहद मे मिला कर चाटनेसे पित्तसे पैदा हुए चर्म रोग मिट जाते हैं।

रक्त स्राव—इसके फूल और डखल को पीसकर फाकने से आतों या शरीरके दूसरे हिस्सोंसे बहने वाला खून बन्द हो जाता है।

खूनी बवासीर—नीलोफर का शर्बत पिलानेसे खूनी बवासीरमें लाभ होता है।

पसली की सूजन—नीलोफर का शर्बत पिलानेसे पसली की सूजन मिट जाती है।

बालों की सफेदी—नीलोफर के फूलों को दूधमे मिलाकर एक हाण्डीमें भर कर उस हाण्डी का मुंह बन्द करके जमीनमें गाड़ दें। एक महीनेके बाद उसको निकाल कर उस दूध को बिलोकर उसका घी निकाल ले। इस घी को बालों पर लगानेसे सफेद बाल काले हो जाते हैं।

मुजिर—इसका अधिकसेवन मनुष्य की कामशक्ति को नष्ट करता है और दिमाग तथा मसाने को नुकसान पहुँचाता है।

दर्पनाशक—इसका दर्पनाशक गाजर का मुरब्बा और शहद है।

प्रतिनिधि—इसके प्रतिनिधि बनफशा और सफेद खतमी हैं।

मात्रा —इसके फूल की मात्रा १० मासे तक और जड़की मात्रा ३ मासे तक है।

---

# नील निर्गुण्डी

नाम—

संस्कृत—नील निर्गुण्डी, भूतकेशी, इन्द्राणि, मरुपत्नी, नील सिन्दुक, नीलिका, गोफालिका इत्यादि। हिन्दी—नील निर्गुण्डी, उदी सम्मालू काला अडूसा। बंगाल—जगतमदन, जोगमोदन। बम्बई—काला अडूलसा। मराठी—याकस, काला अडूसा। फारसी—बानजान गश्तेश्याह। तामील—करुनोची, वदेकुट्टी। तेलगू—गन्धरसामु, नल्लनोचिली। लेटिन—Jy-ticia Gendarussa (जस्टिकिया, गेण्डेरुसा)।

वर्णन—

यह बहु वर्षायु वृक्ष करीब तीन-चार फीट ऊंचा होता है। यह बगीचोंमें रास्तोंके आस पास लगाया जाता है। इसकी शाखाएं बारीक लम्बी और काले रंग की होती हैं। बरसातमें इसके फूल आते हैं। यह वनस्पति जब छोटी होती है तब बहुत तीव्र होती है। औषधि प्रयोगमें इसके पत्ते काममें आते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक—आयुर्वेदिक मतसे यह वनस्पति गरम, तीक्ष्ण, ज्वरनाशक, कफ निस्सारक, वामक, रेचक, कड़वी, खुश्क और उष्णवीर्य होती है। ब्रोंकाइटीज, सूजन, अजीर्ण, नेत्ररोग, ज्वर, कर्णग्रह इत्यादि रोगोंमें यह लाभदायक है।

तीव्र कफ रोगोंमें इसके दो से लेकर चार तक पत्ते डेढ मासे अपामार्ग की राख और एक तोला शहदके साथ मिलाकर देते हैं। निमोनियामें इसके चार पत्तों का रस सहजना की छालके रस, नमक और शहद के साथ मिलाकर दिया जाता है। ज्वर और जीर्ण आमवात में इसको देनेसे पसीना होता है। यह औषधि बहुत उग्र है। इसको देने से दस्त और

उलटी होते हैं। इसलिए बालक बुड्ढे और कमजोर लोगों को यह न देना चाहिए। इसकी शान्तिके लिए चावलों मे घी डालकर खाना चाहिए।

इसके पत्ते पसीना लानेवाले होते हैं और ये प्राचीन सन्निपातमें काढा बनाकर दिये जाते हैं। इसके पत्तोंसे एक प्रकारका तेल तैयार किया जाता है और वह एक्जिमा पर वाह्य उपचारके काममें लाया जाता है। इसके पत्तोंका शीतनिर्यास, मस्तकशूल, अर्धाङ्ग, और अर्दित या मुँहके ऊपर होनेवाले लकवेके लिए लाभदायक है।

इसके ताजे पत्तोंका रस कर्णशूलको दूर करनेके लिए कानमे टपकाया जाता है और आधा शीशीको दूर करनेके लिए नाकमे टपकाया जाता है।

मैडागास्करमे यह वनस्पति विशेषकर सन्धियोंकी सूजनमे उपयोगी मानी जाती है इसकी जड़को दूधमे गर्म करके सन्धिवात, रक्तातिसार और कामला रोगमे पिलाते हैं।

---

## नील चम्पक

नाम—

संस्कृत—नील चम्पक, हरा चम्पक। हिन्दी—हरा चम्पा, विलायतीचम्पा। बम्बई—विलायती चम्पा। दक्षिण—मदमाती। तेलगू—मनोरजनी, दमू। लेटिन—Artabotrys Odoratissimus ( आरटेबोट्रीज् ओडोरेटिसिमस )।

वर्णन—

यह एक झाडीनुमा वृक्ष होता है। इसके पत्ते १८ सेंटीमीटर लम्बे और १८ से ५ सेंटीमीटर तक चौंडे होते हैं। इसके फूल पीले रगके खुशनूदार होते हैं। यह वनस्पति दक्षिणी भारत और सीलोन में पैदा की जाती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदिक इसके फूल तीक्ष्ण, कड़वे, गरम और वमन, पित्तप्रकोप, रक्तविकार, हृदय रोग, खुजली, प्यास, सिरदर्द, धवल रोग, मूत्राशय सम्बन्धी रोग और अग्निविसर्प रोगमे लाभदायक है।

गलायामे इसके पत्तोंका काढा हैजेमे रोगीको शान्तिदायक वस्तुकी तरह पिलाते हैं।

---

# नीलकंठी

वर्णन—

यह एक छोटी जातिकी वनस्पति है। इसके पत्ते खुरदरे, फूल नीले और जड़ नीली होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मत—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गर्म और खुश्क है। खून के उपद्रवको मिटाती है, खुजलीको दूर करती है, प्लेगमें इसका काढ़ा बनाकर पिलाना और गिल्टी पर इसका लेप करना मुफीद है। श्वेतकुष्ठ, चर्मरोग, उपदंश, सन्धियोंकी सूजन और पुरातन ज्वरमें यह लाभदायक है। रक्तशुद्धि के लिए इसका उपयोग करते समय रोगी को नमक न खाने देना चाहिए।

मात्रा—इसकी मात्रा ४ माशे तक है।



# नीलम

वर्णन—

यह एक जवाहिरात होता है, जिससे अंगूठीके नग, गले के हार इत्यादि वस्तुएँ बनती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदके मत से नीलमकी भस्म गर्म, कड़वी और दमा, खांसी, पित्त, कफ, रक्तके उपद्रव, विषम ज्वर और बवासीरमें लाभदायक है। यह वीर्य्यशक्ति और पाचनशक्तिको बढाती है।

यूनानी मत—

यूनानी मत से यह पहले दर्जेमें गर्म और तीसरे दर्जेमें खुश्क है। इसके सेवन से नेत्रोंकी ज्योति बढती है, विषके उपद्रव दूर होते हैं, मस्तिष्कको शक्ति मिलती है यह भय और पागलपनमें लाभदायक है तथा तबियत में प्रसन्नता पैदा करनेवाली है।



# निलाई सेदाची

नाम—

संस्कृत—भिसट्टा, श्रोखराडी, तडागामृत । काठियावाड—श्रोसराड । तामील-नीलाई सेदाची । तेलगू-नेनासरी,राजूमा । लेटिन-Polycarpea Corymbosa (पोलीकारपिया कोरीम्बोसा)

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे यह वनस्पति मूत्रकृच्छ्र, मूत्रनालीकी पथरी, फोडा, जलनयुक्त सूजन और व्रण रोगमें उपयोगी है। इसकी भस्म गोल मिर्चके साथ मिलाकर जख्म और व्रण पर लगायी जाती है। इसकी पत्तिया पीसकर गर्म या ठडी हालतमे, जख्म या जलनयुक्त सूजन पर पुल्टिस बाधनेके काममे ली जाती है।

पुडुकोटामे यह बनस्पति विषैले सापोंके दशके विकारको दूर करने के लिए बाहरी और भीतरी दोनों उपायोंसे प्रयोगमे ली जाती है। पोरबन्दरमें इसकी पत्तियोंको पीसकर जानवरोंके कटे हुए अगस्थलों पर लगाते हैं और कामला या पाण्डु रोगमे गुडके सीरके प्रयोगसे इसकी बटी बनाकर सेवन करते है ।

मलाया में इन वनस्पतिके पौधेको दूकानो पर सजावटके रूपमे रखते हैं तथा शान्ति दायक और स्तम्भक औपधिके रूपमें भी इसे लेते हैं।

कैस और महस्करके मतानुसार यह वनस्पति सर्पविषके लिए भीतरी और बाहरी दोनों दृष्टियोंसे बिलकुल निरुपयोगी है।



# निसोमली

नाम—

संस्कृत—मिरोमति, निसोमलि, ग्रन्थितृण। हिन्दी—निसोमलि, मचोटी धनेलिया, इन्द्राणी, केसरी। बंगाल—मचूटी। मराठी—मचूटी। पजाब—मचूटी, केसरू, बन्दूक। काश्मीर—द्रोन। अंग्रेजी—Knot grass (नाट ग्रास) लेटिन—Polygonum Aviculare (पोलीगोनम, एवीक्यूलेरी)।

वर्णन—

यह एक क्षुद्र जातिकी वनस्पति होती है। इसकी जड़ कठोर और लम्बी होती है और

# नीलकंठी

वर्णन—

यह एक छोटी जातिकी वनस्पति है। इसके पत्ते खुरदरे, फूल नीले और जड नीली होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यूनानी मत—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमें गर्म और खुश्क है। खून के उपद्रवको मिटाती है, खुजलीको दूर करती है, प्लेगमें इसका काढ़ा बनाकर पिलाना और गिल्टी पर इसका लेप करना मुफीद है। श्वेतकुष्ठ, चर्मरोग, उपदंश, सन्धियोंकी सूजन और पुरातन ज्वरमें यह लाभदायक है। रक्तशुद्धि के लिए इसका उपयोग करते समय रोगी को नमक न खाने देना चाहिए।

मात्रा—इसकी मात्रा ४ माशे तक है।

# नीलम

वर्णन—

यह एक जवाहिरात होता है, जिससे अगूठीके नग, गले के हार इत्यादि वस्तुएँ बनती हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदके मत से नीलमकी भस्म गर्म, कड़वी और दमा, खांसी, पित्त, कफ, रक्तके उपद्रव, विषम ज्वर और बवासीरमें लाभदायक है। यह वीर्य्यशक्ति और पाचनशक्तिको बढाती है।

यूनानी मत—

यूनानी मत से यह पहले दर्जेमें गर्म और तीसरे दर्जेमें खुश्क है। इसके सेवन से नेत्रोंकी ज्योति बढती है, विषके उपद्रव दूर होते हैं, मस्तिष्कको शक्ति मिलती है यह भय और पागलपनमें लाभदायक है तथा तबियत में प्रसन्नता पैदा करनेवाली है।

# निलाई सेदाची

नाम—

संस्कृत—भिसट्टा, ओखराडी, वड़ागामृत । काठियावाड—ओखराड । तामील-नीलाई सेदाची । तेलगू-नेनासरी,राजुमा । लेटिन-Polycarpea Corymbosa (पोलीकारपिया कोरीम्बोसा)

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे यह वनस्पति मूत्रकृच्छ्, मूत्रनालीकी पथरी, फोड़ा, जलनयुक्त सूजन और व्रण रोगमें उपयोगी है। इसकी भस्म गोल मिर्चके साथ मिलाकर जख़म और व्रण पर लगायी जाती है। इसकी पत्तिया पीसकर गर्म या ठडी हालतमें, जख़म या जलनयुक्त सूजन पर पुल्टिस बांधनेके काममें ली जाती है।

पुडुकोटामे यह वनस्पति विषैले सांपोंके दंशके विकारको दूर करने के लिए बाहरी और भीतरी दोनों उपायोंसे प्रयोगमें ली जाती है। पोरबन्दरमे इसकी पत्तियोंको पीसकर जानवरोंके फटे हुए अगस्थलों पर लगाते हैं और कामला या पाण्डु रोगमें गुड़के सीरेके सयोगसे इसकी वटी बनाकर सेवन करते हैं।

मलाया मे इन वनस्पतिके पौधेको दूकानों पर सजावटके रूपमें रखते हैं तथा शान्ति दायक और स्तम्भक औषधिके रूपमें भी इसे लेते हैं।

कैस और महस्करके मतानुसार यह वनस्पति सर्पविषके लिए भीतरी और बाहरी दोनों दृष्टियोंसे बिलकुल निरुपयोगी है।



# निसोमली

नाम—

संस्कृत—मिरोमति, निसोमलि, ग्रन्थितृण । हिन्दी—निसोमलि, मचोटी बनेलिया, इन्द्राणी, केसरी । बंगाल—मचूटी । मराठी—मचूटी । पंजाब—मचूटो, केसरू, बन्दूक । काश्मीर—द्रोब । अंग्रेजी—Knot grass ( नाट ग्रास ) लेटिन—Polygonum Aviculare ( पोलीगोनम, एवीक्यूलेरी ) ।

वर्णन—

यह एक क्षुद्र जातिकी वनस्पति होती है। इसकी जड़ कठोर और लम्बी होती है और

गुणदोष और प्रभाव—

मेडागास्करमें इसके पौधे का लोशन बनाकर सिर दर्द को दूर करनेके काममे लिया जाता है।



## नेत्रबाला ( सुगन्धबाला )

नाम —

संस्कृत—अम्बुनामका, बाला, सुगन्धबाला, वृहिष्टा, ललनाप्रिय, तोया इत्यादि। हिन्दी—सुगन्धबाला, नेत्रबाला। बंगाली—गंधबाला। गुजराती—कालोवालो। मराठी—कालावाला। फारसी—असारून। लेटिन—Pavonia Odorata ( पेवोनिया ओडोरेटा )।

वर्णन—

इसके वृक्ष सिन्ध, कच्छ, गुजरात और लंकामे पैदा होते हैं। इसके पत्ते गोल, तीन खाने वाले और कगूरेदार होते हैं। इसके फूल शाखाओंके सिरे पर झुमकों में लगते हैं। ये हलके गुलाबी रंगके होते हैं। इसके बीज खाकी रंगके और तेलसे भरे हुए रहते हैं। इसकी जड़ ७ से ८ इंच तक लम्बी और पांच इंच मोटी होती है। इस जड़के ऊपर बारीक बारीक बहुत तन्तु लगे हुए रहते हैं। इस जड़मे कस्तूरीके समान गन्ध आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—भावप्रकाशके मतसे सुगन्धबाला शीतल, रूखी, हलकी, दीपन, पाचक और वमन, मतली, अरुचि, हृदय रोग, आमातिसार और विसर्प रोगमें लाभदायक है।

निघण्टु रत्नाकरके मतानुसार सुगन्धबाला शीतल, कड़वी, बालोंको सुन्दर करने वाली पाचक, मधुर, दीपन, हलकी, रूखी तथा कफ, पित्त, वमन, तृषा, कुष्ठ, अतिसार, ज्वर, श्वास, अरुचि, व्रण, विसर्प, हृदयरोग, रक्तविकार, रक्तपित्त, कण्डु और दाहको नष्ट करती है।

इसका पौधा सुगन्धित होता है। इसके अन्दर ठंडे और अग्निवर्धक तत्व मौजूद रहते हैं। यह ज्वर, सूजन और भीतरी अवयवोंसे होने वाले रक्तस्रावको बन्द करता है। रक्तातिसार के रोगमें यह एक संकोचक और पौष्टिक वस्तुकी तरह दिया जाता है।

लास बेलामें इसका पौधा गठिया और सन्धिवातको मिटानेके काममें लिया जाता है।

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जे में गर्म और खुश्क होती है। स्वादमें यह चरपरी, कुछ कड़वी, तेज और खुशबूदार होती है। यह भूख बढाने वाली, पाचक और कफ, पित्त, वमन

और खुजलीको दूर करने वाली होती है। पित्तकी सूजनको भी यह बिखेर देती है। शरीरके भीतरी अगोंसे होने वाले रक्तस्रावको यह बन्द करती है। इसको बेलगिरीके साथ लेनेसे आवके दस्त बन्द होते हैं। शक्कर और शहदके साथ इसको चटाकर ऊपर चावलोंका पानी पिलानेसे बच्चोंकी खासी और खूनके दस्त बन्द हो जाते हैं। दा तोला नेत्रवालाका क्वाथ बनाकर प्रतिदिन पिलानेसे और पथ्यमें अरहरकी दालकी खिचड़ी अथवा चावल खिलानेसे संग्रहणी और अतिसारमें लाभ होता है। इसको बकरीके दूधमें घिसकर कामेन्द्रिय पर लेप करनेसे शिथिलता दूर होती है। चेचक निकलनेके पहले इसको नींबूके रसमें पीसकर चटानेसे चेचक का जोर अधिक नहीं रहता। पित्त ज्वरमें इसको देनेसे शान्ति मिलती है इसके क्वाथमें शक्कर मिलाकर देनेसे पेशाबकी जलन बन्द हो जाती है। इसके सेवनसे खूनकी गर्मी भी शान्त होजाती है। गर्मी से होने वाले सिर दर्द में इसका लेप करनेसे और इसको पानीमें भिगो कर उस पानी को पिलानेसे सिर दर्द मिट जाता है। शरीरमें होने वाली जलनको भी यह दूर करती है।

मात्रा—इसकी मात्रा १ माशेकी है।

---

# नेपारी

नाम—

कुमाऊँ—नेपारी। गढवाल—कस्तूरी। लेटिन—Delphinium Brunonianum, (डेलफीनियम ब्रूनोनियानम)।

वर्णन—

यह सीधी खड़े रहनेवाली एक वनस्पति है। इसके तने चिकने और नीचेकी ओर झुके हुए रहते हैं तथा ऊपरके हिस्सेमें गाठें रहती हैं। इसके पत्तोंका अग्रभाग नोकदार होता है और उनके डंठल बहुत लम्बे होते हैं। इसके फूल बड़े बड़े धुन्धले नीले रङ्गके और रोयेंदार होते हैं। अलपाइन अंचल और पश्चिमी तिब्बतमें यह वनस्पति पायी जाती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इस वनस्पतिकी पत्तियोंका रस कुर्रममें जानवरोंकी खास करके भेड़ोंकी बिमारियोंको नष्ट करनेके काममें लेते हैं। लीहमें लोग इसको विषाक्त समझते हैं और उनका कहना है कि इस वनस्पतिके पत्तोंसे टपकी हुई ओस जिस घास पर पड़ती है उसे खानेसे पशुओं और घोड़ों पर जहरका असर होता है।



गुण दोष और प्रभाव --

इसकी जड ज्वर नाशक औपधि के वतौर काममे ली जाती है।



# नौलाईदाली

नाम.—

तामील—नौलाई दाली। तेलगू—अनेपु, जनुपोलारी। मराठी– आमटी। लेटिन—Antidosma Bunius ( ऐएटीडेस्मा बुनियस )।

वर्णन —

यह एक हमेशा हरा रहने वाला छोटी जाति का वृक्ष होता है। इसकी छाल कुछ भूरापन लिये हुए बदामी रग की होती है। इसके पत्ते ७ ५ से १८ सेएटीमीटर तक लम्बे और ३ ७ से ६ ३ सेएटीमीटर तक चौडे होते हैं। इसके फूल कुछ ललाई लिये हुए रहते है। ये नर और मादा दोनों तरह के होते है। यह वनस्पति नेपाल, आसाम, वरमा और छोटा नागपुरमे पैदा होती है।

*गुणदोष और प्रभाव—*

लिण्डलेके मतानुसार इसके पत्ते सर्पदशके उपचारमे काम आते हैं। इन पत्तों को उबाल कर इनका काढा उपदशसे होने वाली धातु विकृति को दूर करनेके लिये दिया जाता है।

---

# नौसादर

नाम—

सस्कृत—क्षारश्रेष्ठ, अमृतसार, चूलिका लवण, नरसार इत्यादि। हिन्दी—नौसादर। बगाल—निसादल। मराठी—नौसागर। गुजराती—नौसार। लेटिन—Amonium Chlori dum ( एमोनियम क्लोरिडम )।

वर्णन—

यूनानी हकीमोंके मतसे नौसादर तीन प्रकारका होता है।

( १ ) पहला वह जो खनिज द्रव्यों की तरह खदानोंसे निकलता है। अफ्रीका वगैरह गर्म मुल्कों में इसकी खदाने है और वहाँ से इसके टुकड़े सोरे की तरह निकलते हैं।

(२) अंजुमन अराए नासरीमे लिखा है कि दमदान शहर में पानीके नालेसे यह पानी के साथ निकलता है। इस पानीको जोश देनसे इसके सफेद टुकड़े जम जाते हैं। खुरासान बुखारा और समरकन्दमे भी इसके सोते हैं।

(३) टट्टी पेशाब वगेरह की गन्दगी जलाने से भी नौसादर बनता है। यह पहले खाकी रंग का होता है, साफ करने के बाद सफेद और चमकदार हो जाता है।

डाक्टर लोग नमक के तेजाब को पानीमें घोल कर उसमे कार्बोनेट आफ एमोनियम मिलाकर गर्मी के जरिए सुखा लेते हैं अथवा सलफेट आफ एमोनिया और नमक को मिला कर बनाते हैं।

ऊपरके तीनों प्रकार के नौसादरों मे खनिज नौसादर को यूनानी हकीम उत्तम मानते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मत से नौसादर तीक्ष्ण, सारक, व्रण विदारक, बहुत उष्ण, गुल्मनाशक और कब्जियत, उदर रोग, शूल, यकृत् रोग, प्लीहा रोग, ज्वर, सिर दर्द, स्तन रोग, रक्तपित्त, खासी और योनि रोगमे लाभदायक है।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेके आखिरसे गर्म और खुश्क है। गिलानीके मत से तीसरे दर्जेमे गर्म और खुश्क है। यह पाचक है। आमाशयके खराब दोषों को दूर करता है और बढी हुई तिल्ली को ठीक करता है। पेट की वायु और आफरे को मिटाता है। भूख बढाता है शरीरके किसी भी अगसे होने वाले रक्तश्रावको बन्द कर देता है। इसकी आखमे लगानेसे आखका जाला कट जाता है, इसके लोशनको जखमपर रखनेसे जखम भर जाता है। इसके लेप जहरबाज पर करनेसे लाभ होता है। किसी भी प्रकारके जहरका असर ४ माशा नौसादर खानेसे दूर हो जाता है। इसको पानीमें घोलकर मकानमें छिड़कनेसे मकानमें साप नहीं आता।

अधिक मात्रामें यह एक विष है। १० मासे की मात्रामें खानेसे इसका जहरीला असर दिखलाई देने लगता है। इससे मनुष्यका आमाशय और आतें विकृत हो जाती हैं। इसके विषको दूर करनेके लिए घी और दूध पिलाना, वमन कराना तथा ठण्डी और शान्तिदायक दवाइया पिलाना और चिकनी खुराक खिलाना मुफीद है।

एलोपेथिक डाक्टरोंके मतसे मोच खाये हुए और लचके हुए स्थानपर, टूटी हुई हड्डी पर, उतरे हुए जोड़ों पर, जमे हुए खून पर और सन्यास ( Apoploxy ) रोगमें इसका लेप

में आश्चर्य जनक लाभ होता है। जिन स्त्रियों को भूत बाधाका दौरा आता है उनको यह वस्तु सुंघाते ही दौरा मिट जाता है। बिच्छूके विषमें भी इसको सुंघानेसे लाभ होता है।

नमक सुलेमानी—नौसादर १ तोला, यवक्षार १ तोला, सेंधा नमक १ तोला, सफेद मिर्च २ तोला, इन सब चीजोंको बारीक पीसकर बोतलमें भरकर रख देना चाहिए। इसको डेढ माशेसे २ माशे तककी मात्रामें गर्म पानीके साथ देनेसे हरप्रकारका उदरशूल, वायुगोला, चूक इत्यादि उदर रोग तत्काल दूर होते हैं।

मुजिर—इसको अधिक मात्रामें अधिक दिन तक सेवन करनेसे यकृत और आंतोंको बहुत नुकसान पहुँचता है।

दर्पनाशक—दूध, गायका घी और बदामका तेल।

प्रतिनिधि—यवक्षार।

मात्रा—४ रत्तीसे १५ रत्ती तक।

---

## नोनगेनम पिल्लू

नाम—

तेलगू—नोनगेनम पेल्लू। लेटिन—Oldenlandia Heynii, (ओल्डेन लेण्डिया हेनी)।

वर्णन—

यह एक छोटी जाति का पौधा होता है जिसकी बहुत डालियां होती हैं। इसके पत्ते १ से लेकर ३.२ सेंटीमीटर तक लम्बे और ८ से ३ मिलीमीटर तक चौड़े होते हैं। यह वनस्पति भारतवर्षके मैदानों में पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

कोमानके मतानुसार इस वनस्पतिका काढ़ा अथवा इसका प्रवाही एक्स्ट्रेक्ट मलेरिया ज्वर के साधारण केसों में और स्वल्पविरामी ज्वर में अजमाया गया और उसका परिणाम सन्तोषजनक रहा।

---

# नेर

नाम—

पजाब—नेर, चेरू, शालगली । गढवाल—नेर । रानीखेत—नेरा । कुमाऊँ—नेह गुलपिटा। लेटिन—Skimmia Laureola. ( स्कीमिया लौरोला ) ।

वर्णन—

यह एक हमेशा हरी रहनेवाली झाडी होती है। इसकी छाल बहुत चिकनी औ मुलायम होती है। इसके पत्ते शाखाओंके सिरे पर लगते है। इसके सभी हिस्से सुगन्धि होते हैं। इसके पत्ते ७.५ से १५ सेंटीमीटर तक लम्बे और २ से लेकर ३.८ सेन्टीमीटर त चौडे होते हैं। यह वनस्पति हिमालय मे काश्मीर से लेकर मिश्मी तक ६००० फीट से १०००० फीट की ऊँचाई तक और खासिया पहाडियों मे ५००० से लेकर ६००० फीट की ऊँचाई तक पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

काश्मीरके अन्दर इसके जलते हुए पत्तोंका धुँआ हवाको शुद्ध करनेवाला माना जाता है। इस वनस्पति के पत्तों से वाष्पीकरण क्रिया के द्वारा एक प्रकार का उडनशील तेल प्राप्त किया जाता है।

---

# पद्माक

नाम—

संस्कृत—पद्माक, मलय, चारु, शीतरक्त, सुप्रभा, पद्मकाष्ठ, कैदार, शीतवीर्य इत्यादि। हिन्दी—पद्माक। बंगाली—पद्मकाष्ठ। मराठी—पद्मकाष्ठ। गुजराती—पद्माक, पद्मकाठी पजाब—चमियारी, अमलगुच्छ, पदम, पाजिया। कुमाऊँ—पदम, पेया। बम्बई—पद्मकाष्ठ। बरमा—पेनी। इंग्लिश—Himalayan Cherry (हिमालयन चेरी) लेटिन—*Prunus Puddum* ( प्रूनस पदूम ) *Prunus Cerasoides* ( प्रूनस सेरोसोइडस ) ।

वर्णन—

यह एक मध्यम आकारका बडा वृक्ष होता है। इसकी छाल गोलाकारमें निकलती है और भीतर की लकडी धुँधली ललाई लिये हुए रहती है। पत्तियां चिकनी, गोल और

तीक्ष्णधार वाली होती है। इसके फूल सफेद और कुछ गुलाबी रंग लिये हुए होते हैं और पत्तियोंके सिरे पर खिलते हैं। इसके फल पीले और लाल रङ्ग के होते हैं और १.३ से २ सेंटीमीटर तक लम्बे होते हैं। इनका स्वाद खट्टा होता है। यह वनस्पति हिमालय मे सतलज से लेकर सिक्किमतक २५०० से लेकर ७००० फीट की ऊँचाई तक और खासिया पहाड़ियोंमें ४ हजार फीटसे ५००० फीटकी ऊँचाई तक होती है।

पद्माकके नामसे इस वृक्षकी डालियों और जडोंके छोटे छोटे टुकडे बाजारमें बिकते हैं। इनकी छालका रङ्ग काला होता है और इनको हाथ पर घिसनेसे बहुत मधुर सुगन्ध आती है। यह औषधि अधिक दिन तक पडी रहनेसे खराब हो जाती है, इसलिए इसको ज्यादा पुरानी नहीं लेना चाहिए।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे पद्माक कसैला, कडवा, शीतल, वातकारक, हलका तथा विसर्प, दाह, विस्फोट, कुष्ठ, कफ और रक्त पित्तको नाश करता है, गर्भको स्थापन करता है, रुचिको उत्पन्न करता है, वमन प्यास और घावमे लाभदायक है। इसको घिसकर पीनेसे जिन स्त्रियोंको गर्भ न रहता हो, उनको गर्भ रह जाता है, और जिनका गर्भ गिरता हो, उनका स्थिर हो जाता है।

पद्मकाष्ठकी छालमे हाइड्रोमाइनिक एसिड नामक एक बहुत घातक विषका अंश पाया जाता है। इस विषकी क्रिया मनुष्यके शरीरके सब अवयवों पर और खास करके जीवनीय केन्द्र स्थान पर उपशामक रूपमें होती है, जिसके परिणाम स्वरूप श्वासोच्छ्वासके केन्द्र स्थान पर शामक क्रिया होनेसे सूखी खाँसी और क्षय रोगमें अधिक पसीना आना कम हो जाता है। हृदयके केन्द्र स्थान पर इसकी शामक क्रिया होनेके परिणाम स्वरूप हृदयकी बढी हुई धडकन कम हो जाती है। और हृदय पर चर्बी चढ़ जानेकी वजहसे जो एक प्रकारकी खाँसी हो जाती है, वह मिट जाती है।

डाक्टर देसाई के मतानुसार पद्मकाष्ठ कटु पौष्टिक, स्तम्भक, वमन और मतलीको दूर करने वाला और वेदना शामक होता है। इससे आमाशयकी श्लेष्मत्वचाकी क्रिया शुद्ध होकर पाचन शक्ति और आमाशयकी शक्ति बढती है, इसका स्तम्भक गुण भी स्पष्ट दृष्टि गोचर होता है। अजीर्ण रोगके अन्दर आमाशयकी श्लेष्मत्वचामे अगर सूजन हो जाय अथवा उसमें घाव हो जाय और उसकी वजहसे वमन और दस्त होने लगे तो ऐसे समयमें इस को देनेसे लाभ होता है। इसकी लकडीमें स्तम्भक और कटु पौष्टिक गुण है और इसके अन्दर पाये जाने वाले विषैले तत्वमें वेदना शामक गुण है। इसकी फाँट बनाकर देनेसे मतली और जंभाई आना बन्द होती है।

पद्मकाष्ठ का काढ़ा बनाकर नहीं देना चाहिए। क्योंकि गर्मी पानेसे इसके अन्दरके तत्व उड़ जाते हैं। इस लिए इसकी फॉट या शीत निर्यास बनाकर ही देना चाहिए। इस औषधि को देनेके पहले साराशार का विचार करलेना चाहिए, क्योंकि इसमें विषैला तत्व रहता है और यह कभी कभी अधिक मात्रा होने पर खतरनाक हो जाता है।

जननेन्द्रिय पर होने वाली सूखी खुजली पर पद्मकाष्ठको ठंडे पानीमें घिसकर लगानेसे त्वचाकी क्रिया सुधरती है। सूखी खुजली युक्त चर्म रोगों पर इसका लेप करनेसे त्वचा शुद्ध होकर उसके विकार मिटते हैं।

इसके फलका गूदा पथरी रोगको दूर करनेके काममें लिया जाता है। इसकी छाल गल ग्रन्थि प्रदाह को दूर करनेके काममें लीजाती है और इसकी छोटी शाखाओं के टुकड़े बाजारमें बिकते हैं, जिनको देशी वैद्य हाइड्रोसाइनिक एसिडके प्रतिनिधि रूपमें काममें लेते हैं।

चरक और सुश्रुतके मतानुसार यह वनस्पति दूसरी औषधियों के साथ सर्पविषके उपचारमें काममें लीजाती है।

मात्रा—इसकी मात्रा ४ से लेकर १५ रत्ती तकका होती है।

---

## पपीता

नाम—

हिन्दी—पपीता। अंग्रेजी—Ignatius Beans (इग्नेशियस बीन्स) लेटिन—Strychnos Ignasii (स्ट्रिकनोस इग्नेसि)।

वर्णन—

यह कुचले की जातिका एक विषैला वृक्ष होता है। इसके वृक्ष भारतवर्षमें नहीं होते। फिलीपाइन द्वीपमें इसके बहुत वृक्ष होते हैं। यहासे इसके बीज इस देशमें आते हैं और बड़े शहरोंमें पसारियोंके यहा मिलते हैं। इन बीजों का आकार लम्बगोल होता है। इनकी लम्बाई साधारणतया एक इंच से कुछ कम ज्यादा होती है।

हमारे देशके बहुतसे हिस्सोंमें पपीता अरण्डककड़ीके फल या पपैये को भी कहते हैं, मगर जिस पपीते का वर्णन यहा किया जा रहा है वह दूसरी वस्तु है। अरण्डककड़ी का वर्णन इस ग्रन्थके प्रथम भागमें देखना चाहिए।

गुणदोष और प्रभाव—

पपीते के बीजोंमे भी जहरी कुचले की तरह स्ट्रिकनिया और ब्रूसाइन नामकतत्व भिन्न भिन्न मात्रामे रहते हैं। इसमे १.५ प्रतिशत स्ट्रिकनिया और ५ प्रतिशत ब्रूसाइन रहता है। इसके सिवाय इसमें लोगेनिन नामक तत्व भी पाया जाता है। इसके एक भाग बीजों को १० भाग रेक्टिफाइड स्पिरिटमे मिलाकर एक अर्क तैयार किया जाता है जो टिंक्चर इग्नेशिया के नामसे अंग्रेजी औषधि विक्रेताओं के यहा मिलता है और यह २० बूंद से ३० बूंद तक की मात्रामें एक वातनाशक पौष्टिक द्रव्य की तरह दिया जाता है, हैजे मे भी इसका उपयोग किया जाता है। इसके बीजो के चूर्ण की मात्रा १ ग्रेन से ५ ग्रेन तक की होती है जो अधिक मे अधिक दिनमे तीन वार दी जा सकती है।

प्लेग का रोग और पपीता—

प्लेग की भयकर व्याधिमे इस औषधिका उपयोग बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है। सबसे पहले प्लेगके रोग पर इसका उपयोग होमियोपैथिक डाक्टरोंके द्वारा किया गया। पर उसके पश्चात् बहुतसे वैद्य, हकीम और ऐलोपैथिक डाक्टर भी इस रोगमे इस औषधिका उपयोग करने लगे हैं। सन १८३६ मे, टर्की की राजधानी कान्स्टेंण्टीनोपलके आसपासके प्रदेशमे प्लेग का उपद्रव बहुत भयन्कर रूपसे फैल गया था। उस समय वहा के पेरा नामक ग्राम की प्लेग हास्पिटलमे होमियोपैथिक डाक्टर होनिनने इस औषधि को मुफ्त में बाट कर उन रोगियों पर अजमाई। जिससे प्लेगके अधिकाश रोगी बच गये और इसके उपलक्ष मे उक्त डाक्टर साहब को बहुत बड़ा इनाम मिला। ये डाक्टर होनिन होमिओपैथी चिकित्सा पद्धति के मूल आविष्कारक विश्वविख्यात डाक्टर होनीमेनके शिष्य थे।

एक बार स्वय इन्हीं डाक्टर साहब को लाहौर जाते हुए पालीमे प्लेग का आक्रमण हो गया। उस समय उन्होंने स्वय अपने ऊपर भी इसी औषधिको अजमाई जिससे पसीना देकर बुखार उतर गया और प्लेग की गठान, उसकी पीडा और उसकी सूजन विना किसी बाह्य उपचारके अपने आप अच्छी हो गई।

इस प्रकार इस औषधिमे प्लेग विष नाशक गुण मालूम पडनेके पश्चात् होमियोपैथिक चिकित्सा शास्त्रमे इस औषधि को दाखिल की गयी और उसके पश्चात् दिन दिन इसका प्रचार बढता गया।

इसके पश्चात् होमिओ पैथिक ढगसे चिकित्सा करनेवाले कलकत्तेके सुप्रसिद्ध डाक्टर महेन्द्रलाल सरकार सी० आई० ई० ने भी अनेक रोगियो पर अजमाइश करनेके पश्चात अपना यह मत जाहिर किया कि यह दवा प्लेग के आक्रमण को रोकनेके लिए और आक्रमण

के पश्चात् उसका विष नष्ट करनेके लिए प्रभावपूर्ण क्षमता रखती है। प्लेग के दौरेके समयमें जिन लोगोंने इसके बीजों को कमर और हाथ पर बाधे थे उनमें से एक पर भी इस बीमारी का आक्रमण नहीं हुआ।

इस अभिप्रायके प्रकट होनेके पश्चात बहुतसे वैद्य और डाक्टर प्लेग के रागम इस औषधि का निर्भय होकर उपयोग करते हैं। बहुत सी जगह तो साधारण मनुष्य भी इसके बीजो को अपने हाथ और गले मे बाध रखते हैं और अपने घरोंमें इसके बीजोंके टुकडे करके बिखेर देते हैं। उनका ऐसा विश्वास है कि ऐसा करनेसे परस से प्लेगके जन्तु नष्ट हो जाते हैं।

वैद्यशास्त्री श्यामलदास गौर लिखते हैं कि इस औषधि का हमने भी प्लेगके अनेक रोगियो पर अनुभव लिया और प्लेगके उपद्रव को रोकनेके लिए और आक्रमण होने के पश्चात् उसको दूर करनेके लिए यह औषधि बड़ी चमत्कारिक मालूम हुई है। प्लेग का आक्रमण होते ही अगर इसका उपयोग प्रारम्भ कर दिया जाय तो २४ घण्टेके अन्दर ही प्लेगके ज्वर को और उसकी वजहसे होनेवाले सन्धियों के दर्द और गठान को यह मुलायम कर देती है। इस कार्यके लिए इस औषधि का चूर्ण आधी आधी रत्ती की मात्रा में, दो दो घण्टे के अन्तरसे पानीके साथ दिया जाता है। इस प्रयोग से अगर प्लेग का आक्रमण हुए छ घण्टेमें अधिक न हुए हो तो एक ही दिनमें रोग का प्रभाव कम होकर गठान नर्म पडने के चिन्ह दृष्टिगोचर हो जाते हैं। प्लेगके आक्रमण को रोकनेके लिए जिन जिन लोगों को प्रतिदिन सवेरे शाम एक रत्तीसे दो रत्ती तक की मात्रामें इस औषधि का चूर्ण पानी के साथ दिया गया व प्लेगके दिनोंमे भी इस रोगके आक्रमण से बिलकुल मुक्त रहे। इसलिए प्लेगके उपद्रवके समय, इस औषधि का उपयोग करके वैद्य लाभ उठा सकते हैं।

विशूचिका और पपीता—

प्लेगके अतिरिक्त हैजे के ऊपर भी यह औषधि बहुत कारगर सिद्ध हुई है। इस व्याधि के लिए इस औषधि को कपूर, पोदीनेके फूल, जदवार, दरियाई नारियल, जहरी मोहरा, भुनी हुई हींग, अजवाइनके फूल, काली मिर्च और लाल मिर्चके साथ समान भाग लेकर गुलाब जल में घोटकर एक एक रत्ती की गोलियाँ बनाकर दो दो घण्टे में एक एक गोली प्याजके रसके साथ देना चाहिए। इससे तत्काल लाभ दृष्टिगोचर होता है। (जंगलनी जड़ी बूटी)



# पतंग

नाम —

संस्कृत—भार्यावृक्ष, काष्ठ, कुचन्दन, लोहित रग, पतंग, पत्राग, रक्तक, रक्तकाष्ठ इत्यादि। हिन्दी—पतग, तेरी, बकाम। बंगाल—बकाम, पतग, टेरी। गुजराती—बकाम। मराठी—पतग। फारसी बक्कम। तामोल—पतगम, रचयॅगू। तेलगू—पतग, बातमू कपूरमट्टी। इंग्लिश—Brajil wood (ब्राजिलउड), लेटिन—Caesalpenia Sappan (सिसेलपोनिया सापन)।

वर्णन—

पतगके वृक्ष की खेती मद्रास जिलेमें बहुत होती है। इसका वृक्ष ६ से ६ मीटर तक ऊंचा होता है, इसका तना काटेसे भरा रहता है और डालिया भूरे रग की होती हैं। इसकी पत्तिया २० से ३८ सेन्टीमीटर तक लम्बी होती है। इसके फूल ऊपर की पत्तियो पर लगते हैं, फलिया ११ मिलीमीटर लम्बी मुलायम और चिकनी होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—राजनिघण्टु के मतसे पतग चरपरा, रूखा, खट्टा, शीतल तथा वात, पित्त, ज्वर, विस्फोटक, उन्माद और भूतबाधा को नष्ट करनेवाला है।

निघण्टु रत्नाकरके मतानुसार पतग कड़वा शीतल, रूखा, अम्ल, मधुर, चरपरा, व्रण-रोधक, कान्तिवर्धक, सुगन्धित तथा पित्त, वात, उन्माद, ज्वर, विस्फोटक, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, कफ, पथरी, रुधिर विकार और भूत-बाधा को दूर करता है।

पतग के अन्दर ग्राही, रक्तसग्रहक गर्भाशय, के लिए उत्तेजक सकोचक, कफनाशक और व्रणरोपक धर्म विद्यमान रहते हैं।

रक्तस्राव को बन्द करने के लिए पतग का काढ़ा पिलाया जा सकता है और उस काढ़ेमे कपड़ा भिगोकर रक्तस्राव की जगह पर रखा जाता है। फेफड़ेमें से होनेवाला रक्तस्राव आतोंसे होने वाला रक्तस्राव और गर्भाशय से होनेवाले रक्तस्राव युक्त रोगोंमें यह एक लाभदायक औषधि है। श्वेत प्रदर में इसके काढ़े की पिचकारी देने से लाभ होता है। अतिसार और सग्रहणी रोग में भी यह लाभदायक है। इसके काढे से मासार्बुद का धोनेसे पीड़ा और दाह की कमी होती है।

यूनानी मत—

यूनानी मत से इसकी लकड़ी बहुत कड़वी होती है। यह छाती और फॅफड़े से होने

वाले रक्तस्राव को रोकती है। इसके लगानेसे पीपदार व्रण और घाव भर जाते हैं। सन्धिवातमें भी यह उपयोगी है।

इण्डो चायनामें इसकी लकड़ी का काढा एक प्रभावशाली ऋतुस्राव नियामक औषधि की तरह उपयोग में लिया जाता है। इसकी लकडी का काढा कुछ चर्म रोगों को दूर करनेके लिए भी पिलाया जाता है। चीनमें इसकी लकड़ी जख्मों को भरने वाली, रक्तस्राव को रोकनेवाली और रज स्राव सम्बन्धी बीमारियों को दूर करने वाली मानी जाती है। वहां यह एक संकोचक और उपशामक औषधि की तरह काम में ली जाती है।

कोमानके मतानुसार इसकी लकडी का काढ़ा अतिसार और रक्तातिसार को रोकने के लिए बहुत उपयोगी माना जाता है। मैंने भी अतिसार और रक्तातिसार के कुछ साधारण केसों पर इसको उपयोगमें लिया और लाभदायक पाया।

---

## परवल

नाम—

संस्कृत—चिर्चिट, पटोल, परवर, पिलुपर्णिका, स्वादुपटोल, राजपटोल, सुशाका, सुपथ्य इत्यादि। हिन्दी—परवल। गुजराती—पटोल। बंगाली—पटोल। पंजाब—पलवल। फारसी—पलोल। तेलगू—कोमूपोटल। तामील—कोम्बूपुदलाई। उर्दू—परवल। लेटिन—*Trichosanthes Dioica* (ट्रीकोसॅंथस डायोइका)

वर्णन—

परवलकी तरकारी उत्तरी हिन्दुस्तानमें सब दूर पायी जाती है। इसकी बेल होती है। इसके पत्ते अखण्ड और कंगूरेदार होते हैं। इसका फल कदोरीके फलके समान होता है। यह ३ इंच तक लम्बा होता है। इसकी जड़के नीचे एक कन्द होता है जिसको संस्कृतमें रम्याक कहते हैं।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—भावप्रकाशके मतसे परवल पाचक, हृदयको हितकारी, हलका, अग्नि दीपक, स्निग्ध, उष्ण तथा खांसी, रुधिर विकार, ज्वर, त्रिदोष और कृमियोंको नष्ट करता है। परवलकी जड़ सुख पूर्वक विरेचन करने वाली है। परवलकी नाल कफ नाशक है। परवलके पत्ते पित्तनाशक होते हैं। इसका फल त्रिदोषनाशक होता है।

निघटु रत्नाकरके मतानुसार परवल बलकारक, स्वादिष्ट, पथ्य, दीपन, पाचक, रुचिकारक, पौष्टिक और ऑंकाइटिज, वात, पित, ज्वर, शोष और त्रिदोषको शान्त करने वाला होता है। इसका फल वृष्य, रुचिकारक, मधुर, स्वादिष्ट, हृदयको हितकारी, स्निग्ध, गर्म और रक्त विकार, त्रिदोष खासी, ज्वर और कृमियों को नष्ट करने वाला होता है। इसके पत्ते पित्तनाशक, जड़ विरेचक और बेल कफ नाशक होती है।

परवलकी जडका कन्द एक तीव्रविरेचक पदार्थ है। इसकी क्रिया इलेटेरियमके समान होती है। इसके हरे फलका गूदा भेदक होता है। इसके पत्तोंके डठल कटुपौष्टिक, ज्वरनाशक और आनुलोमिक होते है। इसके पत्ते कटुपौष्टिक दीपन, पाचन और बलदायक होते हैं। इसके बीज कृमिनाशक होते हैं।

यूनानी मत—

यूनानी मत से यह पौधा धातुपरिवर्तक, पौष्टिक, हृदयरोग मे तथा हठीले ज्वर और फोड़ों मे उपयोगी होता है। इसकी जड विरेचक होती है। इसके पत्ते कृमिनाशक, व्रणोंको अच्छे करनेवाले और पित्तनाशक होते हैं। इसके फूल पौष्टिक और कामोद्दीपक होते हैं। इसके पके हुए फल खट्टे मीठे पौष्टिक, कामोद्दीपक, कफनिस्सारक और खूनकी खराबीको दूर करनेवाले होते हैं।

गुजरातमे इसके फल अनैच्छिक वीर्यस्रावको रोकनेके लिए उपयोगमे लिये जाते हैं। इसके कच्चे फलोंका ताजा रस एक शीतल और मृदुविरेचक पदार्थकी तरह दूसरी धातु-परिवर्तक औषधियोंके साथ मिलाकर उपयोगमे लिया जाता है। पित्तज्वरमे इसके पत्तोंका काढ़ा ज्वरनाशक और मृदुविरेचक पदार्थके रूपमे लिया जाता है।

इसकी जड मूत्रल और विरेचक होती है। यह भी एक ज्वरनाशक और पौष्टिक पदार्थकी तरह उपयोगमे ली जाती है।

सुश्रुत और चरकके मतानुसार इसका फल दूसरी औषधियोंके साथ मिलाकर सर्प विषकी चिकित्सामे काममे लिया जाता है।

---

## पँवार

नाम—

संस्कृत—चक्रमर्द, आयुद्धाम, दादमर्दन, दादमारी, प्रभुनाथ, शागा। हिन्दी—पँवार, फुंवाडया, चकुण्डा, चकवत। बङ्गाल—चकुण्डा, पनेवार। बम्बई—कुँवाडया, कुवारिया।

मराठा—टाकला, टाकली। गुजराती—कुंवाड़ियो। पंजाब—पंवार, चकुण्डा। तेलगू—तागिरिस। तामील—तगरे। फारसी—सगसबोयाह—इंग्लिश—Fotid Cassia (फोटिड केसिया) लेटिन—Cassia Tora. (केसिया टोरा)।

वर्णन—

यह वर्षजीवी क्षुप वर्षाऋतुमें बहुत पैदा होता है। इसके पत्ते मेथीके पत्तोंकी तरह होते हैं। इसके फूल पीले रङ्गके होते हैं। इसकी फलिया करीब चार इंच लम्बी और बहुत पतली होती हैं। इन फलियोंमें से भूरे रङ्गके छोटे २ मेथीके दानेके समान बीज निकलते हैं। इस पौधेको मसलनेसे उसमें एकप्रकारकी असाह्य दुर्गन्ध आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—भावप्रकाशके मतानुसार पंवार हलका, स्वादिष्ट, सरल, पित्त वात नाशक, हृदयको लाभदायक, शीतल, तथा कफ, श्वास, कुष्ठ, दाद और कृमिको नष्ट करनेवाला होता है। इसके बीज गरम और कडवे होते हैं तथा कुष्ठ, कण्डु, दाद, विष, वात, गुल्म खासी, कृमि, तथा श्वास रोगमें लाभदायक हैं।

निघण्टु रत्नाकरके मतानुसार पंवार स्वादिष्ट, रूखा, हलका कडवा, चरपरा, हृदयको हितकारी, शीतल, खारी तथा वात, पित्त, कफ, दाद, कोढ़, कृमि, श्वास, बवासीर, घाव, मेदरोग, पामा, त्रिदोष, अरुचि, ज्वर, मलमूत्रावरोध, प्रमेह और खासीमें लाभदायक है। पंवारके बीज मलरोधक, गरम, चरपरे, तथा कफ, कोढ, श्वास, खासी दाद, खुजली, विष, सूजन, गुल्म और वातरक्तको नष्ट करनेवाले हैं।

पंवारके पत्तोंका शाक हलका, पित्तजनक, अम्ल, गरम तथा कफ, वात दाद, कोढ़, पामा, कण्डु, खासी और श्वासको दूर करनेवाला होता है।

पंवारके पत्तोंमें सनायके समान विरेचन द्रव्य और लाल रंग रहता है। इस वनस्पति की प्रधान क्रिया त्वचाके ऊपर होती है। त्वचा के सब प्रकारके रोगों में, त्वचा के मोटी हो जाने पर इसका विशेष उपयोग होता है। चर्म रोगोंमें इसके पत्तों का शाक देनेसे और इसके बीजों को नीबूके रसमें पीसकर लेप करनेसे बहुत लाभ होता है।

इसकी पत्तियोंका काढा रेचक औषधिकी तरह काममें लिया जाता है। इसकी पत्तियों और बीजों, दोनों में ही चर्मरोगों—विशेषतः दाद और खुजली को दूर करनेवाले गुण मौजूद हैं। चीन देशके अधिवासी सब प्रकारके नेत्र रोगोंके बाहरी और भीतरी उपचारोंमें इसके बीजोंका उपयोगमें लाते हैं। वे लोग व्रण फोड़ा और सूजन आदि में भी इसके बीजोंसे दवा तैयार करते हैं। इण्डोचायना के लोग संग्रहणी आदि पेट की बीमारियों और नेत्र रोगोंमें इसकी पत्ती को

वर्णन—

यह एक तरह की झाडी है जो लता की भांति चढती हुई बढती जाती है। इसकी डालिया भूरे रंग की चिकनी होती है और छोटी छोटी टहनिया पतली होती हैं। इसकी पत्तिया १८ से ३८ मिलीमीटर तक लम्बी तथा ६ से १८ मिलीमीटर तक चौडी होती हैं, इसके फूल छोटे छोटे होते हैं।

सिन्ध, बलूचीस्तान, वजीरिस्तान, पंजाब, कठियावाड़, दक्षिण भारत, अफगानिस्तान अरब और अफ्रिका मे यह वनस्पति पायी जाती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके गुण दोष प्रभाव गिलोय के समान होते हैं। सिन्ध देशमे विषम ज्वरों को दूर करनेके लिए यह वनस्पति गिलोय के बदले मे दी जाती है।

---

## पनकूल

नाम—

कोंकण—पनकूल, पटकली। तामील—चेत्ति। कनाडी केपल। लेटिन—Ixora Grandiflora (इक्सोरा ग्रेण्डीफ्लोरा।)

वर्णन—

यह एक झाड़ी नुमा बेल होती है। इसकी छाल बाहरसे काली और भीतरसे लाल होती है। इसके फूल लाल रंगके चार पखडियों वाले होते हैं। ये गुच्छोंमें लगते हैं। इसकी डालीमें लाल रंगका दूध निकलता है जो सूखने पर लाखकी तरह जम जाता है। वर्षा ऋतुके पहले यह झाड फूलोंसे लदकर बहुत सुन्दर हो जाता है। औषधिके काममें इसकी जड़ें आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति उत्तम दीपक, पाचक, मूत्रल, सूजनको नष्ट करने वाली, व्रण रोपक तथा कुछ स्तम्भक होती है।

अतिसारमें इसके दो तोले फूल लेकर इनको घीमें तलकर, उनमें ४ रत्ती जीरा, ४ रत्ती नाग केसर और कुछ शक्कर मिलाकर दिनमे दो बार देते हैं। आमाशयकी शिथिलताको दूर करनेके लिए तथा सुजाकमे इसकी छाल उपयोग में ली जाती है।

इसकी छालको ठंडे पानीमें पीसकर फोडे फुन्सियोंपर लेप करनेसे फायदा होता है।

---

# पाताल तुम्बी

नाम—

संस्कृत—गूतुम्बी, वल्मीकसम्भवा, नागतुम्बी इत्यादि । हिन्दी—पातालतुम्बी । गुजराती—पाताल तुमड़ी । मराठी—नागतुम्बी । लेटिन—Bovista Spisis ( बोविस्टा स्पीसिस ) ।

वर्णन—

पाताल तुम्बी खेतों में और मैदानो में होती है । इसके ऊपर बहुत बारीक और पीले रंगके छींटे वाले बिच्छूके डकके समान कांटे होते हैं । इसकी बेल होती है । बेलकी शाखाओंके बीच तुम्बीके समान फल लगते हैं । इसीको पाताल तुम्बी कहते हैं । यह वनस्पति सांपके बिला के आसपास विशेष पैदा होती है । काठियावाड़में यह बहुत पायी जाती है ।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे यह वनस्पति कड़वी, चरपरी, त्रिदोषनाशक तथा प्रसूतिके समयका अतिसार, दांतोंकी जड़ता और सूजन और पसीना तथा प्रलापयुक्त ज्वरको दूर करती है ।

यह एक दिव्य औषधि है । क्योंकि इसमें कई ऐसे चमत्कारिक गुण हैं, जो दूसरी औषधिमें नहीं पाये जाते । स्त्रियोंको प्रसव होनेके पश्चात् कभी कभी तार्णे आने लगती हैं, दाँत भिड़ जाते हैं और धनुर्वातके लक्षण दिखलाई देने लगते हैं । ऐसे संकट पूर्ण समयमें इस औषधिको देनेसे आश्चर्य जनक लाभ होता है । सूतिका रोगमें होनेवाले अतिसार, सूजन इत्यादि उपद्रवों में भी यह एक महौषधिका काम करती है । बालकों को होने वाले धनुर्वात ( टेटीनस ) में भी यह एक अव्यर्थ औषधि है । प्रलापयुक्त सन्निपात ज्वरमें, जब रोगी बेहोशी की हालतमें बकता रहता है उस समय भी इसके समान लाभ दिखाने वाली दूसरी वनस्पति नहीं है ।

कभी कभी रोगीको चढा हुआ तीव्र ज्वर पसीना देकर एकदम उतार दिया जाता है । ऐसी हालतमें ज्वरके एकदम शरीरसे निकल जानेसे रोगी बहुत कमजोर हो जाता है, उसके हाथ पैर ठंडे हो जाते हैं, गलेमें घर घर शब्द होने लगता है और रोगीकी बेहोशी बढ़ती जाती है । ऐसे समयमें भी यह वनस्पति हेम गर्भकी तरह ही चमत्कारिक कार्य कर दिखाती है । इसकी पहली मात्रासे ही रोगीके शरीरमें गर्मी दौड़ने लगती है ।

कई प्रकारके विष विकारोंको दूर करनेकी शक्ति भी इस वनस्पति में है । इसकी मात्रा २ रत्तीसे लेकर ६ रत्ती तक होती है ।

वर्णन—

यह एक तरह की झाडी है जो लता की भाति चढती हुई बढती जाती है। इसकी डालिया भूरे रग की चिकनी होती हैं और छोटी छोटी टहनिया पतली होती हैं। इसकी पत्तिया १८ से ३८ मिलीमीटर तक लम्बी तथा ६ से १८ मिलीमीटर तक चौडी होती है, इसके फूल छोटे छोटे होते हैं।

सिन्ध, बलुचीस्तान, वजीरिस्तान, पजाब, कठियावाड़, दक्षिण भारत, अफगानिस्तान अरब और अफ्रिका मे यह वनस्पति पायी जाती है।

गुणदोष और प्रभाव—

इसके गुण दोष प्रभाव गिलोय के समान होते हैं। सिन्ध देशमे विषम ज्वरों को दूर करनेके लिए यह वनस्पति गिलोय के बदले मे दी जाती है।



## पनकूल

नाम—

कोकण—पनकूल, पटकली। तामील—चोत्ते। कनाडी वेपल। लेटिन—Ixora Grandiflora (इक्सोरा ग्रैण्डीफ्लोरा।)

वर्णन—

यह एक झाडी नुमा वेल होती है। इसकी छाल बाहरसे काली और भीतरसे लाल होती है। इसके फूल लाल रगके चार पंखडियां वाले होते हैं। ये गुच्छोंमे लगते हैं। इसको डालीमे लाल रगका दूध निकलता है जो सूखने पर लाखकी तरह जम जाता है। वर्षा ऋतुके पहले यह झाड फूलोंसे लदकर बहुत सुन्दर हो जाता है। औषधिके काममे इसकी जडें आती है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति उत्तम दीपक, पाचक, मूत्रल, सूजनको नष्ट करने वाली, व्रण रोपक तथा कुछ स्तम्भक होती है।

अतिसारमें इसके दो तोले फूल लेकर इनको घीमें तलकर, उनमें ४ रत्ती जीरा, ४ रत्ती नाग केसर और कुछ शक्कर मिलाकर दिनमें दो बार देते हैं। आमाशयकी शिथिलताको दूर करनेके लिए तथा सुजाकमे इसकी छाल उपयोग में ली जाती है।

इसकी छालको ठडे पानीमें पीसकर फोडे फुन्सियोपर लेप करनेसे फायदा होता है।

# पाताल तुम्बी

नाम—

संस्कृत—भूतुम्बी, वल्मीकसम्भवा, नागतुम्बी इत्यादि । हिन्दी—पातालतुम्बी। गुजराती—पाताल तुमड़ी । मराठी—नागतुम्बी । लेटिन—Bovista Spisis ( बोविस्टा स्पीसिस ) ।

वर्णन—

पाताल तुम्बी खेतो में और मैदानो मे होती है । इसके ऊपर बहुत बारीक और पीले रंगके छींटे वाले बिच्छूके डंकके समान कांटे होते हैं । इसकी बेल होती है । बेलकी शाखाओंके बीच तुम्बीके समान फल लगते हैं । इसीको पाताल तुम्बी कहते हैं । यह वनस्पति सापके बिला के आसपास विशेष पैदा होती है । काठियावाड़मे यह बहुत पायी जाती है ।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिकमत—आयुर्वेदिक मतसे यह वनस्पति कड़वी, चरपरी, त्रिदोषनाशक तथा प्रसूतिके समयका अतिसार, दांतोकी जड़ता और सूजन और पसीना तथा प्रलापयुक्त ज्वरको दूर करती है ।

यह एक दिव्य औषधि है । क्योंकि इसमें कई ऐसे चमत्कारिक गुण हैं, जो दूसरी औषधिमें नहीं पाये जाते । स्त्रियोंको प्रसव होनेके पश्चात कभी कभी तांणें आने लगती हैं, दाँत भिड़ जाते हैं और धनुर्वातके लक्षण दिखलाई देने लगते हैं । ऐसे संकट पूर्ण समयमें इस औषधिको देनेसे आश्चर्य जनक लाभ होता है । सूतिका रोगमें होनेवाले अतिसार, सूजन इत्यादि उपद्रवों मे भी यह एक महौषधिका काम करती है । बालकों को होने वाले धनुर्वात ( टेटीनस ) मे भी यह एक अव्यर्थ औषधि है । प्रलापयुक्त सन्निपात ज्वरमें, जब रोगी बेहोशी की हालतमें बकता रहता है उस समय भी इसके समान लाभ दिखाने वाली दूसरी वनस्पति नहीं है ।

कभी कभी रोगीको चढ़ा हुआ तीव्र ज्वर पसीना देकर एकदम उतार दिया जाता है । ऐसी हालतमें ज्वरके एकदम शरीरसे निकल जानेसे रोगी बहुत कमजोर हो जाता है, उसके हाथ पैर ठंडे हो जाते हैं, गलेमें घर घर शब्द होने लगता है और रोगीकी बेहोशी चढ़ती जाती है । ऐसे समयमें भी यह वनस्पति हेम गर्भकी तरह ही चमत्कारिक कार्य कर दिखाती है । इसकी पहली मात्रासे ही रोगीके शरीरमें गर्मी दौड़ने लगती है ।

कई प्रकारके विष विकारोंको दूर करनेकी शक्ति भी इस वनस्पति में है । इसकी मात्रा २ रत्तीसे लेकर ४ रत्ती तक होती है ।

# पाखाण भेद ( पत्थर चूर )

नाम—

संस्कृत—पाषाणभेदी। हिन्दी—पत्थरचूर पाखान भेद। बंगाल—पत्थरचूर। मराठी—पत्थरचूर, पानाचाओवा। बम्बई—ओवा, पत्थरचूर। लेटिन—Coleus Amboinious ( कोलियस एम्बोइनिकस )।

वर्णन—

यह एक बहुवर्षायु छोटी जाति का पौधा होता है। यह बगीचोंमें लगाया जाता है। इसके पत्ते मोटे दांतेदार और रुएदार होते हैं। इसका स्वाद तीक्ष्ण होता है। इसकी गन्ध बहुत मनोहर होती है। इसके फूल छोटे डंठलोंमें लगते हैं जो ३ मिलीमीटर लम्बे होते हैं। कली का ऊपरी हिस्सा गोल पर नीचे का नोकीला होता है। फूल का भीतरी भाग कुछ धुंधले नीले रंग का होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे पाषाणभेद पथरी को भेदनेवाला, शीतल, कडवा, कसेला, बस्ति शोधक, भेदक तथा त्रिदोष, बवासीर, गुल्म मूत्रकृच्छ्र, पथरी, हृदयरोग, प्रमेह, प्लीहा, शूल और व्रण रोग को नष्ट करता है।

क्षुद्र पाषाण भेद व्रण, मूत्रकृच्छ्र और पथरी को नष्ट करता है।

मूत्रकृच्छ्र और पथरीके ऊपर यह एक लोकप्रिय औषधि है।

दमा, पुरानी खासी और श्वास नलिकाके संकोच विकास प्रधान रोगोंमे इसका उपयोग होता है। नेत्राभिष्यन्द रोगोंमे आखोंके पलकों पर इसके रसका लेप किया जाता है। अजीर्ण, उदरशूल और मन्दाग्निमें भी यह लाभदायक है।

इसके पत्तोंका मूत्राशय या मसानेके ऊपर सीधा असर होता है और इसलिए यह पेशाब सम्बन्धी सब रोगों पर उपयोगी माना जाता है। बच्चो को होनेवाले कॉलिक उदरशूलमें इसका ५-६ बूंद रस शक्करमें मिलाकर दिया जाता है जिससे तत्काल असर होकर शान्ति हो जाती है।

इसमें उत्तेजक प्रभावके रहते हुए भी बंगालके अधिवासी

तथा अजीर्ण रोगमें इसका प्रयोग करते हैं।

सीलोनमें इसकी पत्तियों का काढ़ा दमा ह

है।

फोचीनमें इसकी पत्तियो का रस मोटापन दूर करनेवाला समझा जाता है और बच्चोंके पेटकी मरोड़में दिया जाता है। दमाके रोगियों और ब्रोंकाइटिज के बीमारों तथा सन्यास ( Apilapsy ) रोग ग्रस्त व्यक्तियोंको भी यह काढ़ा पिलाया जाता है।

---

# पानड़ी

नाम—

संस्कृत—पाची। हिन्दी—पनड़ी, सुगन्धित पनड़ी। मराठी—पाच। गुजराती—सुगन्धित पानड़ो। लेटिन—Pogostemon Paebouli ( पोगास्टेमोन पाचोली )।

वर्णन—

यह एक सुगन्धित पत्तों का पौधा होता है। इसका पौधा ४-५ फीट तक ऊंचा पड़ जाता है। इसके पत्ते गोल, तीखी नोंकवाले और कटी हुई किनारोंके होते हैं। इसके फूल बहुत छोटे होते हैं इस वनस्पतिके पाचों अंग बहुत खुशबूदार होते हैं। इसके पत्तोंमेंसे इत्र निकाला जाता है। राजपूतानेकी स्त्रिया अपने कपड़ोंके बक्समें इसके सूखे हुए पत्तोंको रखती हैं जिससे कपड़े भी खुशबूदार रहते हैं और उनमें किसीप्रकार का कीड़ा नहीं लगने पाता।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति मूत्रल, रक्तस्राव रोधक और वायुनाशक होती है। पेशाबके साथ रक्त जाने की बीमारीमें इसके दो तोले पत्तोंका रस थोड़ी भांगके साथ मिलाकर दिया जाता है।

---

# पांगला

नाम—

संस्कृत—फणिज्झक। मराठी—पागला, फागला। लेटिन—Pogostamon Parviflorus. ( पोगोस्टेमन पर्वीफ्लोरस )।

वर्णन—

यह वनस्पति विशेषकर कोकणमें बहुत पैदा होती है। इसका पौधा ३ फीटके करीब लंबा होता है। इसके पत्ते करीब ६ इंच लम्बे, लम्ब गोल और नोंकदार होते हैं। इसके फूल बहुत घने लगते हैं, और गुच्छोंमें लटके रहते हैं। इसकी कलियां ४ मिलीमीटर लम्बी होती हैं।

फूलका भीतरी भाग ३ मिलीमीटर लम्बा होता है और ऊपर का हिस्सा सफेद तथा लाल पीले रगके छीटोंसे युक्त रहता है।

गुणदोष और प्रभाव—

यह वनस्पति रक्तसग्राहक, विपनाशक, उत्तेजक और व्रणरोपक होती है।

इसके ताजा पत्ते कुचल कर पुल्टिस की तरह घाव को साफ करके उसपर बाध देते हैं। जिससे स्वस्थ मासाकुर पैदा होकर घाव भर जाता है। सतारामे इसका रस कालिक उदरशूल और ज्वर को दूर करनेके लिए दिया जाता है।

इसकी जड रक्तस्राव को रोकनेके लिए एक मशहूर औषधि है और गर्भाशय सम्बन्धी अत्यधिक रजस्रावमें इसका सफलता पूर्वक उपयोग किया जाता है।

रत्नागिरि जिलेमे इसकी जड एचिसकेरिनेटा ( Aolus Carinata ) नामक सर्प जिसको सिन्धमें कपर कहते हैं, के विपपर दी जाती है। इस विपको दूर करनेके लिए इसकी जड का टुकड़ा पानीमे औटाकर तीन वार पिलाया जाता है और पानीमें घिस कर जखममें लगाया भी जाता है। इस प्रकार सात दिन तक यह प्रयोग चालू रखा जाता है। इससे विप की वजह से आने वाले चक्कर कम हो जाते हैं और शरीर के किसी भी हिस्से से निकलने वाला रक्त बन्द हो जाता है। इस कार्यके लिए इसकी ताजी जडें लेना ही उत्तम होता है। क्योंकि ताजी जडोंमें ही रक्त सग्राहक धर्म विशेप रहता है। लम्बे अनुभव से वहाके लोगों का विश्वास हो गया है कि इस औपधि को देने के पश्चात् रोगी की एकाएक मृत्यु नहीं होती।

सुश्रुत के मतानुसार यह पौधा दूसरी औपधियों के साथ मिलाकर सर्प और बिच्छू के विपके उपचारमे लिया जाता है।



# पांगरा ( फरहद )

नाम—

संस्कृत—पारिभद्र, बहुपुष्पा, कण्टकी, पलाश, मन्दार, पालित मन्दार, पारिजात, प्रभद्रक, रक्तपुष्पक, कृमिघ्न इत्यादि। हिन्दी—दादप, पागरा, पजीरा, फराद। बगाली—पालित मन्दार। मराठी—पागारा, मन्दार, फादरा। गुजराती—पागरो, पनेरवो, पाण्टरवो। बरार—पागरा। नेपाल—दपदप, फालेदो। तेलगू—बादीसा, वारीदामू, मूचीकेटा, परिभद्र कामू। तामील—

कावीर, मुरक्कू, पलासू, सिनसुगम इत्यादि। इंग्लिश—Indian Corao Tree ( इण्डियन कोरेलट्री ) लेटिन—Frythrin Indio ( एरिथ्रिना इण्डिका )।

वर्णन—

इसके वृक्ष १८ मीटर तक ऊचे होते हैं छाल पतली चिकनी और भूरे रगकी होती है। इस वृक्ष पर छोटे २ नोकीले काले रंगके काटे लगे रहते है। इसके पत्ते १५ से ३० सेन्टीमिटिर तक लम्बे होते हैं। फूल बहुत अधिक और गुच्छेदार होते हैं। कलिया नलीके आकारकी होती हैं। फलका भीतरी हिस्सा लाल होता है।

यह वनस्पति बम्बई और मालाबारके पहाड़ों और बंगालके सुन्दर वनमे पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मतसे इसकी जड ऋतुस्राव नियामक होती है। छाल कफ, वातनाशक और अतिसारको दूर करनेवाली होती है। इसके पत्ते कडवे, गरम, अग्निवर्धक, कृमिनाशक, भूख बढानेवाले सूजनको दूर करनेवाले और मूत्रसम्बन्धी रोगोंमे लाभदायक हैं। इसके फूल पित्तनाशक और कर्णपीडाको दूर करनेवाले होते हैं।

सुश्रुत के मतसे यह पौधा सर्पविषमे लाभदायक है।

इसकी छाल शान्तिदायक, पित्तनाशक और कृमिनाशक होती है और यह चक्षु रोगों को दूर करनेके लिए अजन के काममे भी ली जाती है।

कोकणमे इसके ताजे पत्तों का रस कृमियुक्त घावों के कृमियों को मारने के लिए लगाया जाता है और इसके सफेद फूल वाली जाति की जड कुचल कर ठण्डे दूधके साथ कामोद्दीपक वस्तु की तरह दी जाती है।

इसके पत्ते उपदश की वजह से होनेवाली बदगाठ पर पीस कर लगाये जाते है। सन्धिवात की पीडा मे भी इनका लेप मुफीद होता है। इसके पत्तों का ताजा रस पिचकारी द्वारा कान मे छोड़ने से कान का दर्द दूर होता है। इस रसको पानीमें मिलाकर कुल्ले करनेसे दात का दर्द भी दूर होता है।

कोमानके मतानुसार तामील के वैद्य पुराने अतिसार को दूर करनेके लिए इसके पत्तोंके रस को समान भाग अरण्डी के तेल मे मिला कर १ ड्राम की मात्रामे दिनमे तीन बार देते हैं। हमने भी करीब आधे दर्जन केसों पर इस उपचार को किया मगर इससे कुछ लाभ नहीं हुआ।

डाक्टर देसाई के मतानुसार इसकी छाल ज्वरनाशक, कफ निस्सारक, सूजन को दूर करने वाली और कृमिघ्न होती है। मस्तकके केन्द्रस्थान पर इसकी अवसादक क्रिया होती है। इस वजह से इसमें वेदना शामक गुण पाया जाता है। मज्जातन्तुओंके ऊपर कुचले की जो क्रिया होती है उससे बिलकुल विरुद्ध इसकी होती है। हृदयके ऊपर भी इसकी अवसादक क्रिया होती है। इसके प्रयोगसे कुचले के विषकी शक्ति नष्ट हो जाती है। इसके पत्त व्रण शोधक, आनुलोमिक, मूत्रल, दुग्धवर्धक और मासिक धर्म को साफ करने वाले होते हैं।

रक्तातिसार में इसकी छाल का प्रयोग किया जाता है। नेत्राभिष्यन्द रोगमें पलकोंके ऊपर इसकी छालका लेप किया जाता है। ज्वरमें नींद आनेके लिए इसकी छाल दी जाती है। उपदंश और उपदंश से होनेवाले सन्धिवात, सूजन और बदगाठ पर इसका रस पिलाया जाता है और इसके पत्तों का लेप किया जाता है। नारियलके रसके साथ इसके पत्तों को उबालकर प्रसुति के समय गर्भाशय की शुद्धिके लिए और दूध बढानेके लिए दिया जाता है।

---

## पाकर

नाम—

संस्कृत—चारुदर्शिनी, गर्दभण्डा, करपारी, क्षीरी, पर्कटी, प्लक्ष, फन्दरालु इत्यादि। हिन्दी—पाकर, पाकरी, पाकुर, पिलखन, राम अंजीर महिसाल इत्यादि। गुजराती—पीपरी। मराठी—वेसारी, गन्धा उम्बरा। पंजाब—पाखर, जंगली पिपली, बटबार, पालखी, पिलखन। बंगाल—पाकर। तेलगू—बादि जुव्वी। तामील—जोभी, गुरुगु। लेटिन—Faious lacor (फाइकस लेकर)।

वर्णन—

यह एक बडी जाति का पीपल के वर्ग का वृक्ष होता है इसकी ऊंचाई ४० से ५० फीट तक होती है। इसकी पत्तियां बीच बीच में झडती रहती हैं। इसके सभी हिस्से चिकने होते हैं, छाल भूरे रंग की चिकनी होती है और छिलकों में निकाली जा सकती है। पत्तियां लम्बी कुछ गोलाकार लिये होती हैं और नोकदार भी होती हैं। इसका फल चौथाई इंच तकके घेरे में होता है। इसका आकार कोटके गोल बटन की तरह होता है। पकने पर इस फल का रंग सफेद होता है।

यूनानीके प्रसिद्ध ग्रन्थ तालीफ शरीफमें लिखा है कि इसकी एक जाति ऐसी भी होती है, जिसका फल पैदाइशके वक्त उडदके बराबर होता है और पकनेके बाद विलायती सेवके बराबर हो जाता है। ऐसा कहा जाता है कि इसका एक वृक्ष देहलीके बादशाही किले में अब तक मौजूद है। इस किलेके बननेके पहले भी यह वृक्ष यहा मौजूद था। किले वाले उसकी जड मे दूध डलवाते थे और इसके फल मुरब्बा तैयार करवाते थे। यह तिल्लीकी सूजनके लिए बहुत मुफीद होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदके मतसे पाकर कडवा, कसेला, शीतल, रक्तदोषनाशक तथा मूर्च्छा, भ्रम, प्रलाप, योनिरोग, दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, सूजन और रक्तपित्तको दूर करनेवाला होता है। छोटे पत्ते वाला पाकर अधिक गुण वाला होता है।

यूनानी मत—

यूनानी मतसे यह दूसरे दर्जेमे सर्द और तर होता है। फोडे फुन्सी सूजन और रक्त विकारमें यह मुफीद है। फलनेवाली फुन्सियों पर भी यह लाभदायक है। इसका दूधिया रस कब्जियत पैदा करता है। इसके पत्ते और छालको पानीमें भिगोकर सवेरे उस पानीको छानकर शक्कर मिलाकर पीनेसे फोडे फुन्सी, खुजली और दूसरे चर्मरोगोंमे फायदा होता है। कफ और पित्तकी खराबीसे होनेवाले ज्वरमें इसकी छालका काढा लाभ पहुँचाता है। इसकी छालके काढे से कुल्ले करनेसे दांतोंका दर्द मिट जाता है।

स्त्रियोंके श्वेतप्रदरमे इसकी छालके काढेसे योनिमें पिचकारी लगाना चाहिए। इसके फल का रस निकाल कर पीनेसे हृदयको ताकत मिलती है, जठराग्नि प्रबल होती है, और भूख बढती है। इसकी बडी जातिके फलका मुरब्बा तिल्लीकी बीमारीमें मुफीद है। यह मेदेको शक्ति देता है तथा खून और पित्तके विकारको शान्त करता है।

इसके फल खट्टे होते हैं और इसके बीज ऑक्साइटिज, पित्त प्रकोप तथा गीली खुजलीमें मुफीद होते हैं।

इसकी छाल को बड, पीपल, गूलर और नीम की छालके साथ मिलाकर एक क्वाथ बनाया जाता है जिसको आयुर्वेद में पच वल्कल क्वाथ कहते हैं। यह क्वाथ व्रणोंको धोने और श्वेत प्रदरमें पिचकारी देनेके काममे लिया जाता है और इससे बहुत लाभ पहुँचता है।

# पानी आंवला

नाम—

संस्कृत—प्राचीनामलक, पानीआमलक। हिन्दी—पानी आवला, पनियाला। गुजराती—पाणी आवला, तालीस पत्री। बगाली—पनिआल। मराठी—पान आवला, ताम्बट। बम्बई—जगम, ताम्वट। देहरादून—जमनुआ, पचनाला। कोकण—जगोमी। फ़ारसी—तालीसपत्र। तामील—सेरालु, तालिसम। तेलगू—कुरागई लेटिन—Flacourtia Cataphracta (फ्लाकोर्टिया केटफ्रेक्टा)।

वर्णन—

यह एक बडी और हमेशा हरी रहनेवाली झाडी अथवा एक छोटी जातिका फैलनेवाला वृक्ष होता है। इसकी ऊँचाई नौ मीटर और इसके पिण्डकी गोलाई ७५ सेण्टिमीटर होती है। यह वृक्ष बङ्गालमे लगाया जाता है और दक्षिण भारतके जङ्गलोंमे पानीके किनारे अपने आप भी पैदा होता है। इसके पत्ते पाचसे लेकर दस सेण्टीमीटर तक लम्बे और २.३ से ३.८ सेण्टीमीटर तक चौडे होते है। इसके फलोंको आकृति आवलेके समान होती है। प्रत्येक फल मे पाच छ बीज रहते हैं। यह वनस्पति कुमाऊँ, उडीसा, लोअर बगाल, आसाम और चटगाव तथा दक्षिणी भारतमें पैदा होती है।

गुणदोष और प्रभाव—

आयुर्वेदिक मत—निघण्टु रत्नाकरके मतानुसार पानी आवला मधुर, रुचिकारक, भारी, गरम, त्रिदोपनाशक, तथा कफ तृषा और वातका नाश करनेवाला है। इसका पका हुआ फल कफ और पित्तको बढ़ानेवाला है।

राजनिघण्टुके मतानुसार पानी आँवला मलरोधक, अम्ल, रुचिकारक और मुखशोधक होता है।

भावप्रकाशके मतानुसार यह त्रिदोपनाशक और ज्वरको हरनेवाला है।

इसका स्वाद पहले कुछ मीठा और फिर खट्टा होता है। यह अग्निवर्द्धक, पाचनशक्तिको सहायता देनेवाला, प्यासको बुझानेवाला और पित्तके उपद्रवोंको शान्त करनेवाला होता है। त्रिदोप, ज्वर और घातमें भी यह लाभदायक है।

यूनानी मत—

यूनानी मत से इसके पत्ते और छाल कुछ कड़वी और खट्टी होती है। यह अतिसार,

बवासीर, और कमजोरीको दूर करता है। मसूडोंसे निकलनेवाले खून दन्तशूल, मुखशोथ, में यह लाभदायक है।

इसका फल दूसरे खट्टे फलोंको तरह पित्त प्रकोपके अन्दर उपयोगी समझा जाता है और वमन इत्यादि पित्तके प्रकोपसे होनेवाले उपद्रवोंमें वास्तवमें यह बहुत लाभ पहुँचाता है। इसके पत्तोंमें सकोचक और अग्निवर्द्धक तत्व रहते हैं और ये अतिसार और कमजोरीमें सफलतापूर्वक दिये जाते हैं। इसके पत्तोंमें पसीना लानेवाले तत्व भी रहते हैं।

ला—रियूनियनमें इसकी छाल मूत्रल और सकोचक वस्तुकी तरह उपयोग में ली जाती है।

इसका उपयोग साधारणतया आलूबुखारेके समान किया जा सकता है।

---

# पापरी ( २ )

नाम —

संस्कृत—वक्रा, गिरिपर्पट, हसपद, वेशाग्र सेव। हिन्दी—पापरी, भवनवकरा, वकरा चिम्याक, निविषी, पीलीजाति। गुजराती—वेनीवेल। मराठी—पडवेल, पाप्रा। काश्मीर—वनवैंगन पजाब—वनककरी बनकाकरा, चिम्याक, च्याकरी, गुलककरी, काकरा, वनवैंगन। लेटिन—Podophyllum Emodi ( पोडोफिलम एमोडी ) अंग्रेजी—may Apple ( मे एपल )।

वर्णन—

यह छोटी जातिकी क्षुद्र वनस्पति हिमालयमे हजारा और कश्मीरसे सिक्किम तक पैदा होती है। कुनवार और काश्मीरमे इसके पौधे बहुत होते हैं। गरमीके दिनोंमें इसके सफरचद के समान लाल रगके किन्तु छोटे अनेक बीजों वाले फल लगते हैं जो खानेके काममें आते हैं। इसकी जड़में एक गठान रहती है। यह गठान कुछ पीले और भूरे रगकी होती है। यही गठान औषधि प्रयोगमें काममें आती है। इसका स्वाद कड़ुवा और तीखा होता है।

गुणदोष और प्रभाव—

पापरी पित्त सारक और विरेचक होती है। इसके देनेसे पेटमें काट होकर बहुतसे पतले और पीले रगके दस्त होते हैं।

डा० देसाईके मतानुसार यह वनस्पति पित्तप्रकोपमे और पित्त प्रकृति वाले मनुष्योंको होनेवाली कब्जियतमें दी जाती है। इससे यकृतकी क्रिया सुधरती है और उसकी सूजन उतर जाती है। इसको लेनेमे पेटमे मरोड चलती है इसलिए इसको खुरासानी अजवायन अथवा दूसरे और किसी सुगन्धित द्रव्यके साथ लेना चाहिए। विषम ज्वरमे जब यकृत बढ जाता है और दस्त साफ नहीं होता है तब इस वनस्पतिका जुलाब दिया जाता है। आमवात, वातरक्त, और दूसरे चर्मरोगोंमे पेटकी शुद्धिके लिए इसका उपयोग किया जाता है।

कोमानका कथन है कि इस औषधिको टिंक्चरके रूपमे छ बीमारोंको दी गई और इस टिंक्चरमे वे सब तत्व पूर्ण कर दिये गए थे जो ब्रिटिश फर्माकोपियामें सम्मत पोडोफिलनमे रहते हैं। इसके प्रयोगसे मालूम हुआ कि यह यकृतको उत्तेजना देती है और पित्तको विरेचन के द्वारा बाहर निकाल देती है।

रासायनिक विश्लेषण—

इसके रासायनिक विश्लेषणसे पता चलता है कि भारतमे पाई जानेवाली इस वनस्पति में और अमेरिकामे पाई जानेवाली इसी जातिकी वनस्पतिमे एक समान तत्व रहते हैं। इसके अन्दर पाया जानेवाला प्रधान तत्त्व पोडोफिलोटोक्सिन ( Podophyllotoxin ) है। जो इसमे २ से ४ प्रतिशत तक पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमे एक प्रकारकी बिना रवेकी राल ( Rosin ) और पोडोफिलोरजिन नामक तत्व भी पाये जाते हैं।

मात्रा—इसकी मात्रा २ से ५ रत्ती तक है।

